संपादक-मंडल

आशादेवी : मॉर्जरी सॉईक्स

देवीप्रसाद

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ

सेवाग्राम

वर्ष : ७]　　　　जनवरी १९५९　　　　[अंक : ७

नओी तालीम

"नओी तालीम" जनवरी १९५९ : अनुक्रमणिका

सूचना

१३ वां अखिल भारत नओी तालीम सम्मेलन

हमे सूचित करते हुअे हर्ष है कि तेरहवां अखिल भारत नओी तालीम सम्मेलन अप्रैल १९५९ के तीसरे सप्ताह में, राजपुरा, पजाब मे सपन्न होगा । पूज्य विनोबाजी भी सम्मेलन मे सन्निहित रहेंगे । अन्य विषयो के साथ, सम्मेलन ग्रामदान आन्दोलन और ग्रामसकल्प के वर्तमान सदर्भ मे नओी तालीम के भावी कार्यक्रम पर भी विचार करेगा ।

नओी तालीम मे रुचि रखने वाले जो व्यक्ति सम्मेलन मे भाग लेना चाहते हैं, तत्सबधी जानकारी के लिअे मत्री, हिंदुस्तानी तालीमी सघ, सेवाग्राम से पत्र व्यवहार करें । सम्मेलन की विस्तृत जानकारी "नओी तालीम" के अगले अक मे प्रकाशित होगी । सम्मेलन मे होनेवाली चर्चाओ के सबध मे अगर कुछ सुझाव हों तो कृपया जरूर भेजें ।

नई तालीम

(हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की मासिक पत्रिका)

वर्ष ७] जनवरी १९५९ [अंक ७

अध्ययन तेजस्वी हो

विनोबा

हम लोग प्राचीन काल से ही अध्ययन-प्रेमी रहे हैं, लेकिन हम अैसी प्रार्थना नहीं करते कि बहुत अध्ययन करें, बल्कि "तेजस्वि नावधीतमस्तु' हमारा अध्ययन तेजस्वी हो, अैसी ही हम प्रार्थना करते हैं। अध्ययन की तेजस्विता तभी आती है, जब अुसके साथ जीवन-योग होता है। मैंने अुसे सिर्फ "कर्मयोग" नाम से नहीं कहा, बल्कि "जीवन योग" कहा है। जब अध्ययन का अिसी तरह जीवन के साथ योग होता है तो अुस जीवन में विचार-शीलता आती है। अध्ययन के बिना जीवन जड बनता है और जीवन के बिना अध्ययन पगु। अिसलिअे दोनों का सयोग होना चाहिये। यह हमें हमारे ऋषियो ने बहुत अच्छी तरह समझाया है। वे कहते हैं, "ऋत च स्वाध्याय प्रवचने, सत्य च स्वाध्याय प्रवचने।" अिस तरह अेक-अेक जीवन-कार्य दिखाकर अुसके साथ स्वाध्याय-प्रवचन जोडने की बात अुन्होने हमारे सामने रखी है। वह बात हिन्दुस्तान में प्राचीन काल से चली आ रही है। लेकिन बीच में हमने तरह-तरह का अनुभव लिया, अुसमें हमने कुछ नअी बातें सीखी और कुछ भूल भी गये।

जीवन में समन्वय

अब जमाना आ गया है जब कि हम सकुचित धार्मिक कल्पनाओ को छोड मानव धर्म में परिणत हो जाय और जीवन में समन्वय करें, जो बहुत जरूरी है। अभी श्री सांनटक्केजी ने कहा था कि वेद का और अवेस्ता का समन्वय होना चाहिये और अच्छी तरह हो सकता है। अेक जमाना था जब अुपनिषद् और गीता का, अनेक अुपनिषदो का भी समन्वय करने की जरूरत महसूस हुअी। फिर प्रस्थानत्रयी बनी, अुस पर भाष्य लिखे गये और कुछ समन्वय हुआ। अिसीलिअे समाज में श्रद्धा बनी, नही तो वह टूट फूट जाता। अुसके बाद अनेक सस्कृतियों का हमारे साथ सम्पर्क हुआ। यह हमारे और विश्व के लिअे बहुत अच्छी चीज हुअी। हम यह नही समझते हैं कि यहा मुसलमान, अीसाअी और दूसरों का भी जो सम्पर्क आया, अुससे हमें या अुन्हे कुछ नुकसान

हुआ। हम यह मानते है कि सम्पर्क होता है, तो आरम्भ में कुछ-न-कुछ कशमकश, सघर्ष, गलतफहमिया होती है, किन्तु अन्त में अुससे भला होकर जीवन समृद्ध होता है। यदि हम अेक ही सप्रदाय, सस्कृति मे या सम्यता में पलते है और दूसरे सप्रदाय, सस्कृति और सम्यता से सयुक्त नही होते, तो बहुत कुछ सकुचितता आ जाती है। अपने दोषो का भान नही होता। किन्तु जब दूसरो सस्कृति या सम्यता से सपर्क होता है, तो दाप-निरसन और गुणाधान का भी मौका मिलता है। अिस तरह जीवन समृद्ध और विचार व्यापक बनता है।

अिसके आगे सिर्फ गीता और अुपनिषदो के समन्वय से नही चलेगा। बल्कि हिन्दू, बौद्ध, पारसी, जैन, यहूदी, अिस्लाम, ओसाओी, लाओत्से और खाओत्से आदि जो भी विचारक दुनिया में हुअे, जिन्होने दुनिया पर प्रभाव डाला और जिनके पीछे करोडो लोग गये, अुन सब के विचारों का ममान अश ही परम सत्य समझना चाहिये। दिखाओी पडने वाले विभिन्न विचारो की गहराओी में जाने पर यही प्रकाश मिलता है। यह अलग बात है कि अुस अनुभव को किन शब्दो में रखा जाय। अिस पर भिन्नता होती है। अेक को अेक शब्द सूझता है, तो दूसरे को दूसरा शब्द। अेक सामान्य अनुभव को जब हम शब्दो में रखने की कोशिश करते है तो समाधान नही होता। अिसलिअे शब्दो की छानबीन करने वाले अेक-अेक नया शब्द सुझाते है और अुन शब्दो पर आक्षेप अुठाते है। अुससे शब्द-सशोधन में तो मदद मिलती है, पर अुससे भी यदि आग्रह पैदा हुआ, तो वह शब्दजाल बन जाता है, फिर भले ही वह अनुभव भौतिक हो या आध्यात्मिक।

अनुभव भौतिक हो, तो भी अुसे शब्दो में रखने पर समाधान नही होता। किसी को अेक शब्द अच्छा लगता है, तो किसी को नही भी लगता है। हमारी आखो के सामने कुम्हार मिट्टी का घडा बनाता है। वह अितनी मामूली चीज है, जिसके विषय में कुम्हार को कभी सदेह ही नही पैदा हुआ। लेकिन अुसमें तत्त्वज्ञानियो को सदेह पैदा हुआ कि मिट्टी का घडे के साथ क्या सबध है? क्या वह कार्य-कारण है, भेद है, अभेद है या समवाय? क्या अुसमें से परिणामवाद निकलता है कि विवर्तवाद? फिर अेक-अेक वाद पर दूसरे वादी आक्षेप करते है। अेक पूछता है कि क्या मिट्टी और घडा अेक है या अलग? अगर दूसरा कहे कि *"वे अलग पदार्थ है, तो वादी कहेगा*—"अगर वे बिलकुल अलग पदार्थ है, तो हमें हमारी मिट्टी दे दो और तुम अपना घडा ले जाओ, जैसे कि घडी और पखे जैसी दो अलग-अलग चीजो के बारे में होता है।" अिस तरह मिट्टी और घडा अलग-अलग चीजे है, यह कहने में मुश्किल मालूम होती है। तब क्या दोनो अेक ही है? नही, अगर अैसा होता, तो सामने वहा मिट्टी पडी है, अुसमे पानी भरो, कुम्हार की जरूरत ही क्या है? अिस तरह दोनो अेक ही है, अैसा भी नही कह सकते और अलग-अलग है अैसा भी नही कह सकते। अेक बिलकुल सादी-सी बात है—मिट्टी का घडा बनाना जिसके बारे में कुम्हार को कभी भी शका नही हुओी कि यह कार्यकारण, भेद, अभेद विवर्त, आभास, सघात या और क्या है। अिस पर अुसे कभी शका नही आती है। जहा आख के सामने होनेवाले अेक मामूली काम के बारे में भी जब तत्त्वज्ञानियो को शका होती है और समीचीन शब्द नही मिलता—अेक को अेक शब्द

(शेषाश पृष्ठ १८९ पर)

गांधीजी और शांति-सेना

प्यारेलाल नैयर

मैं आपके आगे शाति-सेना के सिद्धातो का विश्लेषण रखू, अिससे बेहतर है कि दो-चार अैसे अुदाहरण दू कि जिनमें शाति-सेना के सिद्धात आ जाते है। फिर आप समझ सकेगे कि शाति-सेना की जड में कौनसी चीज है।

मैंने अेक बार अेक रूसी लेखक की अेक गद्य कविता पढी थी, अुसमें अुसने अेक अैसी घटना का वर्णन किया था जो अुसकी आखो के सामने गुजरी थी। अेक दफा वह अपने बगीचे में सैर कर रहा था, तब अुसने देखा अेक चिडिया और अुसका बच्चा ठड से बेहाल होकर बगीचे की पगडडी पर पडे है, अुड नही सकते है। बहुत दफा आपने देखा होगा कि कुत्ता का पक्षियो से वैर होता है। वे पक्षियो पर धौस जमाते है। अुस चिडिया के बच्चे पर अेक कुत्ता लपका, चिडिया ने अपने पख के प्रहार से कुत्ते को मोडने की कोशिश की। अुसका कुछ असर नही हुआ, तो चोच से प्रहार किया। अुसका भी असर नही हुआ तो फिर चिडिया ने अुडकर अपने शरीर को कुत्ते के तीक्ष्ण दातो के बीच में डाल दिया, कुत्ता झुझलाया और अुसे काट कर अुसके फडफडाते शरीर को अेक तरफ फेंक दिया। किन्तु अिसके बाद वह कुत्ता रुक गया और चिडिया के बच्चे को छोडकर अेक तरफ चला गया। यह अेक अैसा अुदाहरण है, जिसमें चिडिया के अन्दर शारीरिक बल नही था तो भी अुसने बडे बलवान् प्राणी से मुकाबला किया। अुसमे थोडी सी शक्ति होती, और वह कुत्ते के खून की अेकाध बूद निकाल देती तो कुत्ता गुस्से से बच्चे को मार ही डालता। पर अुसने अैसा तरीका लिया जिससे कुत्ते की झुझलाहट खतम हो गयी।

(पृष्ठ १८८ का शेषाश)

ठीक मालूम होता है, तो दूसरे का अुसमें समाधान नही होता, तब आत्मानुभव में अेक का अेक शब्द ठीक लगे और दूसरे का अुससे समाधान न हो, तो आश्चर्य ही क्या है? अिसलिअे शब्दो को अलग कर सार का ग्रहण होना चाहिये।

साराश अब हमें जीवन में अिस्लाम, बौद्ध, अीसाअी, वैदिक हिन्दू धर्म आदि का समन्वय करना चाहिये। मैंने चार विश्व-व्यापक धर्मो के नाम लिये। अुनमें और भी नाम जोड सकते है। अिसके आगे जो समन्वय करना है, अिसके लिअे तटस्थ वृत्ति से सबकी ओर देखना होगा और यह मान ही लेना होगा कि जिन ग्रन्थो के पीछे करोडो लोग लगे है वे ग्रन्थ सत्य-निष्ठ है, सत्य-प्रकाशन की कोशिश करते है। अुन ग्रथो के अुपासक जिस श्रद्धा से अुनका अध्ययन करते है, अुसी श्रद्धा से हमें भी अध्ययन करना चाहिये।

मैं आपके सामने तीन बाते रखना चाहता हू। १ शब्दो का अध्ययन और अुनमें मेल साधने की कोशिश। २ भिन्न-भिन्न धर्मों की अुपासनाओ का अेकत्र अनुभव और ३ जिस-जिस धर्म या ग्रन्थ ने जो जो देन दी है, अुसका अुपयोग कर, सब मानवधर्मों का समन्वय कर मानव जीवन समृद्ध बनाने की योजना।

अब अेक दूसरा अुदाहरण लीजिये। अेक आदमी शराब पीकर रात को घर आया। अुसकी पत्नी ने अुससे पूछा कि क्यों शराब पी। वह गुस्से में आकर पत्नी की तरफ दौडा। अुसका बच्चा पास ही था। अुसने जब देखा कि मा पर आक्रमण हो रहा है तो अुसने बाप को लिपटने की कोशिश की। किन्तु वह गिर पडा और पास के टेबल की नोक से अुसके सिर से रक्त की धारा बहने लगी। वह देखकर बाप का गुस्सा और नशा दोनों अुतर गये। पहले अुदाहरण में चिडिया में तर्क शक्ति नही थी। स्वभाववश होकर ही अुसने सब कुछ किया। लेकिन दूसरे अुदाहरण में बच्चे में अितनी पहिचान थी कि यह मेरे बाप और मा हैं। दोनों मुझपर प्यार करते हैं। मैं बाप को पकडूगा तो कुछ असर होगा। अितनी तर्क शक्ति अुसमें थी। अिस तरह बच्चे ने न होने लायक घटना होने से बचा लिया।

तीसरा अुदाहरण नौआखाली की अेक घटना का है। सुशीला बहन अेक गाव में रहने गअी थी। वहा चारो तरफ सब घर जला दिये गये थे। कअी सौ मन चावल भी जला दिये गये थे। अुसकी राख वहा बिखरी पडी थी। अुन दिनों हिन्दू-मुसलमानो के झगडे चल रहे थे। वहा पर मुसलमान ८५ प्रतिशत और हिन्दू १५ प्रतिशत थे। मुसलमानों का यह तरीका था कि पहले लोगों को लूटना, धन जेवर आदि हासिल करना फिर जबरन लोगो का धर्म परिवर्तन करना, लडकियो को अुठा ले जाना, पीछे घर जलाना और आदमियों को मार डालना। जिस घर में सुशीला बहन जाकर बसी थी, वहा अेक कपाअूंडर रहता था। बल्वे के समय गुडो ने अुस घर में घुस कर चीजो को तोडना शुरू किया था। दीवार में कुछ तस्वीरे लटकी थी। अुनमें कोअी देवता की तस्वीर होगी। अुसको जब तोडा गया तो शीशे का अेक टुकडा टूट कर बलवाअियो के नेता के पांव में लग गया। पाव से लहू निकलने लगा। अुस कपाअूडर ने झट से पैर से शीशा निकाला और मरहम पट्टी कर दी। अिसका अितना असर हुआ कि बलवाअियो के नेता ने हुक्म दिया कि यहा अत्याचार न किया जाय। अिस तरह सिर्फ वही अेक मकान वहा था, जो जलने से बचा। यह अेक तीसरा दर्जा है जिसमें अेक पक्की अुमर का आदमी सोच विचार करके अेक अैसा असाधारण काम करता है, जिससे धर्मान्धता के नशे में चूर आदमी भी अपनी धर्मान्धता को भूल जाता है और अुसमें मनुष्यत्व का भाव अुभर आता है।

चौथी मिसाल पश्चिम पंजाब की अेक घटना है जो अुन्नीस-सौ सैंतालिस में हुअी थी। अुस वक्त हिन्दुस्तान के दो हिस्से हो चुके थे। और हिंसा प्रति-हिंसा की क्रियायें अितनी बढ गअी थी कि व्यक्तिगत काटमार को छोडकर सारे की सारी जाति के ही सर्वनाश (genocide) की बात चलती थी। क्रूरता की कोअी हद नही थी। मनुष्य मनुष्य न रहकर पशु बन गये थे। अुस वक्त गुडे के दल गाव-गाव जाते थे और कहते थे कि गाव की सारी बस्ती धर्म परिवर्तन करे तो ही बचेगी। औरतो और लडकियो को ले जाते थे। अगर कही किसी ने मुकाबला किया तो अुसका अैसा नमूनेदार बदला लिया जाता था जिससे कि दूसरो को पदार्थ-पाठ मिले। वहा पर अेक सिक्खो के गाव में कुछ लोग पहुचे।. गाव के गिर्द घेरा डाल दिया और कहा कि तुम मुसलमान हो

जाओ और तुम्हारी औरते हमारे हवाले कर दो, वे हमारी बनेंगी। औरतों ने यह सब सुना और कहा कि ठीक है मगर पहिले हम जरा हमारे गुरुद्वारे में हो आयें। वहा पर अेक नया कुआ बना है अुसका पानी हमने अभी तक नही पिया। तो वहा जाकर जरा पानी पीने दो और प्रार्थना करने दो। अुन लोगो ने मान लिया। वे वहा चली गयी और प्रार्थना करने लगी। अितने में बाहर से आवाज आयी कि जल्दी से बाहर निकलो, बहुत देर हो गयी। अेक वृद्ध स्त्री ने जवाब दिया "जिसकी हिम्मत हो वह हमें ले जाय"। अिसके साथ ही सब के सब अुदासी बहनें कुअें में कूद पडी। सारा कुआ अूपर तक लाशो से भर गया। सिर्फ अेक लडकी बची। यह सब देखकर वे लोग सहम-से गये। और वहाके लोगोंका धर्म-परिवर्तन करने के लिये अुन्हे मजबूर नही किया। अिन बहनों ने शायद कभी सत्याग्रह का नाम तक नही सुना था। शान्ति सेना क्या चीज है, यह बात अिनकी समझ से बाहर थी, किन्तु अुन्होंने अपने आत्म-बलिदान से अपने पुरुषो का धर्म और प्राण भी और अपनी अिज्जत बचायी। यह अुस जमाने की बात है जब कि बलात्कार से धर्म परिवर्तन करना धर्मकार्य माना जाता था। धर्मान्धता के साथ क्रोध और बदले की भावना भी थी। क्रूरता में दोनो तरफ से कोअी किसी से पीछे नही था। लोग मानते थे कि दूसरे पक्ष के लोगों को मारना हमारा कर्तव्य है, क्योंकि हमारे लोगों को दूसरे हिस्से में अुन्होने कत्ल किया है, अुसका बदला लेना चाहिये। अैसी हालत में अुन स्त्रियो ने अपने आत्म-बलिदान से अपने और अपने पुरुषो के धर्म की रक्षा की यह कोअी कम चमत्कारी बात नही थी।

अिन चार अुदाहरणो में शान्ति-सेना के मूल सिद्धान्तो की लगभग पूरी कल्पना आ जाती है। लेकिन सयोजित रूप से शाति-सेना की स्थापना अभी तक कल्पनामात्र ही है, अुसका पूरा रूप हमें कही नही मिलता। जगत् में कही भी अुसकी पूरी आजमाअिश नही हो सकी है। अुसका विकास देश में किस तरह होगा अिसका अभी पूरा चित्र हमारे पास नही; अेक अज्ञात सागर पर हमें हमारा पथ ढूढना है।

१९१९ में पजाब में मार्शल ला हुआ, तब बहुत-सी जगहो पर जनता ने पागलपन के काम किये। रेल की पटरी अुखाडना, घर जलाना आदि काम हुअे। अंग्रेज सरकार ने भी अुसका बदला सब मर्यादा छोडकर लिया। जलीयानवाला बाग का हत्याकाण्ड हुआ। लोगो को अपमानित करने के कअी नये नये तरीके अंग्रेजो ने निकाले, लोगो को पेट के बल चलने पर मजबूर किया। टिक टिकी से नगे बाधकर शरीर पर बेंत लगायें, आदि। जब बापू ने यह देखा तो कहा कि यह सहन नही हो सकता। अुस समय रोलट अेक्ट के खिलाफ अुनका सत्याग्रह चल रहा था। लेकिन जब जनता ने अैसे पागलपन के काम किये तो बापू विचार में पडे कि अिन लोगो द्वारा मैं सत्याग्रह कैसे चला सकता हू, क्योंकि अिनके हाथ भी निर्दोष रक्त से रगे हैं। अुस समय अंग्रेजो को अपनी जान खतरे में लगती थी, अंग्रेज सरकार भयभीत हुअी थी। सत्याग्रह का अेक महत्वपूर्ण नियम यह है कि भयभीत के सामने अैसी चीज कोअी न की जाय जिससे कि वह और भी भयभीत हो। अिसलिये बापू ने वाअिसराय को चिट्ठी लिखकर नोटीस दी की हम सत्याग्रह को स्थगित करते है। आप अपनी

पूरी फौजी तैयारी कर लीजिये जिससे कि कोअी कहीं बलवा हो तो अुसे आप आसानी से कुचलने को समर्थ हों। किन्तु अिसके पीछे अगर लोगों का अपमान करना बंद नहीं हुआ तो मैं अकेला सत्याग्रह करूंगा। नतीजा यह हुआ कि वे सब चीजें वाअिसराय के हुक्म से बंद हुअीं। यह "वन्-मैन-फोर्स" की शान्ति सेना का पहला अुदाहरण है। अेक आदमी ने अकेले शान्ति-सेना का काम किया। अुसने पहले विरोधी को निर्भय किया, फिर अपने लोगों की भूलों के लिये खुद अनशन करके प्रायश्चित्त किया और सरकार को बतलाया कि जनता के पागलपन से आपको जितना दुख है अुतना ही मुझे भी है। अपने अनशन से और सत्याग्रह को बंद करके अुन्होंने लोगों को पदार्थपाठ भी सिखाया कि आप अगर समझते हों कि मेरे दिल में अेक बात है, और बाहर दूसरी है तो वैसा नहीं है। कुछ लोग समझते थे कि बाहर कहने में तो शान्ति की बातें करनी हैं; लेकिन मौका आते ही मार काट शुरू कर देना है। अिस भ्रम को बापू ने अिस तरह हथौड़े की चोट से अपनी जान को खतरे में डाल कर दूर किया। फिर वाअिसराय ने भी जब देखा कि यह आदमी सच्चा है, युद्ध के समय जिस आदमी ने अपनी जान को जोखम में डालकर भरती का काम किया था वही आदमी अिस हद तक पहुंचा है कि खुल्लम खुल्ला बगावत का झंडा खड़ा करता है तो यह बात समझने की है।

१९२१ के सत्याग्रह के दौरान में प्रिन्स ऑफ वेल्स हिन्दुस्तान में आये तो कांग्रेस ने अुनका स्वागत न करने का तय किया था। लेकिन बम्बअी के कुछ लोग, जिनमें पार्सी अधिक थे और कुछ मुसलमान और अिसाअी भी थे जो सरकार की वफादारी का दम भरते थे, स्वागत करना चाहते थे। अिस पर लोगों ने दंगा शुरू किया। हड़ताल होने पर जिन्होंने दूकानें बंद नहीं की थीं, अुनका अपमान करना शुरू किया। कुछ पारसी स्त्रियों को भी अपमानित किया गया और गुंडापन चलने लगा। परिस्थिति कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के हाथ से निकल चुकी थी। सरकारी पुलिस राह ताक रही थी कि देखें अब गांधी क्या करता है? अगर गांधी सहायता के लिये सरकार के पास आयेगा तो अुसके असहयोग का खात्मा होगा, नहीं आयेगा तो अुसकी अहिंसा का खात्मा होगा। अिस तरह भट्टी या भाड़ में गिरने की बात थी। लेकिन बापू ने तो आमरण अुपवास शुरू कर दिया। और अुसके साथ-साथ हिन्दू, मुसलमान, पार्सी, ईसाई, अिनमें से जो लोग हमारे असर में थे अुन सब को कहा कि मिश्रित टोलियां बनाकर जहां दंगा हो रहा है वहां जाओ और जनता से कहो कि पहले हम पर पत्थर फेंको। सब लोग अुस संयुक्त टोली में थे। कौन किस पर पत्थर फेंकता? अुधर बापू का अुपवास तो चल ही रहा था, लोगों के मन में मन्थन शुरू हुआ कि हमने क्या किया? अुस वक्त बहुत से कांग्रेस के लोग मानते तो थे कि अैसी चीज नहीं होनी चाहिये। परन्तु वे अुसे रोकने की पूरी कोशिश नहीं करते थे। और आम जनता में भी कहीं-कहीं दंगे के प्रति अुदासीन भावना थी, तो कहीं दंगा करने वालों के साथ सहानुभूति भी थी। दंगे के दरम्यान आम जनता का क्या रुख है-क्या दंगा करनेवालों के प्रति अुसकी निष्क्रिय सहानुभूति है? पूरी सहानुभूति है या अुदासीन भाव है-यह अेक महत्व की बात होती है। अिन तीनों में से अेक भी न हो तो तूफान करने वाले आदमियों को

वल नही मिलता, क्योंकि वे तो थोडे ही होते हैं । परन्तु अक्सर अैसे मौके पर आम पागलपन की हवा (मास हिस्टिरिया) पैदा होती है । यह अेक अजीब चीज है कि हम व्यक्तिगत रूप में जो चीज नही करते वह समूह में कर डालते हैं । रसायन-शास्त्र में भी यह बात आती है कि थोडे प्रमाण में जो क्रिया होती है, प्रमाण बढने पर होनेवाली क्रिया अुससे भिन्न होती है । "मास–अेक्शन" अलग प्रकार का ही होता है । अणु में यूरेनियम् के दो टुकडे पास-पास रखे जाय तो कुछ नही होता है, परन्तु दोनो को मिला देने से अेक "क्रिटिकल लिमिट" पहुचने पर विस्फोट होता है । मानवी जगत् में भी सामूहिक मानस-शास्त्र को कुछ अैसा ही नियम लागू होता है । बापू ने अपने अुपवास द्वारा जनता की शिथिलता या निष्क्रिय सहानुभूति को दूर किया । अिसके परिणाम स्वरूप बम्बअी की हवा बदली और तीन दिनो में शाति स्थापित हुअी । अिस अुदाहरण के अन्दर अेक गहरा सिद्धान्त भरा है । जैसे डायनेमो और मोटर दो चीजें होती हैं–डायनमो के बल मोटर चलती है–वैसे ही यहा अेक छोटे बल के पीछे दूसरा अेक बल था जिससे यह काम हुआ । वह बल गाधी जी का तप था । अुस वक्त जो सयुक्त टोली दगे वाले हिस्से में जाती थी अुसके पीछे अुपवास शय्या पर पडे हुअे गाधीजी की तपस्या अपना काम करती थी । अुस सयुक्त टोली में अैसे लोग थे जिन्हे सब जानते थे । अुन्होने जनता की बहुत सेवा की थी और आम जनता में अुनको बडी प्रतिष्ठा थी । अुनमें सब धर्मवाले शामिल थे । अिसलिये क्षेत्र में अुनके निकलने से अेक चमत्कारी काम हुआ ।

अेक और अुदाहरण साबरमती आश्रम का है । अेक वक्त आश्रम के नजदीक क्रिमिनल ट्राअिब्ज (जुरायम पेशा) लोगो ने डेरा डाला था । अुन्होने आश्रम में रात को आकर चोरी करनी शुरू की । कुछ लोगो को अुन्होने पीटा भी । बापू ने कहा कि यह ठीक नही है कि आप अिस तरह अपने को लुटाते रहे । अुसके लिअे कुछ न-कुछ करना ही होगा । पहली बात तो यह है कि आप सोचें कि यह चोरी होती है, अुसका अर्थ क्या है । क्या अिसमें हमारी भी कुछ जिम्मेदारी है, हमारे साथ कही कोअी बुराअी होती हो तो अुसका कारण अपने अन्दर ढूढना चाहिये । खुद हममें बुराअी न हो तो हमारे आसपास भी बुराअी नही होगी । यहा चोरी होती है, अुसका अर्थ यह है कि आश्रम-वासियो के पास ज्यादे सम्पत्ति है आप लोग अपरिग्रह के नियम का भग कर रहे हैं । बोलने में तो अपरिग्रह की बाते करते हैं, परन्तु अुसका पालन नही करते । अिसलिअे पहले तो अन्तर्मुख होकर परिग्रह को आप छोडें । अगर आप परिग्रह नही छोड सकते हैं तो फिर अेक ही रास्ता आपके पास रह जाता है–यानि कि हमला करनेवालो का मुकाबिला करो और अुसमें मर भी जाओ । अगर मरने से डर लगता है तो बेशक बन्दूक रखो । किन्तु वह अहिंसा नही होगी । अुसे मैं क्षम्य हिंसा मानूगा । कायरता को मैं अक्षम्य समझता हू । मगर अिसके साथ-साथ आप यह भी समझ ले कि फिर आप अिस आश्रम का नाम सत्याग्रह आश्रम नही रख सकते । बापु की अिस बात से सब सोचने लगे कि हम अपरिग्रह का नाम तो लेते हैं, लेकिन परिग्रह करते हैं । यह अेक मूल का दोष है । हमें चोरीपेशा लोगो के पास जाना चाहिये, अुनके आगे अपना दोष स्वीकार करना

चाहिये और अुनके जीवन में प्रवेश करके अुनके आर्थिक-संकट को दूर करना चाहिये कि जिससे वे चोरी करने पर मजबूर न हो। चुनाचे अिस तरह आश्रमवासी अुन लोगो के बीच गये, अुनसे परिचय किया, कुछ सेवा की तब डाके बन्द हुअे।

असहयोग आन्दोलन के दरमियान-खास करके प्रिंस आफ वेल्स के आगमन के समय-हिन्दुस्तान में कांग्रेस की तरफ से स्वयं-सेवक दल बनाने की अेक ओजना बनायी गयी थी। अुसका अुद्देश्य यही था कि कही भी दंगा न होने पाये और हो तो अुसे अहिंसक कार्रवाई से मिटाया जाय। अुस दल की नियमावलि में अेक नियम यह था कि अुसमें भरती होनेवाला हथियार नही रखेगा, लाठी नही चलायेगा। दूसरा नियम था कि वह वेतन की अपेक्षा नही रखेगा। तीसरा नियम यह था कि अुन लोगों की अेक खास किस्म की खादी की वरदी होगी, जिससे वे पहिचाने जायेंगे। चौथा नियम था कि दल के नेता का आदेश सारे सैनिक पूर्णतया अमल में लायेंगे। पाचवा नियम था कि वे मन, वचन और कर्म से अहिंसा का पूरा पालन करेंगे। छठा था कि अुसमें दाखिल होनेवाले सब धर्मों को समान समझेंगे। अुनमें कट्टरपन और धर्मान्धता नही होगी। अहिंसक स्वयं-सेवक दल की यह कल्पना बहुत आगे न चली। अिस दल वालो का काम मुख्यतः यही रहा कि कांग्रेस के जलसो में व्यवस्था करना और मौका आने पर जेल जाना। अुसमें मिश्र प्रकार के लोग थे। कुछ तो अहिंसा को मानते थे और कुछ नही मानते थे। परन्तु जो नही मानते थे, वे भी नियन्त्रण रूप अहिंसा का पालन करते थे। अैसे शान्ति-सैनिको द्वारा हमने नमक सत्याग्रह की लडाअी भी लडी और अुस में जीत हासिल की। अिसमें मर्म की चीज यह निकली कि यद्यपि लोग अहिंसा को पूरी तरह नही समझते थे फिर भी अैसे अेक नेता का नियन्त्रण वे स्वीकार करते थे जो कि अहिंसा को पूरी तरह मानता था। अिस तरह साधारण लोगो से भी हम अेक बडी शांति-सेना खडी कर सकते हैं अगर हमारे बीच कुछ अैसे अग्रसर लोग हो जिनकी अहिंसा पर पूरी निष्ठा हो और सैनिक अिन लोगो के सब नियन्त्रण का श्रद्धापूर्वक पालन करते हो।

(क्रमशः)

मैंने अिस विचार का विरोध किया कि अहिंसा सिर्फ बहुत अूंचे दर्जे के लोगों के लिअे संभव है और मेरा दावा है कि अगर अुचित शिक्षा दी जाय तथा ठीक नेतृत्व किया जाय तो सर्व साधारण लोग भी अहिंसा का अभ्यास कर सकते हैं।

—गांधीजी

गांव ही शाला बन गया

राधाकृष्ण

शाला की चार-दीवारो के बाहर आकर समाज में-जिस समाज में शाला है-जो समस्यायें, साधन और सपत्ति मौजूद है, अुन्हीको शिक्षा का माध्यम और जरिया मानकर शिक्षाक्रम चलाने का प्रयोग शिक्षा-जगत् के लिअे कोअी नया नही है। नअी तालीम के आरम्भ से ही हम ने यह मान लिया था कि शिक्षाक्रम राष्ट्रीय आवश्यकताओ को और समस्याओ को सुलझाने का या पूरा करने का जरिया होना चाहिये। प्राकृतिक वातावरण, सामाजिक वातावरण दोनो से शिक्षाक्रम को सीचना है, अुसी से शाला का कार्यक्रम अुद्देश्य-पूर्ण और तेजस्वी बनेगा। समाज की सपत्ति और साधनो को शिक्षण के जरिये मान कर अमेरिका देश के कुछ राष्ट्रो में और फिलिपाअिन्स में लोक-शिक्षण के प्रयोग हुये है, और अिन प्रयोगो के आधार पर लोक-शिक्षण आन्दोलन— कम्यूनिटी स्कूल मुव्‌मेंट—प्रसिद्ध है।

अिन लोकशालाओ के आधार अिस सिद्धान्त पर है कि शाला का कार्य शाला में आनेवाले विद्यार्थियो का शिक्षण ही नही, बल्कि समाज का समग्र विकास ही अुसका ध्येय है [टोटल कम्यूनिटी डेवलपमेंट]। समाज में जो सपत्ति और साधन है, अुनकी खोज, अुनका अुपयोग, और अुनका विकास यह सब शिक्षण-कार्य का अग है, शैक्षणिक प्रक्रियायें है। समाज में जो प्राकृतिक या सास्कृतिक साधन अुपलब्ध है, सपत्ति मौजूद है, वे सब शिक्षण के साधन है, और शिक्षण के साधन बन कर ही समाज का स्तर अुचा अुठाने के काम में आने चाहिये। अुससे दोहरा फायदा होगा। अेक तो शिक्षण को जीवित बना सकेगे, वह सोद्देश्य होगा और समाज का विकास भी साथ-साथ सधेगा। सपत्ति के विकास से समाज के जीवन के स्तर में कुछ अुन्नति शायद सभव हो सकेगी। अिन शालाओ में समाज की सब समस्यायें आ जाती है, और अुन्हे हल करना शिक्षण की प्रक्रिया है। अिन शालाओ में यह बताना मुश्किल होगा कि शाला का काम कहा खतम होता है, और समाज का काम कहा आरम्भ होता है। कअी शालाअें है, जिन्होने अपने शिक्षाक्रम में नैसर्गिक और सामाजिक परिस्थिति का अध्ययन करने का कार्यक्रम बनाया। पुस्तको के जरिये शिक्षण जो चलता था, अुस शुष्क कार्यक्रम को सजीव बनाने और परिपुष्ट करने में अिससे मदद मिली। कअी शालाओं के विद्यार्थी समाज में जो अुद्योग धन्धे चलते है, अुनमें जाकर शरीक हुअे। अिससे विद्यार्थियो के भावी जीवन के लिअे अुपयुक्त काम खोजने और अुनकी दिलचस्पियो को पहिचान कर मौके के अनुसार अपने कार्यक्रम में जरूरी परिवर्तन करने का अवसर अिन शालाओ को मिला। अैसी कुछ शालाअें भी है, जहा शाला की अिमारतें, आगन, वाचनालय या रगमच समाज के कामो में आता है। अुत्सव-त्योहार, जो शाला में मनाये जायेंगे, वे समाज के लिअे भी है, समाज के लोग अुसमें भाग लेते है, और शाला और समाज का अेक घनिष्ठ सम्बन्ध निष्पन्न होता है। शालाओ के शिक्षा-

का प्रबन्ध करना कुछ समय के लिअे शाला का मुख्य नाम, मुख्य कार्यक्रम बन जाता है।

अेक शाला की कहानी है–शाला चट्टान पर स्थित है। आसपास के गावों से करीब छ मी तक विद्यार्थी आते हैं। विद्यार्थी रोज देखते हैं कि ट्रक में भर कर आसपास के जगल की कटी हुअी लकडी स्कूल के सामने से ही मिलो के लिये रवाना होती है। शाला के मुख्य को अिस बात की चिन्ता हुअी कि यह व्यापार कब तक चलेगा और क्या अिस ढग के शोषण से वहा का आर्थिक चित्र बहुत बदल नही जायगा। सारा जगल काटने के बाद क्या हालत होगी? अिस समस्या पर शिक्षकों ने चर्चा की। यह शाला की समस्या बनी और विद्यार्थियो और शिक्षकोंने मिल कर लोगो के साथ चर्चा करके वृक्षारोपण की अेक बहुत बडी योजना बनायी। कुछ ही साला में अुस अिलाके का रग और रूप अितना बदला और अुजड जाने वाले समाज को वहीं बसने का मौका मिला। यह कहानी बडी रोमाचक है।

दूसरी अेक शाला मे सिर्फ विद्यार्थिया को दाखिल नहीं करते, बल्कि परिवार दाखिल होता है। शाला के लिअे जो छोटा सा खेत है, अुसमें शाला क विद्यार्थी ही नही बल्कि सयान भी बुलाये गये, अुन लोगो ने भी खेती की और सामाजिक जीवन बिताया। कअी परिवार पाज-पाच साल रहकर गये। नया ज्ञान और कुशलता तो प्राप्त की ही, और खेत में काम करने से जो पैसे बचे अुससे घर लौटने के पहले कुछ साधनो को खरीदने का मौका भी प्राप्त हुआ। और वे सयाने भी सिर्फ अपनी खेती नहीं करते हैं, [illegible] विकास में पूरा-पूरा भाग लेते हैं।

[illegible] मिचिगन की लोकशालायें मशहूर हैं। कुछ शालायें चुनकर लोकशालाओ में परिवर्तित करने की योजना बनायी गयी। अिन शालाओ के कुछ बुनियादी अुसूल सोचे गये।

१ शाला को समाज के सामाजिक, आर्थिक राजकीय और नैतिक जीवन के साथ अेकरूप होने के लिये कोशिश करनी चाहिये। समाज के नागरिको के व्यक्तिगत जीवन के साथ सम्बन्ध बढाने के लिये और सामाजिक जीवन की जरूरतों को पूरा करने के लिये यत्न करना चाहिये।

२ शिक्षाकार्यक्रम में शाला समाज में अुपलब्ध साधन सामग्री व सपत्ति को शिक्षण का साधन मानकर पूरा अुपयोग में लाने के लिये कोशिश करेगी, समाज के हित के लिये काम करने वाली सस्थाओ के साथ पूरा सहकार करके समग्र समाज विकास की भी कोशिश करेगी। समाज में अैसे व्यक्तियों को ढूढेगी, जो सघो और सस्थाओं से अलग रहकर भी समाजहित के लिये मदद दे सकेंगे।

३ शाला की सुविधायें समाज के सब कामो के लिये प्राप्त हो सकेगी। शाला समाज में लोक कल्याण के लिये किये जाने वाले सब कार्यक्रमो का समन्वयस्थान बन जायगी और प्रत्यक्ष रूप में समाज सेवा में योग देकर समाज विकास को अपने कार्यक्रम में प्रमुख स्थान देगी। अिससे विद्यार्थियो को सगठन और व्यवस्था की शिक्षा देने में भी मदद मिलती है।

४ अपने समाज का बाहर के समाज के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध जोडने के हेतु जो राष्ट्रीय, प्रदेशीय या अन्तर्राष्ट्रीय सस्थायें विश्वकल्याण के काम में लगी हैं, अुनके साथ सम्पर्क स्थापित करना। दूसरे देशो की समस्याओ को

और अुन समस्याओं के हल किस प्रकार किये जाते हैं, अुस ज्ञान को अपने समाज में पहुंचाना।

५. समाज की व्यवस्था में प्रजातान्त्रिक-पद्धति की स्थापना और विकास करना।

अिन बुनियादी अुसूलों को लेकर शाला के शिक्षक और समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने कअी दिन बैठकर चर्चा की और योजनायें तैयार की। स्थानीय सरकारी अधिकारियों की मदद से लोक शिक्षण का काम जोर से चला। सर्वे का काम स्कूल कालेजों के प्रमुखों की मदद और मार्ग दर्शन में चला, जिससे समय-समय पर काम की जाच करने में सुविधा हुअी। आरोग्य-स्थिति, धार्मिक और सामाजिक समस्यायें, अुद्योग और व्यापार, व्यक्तिगत मालकियत, आर्थिक परिस्थिति अिन सब के आकडे तैयार हुअे। कअी अध्ययन मण्डलिया वनायी गयी। कोअी खेती सुधार का अध्ययन करते, कोअी आरोग्य केन्द्रों के बारे में, कोअी जीवन सयम के बारे में कोअी तालीम के प्रबन्ध के बारे में। अिन अध्ययनों के फलस्वरूप कअी आरोग्य केन्द्र आरम्भ हुअे, व्यापार मे आपसी समझ और सहकार स्थापित हुआ। गायों का सुधार हुआ, कुछ ही सालो में नये और बेहतर नसले अुत्पन्न हुअी और दूध का अुत्पादन वढा। और अिन कार्यक्रमो की वजह सामाजिक जीवन का बोध अुस समाज में फैलने लगा। परस्पर सुख-दुख और क्षेम का विचार लोगों के मन में अुत्पन्न हुआ। सामूहिक तौर पर खेल और मनोरंजन के कार्यक्रम आरम्भ हुअे।

यह तो रहा कुछ शालाओं का नमूने का काम। ये सब शालायें यह अुम्मीद रखती है कि लोकशाला आन्दोलन से अेक समाज में अुपलब्ध सम्पत्ति और साधनो का पूरा-पूरा अुपयोग हो जाना चाहिये। लोगों को भरपूर आहार और वस्त्र और रहने के लिये मकान मिलना चाहिये। समाज की तन्दुरुस्ती वढे और लोगों का जो खाली समय है, अस का अुपयोग सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों के विकास में हो। अुस समाज में लोग नागरिकता और प्रजातन्त्र के ध्येय और धर्म को अच्छी तरह समझें, धार्मिक और नैतिक मूल्यों को पहिचानें और अपने जीवन में लागू करने के लिये कोशिश करें। समाज में सब को काम का मौका मिले और वह काम समाज को भौतिक, नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास की ओर ले जाने वाला हो। अिस कार्यक्रम से विद्यार्थियों को यह कुशलता प्राप्त होने की अुम्मीद की जाती है, जिससे वह व्यावहारिक तालीम खूब पा सके, कोअी समस्या को लेकर अुसकी सब पहलुओं पर विचार करके परिस्थिति को समझकर हल की योजना बनाने की योग्यता प्राप्त करे। काम अकेले न कर सब के साथ मिलकर योजना तैयार करने और अुसको सब की सहकारिता से अमल में लाने की अुनकी दक्षता हो। कअी अुद्योग धन्धों में काम करने की कुशलता अुसे प्राप्त हो। विद्यार्थियों को लोगों के स्वभाव का परिचय हो। प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण का पहचान हो। वे अपने विचारों को प्रामाणिकता और स्पष्ट रूपसे रख सके। अुन्हे खुले ढग से विचार-विमर्श करने की शक्ति हो। सौंदर्य-बोध का निर्माण हो। चारों ओर की प्राकृतिक संपत्ति में सौंदर्य को पहचानने की और अनुभव करने की वृत्ति हो। साहित्य, विज्ञान, कला और लोक जीवन में अुनकी अच्छी आमरुचि हो। अुन्हे जीवन के सही मूल्यों का बोध हो।

बाल शिक्षा की कुछ प्राथमिक बातें

काशीनाथ त्रिवेदी

(गताक से आगे)

अब तक की चर्चा से हमने यह देखा है कि हमारे घरों में बच्चा जब दुखी होता है, तो वह अपनी किसी कमजोरी, कमी, खामी या अयोग्यता के कारण दुखी नही होता अुसके दुख की जड में प्राय. हमारा अज्ञान होता है। हम चाहते है कि बच्चा हमारे घर में आये, पर अुसके आने से पहले अुसके लायक न हम अपने को बनाते है और न अपने घर को बना पाते है। बहुत ही अधकचरी और अधपकी हालत मे हम बच्चे के माँ बाप बन बैठते है, और फलत. हमारे घर में बडी मिन्नतो के बाद भगवान् का भेजा जो बालक आता है, अुसकी कोअी सतोषजनक व्यवस्था हम कर नही पाते। जहा खान का ठिकाना नही, पहनने का ठिकाना नही, आसरे का ठिकाना नही, काम धधे का ठिकाना नही, वहाँ मा बाप के बुलाने से बच्चे को तो आना ही होता है, पर आने के बाद अुसको जिन हालतो में से गुजरना पडता है अुनके कारण अुसका जीवन आदमी के बच्चे के जैसा नही बन पाता और वह मा बाप के लिये अेक समस्या खडी कर देता है। गरीबी पैसे की हो तो चल सकती है, पर दिल की और दिमाग की गरीबी बच्चे के लिये बहुत ही नुकसान पहुचनेवाली होती है और यह गरीबी तो बच्चे को अच्छे-अच्छे घरो में भी भुगतना पडती है। जिन घरो में खूब पैसा है, वहा भी दिल और दिमाग की गरीबी के कारण बच्चे को अनगिनत सकटो में से गुजरना पडता है और अुसका जीवन जिस तरह खिलना चाहिये, खिल नही पाता। अिसलिये समाज और राज दोनों को अिस गभीर समस्या के बारे में बहुत गहराअी से सोचना चाहिये। अभी तक अिस तरह सोचने का सिलसिला हमारे देश में व्यापक रूप में शुरू नहीं हुआ है, और अिसी से हम सब अधेरे में भटक रहे है।

अबतक हमने बच्चे के जीवन की करुणता का कअी पहलुओ से विचार किया। और अुससे बचने के कुछ अुपायो की चर्चा भी की। आगे हम यह देखेंगे कि आज की हमारी सामाजिक हालत में घर और समाज के अदर बच्चे के सही-सही विकास में रुकावट डालनेवाली, और कौन-कौन सी खतरनाक बाते है। अिस छोटे से लेख में सारे खतरो की चर्चा करना तो सभव न होगा फिर भी कुछ थोडी बातो का विचार हम नीचे करेगे :—

(पृष्ठ १९८ का शेषाश)

अिन कार्यक्रमो से विद्यार्थी अपने आपको अपने ही छोटे समाज के सदस्य न मानकर विश्वपरिवार का सदस्य बनने की कोशिश करे। सब समस्याओं को मानवता की दृष्टि से देखे और सकुचित मनोवृति को छोड दे। यही लोकशाला के अन्तिम अुद्देश्य रहेंगे। शाला और समाज के परस्पर सम्बन्ध और परस्परावलम्बन अिन कार्यक्रमो से प्रकट होते है। शाला को समाज के समग्र जीवन के विकास के लिअे अेक जरिया बनाने का मौका मिलेगा।

१. बच्चे को विश्वास दीजिये :

अक्सर यह देखा जाता है कि हमारे घरो में बच्चो को विश्वास का वातावरण नही मिलता। बच्चा तो जन्म से ही विश्वासी होता है। अपने माता पिता पर और विशेष कर माता पर तो अुसका अटूट विश्वास रहता है। किन्तु जैसे-जैसे घर में वडा होता जाता है, वैसे-वैसे हमारे अपने गलत व्यवहार के कारण हम पर से अुसका विश्वास अुठने लगता है। अनुभव से बच्चा अिस नतीजे पर पहुचता है कि माता अथवा पिता की वात का सदा ही भरोसा नही किया जा सकता। सचमुच बच्चे के जीवन के लिअे यह अेक कठिन अवसर होता है। अगर हम चाहे और कोशिश करे, तो बच्चे को अिस कठिनाअी से वचा सकते है और घर में अैसी हवा बना सकते है जिससे बच्चे का विश्वास घर के वडो के प्रति बराबर बढता चला जाय। किन्तु थोडे ही अैसे भाग्यशाली घर होते है जहा बालकों को आरभ से अत तक अपने वडों का पूरा विश्वास सहज भाव से मिलता है। अक्सर पाया यह जाता है कि हम खुद बच्चे के सामने कुछ अैसी वाते कह देते है और अुसे कुछ अैसे वचन दे देते है जिन पर हम बराबर टिके नही रहते और न जिनका ठीक से पालन कर पाते है। डेढ-दो साल का बच्चा अपने माता पिता को जब कही घर से बाहर जाते देखता है तो वह भी अुनके साथ जाने के लिअे तैयार हो जाता है। मा बाप अुसे अपने साथ ले जाने की हालत में नही रहते। अिसलिये तत्काल बच्चे को समझाने के लिअे अुससे वे कुछ अैसे वायदे करके जाते है, जिन्हे पूरा करने की असल में अुनकी कोअी तैयारी नहीं होती। लेकिन बच्चा तो मा बाप की बात पर पूरी तरह भरोसा कर लेता है और अिस आशा से कि मा-बाप दिये गये वादे को पूरा करेंगे, वह घर पर रह जाता है और मा-बाप के वापस लौटने की राह देखता रहता है। जब अपना काम-काज करके मा बाप घर आते है तो अुन्हे बच्चे के साथ किये गये वादे का ध्यान नही रहता। शुरू से ही वे अपने मन में चोर रखकर बालक से अेक झूठा वादा करते है और फिर अुसे पूरा करने का कोअी आग्रह नही रखते। जब बालक को पता चलता है कि मा-बाप जो वादा करते है, अुसे वे फिकर के साथ पूरा नही करते तो अुसके विश्वास को जोर का धक्का लगता है, और जब अुसे कअी बार अिस तरह से अनुभव होते है, तो अुसका विश्वास अेकदम अुठ जाता है, और वह बहुत दुखी हो जाता है। अुसके सामने अेक वडा सवाल खडा हो जाता है कि वह अब घर मे किसका भरोसा करे। अपने मन की बात किसे कहे? अपनी जरूरते किससे पूरी कराये और अपना 'खजाना' किसके हाथ में सौंपे? बालक को कोअी रास्ता नही सूझता। नतीजा यह होता है कि वह अपने पास की कोअी चीज, जो अुसे अुस अुमर में बहुत प्यारी और बहुत कीमती मालूम होती है, मां-बाप को नहीं दिखाता और अुसे कही किसी अेक अेकात जगह में छिपाने की कोशिश करता है। जब बालक की अैसी मन:स्थिति बनती है और अुसके व्यवहार में अिस तरह का फरक पैदा होता है, तब मा-बाप के सावधान होने का और अपनी भूल को तत्काल सुधार लेने का अेक मौका रहता है। लेकिन अगर समय रहते वे सावधान नही हुअे, और अुन्होंने अपने को नही सभाला तो अुनके और बालक के बीच की

खाअी बढती जाती है और फिर अुसका कोअी अिलाज करना बहुत ही कठिन हो जाता है। अक्सर अच्छे पढे लिखे समझदार और जिम्मेदार माता पिता भी बालकों के व्यवहार में अिस प्रकार की भूलें कर बैठते हैं। अिन भूलों का बहुत ही कडुआ फल अुन्हें भोगना पडता है और दोनों तरफ से गाठें कुछ अैसी मजबूत होती जाती हैं कि फिर अुन्हें काटना बहुत ही कठिन हो जाता है। अिसलिये बच्चे के साथ व्यवहार करते समय हमेशा बहुत सावधानी बरतने की जरूरत है। बचपन में हम बच्चे को जितना विश्वास देंगे, अुतना ही बडेपन में वह दूसरों का विश्वासपात्र बन सकेगा और अुसके व्यवहार में अुतनी ही दृढता रहेगी। आज समाज में परस्पर विश्वास की जो कमी पायी जाती है अुसकी जड में बचपन में पैदा हुआ यह अविश्वास ही बडी हद तक काम करता है। दुनिया तो विश्वास से ही चलती है। बालक का जन्म भी विश्वास के भरोसे ही होता है। अुसका जीवन भी विश्वास पर ही आगे बढता है। पर जब अपने मा-बाप से ही अुसे अविश्वास मिलता है तो वह परेशान हो जाता है। नतीजा यह होता है कि अुसके व्यवहार में जिद् को जगह मिल जाती है, वह हठी बनता है, झगडालू बनता है, रो-रो कर और झगड-झगड कर या दूसरी तरह के अुपद्रव खडे करके भी वह घर के बडों से अपने मन का काम कराने की तरकीबें सोचता रहता है और समय-समय पर अुन तरकीबों के अनुसार काम भी करता रहता है। जब अुसे सीधी तरह से और सहज भाव से विश्वास नहीं मिलता तो वह टेढे-मेढे रास्ते अपना कर घर के लोगों को हैरान-परेशान करता है और खुद भी हैरान होता है। अिसलिये यह बहुत जरूरी है कि हम अिस मामले में खूब चौकन्ने रहें और जान बूझ कर अैसा कोअी काम न करें, जिससे बालक में हमारी बात पर से भरोसा अुठ जाय।

२ बालक को भय और लालच से बचाअिये—

आज के हमारे समाज में भय और लालच को चलते सिक्के का रूप प्राप्त हो गया है। आम तौर पर लोग यह मानते हैं कि किसी से कोअी काम कराना हो तो या तो डरा कर कराया जा सकता है या लालच दे कर। बिना डराये या या बिना ललचाये प्रेम-प्रीति के रास्ते किसी से कोअी काम कराने की बात पर आज आम तौर पर भरोसा नहीं रहा है। अिसलिये क्या घर में और क्या घर के बाहर समाज में तथा राज में हम अकसर अपने छोटे बडे काम निकालने के लिये भय और लालच के हथियारों से ही काम लेते हैं। अिस तरह भय और लालच की शक्ति में जो अेक गलत विश्वास हमारे अंदर पैदा हो गया है, अुसका प्रयोग हम बच्चों पर भी करते रहते हैं। नतीजा यह हुआ है कि बच्चों को डराने और ललचाने के कअी तरीके हम ने खोज लिये हैं, और हम रामबाण हथियार की तरह अुनका पूरे विश्वास के साथ अुपयोग करते हैं। लेकिन जानकारों का कहना है कि अैसा करके हम बडी गलती करते हैं और खास कर बच्चों को गहरा नुकसान पहुचाते हैं। हमने मान लिया है कि बिना डराये और बिना ललचाये बच्चे हमारी बात सुनेंगे नहीं और हमारा कहा करेंगे नहीं। डर का सब से बडा साधन मार पीट है। मारने पीटने का डर दिखा दिखा कर हम अपनी मर्जी का काम बच्चों से करा तो लेते हैं। लेकिन बच्चों के मन पर और अुनके जीवन पर अुसका बहुत ही बुरा असर होता है। विचार-

वान लोग कहते है कि मनुष्य अेक विचार करने वाला प्राणी है। विचार अुसकी वहुत वडी शक्ति है अिसलिअे अुससे जो भी नया काम हमें कराना हो, विचार समझा कर और जचा-कर ही कराना चाहिये। डर का विचार के साथ कोअी मेल नही बैंठता, जहा डर है वहा विचार नही टिकता और जहा विचार है वहा डर नही टिकता। अिसलिअे समझदारी का तकाजा यह है कि बच्चो के साथ व्यवहार करते समय हम डर का सहारा लेना छोड दें और विचार का सहारा लें। मारने पीटने से, डराने-धमकाने से वालक के मन में तरह-तरह की गाठे बध जाती है। वह निडर नही वन पाता। सच बोलने की अिच्छा और भावना रहते हुअे भी डर के मारे अुसे झूठ वोलना पडता है धोखा देना पडता है, दवना पडता है और कमजोर बनना पडता है। हम तो जोश में आकर होश खो बैंठते हैं। बच्चे को डरा देते हैं। मार पीट देते हैं। परतु बच्चो के लिअे हमारा यह व्यवहार बहुत महगा पड जाता है। अिसलिअे बच्चे सामने हो तो अुनको मारने पीटने डराने धमकाने या और किसी तरह से परेशान करने से पहले हमें दिल दिमाग ठण्डा रखकर हजार बार सोचना चाहिये। आजाद हिन्दुस्तान में हमें तो निडर वालकों की वडी जरूरत है। जब तक बालका और वडो में अूचे दर्जे की निडरता नही आयेगी तबतक स्वराज्य के काम को अच्छी तरह चलाना और सफल बनाना हमारे लिअे सभव नही होगा।

जिस तरह बच्चा को डराना गलत है, अुसी तरह ललचाना भी बहुत गलत है। आज हम अपने घरा मे और पाठशालाओ में भी वालको को ललचाते है। लालच दे दे कर अुनसे अपनी मर्जी के काम कराने की कोशिश करते है। बाल-जीवन के लिअे लालच का यह विष बहुत घातक होता है। लालची आदमी की तरह लालची बालक भी जीवन मे दुख पाता है, और गहरी निराशा का अनुभव करता है। अुसके व्यवहार में कअी तरह की खराबिया पैदा हो जाती हैं। और वह सचाअी से अीमा-नदारी से और वफादारी से कोसो दूर चला जाता है। हम वालको को पैसों का लालच देते है, मिठाअी का लालच देते है, छोटे बडे अिनामो का लालच देते हैं। अिसके सामने होड का विचार रखते हैं, हार-जीत का विचार रखते है और अुसे अेक तरह का नशा पिलाते है। जबतक लालच या अिनाम का यह नशा अुसपर सवार रहता है तबतक वह भूत बन कर काम करता है, आगा-पीछा नही सोचता, विवेक और विचार से बहुत दूर भटक जाता है और अपने को कअी तरह से गिरा लेता है। अुसके मन मे अेक ही धुन रहती है कि किस तरह अिनाम जीता जाय, किस तरह खुद लाभ मे रहा जाय और दूसरो को हानि पहुचायी जाय। अिस वृत्ति का शिकार होने के बाद मनुष्य के हाथो बडे-से बडे दुष्कर्म होने लगते है, और अपने जीवन में वह भयकर रूप से लालची बन जाता है। अुससे घर, समाज, देश सब को बे-हिसाब नुकसान होता है। लालची आदमी को बुरे-से-बुरे काम के लिअे खरीद लेना आसान हो जाता है। वह कब किसके साथ धोखा करेगा अिसका कोअी ठिकाना नही रहता है। समाज में अुसकी कोअी साख नही रह पाती। और भी कअी अनर्थ अुसके हाथों होते रहते है। अिसलिये शुद्ध जीवन और शुद्ध आचार-विचार का आग्रह रखने वाले विचारक लोग

हमें सलाह देते हैं कि हम घरो में, पाठशालाओ में और समाज में भी लालच का सहारा ले कर कोओी काम न करे। सचमुच मनुष्य जीवन के लिअे लालच अेक बुरी बला ही है। अतअेव जो माता पिता या शिक्षक बच्चो के साथ व्यवहार करते समय लालच का प्रयोग करते हैं, वे बहुत बडी गलती करते हैं और बच्चो को गहरे नुकसान मे अुतारते हैं। आज कल समाज में होडाहोडी की हवा बहुत जोर पकड रही है। अपने देश मे हम जो नया समाज खडा करना चाहते हैं, अुसकेलिअे होडाहोडी की यह हवा बहुत ही नुकसान-देह है। हमारी अिच्छा यह है कि समाज के सब लोग हिल मिल कर रहें, कधे से कधा भिडा कर काम करे, सुख-दुख, हानि-लाभ का बोझ मिलजुलकर अुठावे। और अिस प्रकार समूचे देश को अेक बडे सहयोगी समाज के रूप मे बदल दें। अगर हम चाहते हैं कि हमारा यह सपना सही मानो मे जल्दी से जल्दी सिद्ध हो तो हम को अुसके लिअे घर में और समाज में सहयोग की हवा बनानी ही होगी। लालच का और होड का सहयोग के साथ कोओी मेल बैठ नही सकता। अिसलिये हमें विचार पूर्वक डर और लालच का त्याग करके अपने जीवन में दृढता पूर्वक प्रेम और सहयोग को जगह देनी चाहिये। तभी हम अुस समाज की दिशा में आगे बढ सकेंगे। जिसे आज सन्त विनोबा सहयोगी अथवा साम्य-योगी समाज का नाम दे रहे हैं। यह काम अैसे ही दूसरे कामो की तरह विचार के बल पर ही पूरा किया जा सकेगा। कानून के सहारे या सरकारी फरमानों के भरोसे हम अिसे अमली रूप नही दे सकेंगे यदि आज के हमारे माता पिता अिस विचार को अिस तरह समझ ले और अुस पर अमल करने का अपना निश्चय कर ले तो आज हमारे घरो मे बच्चो का जीवन जिस तरह दुखी बना हुआ है, अुस तरह अुसके दुखी बनने का कोओी कारण न रह जाय।

३. बच्चों को नौकरों से बचाअिये :

बच्चो के जीवन के लिअे नौकर भी अेक बडा खतरनाक प्राणी है। हमारे समाज मे नौकर की परपरा काफी पुरानी पड गयी है और अुसने गहरी जड जमा ली है। शहरो मे खुशहाल घरो में और गांवो तक में आज बच्चो को नौकरो के भरोसे छोडने का अेक रिवाज ही बन गया है। मनोविज्ञान और शिक्षाशास्त्र के जाननेवालो का कहना है कि बच्चो को छोटी अुमर मे नौकरो के भरोसे छोडने से अुनको बे-हिसाब नुकसान होता है। अुनके जीवन में अितनी खराबिया पैदा होती है और अैसी गाठें बध जाती हैं कि आगे चल कर अुन पर विजय पाना या अुन्हे काट कर फेंकना बहुत ही मुश्किल हो जाता है। अच्छे से अच्छा सद्गुणी और सदाचारी बालक भी नौकरो के हाथ में पड कर बिगड जाता है। भाग्य से ही किसी परिवार को कोओी अैसा सुसस्कारी सेवक मिलता है जो अुस परिवार के बालको को बिगाडने के बदले सुधारने में मदद करता है। आम तौर पर अमीरो के, अफसरो के, साहूकारो के और खुशहाल लोगो के घरो में जो नौकर काम करते हैं, वे बहुत ही गलत आदतो वाले और बिगडी हुओी रुचिवाले-वृत्तिवाले होते हैं। जीवन के बारे में अुनका अपना कोओी खास विचार भी नही होता, बाल-जीवन के महत्व को जानने समझने की अुनकी कोओी तैयारी भी नही रहती है। अुनके सामने तो अपनी रोजी कमाने का और जैसे भी बने मालिक, मालकिन या

अुनके बच्चो को राजी रखने का सवाल रहता है। अगर झूठी खुशामद से अुनका काम बनता है, तो झूठी खुशामद कर लेते हैं। अगर डर या लालच का अुपयोग करने से अुन्हे अपना काम बनता नजर आता है तो वे अिसका प्रयोग करने मे भी हिचकिचाते नही। अुनके सामने जीवन का कोअी अूचा नक्शा नही रहता। अिसलिये जिन दुधमुहे बच्चो की परवरिश का काम बडे घरो में अिन्हे सौंपा जाता है तो अुनकी सही सही सार-सम्हाल रखना अुनके बस का नही रहता। वे बच्चो को न केवल तरह तरह से सताते, डराते और धमकाते है, बल्कि अुन्हे आगे करके बच्चे के मा बाप से भी वे अपने मन की करा लेते है। अिस तरह देखा जाता है। नौकरो के जरिये बालको का और अुनके मा-बाप का अेक बडी हद तक बहुत शोषण होता है। अिसमे बच्चो का जीवन तो गलत रास्ते पर चला ही जाता है। अकसर समूचे घर या परिवार को भी बहुत बडी कीमत चुकानी पड जाती है। यही कारण है कि आज चारो तरफ से समझदार लोग मा-बाप को यह सलाह देते पाये जाते है कि वे अपने बच्चो को नौकरो के भरोसे हरगिज न सौंपें। यदि हम नये समाज की रचना में विश्वास रखते है और मानते है कि आनेवाले समाज को अेकरस समाज का रूप लेना है और समाज में हुजूर तथा मजदूर के दो अलग-अलग वर्ग नही रखने है तो अपने-अपने घरो में घर का सारा काम स्वय करने की तैयारी करके हमें घरेलू कामो के लिये नौकरो की जमात खडी करने से बचना चाहिये। जिससे हम और हमारे बालक अधिक सुरक्षित रहेगे और बालको का जीवन भी गलत रास्ते जाने से बच जायगा। समाज मे स्वावलम्बन की प्रतिष्ठा बनेगी और बच्चो में अपना काम खुद करते रहने की वृत्ति पैदा होगी।

अुपसंहार :

वैसे तो बाल-जीवन और बाल-शिक्षण के विषय मे अभी बहुत कुछ कहने या लिखने की गुजाअिश है किन्तु जहा तक अिस लेख का प्रश्न है, हम अपनी अिस चर्चा को यही समाप्त करना चाहेगे। यह सच है कि अूपर जो कुछ कहा गया है अुसमे बच्चे के जीवन की सारी समस्याओ का समावेश नही हो पाया है। अितने थोडे स्थान में यह चीज आ भी नही सकती। बालक का जीवन अनत है और अुसकी समस्याओ का भी कोअी पार नही है। हर बालक अपने साथ अपनी समस्या लाता है। अिसी तरह हर पालक की और हर मा तथा हर बाप की भी अपनी समस्याये होती है। अिस लेख में अुन सब का विचार नही किया जा सकता। मेरा निवेदन है कि यदि जो कुछ अभी आपने पढा है, अुसमे आपको कोअी सार नजर आया हो और आपके मन मे अिससे भी अधिक जानने की भूख जागी हो तो आप अिस विषय की किताबो को और पत्र पत्रिकाओ को पढने की कोशिश कीजिये। हिन्दी मे और हिन्दुस्तान की दूसरी भी कअी भाषाओ मे आज अिस विषय का कुछ अुपयोगी साहित्य मौजूद है। हमारा आपका अबतक यह दुर्भाग्य ही रहा कि हम अिस विषय में स्वतत्र रूप से सोचने, समझने के मामले मे बे-खबर से रहे। अपने आप में यह विषय अितना विशाल और गहन है कि सारा जीवन अिसके पीछे खपा देने पर भी हम अितना पार नही पा सकते। अबतक न जाने कितने अनमोल जीवन अिसकी खोज में अपने को खो चुके है और न जाने आज अिसकी खोज में अपने को खो कर लगे हुअे है। जिन्होंने

(शेषाश पृष्ठ २०५ पर)

दो महीने के काम की योजना

अ ना. जयपुरकर

दीवाली की छुट्टी के बाद १८ जनवरी को आनन्द निकेतन शाला का काम शुरु हुआ। शिक्षक समिति में तय हुआ था कि अब जनवरी अन्त तक के काम की योजना बना लेंगे, फिर अुसके अनुभव के आधार पर आगे अप्रैल महीने तक की योजना बाद में बनायेंगे। छुट्टी के पहले सब विद्यार्थियों की प्रगति की समीक्षा हो गयी थी, अिसलिअे किन विद्यार्थियों की कौन कौन से विषय में प्रगति ठीक हो रही है, कहा कमी है, और कहा ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है, अिसका ठीक अन्दाज हो गया था।

अिस समय शाला में कुल विद्यार्थी ६२ है, अुनमें से ज्यादातर छात्रालय में रहते है, २० विद्यार्थी आसपास के गावो से आते हैं। छात्रालय में रहनेवाले लडके लडकियां सुबह ६½ से ७½ बजे तक अेक घण्टा सामूहिक खेती-काम में और छात्रालय की सफाअी में भाग लेते हैं। अुसके बाद नाश्ता होता है और ७॥। बजे शाला का काम शुरू होता है।

काम की दृष्टि से शाला में तीन टोलियां बनायी हैं–

१ ली–राम टोली-सख्या १५-अुम्र ६ से ९ तक। अिसमें १ ली से लेकर ४ थी कक्षा तक की योग्यता के विद्यार्थी हैं।

२ री–खेती टोली-सख्या २७-अुम्र १० से १३ तक-५ वी ६ वी कक्षा।

३ री–बुनाअी टोली-सख्या २०-अुम्र १४ से १५ तक-७ वी ८ वी कक्षा।

राम टोली. अिसमें ४ बच्चे ७ साल से कम अुम्र के हैं। असल में ये पूर्व-बुनियादी बालवाडी के ही योग्य हैं, लेकिन अिस साल यहा अलग बालवाडी की व्यवस्था नही होने के कारण ये अपने बडे भाअी-बहनो के साथ आकर बैठते हैं, अपनी शक्ति के अनुसार रुअी सफाअी, ओटाअी और कुछ कताअी भी कर लेते हैं। टोली के बाकी ११ बच्चे सुबह ८ से ९½ तक समग्र कताअी की सब प्रक्रियाओ का अभ्यास करेंगे। अिनमें से ज्यादातर बच्चों ने छुट्टी के

(पृष्ठ २०४ का शेषांश)

अिस तरह अपने को भुला कर बच्चे के जीवन की अिन समस्याओ के बारे में हमारे सामने नअी-से-नअी जानकारी रखी है और हमें अपने घरो तथा समाजो में बच्चो को सभी मानो में सुखी बनाने का रास्ता दिखाया है अुनका हम जितना यश गायें और जितना आभार मानें, अुतना ही कम है। देश-विदेश में आज भी सैकडो हजारो भाअी बहन अपनी-अपनी जगह बाधे जीवन को सुखी बनाने और अूपर अुठाने म लगे हुअे हैं। अुन सब को प्रणाम करके अिस मगल कामना के साथ अपना यह निवेदन समाप्त करता हू कि भगवान हमें सच्चे अर्थो में बच्चो की सेवा और अुपासना करने की शुद्ध बुद्धि, शक्ति और भक्ति दे।

पहले सूत दुवटा करने का स्टेन्ड बनाया था। अब वे हाथ धनुष्य बनायेंगे। कताअी में अुनकी गति अब घण्टा में औसत ६० तार है। अिन दो महीनों में ८० तार तक गति होने की अपेक्षा है। ये बच्चे अपने सूत का दुबटा कर के सामूहिक तौर पर वर्ग के सब बच्चो के लिये अेक-अेक सेट कपडा बना लेगे, अैसी योजना बनायी है। अिस दो महीने की अवधि में १५ गुडी सूत तैयार होगा।

खेती . अिस टोली के बच्चे सुबह अेक घण्टे के खेती काम में और कपास चुनना, ज्वार काटना, अित्यादि कार्यक्रम में भाग लेते ही हैं। अिसके अलावा अेक दो छोटी क्यारिया बनाकर कुछ सब्जी के पौधे लगाअेंगे। अुससे अकुर का अुद्गमन, और जडो के फैलने का विशेष निरीक्षण करेंगे।

गणित : कपास सफाअी और ओटाअी के सिलसिले में कितने कपास से कितनी रुअी-निकली, कितना बिनौला, अिस अनुपात का ज्ञान और तोले, छटाक, पाव सेर आदि वजनो की जानकारी दी जायगी। अभी कुछ बच्चे बीस तक के पहाडे पूरे नही जानते है, अुसका अभ्यास होगा; जोड, घटाव, गुना और भागाकार का अभ्यास नियमित होता रहेगा। छोटे बच्चे १०० तक की गिनती और ५ तक पहाडे सीखेंगे। छोटे-छोटे जोड घटाव का अभ्यास भी होगा।

भाषा : अिन बच्चों को हिन्दी मराठी दोनो भाषाओं का सामान्य ज्ञान है। मुख्यत. मराठी का ही अभ्यास करेंगे। शुद्ध बोलना और पढना, लिखना, खुद के शब्दों में छोटी कहानिया लिखना यह कार्यक्रम रहेगा। बच्चे छोटी कविताअें और भजन साफ अक्षर में लिख लेगे, अुनका अर्थ शिक्षक सरल शब्दों में समझायेंगे और फिर बच्चे अुनको कण्ठस्थ करेंगे। दिसम्बर महीने को "अंकुर" पत्रिका (आनन्द-निकेतन शाला का हस्त लिखित मासिक) का संपादन और प्रकाशन भी अिस दफे यह टोली करेगी।

सामान्य ज्ञान : ठंड के मौसिम के पशु, पक्षी व कीडो का निरीक्षण करेंगे। अब खेत में जो फसल तैयार है वह खाने के लिये कभी-कभी सुअर और अन्य जानवर भी आते हैं। जब कभी अिनको देखने का मौका होता है तो बच्चे खुश होते हैं। अिस मौसिम के फूल पौधो का भी निरीक्षण करेंगे। ऋतु परिवर्तन का हमारे शरीरो पर असर-अिन दिनो चमडा क्यो फटता है, तेल लगाने की आवश्यकता, अिसपर चर्चा होगी। कोहरा क्यो होता है, अुसके कारण, जाडे के मौसिम में जब बादल छाये रहते है तब ठंड क्यों कम होती है, ये बाते लेकर चर्चा करेंगे और बच्चो को समझाया जायगा।

चित्रकला : क्रेयोन से चित्र और मिट्टी के छोटे-छोटे बर्तन बनाये जायँगे। सौंदर्य-बोध निर्माण की दृष्टि से वर्ग का कमरा सजाना, फूल सजाना, अित्यादि बातो पर विशेष ध्यान रहेगा।

खेती टोली : अिस टोली का मुख्य काम और अध्ययन का विषय खेती रहेगा। आम तौर पर सुबह दो घंटे खेत में प्रत्यक्ष काम और साथ-साथ यथावसर तात्विक चर्चाअें भी होगी। अलग-अलग मौसिम में कौन सी फसले होती हैं, अुनकी देखभाल कैसे करनी होगी, यह पहले समझाकर खेती की योजना विद्यार्थियो के साथ ही बैठकर बना लेते हैं। अभी टमाटर, मिरची, नोलकोल और गोभी की फसलें हैं। अिन फसलो को हफ्ते में दो बार पानी देना

होगा। साथ-साथ फसल की निन्दाओी गोडाओी का काम भी चलेगा। नवलकोल और गोभी में कीडे लगने से बचने के लिओ बीच-बीच में गेमेक्सिन डालना होगा। अिस अवधि में प्याज लगाने का काम भी होगा। अुसके पहले खेत में खाद देंगे। क्यारिया बनाकर सिंचाओी करेंगे। तैयार भाजी तोडने का काम नियमित चलेगा। ज्योंही अेक फसल निकल कर खेत खाली हो जायगा, गर्मी में आनेवाली बैंगन की फसल के लिओ जमीन तैयार करने का काम भी शुरू होगा।

कताओी : सब विद्यार्थी आधा घण्टा सूत्र-यज्ञ में नियमित कातते ही हैं। अिस सूत का अुपयोग अुनके वस्त्र-स्वावलंबन के लिओ होता है। अिसके अलावा खेती टोली के विद्यार्थी समग्र कताई की सब प्रक्रियाओ में अधिक कुशलता पाने की दृष्टि से रोज आधा घण्टा अुनमें से अेक-न-अेक क्रिया का अभ्यास करेंगे। सूत का अंक, कस, और समानता निकालने का भी अभ्यास होगा।

गणित : खेती काम से सम्बन्धित गणित की सब क्रियाओ का अभ्यास करेंगे। विशेष कर क्षेत्रफल निकालना अुसके साथ अिंच, फुट, गज, सेन्ट, अेकड अित्यादि का ज्ञान, अिनको अेक दूसरे में परिवर्तन करना, भाजी के विक्रय और आय का हिसाब रखना तथा माह के अन्त में खेती विभाग का जमा खर्च निकाल कर घाटा या बचत देखना अित्यादि होगा। नये और पुराने पैसे, दानों का ज्ञान, अिनको अेक दूसरे में परिवर्तित करना और साथ-साथ मिश्र जोड, घटाव, गुना का भी अभ्यास करेंगे।

खेत का नाप लेते समय साधारण अपूर्णांक-चौथाओी, आधा, तीन चौथाओी अित्यादि की जानकारी होगी। अेकमान पद्धति से कीमत निकाली जायगी। खेत के आकार पर चर्चा के साथ चौरस आयात समझ लेंगे। सत्रा पेड की क्यारियां ठीक करने के साथ वर्तुल, त्रिजा, व्यास, मध्य बिन्दु आदि की साधारण जानकारी होगी।

भाषा : मराठी-विद्यार्थी नियमित अपनी डायरी लिखेंगे। दैनिक अहवाल जाच करना, काम का अहवाल जबानी सुनाना, अिन्हीं से भाषा में अशुद्धियों की दुरुस्ती करेंगे। हस्ताक्षर सुधारने का विशेष प्रयास होगा। अंकुर मासिक के लिओ अलग-अलग विषयों पर निबन्ध और कहानियां अित्यादि लिखेंगे।

समाजशास्त्र : बडे दिन के अुपलक्ष्य में अीशु खिस्त की जीवनी और अुपदेशों तथा सर्वोदय-पक्ष के अवसर पर बापुजी के जीवन के बारे में बच्चों को समझाया जायगा। अपने तालुका और जिले का भौगोलिक दृष्टि से अध्ययन किया जायगा।

विज्ञान : खेती शास्त्र में पौधे आहार कैसे लेते हैं, पौधों को सूर्यप्रकाश की आवश्यकता, पत्तों का हरा रंग और अिसका काम अिन विषयों का विशेष अध्ययन होगा। कपास में कीडे लगने से नुकसान, अुन कीडों का प्रकार व जीवन और पौधों पर लगने के तरीके, अिनका निरीक्षण करेंगे। हवा में पानी की मात्रा, सुखाओी और नमी का पेड पौधों पर और मनुष्य शरीर पर असर आदि विषयों पर यथावसर चर्चा होगी। अभी हमारी शाला में अेक विज्ञान कमरे का आयोजन हो रहा है। अिस अवधि में विद्यार्थी कुछ वैज्ञानिक अुपकरणों (सयन्टिफिक अॅपॅरेटस) से भी परिचय पायेंगे।

दक्षिणायन की समाप्ति तक और असके बाद की सूर्य की गति का निरीक्षण करेंगे और विभिन्न ऋतुअें कैसे होती हैं, अिस पर चर्चा होगी।

चित्रकला बच्चे अपने मन से चित्र बनायेंगे। नेयोन और पानी के रगो का भी अिस्तेमाल करगे। अपनी अभिरुचि के अनुसार कागज काट कर चिपका कर चित्र बनाने का भी अभ्यास करेंगे।

बुनाअी टोली–

बुनाअी ये विद्यार्थी रोज सुबह दो घटे बुनाअी करेंगे। काम के दिन ५० होंगे। प्रतिदिन काम का समय ३ घटा। विद्यार्थी सूत खोलने से लेकर बुनाअी तक की सब क्रियाअें करेंगे। अिस टोली के लिअे १० करघ दिये हैं। दो दो विद्यार्थी अेक करघे पर काम करते हैं।

पूर्व क्रिया प्रति बालक को ३५ गुडी सूत खोलना पडेगा। ८ पूजम ताना, ७॥ पूजम साध, माडी, परमाण, पाजण, वसारण और सार लगाना अिन क्रियाओ में बीस घटा समय बुनाअी में देना पडगा। माह में हर अेक विद्यार्थी पाच गज कपडा बुनाअी करेगा तो अिस अवधि में प्रति विद्यार्थी दस गज कपडा तैयार होगा अैसी अपक्षा है। चार बालको का अेक सूती थान लगाया जायगा।

अिस टोली के विद्यार्थी शास्त्रीय ढग से धुनाअी करगे। हर राज धुनाअी का समय अेक घटा रहेगा। अेक दिन में दो बालक ३० तोला धुनाअी करेंगे। जनवरी के अन्त तक ७ सेर धुनाअी होगी। दो-दो बालक पद्रह दिन शास्त्रीय ढग से धुनाअी सिखेंगे। बुनाअी तथा धुनाअी अुद्योग में आनेवाले साधनो की मरम्मत करने का साधारण अभ्यास होगा।

विद्यार्थी कताअी कार्यकर्ता के लिअे निर्धारित कुशलता प्राप्त करेंगे, अैसी अपेक्षा और प्रयत्न है। हफ्ते में अेक दिन घण्टे की गति लेकर सूत का कस, समानता और नबर देखा जायगा और शास्त्रीय ढग से कताअी में सुधार करना होगा।

खेती प्रतिदिन के अेक घटे के सामूहिक खेती काम के अलावा कपास चुनना, ज्वार काटना, खलिहान का काम अित्यादि मे अिस टोली के विद्यार्थी विशेष भाग लेगे।

गणित पिछले अभ्यासक्रम–खास कर वर्गमूल निकालने का अभ्यास जारी रहेगा। काम का अन्दाज-पत्रक, सूत का जमा खर्च, बुनाअी का साप्ताहिक तथा मासिक जोड करके चार्ट और बुनाअी और कताअी की प्रगति का ग्राफ तैयार करना-ये काम नियमित करेंगे। क्षेत्रफल तथा घनफल का अभ्यास होगा।

भाषा मराठी भाषा के प्रसिद्ध लेखका की कुछ कृतियो से परिचय कराया जायेगा। भाषा सुधार की दृष्टि से चुने हुअे पाठो का अध्ययन करेंगे। व्याकरण में अिस अवधि में विकारी तथा अविकारी शब्दो का फर्क और विभक्तिया को समझने का खास प्रयत्न रहेगा। वर्ग में दैनिक काम, मौसिम, कोअी विशेष घटना आदि किसी अेक विषय पर चर्चा करके अुसी पर विद्यार्थी निबन्ध लिखेंग तथा "अकुर" पत्रिका के लिये लेख तैयार करेंगे। अपने समय पर वाचनालय से किताबें लेकर पढने और रोजाना अखबार पढने के लिअे विशेष प्रोत्साहन दिया जायगा।

समाज-शास्त्र अीशु की जीवनी और अीसाअी धर्म का प्रसार, बापूजी का जीवन-

कार्य और भारतीय समाज पर अुसका असर, अिन विषयो का अध्ययन होगा ।

अिस कालावधि में पजाब और राजस्थान को भौगोलिक परिस्थिति के अध्ययन की योजना है । वहा की जमीन का स्वरूप, आबोहवा, बारिश, फसल, लागो के रहनसहन, अुनके आचार विचार, अुद्योग, वहा का सास्कृतिक जीवन, अिन विषयो का सामन्य अध्ययन करेगे । साथ-साथ जगत् की चालू घटनाओ के सम्बन्ध में अुन भागो का साधारण परिचय किया जायगा ।

विज्ञान : जाडे के मौसिम की विशेषताअें । ठड क्या होती है ? गर्मी क्या है ? हमें ठड क्यो लगती है ? तापमान । गर्मी का स्थलातर-वहन, प्रापण, क्षेपण । द्रव्य क्या है ? द्रव्य का वर्गीकरण । मिश्र और सयुक्त द्रव्य । द्रवण-सपृक्त द्रवण । तराजू के तत्व, चक्र (पूल्ली), अुससे क्या फायदा होता है । दक्षिणायन और अुत्तरायण में सूर्य की गति । ऋतुअें क्यो बनती है ।

चित्रकला चित्रकला म यह टोली अेक विशेष प्रयोग कर रही है । सब विद्यार्थी मिलकर अेक बडा चित्र बना रहे हैं । अिसके अलावा अपने-अपने चित्र भी बनायेंगे । मिट्टी से बर्तन और मूर्तिया बनाने का काम भी चालू रहेगा । ४ लडकिया अल्पना का अभ्यास करेंगी ।

सामाजिक काम छात्रालय में रहने वाले सब विद्यार्थी अपनी अपनी अुम्र और शक्ति के अनुसार सब सामाजिक कामो में पूरा-पूरा भाग लेते हैं । बाहर से आनेवाले विद्यार्थियो को भी अपने घर के कामों में मा बाप की सहायता करने की आवश्यकता के बारे में समझाते रहेंगे और सबके साथ समय-समय पर अुसकी चर्चा करेगे । बडी टोली में से अेक विद्यार्थी सामूहिक अन्नशाला में सहायक अन्नमत्री के तौर पर काम करेगा । हर सोमवार को पूरे समाज के लिअे शाम का भोजन पकाने की जिम्मेवारी आनन्द-निकेतन शाला की रहेगी । अिसमें सब शिक्षक भी रहेग । विद्यार्थियो की दो टोलिया बनाकर प्रत्येक टोली आधा-आधा समय काम करेगी और आधा समय अुनका आहार और शरीर विज्ञान के बारे में वर्ग होगा । आसपास के गावो से आनेवाले विद्यार्थी भी दुपहर का भोजन यही करेंगे ।

खेलकूद प्रतिदिन शाम को सब बच्चो के लिअे खेल का प्रबन्ध होगा । अिस समय कबड्डी, खो खो और रस्सी कूद, अिन खेलो का कार्यक्रम रखा है । हमारे शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य के लिअे खेल और व्यायाम की जरूरत और वजन बढने घटने के कारणो पर चर्चायें होगी ।

सास्कृतिक कार्यक्रम · बडे दिन के अवसर पर आनन्द-निकेतन शाला के विद्यार्थी अीशु की जीवनी के कुछ दृश्यो को नाटक के रूप में प्रस्तुत करेगे । अुस समय नाच, नृत्य आदि भी होगा । सब बच्चे अुसका अभ्यास करेंगे । हफ्ते में दो दिन सामूहिक प्रार्थना चलाने को जिम्मेदारी आनन्द-निकेतन की भजन मण्डली लेगी । अुसके लिअे भजन गाने का अभ्यास नियमित रूप से होगा ।

बच्चों की भजन मंडली

श. प्र पांडे

गये बीस साल के तजुर्बे से मेरा यह पूरा विश्वास हो गया है कि जिस शिक्षक के पास कहानी कहने की, बच्चो के साथ पूरा हिलमिल-कर खेलने की तथा गीत गाने की कला होगी वह बच्चो को लोहचुवक की तरह आकर्षित कर सकता है। पिछले दिनो मे बच्चो को भजन सिखाने के सिलसिले में कुछ अनुभव हुअे, अन्हे साथी शिक्षकों के समक्ष रखना चाहता हूँ।

आनद-निकेतन छात्रालय में भजन जैसे कार्यक्रमो को शाला के शिक्षा क्रम के अवातर रूप ही माना गया। हमने देखा कि बडी सामुदायिक भजन मडली में और भिन्न-भिन्न भाषाओं के भजन गाने में बुनियादी शाला के अिन छोटे बच्चो को कोअी रस नही आता है। अिसलिअे छोटे बच्चो की ही अेक अलग भजन मडली सगठित करने का विचार किया। बच्चो के साथ वैसी चर्चा भी शुरू की। बच्चे काफी अुत्साहित हुअे। अिनमें जिनको निसर्ग-त कठ की देन है वे तो थे ही। अुनके साथ जिनको वह देन नही थी अैसे बच्चे भी भजन मडली में शामिल होने के लिये अुत्सुक थे। अगर ये सब के साथ बैठते तो अिनके बेसुर कठ से दूसरो को भी बाधा आती है। तो अिन बच्चो के मन में न्यूनता का भाव न हो और साथ-साथ अुन्हें गाने से भी कैसे रोके, यह सवाल सामने आया। अिस समस्या का हल कैसे करे? अेक बात सूझी। भजन के साथ जिन वाद्यो का अुपयोग होता है अैसे सुरीले देहाती वाद्यो को खूब जुटाया। और कठ की देन से प्रकृति से ही वचित बालको को अिन वाद्यो का अिस्तेमाल करना सिखाया। कुछ को छोटे-छोटे मजिरे, किसी को खजरी, किसी को अेकतारा तो किसी को स्वरपेटी दी। ये बजाने लगे और जिनका सुरीला कठ था अुन्होंने भजन गाने में पूरा रस लेना शुरू किया। अिस तरह वाद्यो के साथ बालको की भजन-मडली का रग कुछ बनने लगा। हमारी अिस मडली मे आठ साल से लेकर चौदह साल की अुम्र के बालक बालिकाअे शामिल है।

भजन और गीतो का अभ्यास हर दिन शाम के भोजन के बाद नियमित रूप से शुरू हुआ। भिन्न भिन्न सतों के मराठी भजन चुने गये। बच्चो ने सारे भजन कठस्थ किये क्योकि भजन बिना कठस्थ किये गानेवाला अुसमे मग्न नही हो पाता। लिखा हुआ देख देखकर पढने में तो भजन का मजा ही नही रहता। भजन लिखवा देने के बाद बच्चो को शब्दार्थ और भावार्थ समझाया जाता है। तथा अुन सतो की जीवनी का अेक छोटा परिचय देने की भी कोशिश होती है। अिस तरह बच्चो के सामने भिन्न भिन्न समय की भाषा के नमूने, कठिन शब्द और अुनके अर्थ तथा सत चरितो की झाकी आप ही आप अुपस्थित हो जाती है।

अिस वर्ष के गणेश अुत्सव, जन्माष्टमी, गोपाल काला, तथा अीसा जयती अिन अुत्सवो में छोटे छोटे बच्चो ने ही गीत गाकर कार्यक्रमो में रग भर दिया। बच्चे अधिकतर मराठी भाषा भाषी होने के कारण गीत भी अधिकतर मराठी ही रहे। गीतों मे खासकर १. मराठी

ओवियाँ २. श्लोक ३. कृषिगीत ४. निसर्ग गीत ५. ऋतु गीत ६. लोक गीत–ये सगृहीत किये गये। रामटोली के छोटे-छोटे बच्चों ने असमे अच्छी प्रगति दिखायी। सभी अब ताल और सुर में गाते हैं। ये सात से लेकर नौ साल की अुमर के बच्चे हैं।

हमेशा यह देखा जाता है कि बच्चे जब छुट्टियो में घर जाते हैं तो बाहरी वातावरण से कुछ सस्कार छात्रावास में वापस आते समय ले आते हैं। सिनेमा के गीत गाने का तो आजकल अेक अैसा ही सर्वसामान्य रिवाज हो गया है जिससे बालक मुक्त नही रह पाते। गाना मनुष्य का स्वभाव-धर्म है, फिर चाहे कोअी भी गाना अुसके मुँह से क्यो न निकले? अपने मुक्त वातावरण में वह गाने की कोशिश करता ही रहता है। बच्चे भी अिसी तरह से बाहरी, सिनेमा के या सुने-सुनाये भले-बुरे गीत गाने की कोशिश करते रहते हैं। अुनकी अिस वृत्ति को ठीक रास्ते पर कैसे लगाया जाय? कुछ अच्छी ठोस चीजें अुनके सामने देकर ही तो यह ठीक रास्ते पर ला सकेंगे? प्रार्थना यहा के जीवन का अेक आवश्यक और महत्वपूर्ण अग है ही। बच्चो को भी निश्चित दिन सामूहिक प्रार्थना में अपनी भाषा के भजन गाने की जिम्मेवारी देने का निश्चय किया और अिस तरह प्रार्थना के लिअे भजन की तैयारी करने की योजना अुनके सामने रखी। अभी तक जितने भजन सीखे वे अच्छी तरह से मुखस्थ हों तथा स्वतत्रतापूर्वक गाने की हिम्मत बढ़े अिस दृष्टि से हर शनिवार प्रार्थना के बाद बच्चों के साप्ताहिक भजन की योजना भी बनी। बच्चे अपने सग्रह में वृद्धि करने लगे। अिस तरह भजन के अभ्यास का अेक स्पष्ट अुद्देश बच्चो के सामने आया। अुनके मन में भूमिका तैयार हुअी। अैसी अवस्था में सिर्फ शिक्षक की ओर से अेक अिशारा मात्र की आवश्यकता होती है। बच्चे शिक्षक की ओर कूद पडते हैं और अुत्साह का स्वर वातावरण मे गूज अुठता है। अिस स्वर का नाद दिन रात सोते-बैठते, काम करते-खेलते सभी समय सुनाअी देता है। अिससे बच्चो की सुप्त शक्तिया जगी और ठीक रास्ते पर मुड गयी अैसा विश्वास होता है।

अिस कार्यक्रम से शैक्षणिक दृष्टि से निम्न-लिखित अुद्देश्यो की पूर्ति की अपेक्षा है।

१ भजनो और गीतो का प्रसगो के अनुसार चुनाव और वर्गीकरण।

२. सबधित सतो या कवियो की जीवनी का परिचय।

३ भजनो का शब्दार्थ तथा भावार्थ समझना

४. साहित्यक क्षेत्र में भजन तथा अन्य गीतों का स्थान

५. सास्कृतिक कार्यक्रमो में भजन गीतो का आयोजन।

अिस दृष्टि को सामने रखकर यदि अैसे कार्यक्रमो को हाथ में लिया जाता है तो समस्यात्मक बच्चो के भी ठीक रास्ते पर आने में बहुत मदद मिल सकती है।

चर्चाओं के निष्कर्ष

[गाधी स्मारक निधी की पजाब शाखा ने पट्टीकल्याण (करनाल) में गत नवबर ५ तारीख से १२ तारीख तक नअी तालीम में शिक्षको के प्रशिक्षण पर विचार विमर्श के लिये अेक शिविर चलाया था। अुसके कुछ निष्कर्षो का साराश सक्षेप में यहाँ दिया जा रहा है।-स.]

पिछले शिविर में ग्राम स्वराज्य और नअी तालीम सबधी जो निष्कर्ष हमारे सामने आये थे अुन पर अमल करन का कार्यकर्ताओ न भरसक प्रयत्न किया। किंतु शिक्षको को अैसा करन क लिअ प्रबध अथवा व्यवस्था सबधी काफी कठिनाअिया सामन आती है, फिर भी यथासभव अुनपर प्रयोग चालू रहने चाहिये, क्योंकि अन्ततोगत्वा वही हमारा लक्ष्य है।

ग्राम सहकारिता – शाला का परिवार अपनी सहकारिता पर ही केवल निर्भर न रहे वल्कि ग्राम भर में सहकारिता लाना ही अपना ध्यय मान कर अुसके लिये काम करे।

समानता – गाव में अेक सामाजिक समानता लाने के लिअे (जिसम जाति, धर्म तथा अर्थ आदि का कोअी भेद न हो) कार्य करते हुअे शाला का परिवार शाला में अक प्रेममय समाज का अैसा नमूना बनाये जो गाव के लोगो के लिअे अेक आदश हो।

गाव का आरोग्य – सफाअी तथा स्वच्छता में शाला की ओर से गाव की भरपूर सेवा होनी चाहिये। शाला का अपना पेशाब घर, सडास, खाद का गड्ढा तथा अन्य सफाअी सम्बन्धी सभी प्रबन्ध आदर्श रूप से होन चाहिये। यथा सभव समय निकाल करके शाला का परिवार गाव की गलिया तथा कूडा करकट आदि साफ करके लोगो का हाथ बटा सकता है।

आर्थिक विकास – गाव के आर्थिक विकास के लिअे गाव की खेती तथा अन्य धन्धो का विकास होना जरूरी है, अैसा मान कर ही शाला का परिवार चले। अपनी सुधरी खेती तथा नमून के कताअी बुनाअी आदि अुद्योगो से गाव का ध्यान अुस ओर डालने के लिये प्रयत्नशील रहे।

ग्राम स्वावलम्बन तथा सास्कृतिक विकास – अिस प्रवृत्ति में शाला का परिवार खूब भाग गाव के निर्माण में ले सकता है। शाला में समय समय पर ड्रामे, भजन, खेल आदि का आयोजन अिस प्रकार से हो जो कि शाला के परिवार तथा गाव वालो दोनो के लिअे ही पूण हितकारी हो। शाला परिवार के अिस प्रकार के आयोजन में ग्राम वासियो को पूर्ण प्रयत्न से शामिल किया जाय और ग्रामीणो के अिस प्रकार के आयोजनो में भी शाला का परिवार यथा सम्भव समय निकाल कर शामिल हो। स्थानीय त्योहारो आदि का अुपयोग अिस प्रवृत्ति को बढावा देने में काम में आना चाहिये।

पशु पालन – पशु ग्राम समाज का अेक अग है, पशुओ का सुधार और विधिवत पालन अत्यत आवश्यक है। यदि सभव हो तो शालाओ में गोपालन का कार्य अवश्य चलना चाहिये और अुसकी प्ररणा गाव वालो तक पहुचनी चाहिये। शाला को गाव के पशु पालन कार्य में हाथ बटाना चाहिये।

लोक शिक्षण – शाला के साथ साथ अेक घण्टे की पाठशाला और श्रवण वर्ग का नियोजन किया जावे ।

सर्वोदय पात्र – सर्वोदय पात्र को हमारे सामाजिक शिक्षण का अेक अनिवार्य अग वनाया जाय । वही हमारे कार्य के लिअे लोक सम्मति भी होगी ।

शाति-सेना – अहिंसक समाज रचना में शिक्षा ही रक्षा का साधन वन जाती है, विनोवा और गाधीजी की शाति-सेना की अिस कल्पना को साकार रूप देने की जिम्मेदारी नअी तालीम के कार्यकर्ताओ पर आ जाती है । अिसलिअे कार्यकर्तागण स्वय में शाति-सेना के गुणो का अधिष्ठान करने की कोशिश करेंगे और अिसका सन्देश जनता तक पहुँचाने का प्रयत्न करेंगे । सेवा सैनिक के नाते शाला के आस पास के क्षेत्र से पूरा-पूरा व्यक्तिगत जन सम्पर्क रखेंगे । और लोगो के दुख सुख में शामिल रहेंगे । स्थानीय समस्याओ को सुलझाने में लोगो की मदद करेंगे । शाला को विशेष तौरपर वडे विद्यार्थियो का अिस में अधिक सहयोग लेना चाहिये ।

स्वावलम्वन – नअी तालीम शालाओ में शाला, विद्यार्थी और शिक्षको के हर प्रकार के आर्थिक, नैतिक, बौद्धिक स्वावलम्वन के सम्बन्ध में गत दो शिविरो में बहुत विस्तार से चर्चा की गयी और काफी स्पष्ट मार्ग दर्शन मिला था । तदनुसार कार्य चलाने के प्रयास भी हुअे । अनुभव के आधार पर सोचा गया कि विद्यार्थियो का स्वावलम्वन पिछले वर्ष के अनुसार ही आगे वढाया जाय ।

शिक्षको का वस्त्र-स्ववलम्वन तो चलेगा ही, किन्तु विशेषत छोटे वर्गों के शिक्षको के लिअे अुनकी व्यावहारिक कठिनाई को देखते हुअे चार घन्टे का शरीरश्रम जम नही पाता, यद्यपि अुनकी अुसके लिये मानसिक तैयारी है । अैसी परिस्थितियो में दो घन्टे तक शरीरश्रम पर्याप्त माना जाय ।

विचार किया गया था कि कम-से-कम पाच प्रतिशत तक शाला स्वावलम्वी हो । यह केवल शुरूआत के लिअे था । वस्तुत अिस वर्ष में अुस से काफी आगे वढना चाहिये था । परन्तु साधन सामग्री आदि की कमी के कारण व्यावहारिक रूप से वह सभव नही होगा । अत पुरानी मर्यादा ही रखी जाय ।

शिक्षण पद्धति व शिक्षाक्रम – गत शिविर के जो निष्कर्ष थे अुनके आधार पर शालाओं में काम करने की कोशिश की गयी । लेकिन सन्तोपजनक काम नही हुआ । अिसके निम्न कारण रहे ।

(१) गाव के लोगो का रूढिगत शिक्षा से आकर्पण ।

(२) लोगो की निजी खेती– गृहस्थी की आवश्यकतायें ।

(३) सरकारी शिक्षाक्रम को अपनी शिक्षा का लक्ष्य मानना ।

जहा तक पहले और दूसरे कारणो का सम्बन्ध है यह तो ग्राम-स्वराज्य का विचार ज्यों ज्यो लोगो में पुरानी सामाजिक मान्यताओं के विकल्प (alternative) के रूप में आता जायेगा त्यो त्यो अपने आप दूर होते जायेंगे । अिसको विकल्प का रूप देने में हम कार्यकर्त्ताओं का सहयोग कैसे हो सकता है, अिसकी अच्छी चर्चा अिस शिविर मे हुअी । लेकिन जहा तक तोसरे कारण का सम्बन्ध है अिसकी

जिम्मेवारी काफी हद तक अपने तन्त्र पर ही है, क्योकि तन्त्र ने अभी तक कोअी अैसी व्यवस्था नही की है जिससे कोअी विद्यार्थी अपना पूरा विद्यार्थी जीवन नअी तालीम के क्षेत्र में कायम रख सके । हमारी शालाओ का शिक्षण समाप्त करने के बाद अुन्हे अनिवार्यत पुरानी तालीम की शालाओ में जाना पडता है । अिन व्यावहारिक कठिनाअियो की वजह से शिक्षण पद्धति और शिक्षाक्रम के बारे में किसी अुच्च वैचारिक भूमिका में न जाकर शिक्षक, शिक्षार्थी और शिक्षार्थियो के सरक्षक की दृष्टि से व्यवहार, साध्य कुछ निश्चय किये गये ।

अनुशासन

गत दो शिविरो में शारीरिक दण्ड के बगैर अनुशासन-स्थापना की ओर बडी गहराई से चिन्तन किया गया था । परन्तु प्रत्यक्ष अनुभव से प्रतीत होता है कि अुस दिशा में हमारी शालाओ में विशेष प्रगति नही है । किसी न किसी रूप में दण्ड दिया ही जाता है । यह हमारे लिअे लज्जाजनक बात है । गोष्ठी की सम्मति है कि सत्य और अहिसा के साधक नअी तालीम शिक्षको के लिअे साधन शुद्धि अत्यत आवश्यक है । अत अनुशासन स्थापना में शारीरिक दण्ड के विकल्प का चिन्तन भर भी नही होना चाहिये । गत वर्ष के सुझाओ पर आचरण के लिअे कष्ट अुठा कर भी हम कटिबद्ध हो और सत्य अहिसा पर आधारित अनुशासन के लिअ खोज की वृत्ति निरन्तर विकसित होनी चाहिये । अिस सम्बन्ध में हुअे प्रत्यक्ष प्रयोगो के और मनो वैज्ञानिक साहित्य का स्वाध्याय किया जाय । अन्तमें फिर यह बात भूलना नहीं चाहिये कि अनुशासन हीनता की पूरी समस्या सुसस्कृत नागरिक जीवन के अभ्यास से ही हल होगी, जो कि ग्राम स्वराज्य द्वारा ही सभव हो सकता है । अत अिस समस्या का निराकरण करने के लिअे हममें पूरी भक्ति और शक्ति होनी चाहिये ।

शिक्षको की जीवन साधना

कार्यकर्ताओ की जीवन साधना में, काफी अरसे से नअी तालीम का कार्य करते हुअे भी हमें अभी तक कोई विशेष सफलता नही मिल पाअी । सच्चा शिक्षक सच्चा विद्यार्थी ही है, अिसलिअे हम महसूस करते हैं कि हम लोगो की अपनी साधना पूर्ण जागरूकता और निष्ठा के साथ करनी चाहिये । कार्यकर्ताओ की अपनी सुनिश्चित दिनचर्या हो जिस में सर्वोदय की दृष्टि से व्यक्तिगत और सामूहिक प्रार्थना, आत्म चिन्तन, स्वाध्याय, स्वावलम्बन के लिअे कार्य, शरीरश्रम आदि की योजना हो । हम अिन प्रवृत्तियो के लिये अपना कुछ लक्ष्याक निश्चित करे और अुस तक पहुचने की कोशिश करे । शिक्षको के लिअे अपने जीवन में मुख्यत निम्न बातो का ध्यान होना चाहिये ।

बच्चों और ग्रामीणो के बीच में शिक्षक को यह ध्यान रखना चाहिये कि हम अुनके साथ कोअी अैसा व्यवहार न कर बैठें जिससे अुनकी दृष्टि में हलके मालूम हो ।

बच्चो के साथ आत्मीयता – वैसे तो बच्चे अपने पास केवल ६ घण्टे ही रहते हैं पर अुनके पूरे समय और दिन चर्या के बारे में सचेत रहना चाहिये । जिस प्रकार अपना बच्चा माता पिता से चाहे कितना दूर हो तो भी अुनको अुसके जीवन की पूरी चिन्ता होती है अुसी प्रकार अुन बच्चो के जीवन के विषय में हमें हार्दिक चिन्ता होनी चाहिये । कोअी भी हमारा

(शेषाश पृष्ठ २१६ पर)

अेक शिक्षणतज्ञ का अनुभव

देवीप्रसाद

आनन्द-निकेतन शाला में अेक बालक और अेक बालिका पिछले सात वर्षों से अपना शिक्षण ले रहे हैं। ये दोनों भाअी बहन हैं। अिनके पिता अेक निष्ठावान् सर्वोदय कार्यकर्ता हैं। पिछले छ सात वर्षों से हैदराबाद के अेक गाव में बडी श्रद्धा के साथ पति-पत्नी सेवा कार्य में लगे हैं। पिता अब महबूबनगर जिले के अेक गाव में ग्रामदानयज्ञ का काम कर रहे हैं।

अपने बच्चों की शिक्षा ठीक प्रकार की हो, अिस बात की अुन्हें हमेशा चिन्ता रहती है। स्वय अुनका शिक्षण पुरानी शिक्षण पद्धति के द्वारा हुआ था। पुरानी शिक्षा पद्धति के द्वारा बालकों का ठीक विकास नहीं होता और अुनमें अुन पहलुओं का भी विकास नहीं होता जो सामाजिक दृष्टि से अनिवार्य हैं, अैसी अुनकी मान्यता है। अुन्होंने अेक पत्र में अपनी भावना अिस प्रकार प्रकट की है, "मेरा शालेय और घरेलू अभ्यास पुरानी पद्धति से होने के कारण, जो खामियां मुझमें रही है वे मेरे बच्चों में न रहे, अिसी विचार से मैं नअी तालीम का पक्षपाती हू। विद्यालय में हम पर जो शिक्षाक्रम लादा जाता था, उसमें मेरा विकास रुका। आपके वहा 'बच्चा न सीखना है, अुनको सिखाना नहीं' अिसी तत्व का मैं कायल हू। आपके वहा जिस सामूहिक सामाजिक जीवन का अनुसरण होता है, वह सामाजिक जीवन मेरा आदर्श है। मैं शिक्षणतज्ञ नहीं हू लेकिन समाज सेवक के नाते यह बात कह सकता हू। अेक सामान्य पालक की दृष्टि से यह भी जानता हू कि बालकों के अभ्यास-क्रम पूरा करने के लिअे अेक आर्थिक मर्यादा होनी है, यह बात हमारे राष्ट्रीय जीवन के लिअे बहुत महत्व की है। नअी तालीम की, अिस कारण से भी बडी आवश्यकता है। अिसलिअे मेरा यह निर्णय है कि मेरे बच्चों का अुत्तम बुनियादी तक का अभ्यासक्रम सेवाग्राम में हो।"

सेवाग्राम की बुनियादी शाला में आठ साल का शिक्षाक्रम पूरा करने के दौरान में जो बालक छात्रालय में रहते हैं, अुन्हें कुल मिलाकर लगभग सोलह सौ रुपया खर्च आता है। क्योंकि विद्यार्थियों की अुत्पादन शक्ति बढती रहती है, अुत्तर बुनियादी शिक्षा की अवस्था में तीन साल के अर्से में खर्च क्रमशः कम होना शुरू हो जाता है। अुत्तर-बुनियादी शिक्षा के तीसरे साल में आकर विद्यार्थी की अुत्पादन शक्ति के द्वारा अुसका खर्च लगभग पूरा पूरा हो निकल जाता है। अिसी प्रकार अुत्तम बुनियादी की अवस्था में तो विद्यार्थी अपने काम के द्वारा पूरा स्वावलम्बी हो जाता है।

अिस तरह अुच्च शिक्षा तक का खर्च नअी तालीम की पद्धति से प्रति विद्यार्थी पालकों को लगभग दो-हजार रुपयों तक आता है। यह खर्च भी भोजन आदि पर ही होता है। जब कि चालू शिक्षा प्रणाली में अुच्च शिक्षा तक प्रत्येक विद्यार्थी अिसका छ सात गुना तो हो ही जाता है।

अिस प्रश्न को लेकर अिनकी कुछ शिक्षण मत्रों से चर्चा छिड गयी। "मैंने अुनसे नअी तालीम पद्धति का अध्ययन करने के लिअे विनती की। अुन्हें शका थी कि अिस प्रकार के विद्यालयों में विद्यार्थियों की उचित प्रगति होती है या नहीं।" यह बात पिछली दीपावली की छुट्टियों की है। अुन्होंने अपने अिन दोनों बच्चों को अपने अिन मित्रों में से अेक के पास अुनके निरीक्षण में तीन दिन रखा।

"शाला के मुख्याध्यापक श्री   अेक अच्छे शिक्षा-तज्ञ माने जाते हैं। मेरे बच्चों के विद्यार्थी-जीवन के किसी भी पहलू पर वे असन्तुष्ट नहीं हो सके   ।"

अिसी बीच मेरे पास श्री   का भी पत्र आया, जिसमें अुन्होंने अिन दोनों बालकों की की गयी समीक्षा या यह कहिअे किये गये निरीक्षण के बारे में अपने विचार लिखे।"   . ये दो बच्चे मेरे घर तीन दिन रहे। मैंने अुनके साथ विविध विषयों पर बातचीत की। मुझे यह कहने में हर्ष होता है कि बच्चों की हालत हर पहलू से समाधान देनेवाली रही। अुनका शरीर स्वास्थ्य अच्छा था। अुनकी अपनी पढाअी में प्रगति ठीक थी। अुनका सामान्य ज्ञान भी बुरा नहीं था। अुनका विकास ठीक तरीके से हो रहा है।"

हमें यह जानकर खुशी होती है कि श्री.. में अिन दो वच्चो की सूक्ष्म समीक्षा करके यह अनुभव किया कि नओ तालीम के द्वारा अनके मित्र के वालकों की प्रगति सन्तोषजनक हो रही है। परन्तु अनके मन मे दो प्रश्न अठे हैं। अनका जिक्र भी यहा करना ठीक होगा। अनका कहना है, ' यह अभ्यासक्रम पूरा करने के बाद अिन छात्रो के लिअे विश्वविद्यालय का रास्ता खुला न रहने के कारण अनके दिलपर जरा बुरा परिणाम होगा। वह परिणाम न हो अैसी व्यवस्था हो यह आवश्यक है।" बात काफी हद तक ठीक है, किन्तु असका कुछ स्पष्टीकरण होना चाहिये। नओ तालीम जिस समाजरचना की तैयारी म लगी है, असम विश्वविद्यालयों के आज के स्वरूप को बदल कर दूसरे तरह का बनाना होगा। विश्वविद्यालय की तालीम असते पहले की तालीम की बुनियाद पर रची जानी चाहिये। अगर बुनियाद की तालीम 'नओ तालीम' है तो अच्च शिक्षा का स्वरूप भी असी आधार पर खड़ा होना चाहिये। पर अिसमें कोअी शक नहीं कि आज भी नओ तालीम के विद्यार्थियो के लिये "विश्व-विद्यालय का रास्ता" खुला रहना चाहिये। पर यह जम्मेदारी है किसकी? अगर नओ तालीम के जरिये शरीर, बुद्धि और हृदय का 'अुचित विकास' होता है तो यह जिम्मेदारी जनता और शिक्षाशास्त्रियो की है, और वे देखे कि यह रास्ता खुलता है। "शिक्षा-जगत्" को ही अपनी यह जिम्मेदारी महसूस करनी चाहिये।

अिनका दूसरा प्रश्न है अंग्रेजी भाषा का। वह तो पुरानी बात है अुसपर "नओ तालीम" मे भी काफी कहा जा चुका है। असका यहा जिक्र करने की आवश्यकता नही। *

* अिस प्रश्न पर "नओ तालीम" के ये अंक देखिये। —अक्तूबर १९५६ नवम्बर १९५७

(पृष्ठ २१४ का शेषांश)

कार्य या व्यवहार अैसा न हो जिससे बच्चे को यह महसूस हो कि यह कोअी अपने लोगों से भिन्न है।

कार्यकर्त्ता गण जब सारे गाव को परिवार बनाने का प्रयत्न करेंगे तो कम से कम अेक शाला में काम करने वाले कर्मियो का तो अेक अनौपचारिक (अिनफार्मल) परिवार बनना ही चाहियें। हम लोगो का अेक दूसरे के लिअे पूर्ण अनाग्रही अत्यन्त प्रेम हो। और यदि कोअी मतभेद हो भी तो आपस में समझ-समझा ले, आपस में किसी प्रकार की निन्दा वृत्ति न हो।

हमारे परिवारो में भी हम अधिक से अधिक सर्वोदय विचार धारा को कार्यान्वित करने की कोशिश करें।

हम अपने व्यक्तिगत जीवन में अधिक से अधिक सादगी लाने का प्रयत्न करें और अुसे सार्वजनिक जीवन के साथ मिलाने की चेष्टा करें।

शिक्षक गण अपनी अिस साधना के सम्बन्ध में होने वाले अनुभवों और सुझावो का आदान प्रदान अन्तर्शालीय पत्रिका द्वारा करेंगे तो अच्छा होगा।

नअी तालीम के तत्त्व

धीरेन्द्र मजूमदार

सब से पहले हम अिस बात पर विचार करें कि बुनियादी शिक्षा के लिअे आवश्यक भूमिका क्या होनी चाहिये ? जैसे कलाकार जिस प्रकार की भी तस्वीर का निर्माण करना चाहे, अुसके लिअे अुसे अेक सामान्य पटभूमि बनानी होगी। अुसी तरह चाहे जिस पद्धति का शिक्षण हो, अुसके लिअे अेक सामान्य पटभूमि की आवश्यकता है। अिस पटभूमि को हम वातावरण कहेंगे। वातावरण याने शिक्षा की हवा। हमें शिक्षा शाला में शिष्टाचार, अनुशासन आदि की आवश्यक हवा पैदा करनी होगी। अिस हवा को पैदा करने के लिअे प्रथम साधन शिक्षा है। अर्थात् जिस तरह पटभूमि की सफाअी-लिपाअी करने और चित्र बनाने का काम कलाकार करता है, अुसी तरह शिक्षा की हवा पैदा करना और शिक्षा प्रदान करना भी शिक्षक का ही काम है। अिसलिये शिक्षक शिक्षा का प्रधान अुपादान है।

अैसे शिक्षकों के स्वभाव और चरित्र में सब से पहले गुरुत्व होना चाहिये। गुरुत्व का मतलब यह नहीं है कि शिक्षक हमेशा गंभीर और भारी मुंह करके बैठा रहे। गुरु शिष्य के साथ हमेशा खेलेगा, अुसको प्यार करेगा। शिष्य भी गुरु के साथ हँसेगा, खेलेगा, गुरु को प्यार करेगा, अुससे डरेगा नहीं। लेकिन हमेशा अुसके गुरुत्व का अनुभव करेगा। मैंने कहा कि शिष्य गुरु से डरेगा नहीं, लेकिन निर्भय होना अेक बात है और बदतमीज होना दूसरी बात है। शिष्य गुरु के साथ बैठकर बात भी करेगा। लेकिन पैर गुरु के शरीर में छू गया, तुरत शिष्य के मन में ग्लानि होगी और वह अुसे प्रणाम करेगा। हो सकता है कि दो बच्चे आपस में कुछ हल्की बातें कर रहे हों, लेकिन गुरु के सामने आते ही स्वभावतः संभल जायेंगे। तभी समझना होगा कि शिष्य गुरुत्व का अनुभव कर रहा है। अिसे बनाना पहला काम है। गुरु शिष्य में स्नेह और श्रद्धा का संबंध नित्य बढ़ता रहे और परस्पर-शिष्टाचार हमेशा कायम रहे, तभी गुरुत्व स्थिर रह सकेगा।

शिक्षक के लिअे दूसरी आवश्यकता निष्ठा की है। वह अपने काम के प्रति अेकाग्र हो। परन्तु अक्सर देखा जाता है कि शिक्षक विद्यार्थी-केंद्रित नहीं होता है, वह स्वयं-केंद्रित होता है, तो वह चाहे आत्मोन्नति का बड़ा साधक हो, लेकिन वह शिक्षक नहीं है, क्योंकि वह आत्मनिष्ठ है, शिष्यनिष्ठ नहीं है। वह अपने स्वास्थ्य के लिअे व्यायाम करता है, प्रणायाम करता है या आसन करता है। अपने बौद्धिक विकास के लिअे पढ़ता है आध्यात्मिक विकास के लिअे दूसरी कोअी साधना करता है, तो वह आचरशील और अच्छा अवश्य है, लेकिन अगर वह शिक्षक है, तो समझना होगा कि शिक्षा के प्रति अुसकी अेकाग्रता नहीं है। अैसा पूछा जा सकता है कि क्या अिसका मतलब यह है कि शिक्षक की शारीरिक, मानसिक, नैतिक या आध्यात्मिक अुन्नति नहीं होनी चाहिये ? अवश्य होनी चाहिये। लेकिन शिक्षक की निष्ठा अिसी में हो कि वह माने कि बच्चों की अुन्नति की चेष्टा में ही आत्मोन्नति है, बच्चों के विकास की निरंतर कोशिश ही अपने लिअे साधना है। बच्चों को पूरी तरह अुन्नति करना है। अिसलिअे कहता हूँ कि शिक्षक की दूसरी आवश्यकता निष्ठा है।

अब हम नअी तालीम के शैक्षणिक पहलू पर विचार करेंगे । बचपन से हम जो ज्ञान प्राप्त करते हैं, अुसका तरीका क्या हो और प्राप्त ज्ञान को कैसे टिकाअू बनाया जाय, शिक्षा में ये ही दो प्रश्न मुख्य हैं । आज यह सर्वमान्य है कि प्रत्यक्ष अनुभव ही ज्ञान प्राप्ति तथा अुसको स्थायी बनाने का प्रामाणिक तरीका है । हाथी के विभिन्न पहलुओं पर चाहे हजार पृष्ठों की किताब पढ डालिये, लेकिन हाथी के बारे में आपका अुतना सही ज्ञान नहीं होगा, जितना हाथी देखने में होगा । घर पर हाथी है, तो बचपन से बड़े होने तक हाथी के बारे में बिना प्रयास से पूरी जानकारी हो जाती है । यह भी सही है कि हाथी के बारे में हजार पृष्ठों की किताब पढ कर हाथी को समझने में जितना समय लगता है, अुससे अत्यन्त अल्प काल में प्रत्यक्ष दर्शन में अुसकी जानकारी हो जाती है । हमारे देश में जो ज्ञान-भंडार संचित है, अुसका नाम 'दर्शन' है । वास्तविक दर्शन से ही अुसकी प्राप्ति हुअी है । यही कारण है कि वह ज्ञान अक्षय है ।

अिसलिये गांधीजी ने शिक्षा-पद्धति में जो नयी बात कही है, वह यह कि जीवन के पुरुषार्थ में जो कुछ कर्म-सूची निहित है, वही शिक्षा का माध्यम है यानी अुसीमें से मनुष्य का बौद्धिक तथा सांस्कृतिक विकास होना चाहिये । जीवन-संघर्ष की प्रत्यक्ष अनुभूति से जो ज्ञान प्राप्त होगा, वही सही ज्ञान हो सकता है, न कि परोक्ष अनुभूति से प्राप्त ज्ञान । आज के शिक्षाशास्त्री भी यही मानते हैं । अिसलिये वे नित्य नये प्रयोग, करते रहे हैं, "किंडरगार्डन" "प्रोजेक्ट"-नाना प्रकार की पद्धति वास्तविकता की प्राप्ति के लिअे बनाते हैं। लेकिन वे जीवन के हरअेक विषयों को कृत्रिम बना कर शिक्षार्थियोंके सामने पेश करना चाहते हैं । अिससे अनुभव वास्तविक यानी प्रत्यक्ष नहीं होता है । आखिर वह कृत्रिम ही है । अिसलिये गांधीजी जीवन संघर्ष के प्रत्यक्ष सहयोग से ही शिक्षा-प्राप्ति का मार्ग अुपस्थित करते हैं ।

यह तो हुआ ज्ञान-प्राप्ति का सहज तथा प्रामाणिक तरीका । लेकिन अिसका अेक सामाजिक पहलू भी है । अगर प्रत्यक्ष जीवन-संघर्ष से ही बौद्धिक तथा सांस्कृतिक विकास के स्रोत का आविष्कार नहीं हो सकेगा, तो कर्मभूमि अलग और ज्ञान-मंदिर अलग रहेगा । आज वैसा ही है । ज्ञान-प्राप्ति के लिअे ज्ञान-मंदिर अलग जगह खुलते हैं और कर्म के लिअे अलग साधन हैं । अिसका नतीजा यह होगा कि समाज में ब्राह्मण-वर्ग और शूद्र-वर्ग अलग-अलग रहेंगे । आश्चर्य की बात यह है कि आज देश और दुनिया के तमाम पढे-लिखे लोग कहते हैं कि जाति-भेद मिटना चाहिये । पर वह मिटेगा कैसे ? अगर कर्मभूमि से भिन्न ज्ञानमंदिर और सांस्कृतिक-गृह अलग-अलग रहेंगे, तो निःसंदेह थोड़े ही मनुष्य कर्मभूमि से छुट्टी लेकर अिन मंदिरों में प्रवेश पा सकेंगे । अगर हरअेक को अुसमें प्रवेश कराने की कोशिश की जायगी, तो प्रथम तो अुन मंदिरों में स्थानाभाव होगा और दूसरी बात यह होगी कि जिंदगी की आवश्यकता-पूर्ति का कार्यक्रम समाप्त होगा । अगर आप यह कहते हैं कि संसार से जाति-भेद और श्रेणी-भेद मिटना चाहिये, तो कर्म-क्षेत्र को ही ज्ञान-क्षेत्र बनाना होगा । कर्म में से ज्ञान के विकास की जो पद्धति है, अुसीको समवाय शिक्षण-पद्धति यानी नअी तालीम कहते हैं ।

सामूहिक साधना

साधना सामूहिक तौर पर होनी चाहिये, याने पन्द्रह बीस मनुष्यों को अिकट्ठे होकर साधना करनी चाहिये अितना ही अिसका अर्थ नहीं है, बल्कि अिसका अर्थ यह है कि समूह जीवन ही जीवन है। व्यक्ति का जीवन जितने हिस्से में समाज का हिस्सा है अुतने ही अर्थ में वह जीवन है, अैसा माना जायगा। समाज से अलग जीवन हो ही नहीं सकता। अिसलिअे हमारा हरअेक सद्गुण सामाजिक होना चाहिये।

अब वैराग्य की बात लीजिये। वह अुचित है या अनुचित, कितनी मात्रा में अुचित और कितनी मात्रा में अनुचित है, अिन चारों प्रश्नों का अुत्तर कुल समाज के लिअे सोचकर दिया जायगा। समाज के लिअे जितनी मात्रा में वह जरूरी है अुससे अधिक मात्रा मे अगर किसी मे वैराग्य है तो या तो वह अेकांगी विशेषज्ञ है या अुसमे विकृति है। अिस तरह सब गुणो के बारे मे सामाजिक दृष्टि से सोचना होगा।

हर अेक गुण को व्यक्तिगत नहीं रखना चाहिये, समुदाय मे व्यापक बनना चाहिये। जब तक गुण को सामूहिक रूप नहीं देते हैं तब तक गुणों की ताकत प्रकट नहीं होती। हिन्दुस्तान मे व्यक्ति की महिमा बहुत प्रकट हो चुकी है। लेकिन हम नहीं कह सकते हैं कि हिन्दुस्तान के औसत लोगो की अूचाओ दुनियाँ के दूसरे देशों से ज्यादा है। यहाँ केवल अूचे-अूचे हिमालय जैसे सत्पुरुष दिखायी पडते हैं। बाकी सारी जमीन अपनी जगह है। तो अिसमे कोओ लाभ नहीं।

आजकल सज्जनता खास लोगों का गुण हो गया है। अुसके लिअे महात्मा शब्द रूढ हुआ है। लेकिन आत्मा न महान है न अल्प। वह तो जितना है अुतना ही होता है। पर हम सब "अल्प आत्मा" बने और चद लोगो को "महात्मा" बनाया और कहने लगे कि महात्मा झूठ बिलकुल नहीं बोलता, कितना बडा यह सद्गुण माना गया है! लेकिन सब लोगों ने झूठ का अितना प्रयोग किया कि झूठ न बोलनेवाला महात्मा कहलाया गया, यानी अुसकी योग्यता का आधार दूसरों की अयोग्यता हो गयी। अिसलिअे गुणों की प्रक्रिया हमे व्यापक बनानी होगी। हिन्दुस्तान मे यह समझने की जरूरत है कि सत्य, क्षमा, प्रेम आदि गुणों को महापुरुषों के ही गुण समझकर हम निष्ठुर बने रहेंगे, तो हिन्दुस्तान आगे नहीं बढेगा। जो प्रेम और दया का प्रयोग महापुरुषो ने अपने जीवन मे किया वह सारे समुदाय मे लागू करना अपना काम है।

—विनोबा

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम

हिन्दी पुस्तकें

मूल्य
रु नपै

शिक्षा पर गान्धीजी के लेख व विचार

१ शिक्षा में अहिंसक क्रान्ति	१–००

बुनियादी शिक्षा सम्मेलनो की रिपोर्ट

२ बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा (डॉ जाकिर हुसेन समिति की रिपोर्ट)	१–५०
३ समग्र नओी तालीम	२–७५
४ आठवा नओी तालीम सम्मेलन विवरण	१–२५
५ नवा " " "	०–६३
६ दसवा " " "	०–७५
७ ग्यारहवा नओी तालीम सम्मेलन	१–००
८ बारहवा नओी तालीम सम्मेलन	१–५०

बुनियादी शिक्षा के आम सिद्धात

९ प्रौढ शिक्षा का अुद्देश्य (शाता नारुलकर और मॉर्जरी साअिक्स)	०–७५
१० जीवन शिक्षा का प्रारम्भ (पूर्व-बुनियादी तालीम की योजना और प्रत्यक्ष काम) (शाता नारुलकर)	१–२५

अलग-अलग विषयो पर पुस्तकें

११. मूल अुद्योग कातना (विनोबा)	०–७५
१२. खेती शिक्षा (भिसे और पटेल)	१–००

पाठ्यक्रम की पुस्तकें

१३. आठ सालो का सम्पूर्ण शिक्षाक्रम	१–५०
१४ अुत्तर-बुनियादी शिक्षाक्रम (सक्षिप्त)	०–२५
१५ पूर्व-बुनियादी शिक्षको की ट्रेनिंग का पाठ्यक्रम	०–६३

अन्य पुस्तके

१६ भारत की कथा (अभिनय तथा सगीत)	०–५०
१७ नओी तालीम का आयोजन	०–०६
१८ सेवाग्राम—गाधीलोक	०–३१
१९ सेवाग्राम के काम पर कुछ विचार (प्रो राअीस)	०–०६

नये प्रकाशन

२० शाति सेना	०–१२
२१ शिक्षको से (विनोबा)	०–२५
२२ नओी तालीम का नया पर्व (ग्रामदान नओी तालीम ज्ञान गोष्ठी का विवरण)	०–७५
२३ विद्यार्थियो से (विनोबा)	०–२५
२४ ग्राम-स्वराज्य नओी तालीम	१–००

नोट–१ पुस्तक की कीमत पर प्रत्येक ५० नये पैसे पर प्राय ६ नये पैसे के हिसाब से डाक खर्च लगेगा । अिसके अलावा वी पी या रजिस्ट्री से मगाने पर ६३ नये पैसे अधिक लगेंगे ।

नोट–२ प्रत्येक ऑर्डर के साथ अेक चौथाअी रकम पेशगी रूप में आनी चाहिये ।

प्रकाशक – श्री आर्यनायकम्, अध्यक्ष, हिन्दुस्तानी तालीमी सघ, सेवाग्राम,
मुद्रक – श्री. द्वारका [illegible], नओी तालीम मुद्रणालय, सेवाग्राम ।

सपादक-मडल

आशादेवी : मार्जरी मार्डक्म

देवीप्रसाद

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ

सेवाग्राम

वर्ष : ७] फरवरी १९५९ [अंक : ८

"नअी तालीम" फरवरी १९५९ : अनुक्रमणिका

'नअी तालीम' के नियम

१ "नअी तालीम" अंग्रेजी महीने के हर पहले सप्ताह में सेवाग्राम से प्रकाशित होती है। अिसका वार्षिक मूल्य तीन रुपये और अेक प्रति की कीमत २५ नये पैसे है। वार्षिक मूल्य पेशगी लिया जाता है। ग्राहक बनने के अिच्छुक सज्जन तीन रुपये मनीऑर्डर से भेजें, तो अुत्तम होगा। वी पी से मंगाने पर अुन्हें ६२ नये पैसे अधिक देना होगा।

२ किसी भी महीने से ग्राहक बन सकते हैं। अेक साल से कम अवधि के लिये ग्राहक नहीं बनाये जाते हैं।

३ पत्र प्रकाशित होते ही सावधानी के साथ ग्राहकों को भेज दिया जाता है। अगर दस दिन के अंदर अंक न मिले, तो पहले डाकखाने से पूछताछ करके फिर लिखना चाहिये। पत्र न मिलने की पुरानी शिकायतों पर ध्यान न दिया जायगा।

४ तीन महीने से कम के लिये पता बदलवाना हो, तो अपने डाकखाने से अिंतजाम कर लें।

५ ग्राहकों को चाहिये कि रेपर पर पते के साथ दी हुअी अपनी ग्राहक संख्या हमेशा याद रखें और पत्र-व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें, वरना अुनकी शिकायत पर कोअी कार्रवाअी न की जा सकेगी।

नई तालीम

(हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की मासिक पत्रिका)

वर्ष ७] फरवरी १९५९ [अंक ८

बापू

गांधीजी अपनी जनता के अेक अैसे नेता थे जिन्हें किसी बाह्य सत्ता का आधार प्राप्त नहीं था, वे अैसे राजनीतिज्ञ थे जिनकी सफलता न किसी कूटनीति पर या नहीं ही प्राविधिक तरीकों की दक्षता पर आधारित थी, बल्कि वे अपने व्यक्तित्व की शक्ति मात्र से ही दूसरों को कायल कर देते थे। वे अेक विजयी योद्धा थे जिन्होंने हमेशा बल-प्रयोग को धिक्कारा। उनमें ज्ञान और नम्रता थी। उन्होंने दृढ संकल्प और सातत्य के साथ अपनी सारी शक्ति अपने देशवासियों को ऊपर उठाने और उनकी दशा सुधारने में लगा दी। उन महापुरुष ने यूरोप की पाशविकता का सामना सरल मानवता के गौरव से किया और अिस तरह हमेशा वे ऊँचे उठे।

आनेवाली पीढ़ियाँ शायद मुश्किल से ही यह विश्वास कर सकेंगी कि ऐसा कोई रक्तमांस का देहधारी अिस धरतीपर चला था।

—एलबर्ट आअिन्सटीन

———

शिक्षण सर्वथा स्वतंत्र रहे

विनोबा

हमारे देश के अितिहास में देखा गया है कि देश को जिन्होने बनाया और जिनका देश भर ज्यादा-से-ज्यादा असर रहा, वे "आचार्य" या "गुरु" कहलाये । शकर, रामानुज ये आचार्य हो गये और कबीर, नानक आदि गुरु । हिन्दुस्तान के दिलो और दिमागो पर अैसे ही लोगो का असर रहा है । राजा महाराजा आये और गये, लेकिन वे कोअी कायमी असर न डाल सके । लोग अुन्हे भूल गये । अितिहास पढाते समय शिक्षक लडको से अिन राजा–महाराजाओ के नाम कठ करवाते हैं, अिसलिअे कुछ बेचारे याद रह गये, नही तो अुनकी कोअी स्मृति नही रहती ।

दिल्ली से पचास मील दूर, नूह तहसील में मुसलमानों की अेक सभा में मैं बोल रहा था । मेव लोगो को बसाने का काम चल रहा था । जब मैं शरणार्थियो के काम मे लगा, तो मेवो का भी काम मुझे करना था । अुस सभा में मुझे अुदाहरण देना था, तो मैंने कहा–अकबर बादशाह का नाम आपने सुना होगा । अुस सभा में चार-पाच सौ स्त्री-पुरुष आये थे । अुन्होंने जवाब दिया "अकबर का नाम हमने नही सुना ।" मैंने अुनसे पूछा–"अकबर यह शब्द तो आपने सुना होगा" तो अुन्होंने कहा–"जी हा, 'अल्लाहो अकबर, अल्लाहो अकबर' हमने जरूर सुना है" । सारांश, अल्ला मिया के सिवा बाकी दूसरो को हम नही जानते । प्राचीन काल में जितने राजा हो गये, अनमें सब से बडा बादशाह अकबर था । श्रीहर्ष के बाद अुसी का नाम आता है । फिर भी मुसलमानो को भी, जो दिल्ली से सिर्फ पचास मील दूर रहते थे, अुसका नाम मालूम नही । लेकिन कबीर का नाम अुनको मालूम था । अैसी है हिन्दुस्तान की यह अजीब दुनिया ।

मतलब यह कि हिन्दुस्तान पर जिनका स्थायी असर हो गया, वे राजा नही, फकीर थे । फिर चाहे, वे हिन्दू हो, मुसलमान हो, या सिख । सस्कृत में हजारो ग्रन्थ हैं, लेकिन अुनमें राम, कृष्ण, कौरव पाडव के सिवा दूसरे किन्ही राजाओ के नाम नही हैं । अेक ही अैसा ग्रन्थ है, जिसमें काश्मिर के राजाओ के नाम हैं । बाकी सब में मुश्किल से राजाओ के नाम मिलते हैं, फिर भी अुनमें गुरु और आचार्यों के नाम मिलते हैं ।

अिन दिनो राज्यनियन्त्रित शिक्षण चलता है । कुल शिक्षण पर सरकारी सत्ता है । यह कल्याणकारी राज्य का बहुत ही बुरा परिणाम है । अभी केरल में शिक्षण के बारे में बिल आया, तो सभी पक्षो ने मिलकर हल्ला मचाया । आखिर वह बात राष्ट्रपति के सामने गयी और वहा से सघ-न्यायालय के सामने आयी । किन्तु सघ-न्यायालय ने अुसमें कुछ सुझाव रखे, थोडी कुछ बाते सुधार दी और वह बिल मजूर कर लिया । अिस तरहकी खबर आज ही आयी है । विरोधी पार्टियो को अिसमें खतरा मालूम पडता था । शिक्षण पर कम्युनिस्ट-सरकार की सत्ता चलना ठीक नही, यह अुनकी शिकायत है । अुन्हे अिससे खतरा मालूम होता है । फिर जहा काग्रेस का राज्य है, वहा वह खतरा अुन्हे नही मालूम होता । अपना-अपना अलग-अलग दृष्टिकोण होता है । लेकिन लोकशाही में जो

भी सरकार हो, चाहे वह कम्युनिस्ट हो, फासिस्ट हो, पूजीवादी हो या सोशलिस्ट, वह वही तालीम देगी जिस विचार को वह मानती है। अिसलिअे स्वतत्र मत तो दिया जाता है, लेकिन अुस स्वतत्र मत की कोअी कीमत नही, यदि तालीम स्वतत्र न हो।

हिन्दुस्तान की तालीम हमेशा आजाद रही है। यही हिन्दुस्तान की खूबी है, यही अुसकी सबसे बडी विशेषता है। अगर किसी ने यह मान लिया हो कि यहा शिक्षण पर सरकार की सत्ता थी, तो यह गलत है। हिन्दुस्तान में अुन दिनो से तालीम है, जबकि यूरोप में तालीम का आरभ भी नही हुआ था। यही बात अुपनिषद् में भी आती है। अुपनिषद् का राजा अपने राज्य का वर्णन कर रहा है—"न अविद्वान्" मेरे राज में अैसा कोअी नही, जो विद्वान् न हो। सिर्फ पढे-लिखे लोग ही नही, सब विद्वान् हैं।

अितना ही नही डा० अैनी बेसेण्ट ने अेक जगह लिखा है कि बगाल में जब आस्ट अिण्डया-कपनी आयी तो अुससे पहले ही वहा के गावो में ग्राम-पचायत और चार सौ लोकसख्या के लिअे अेक मदरसा था। ओस्ट-अिडिया-कपनी के रिकार्ड में भी यह लिखा है। अिसलिअे यह ख्याल गलत है कि अुन दिनो तालीम का नाम तक नही था। ग्राम पचायत के जरिये ही वह तालीम दी जाती थी और वह स्वतत्र होती थी। अुसपर किसी का नियत्रण नही था।

अलावा अिसके ज्ञानी लोग शहरो में नही, नदी के किनारे, अेकान्त में, पहाडो में रहते थे। वहा अुनकी वेद, न्याय, मीमासा की, ज्योतिष की, गणित की, वैद्य आदि की छोटी छोटी पाठशालाअें चलती थी। अिस तरह कुछ स्वतत्र शिक्षण था। यहा तक कि भगवान् श्रीकृष्ण को अुनके पिताने सोलह साल की अुम्र में कस-विमोचन जैसा पराक्रम करने के बावजूद सादीपनी के पास पढने के लिअे भेजा। वहा अुनको लकडी चीरने का काम दिया था। पोरबदर का सुदामा नामक ब्राह्मण बालक भी अुस आश्रम में पढता था। दोनो को अेक ही प्रकार की तालीम दी जाती थी। कृष्ण राजा का लडका होने से अुसे कोअी स्पेशल क्लास नही दिया गया था। राजा वसुदेव भी किसी प्रकार की हिदायत सादीपनी को नही दे सकता था। अिसी तरह विश्वामित्र के पास दशरथने अपने लडके भेजे, किन्तु गुरु को दशरथने कोअी आज्ञा नही दी। साराश, ज्ञानी और विद्वान् पुरुषो को राजा कभी आज्ञा नही देता था। अुनपर राजाओ का किसी प्रकार का नियत्रण नही होता था।

अिसलिअे मै हमेशा कहता हू कि विचार की आजादी जो मैंने सस्कृत भाषा में देखी, वह दूसरी भाषा में नही। मै दुनिया की पद्रह-बीस भाषाअें जानता हू। किन्तु अैसी कोअी भाषा नही जानता, जिसमें सस्कृत के जैसा विचार-स्वातत्र्य हो। अेक ही हिन्दू धर्म है, किन्तु अुसका तत्वज्ञान कोअी मानता है, तो कोअी नही भी मानता है, कोअी धर्म-काण्ड को मानता है, कोअी अुसे नही भी मानता है। कोअी ओश्वर को मानता है, कोअी ओश्वर को नही भी मानता है। कोअी पुनर्जन्म में विश्वास करता है, तो कोअी नही करता। सभी जानते हैं कि छ-छ दर्शन हैं और धर्म अेक ही है। हा, सदाचरण के कुछ नियम हैं, अुन्हें सबको मानना पडता है। बाकी सब तरह से सर्वथा स्वतत्र-विचार चलता है। साख्य, मीमासा, द्वैत-अद्वैत

आदि अलग-अलग दर्शन हैं। अुनमें अेक दूसरे के विचार पर प्रहार भी चलता है, फिर भी पूर्णत विचार-स्वातत्र्य है। अिसीलिअे कहा कि यहाके शिक्षण पर सरकार का कट्रोल नही था।

विचार स्वातत्र्य के अिस मामले में शायद अिग्लैण्ड का शिक्षण बराबरी करता हो। वहा भी शिक्षण पर सरकार की सत्ता ज्यादा नही दीखती। वहा भी स्वतत्र-विचार, मुक्त-विचार करनेवाले लोग हैं।

मुझे कहना अितना ही है कि आप दिमागों को आजाद रखिये। दिमाग की आजादी कभी मत खोअिये। दिमाग की आजादी खोना आत्महत्या ही है। शिक्षक और विद्यार्थियो को अपने दिमाग की आजादी नही खोनी चाहिये। अन्यथा, वह अुनकी आत्महत्या ही होगी। आज अनुशासन आदि का विचार है, अवश्य ही अनुशासित तो रहना ही चाहिये, किन्तु विचार में किसीकी भी सत्ता हम पर न चले। आजकल हमारे यहा दीक्षान्त-समारोह में विद्यार्थियो को गाअुन पहनाया जाता है और फिर डिग्री मिलती है। किन्तु पुराने जमाने में गाअुन नही पहनते थे। यह सारा ढोग अभी-अभी आया है। पुराने जमाने में विद्यार्थियो को गुरु स्नान कराता था। तब वह "निष्णात" बनता था। याने विद्या में पारगत माना जाता था। गुरु अपने हाथो अुसे नहलाता था, अिसलिअे वह स्नातक हो जाता था। यह भी अेक विधि थी। फिर गुरु अुसे व्याख्यान देते थे-दीक्षान्त भाषण का अन्तिम आदेश। अुपनिषद् में अिसका जिक्र किया गया है। वे दीक्षान्त भाषण में "सत्य बोलो" आदि तो कहते ही हैं, अलावा अिसके यह भी कहते हैं कि "यान्यस्माक सुचरितानि तानि सेवितानि, नो अितराणि" याने हमारे जो अच्छे कर्म और अच्छे विचार हो, वे ही लेने चाहियें। हमारी जितनी अच्छीअी हैं, अुतनी लो। दूसरी चीजो को मत लो। याने अिस तरह वे शिष्य को विचार की आजादी दे रहे हैं। अिसीलिअे स्वतत्र-बुद्धि का विकास होता था। मैंने अैसा दीक्षान्त भाषण कही नही सुना।

अिन दिनो दिल और दिमाग की आजादी नही रही है। "लोक-कल्याण" का नाम तो लिया जाता है, लेकिन विचार की आजादी न रखना अवनति का लक्षण है। हिन्दुस्तान ने अभी तक कभी भी अपने विचार की आजादी नही खोयी। अुसने कभी अपने विचार को सकुचित नही बनाया। तीन-सौ, चार-सौ साल पहले गालिलिओ और कोपरनिकस जैसे बडे-बडे सशोधक हो गये। अुन्होंने जो खोजें की थी, वे "बाअिबल" के खिलाफ मानी गयी। वे "ओल्ड टेस्टामेण्ट" के खिलाफ थी, अिसलिअे अुन्हे बहुत तकलीफ हुअी। यहा तक कि वे गालिलिओ से कहते थे कि तुम यह लिख दो कि पृथ्वी घूम नही रही है। अुसके लिअे अुन्होने अुसके सामने कागज भी रखे। तो अुसने लिखा "घूमती है, घूमती है, मैं कहू या न कहू फिर भी वह घूमती ही है।" अुसे जेल में डालकर बहुत तग किया गया अिसलिअे बेचारा चाहता था कि पृथ्वी न घूमे, किन्तु ज्ञान को कैसे टाला जाय? अिग्लैण्ड के अितिहास में यह कहानी मशहूर है। यह बारह-सौ, तेरह-सौ साल पहले की बात है।

शकराचार्य के भाष्य में लिखा है कि वेद या शास्त्र में अैसा कोअी वाक्य हो, जो प्रत्यक्ष अनुभव के विरुद्ध हो, तो वेद को नही मानना चाहिये। वेद में अगर अैसा कोअी वाक्य

(शेषाश पृष्ठ २२३ पर)

गांधीजी और शांति-सेना

प्यारेलाल नैयर

(गताक से आगे)

अहिंसा का सब से बडा प्रयोग सरहद प्रात में हुआ । वहा बापू की प्रेरणा से बादशाह खान ने अहिंसा के सिद्धात को अपनाया था । पठान से बढकर बहादुर सिपाही शायद दुनिया में कही नही मिलेगा । पठान के लिअे मरना या किसी की जान लेना बिलकुल खेल सा होता है । छोटी-सी बातपर वे अेक दूसरे को मार डालते हैं । रेडियो सुननेवालो में अेक ने कहा कि तुम अपना मुह बद करोगे या नही ? दूसरे ने नही बन्द किया तो पहले आदमी ने गोली से अुसका मुह बद कर दिया । अेक दफा दो पठान सरदारो के बच्चे आपस में लड पडे । अिनमें से अेक रोता हुआ घर आया और कहने लगा कि मुझे दूसरे ने मारा है, तो बाप ने कहा कि तू मार खाकर आया है, फिर रोता है ? अैसा कहकर अुसने बच्चे को टाग से पकडकर अुसका सिर जमीन पर पटक दिया । जैसे हम नकद लेने देने का हिसाब रखते हैं, वैसे वहां अेक समय कबीले आपस में खूनो का हिसाब रखते थे । अुसके कबीले ने हमारे अितने आदमी मारे तो अुसके बदले में हमें अितने मारने है, यह सोचा जाता था । अुनकी सामाजिक व्यवहार नीति की परपरा का वह अेक मुख्य नियम था । अिसका नतीजा यह भी हुआ कि कअी कबीले विध्वस ही हो गये है । अैसे लोगो के बीच बादशाह खान ने अहिंसा का पाठ पढाना शुरू किया और खुदाअी खिदमतगारो का सगठन खडा किया । कहा जाता था कि पठान गोली या फासी से नही डरता, किंतु कैद से वह घबडा जाता है । वह शेर के जैसा खुली हवा का जानवर है । कैद को वह नही सहन कर सकता । परतु १९३० के आदोलन में ये ही लोग बडी सख्या में जेल गये । अुनमें से अेक भाअी माफी मागकर बाहर आया तो अुसने खुद को गोली से मार

(पृष्ठ २२२ का शेषाश)

मिले, तो अुसे प्रमाण नही मानना चाहिये । यह वाक्य वे शकराचार्य बोल रहे हैं, जिन्होने सारा वेद के आधार पर लिखा है । सौ श्रुतियो में अैसे वचन क्यो न मिले कि अग्नि अनुष्ण है, तो अुसे प्रमाण नही मानना चाहिये । जहा आत्मिक बातें हो, जिन पर प्रत्यक्ष का प्रकाश न पडता हो, अुन्ही बातो में वेद को प्रमाण मानना चाहिये । अिसका अर्थ यह हुआ कि सृष्टिविज्ञान के साथ धर्म का कोअी झगडा नही है । शकराचार्य, धर्माचार्य थे और वैज्ञानिक भी । धर्माचार्य को भी यह नही लगा कि विज्ञान के साथ धर्म का झगडा है । विज्ञान के लिअे धर्म याने मैगना-चार्टा है ।

साराश, अुस जमाने में अिसी तरह स्वतत्र चिन्तन चलता था । अैसा नही था कि अमुक वाद, अमुक धर्म या अमुक सिद्धान्त को ही मानना चाहिये । 'अगर वह जचे तो मानो और न जचे, तो मत मानो । अिस तरह अुस जमाने में बुद्धि की पूर्ण स्वतत्रता थी ।

दिया। कअियों ने अिसलिअे आत्महत्या कर ली कि हमसे रहा नही जायगा और हिंसा हो जायेगी। अंग्रेजों ने अुस वक्त अुनको कअी तरह से अुत्तेजित करना शुरू किया। अुनके मुह काले किये। अुनकी स्त्रियों की बेअिज्जती की। लेकिन पठानो ने हिंसा का जवाब हिंसासे नही दिया। पेशावर में गोली छोडी गयी तो अेक के पीछे अेक पठान आगे आता था और सीने पर गोली झेलकर जान दे देता था। आखिर अंग्रेजो को कहना पडा कि निःशस्त्र अहिंसक पठान हिंसक पठान से ज्यादा भयानक है। बापू को लगा कि अिनकी अहिंसा का विकास पूरी तरह हम कर सके तो हिंदुस्तान का बेडा पार होगा। क्योंकि ये लोग डरपोक नही है, मौत से नही डरते हैं। अुन्हें यह जानने की अिच्छा हुअी कि क्या अुनका अहिंसा-पालन बुद्धिपूर्वक है या वह केवल जड नियमण के आधार पर है। अिसकी प्रत्यक्ष जाँच के लिअे बापू सरहद में गये और अेक महीने की यात्रा करके अुन लोगो को अहिंसा का मूल स्वरूप क्या है, अुसके नियम क्या हैं, किस तरह अुसका अपने में अुदय और विकास किया जा सकता है, अिसके लिये शांति सैनिक को कैसी तालीम मिलनी चाहिये, शांति सेना का संयोजन कैसे होना है, यह सब विस्तार से समझाया। वह सब मेरी पुस्तक "अे पिलग्रिमेज फॉर पीस" में मिलेगा।

जिस वक्त बापू वहाँ पहुँचे थे, अुससे कुछ अर्सा पहले बन्नू पर वजीरों के पठानों ने हमला किया था। डेरा अिस्माअिल खां में दिन दहाडे अुन्होंने डाका डाला था, और चौदह लाख की संपत्ति लूटकर चलते बने थे। पुलिसवाले देखते ही रहे थे। अुस वक्त बापू ने वहाँ के लोगो से कहा कि आपके सामने सवाल है कि अैसे समय पर क्या किया जाय। तीन तरीके हो सकते हैं। अेक तो यह कि अुन लोगों को रुपया देकर अुनसे मुक्ति पाना; लेकिन यह नामर्दीका तरीका है। अिससे आपका पतन होगा, और अुन लोगों को दुबारा आने का मानो निमंत्रण मिलेगा। दूसरा तरीका तो अुनसे लडकर मुकाबला करने का है। तीसरा तरीका यह है कि खुदाओ खिदमदगार अपनी जान की बाजी लगा दें कि पहले वे खुद खतम होंगे पीछे डाकू किसी को हाथ लगा सकेगा। आप लोग अुन लोगो के बीच जायें और अुनसे पूछें कि आप अैसा काम क्यों करते हो? क्या माली तंगी के कारण करते हो? अगर अैसा है तो अुसे दूर करने की कोशिश करें। अुनसे विनय करें कि क्या आप हमें दुश्मन समझते हो? क्या हमें अपने दायरे से बाहर समझते हो? अगर अैसे ही वे मानते हो तो आप अुनकी सेवा करे। पठान के बारे में अेक बात है कि जो सेवा करता है अुसे वे कभी भूलते नही; अिसलिअे आपकी सेवा के वश फिर वे ही लोग आपकी रक्षा करेंगे। बापू ने खुदाओ खिदमतगारो से यह भी कहा था कि अेक समय अैसा आ सकता है कि मैं आपको सारे हिंदुस्तान में भेजना चाहूँगा। अिस काम के लिअे बापू ने अुन लोगों की जड अहिंसा को चेतन बनाने की कोशिश की। अुनमें रचनात्मक प्रवृत्ति शुरू की। अुन्हें समझाया कि तीन प्रकार के भय होते हैं। जेल का भय, वह आपने छोडा है। दूसरा मृत्यु का भय, वह भी आपने छोडा। तीसरा संपत्ति खोने का भय। यह सबसे बडा भय होता है। सरकार आपकी जमीन जायदाद छीन सकती है। फिर आपके बच्चे भूखे रहेंगे तो आपका दिल अंगार हुअे बिना कैसे रहेगा? अिसलिअे आपको कोअी अैसा हुनर सीख लेना चाहिये जिससे किसी पर

आधार रखे विना आपका निर्वाह हो सके। और जिससे आप जो बिलकुल गरीब हैं अुनकी सेवा कर सके। फिर, आप जेल जायेंगे तो आपके घर की औरतो का क्या होगा? अिसलिअे आपको अुन्हे भी स्वाश्रयी बनाने के लिअे कुछ सिखाना होगा। आपको पढना लिखना तो आना ही चाहिये लेकिन दूसरी जगह जायेंगे तो अुसके लिअे दूसरी भाषाअें भी सीखनी होगी। अहिंसा की साधना में भाषा का बहुत बडा स्थान है। अहिंसा को प्रकट करने का, अमल में लाने का, वाणी ही अेक बडा साधन है। आखिर हम अपने विचार वाणी द्वारा ही प्रकट करते हैं। मुह से ठीक शब्द निकले जो कि दूसरे के हृदय में जाकर बस जायें, यह अेक बहुत बडी बात है। अिस तरह बापू ने अुन्हे भाषा की महिमा सिखायी। किंतु बापू जो प्रयोग सरहद में करना चाहते थे, वह नही हो सका। क्योंकि १९३९ से लडाअी शुरू हो गयी। अिसलिअे बापू फिर वहाँ न जा सके।

सरहद के अुनके दौरे में बापू से प्रश्न पूछा गया था कि क्या अहिंसा और सगठन ये दो विरोधी चीजें हैं? अगर नही हैं, तो क्या अहिंसा का सगठन हो सकता है? और हो सकता है तो अुसके नियम हिंसक सगठन के जैसे ही होगें या अुससे भिन्न होग? क्या अहिंसक सिपाही की तालीम हिंसक सिपाही की तालीम के जैसे ही होगी या अुससे भिन्न होगी? बापू ने जवाब दिया—अहिंसक सगठन हो सकता है और होना चाहिये। अगर अहिंसा द्वारा सगठन नही हो सकता है, तो वह अहिंसा अहिंसा नही है, कच्ची चीज है। दूसरे सवाल के जवाब में अुन्होने कहा कि भलाअी का रास्ता बुराअी के तरीके से भिन्न होता है, और कअी दफा अुल्टा होता है। अिसलिअे अहिंसा के नियम हिंसा के सगठन के नियमो से भिन्न होंगे, अुल्टे भी हो सकते हैं। अुसी प्रकार तालीम भी भिन्न होगी। अिसका वर्णन मेरी पुस्तक "अे पिलग्रिमेज फॉर पीस" में मिल सकता है।

१९३७ के बाद हिन्दुस्तान के अितिहास में अेक नया प्रकरण शुरू हुआ। जैसे राजनैतिक अधिकार हमारे हाथ में आने का मौका आया वैसे ही हिन्दुस्थान मे कौमी आग भडक अुठी। अुसे सुलगाने वाले दूसरे ही थे जो आग सुलगाकर अलग हो गये, लेकिन आग तो भडकती ही रही। जब प्रातों के अन्दर हमारे हाथ में सत्ता आयी तो बापू ने सब से पूछा कि क्या आप पुराने तरीके से ही चलना चाहते हैं। क्या पुराने राज्य को ही बदलना चाहते हैं या पुरानी राज्य पद्धति को भी बदलना चाहते हैं? अगर आप पुरानी राज्य पद्धति में परिवर्तन नही करते हैं, तो आखिर में आप देखेंगे कि देश कहेगा कि अिस तब्दीली से कुछ लाभ नही हुआ। आज तक अैसा होता था कि कहीं कुछ गडबडी हुअी तो पुलिस को भेजा जाता था। बापू ने कहा कि जो पुलिस अफसर आज आपको सलाम करते हैं वे ही कल आपको हथकडी लगायेंगे। अिसलिअे अिस पुलिस पर आधार रखना आप छोडें।

मोरारजी भाअी ने बापू से पूछा कि जब हुल्लड बाजी होती है तब हम क्या करें? बापू ने कहा—"वहा जाकर आग में कूद पडो। अिसमें मर जाओगे तो कोअी परवाह नही है। आखिर मरना तो है ही। हिंसा की लडाअी में भी खाली सिपाही ही नही, कमांडर भी मरते हैं। अहिंसा की लडाअी सिर्फ सिपाहियों के मरने से नही जीती जाती है।"

खेर साहब ने बापू से पूछा कि क्या हम देश के अंदर अराजकता फैलने दें ! हम हमारी जिम्मेदारी को कैसे छोड दें ? बापूने अुन्हे समझाया कि-"आप जनता से कहिये कि आपके भेज हम यहा है । किंतु आप जानते हे कि काग्रेस ने तो अहिंसा को अपनाया है, अिसलिअे अगर अमन कायम रखने म आप हमारा साथ नही देते हैं तो हम यह स्थान छोड देते हैं। यह कहकर अिस्तीफा दे दें । फिर दुबारा चुनाव होगा । अुस वक्त आपका मुह अुजला रहेगा । दूसरे लोगा को भेजना चाहे तो भले भेजें, लेकिन आपको भजेंगे तो आपका कहा मानना पडगा । आप काला मुह करके वहा से नही निकलेंगे । अग्रजो के शासन के नीचे पली हुअी फौज और पुलिस का अिस्तेमाल किये बगैर हमें आग को रोकना चाहिये । चाहे हम अुसमें खतम भी हो जाय । लेकिन यह नही करेंग तो आज जो हिन्दू मुसलमानो के बीच हुल्लड चल रहा है अेक दिन वह यादवी "सिविलवार" का रूप लेगा और अेक जमाना आयेगा जब आपके सामने यह सवाल पैदा होगा कि या तो अिस बढती हुअी आग को रोकन के लिअे हमें अग्रजा से कहना पडगा कि आप यहाँ से मत जाअिये या देश के दो टुकडे करने हागे । यह कीमत चुकानी होगी ।"

ककओी में कौमी आग को मिटाने में १९४६ में अेक हिन्दू अेक मुसल्मान-दो व्यक्तियो ने बलिदान दिया । अुससे पहले १९३० में कानपुर में गणेश शकर विद्यार्थी ने अपने जीवन की आहुति दी । वे खतम हुअे । आग ता न बुझी, परतु वे हमेशा के लिअे अेक दीपस्तभ बन गये । अुस तात्कालिक हेतु में वे क्या असफल रहे, अगर हमें सोचना चाहिये । जिन लोगा के बीच वे गये थे क्या वे अुन्हे अपना मित्र समझते थे । अुन्हे क्या लगता था कि अिनको घाव लगे तो हमारे भी कलेज पर हो घाव लगा है ? अगर नही, तो असफलता का यह अेक कारण हो सकता है कि अुनकी मित्रता का दावा सामने के पक्ष के गले नही अुतरा था । अिसमें से यह चीज निकलती है कि जिन लोगो के बीच शाति सैनिक को जाकर खडा होना है वे समझें कि यह आदमी हमारा हितैषी है । हम पर अुसका हक है । अिसलिअे शाति सैनिक के लिअे जरूरी है कि अुसने लोगो की सेवा की हो । तभी लोग अुसे अपना मित्र समझेंगे । सभव है कि आग को रोकन में वह खतम हो जाय लेकिन अुसका परिणाम आगे जरूर आयेगा । लडाओी में जानेवाला हर सिपाही यह अुम्मीद नही करता है कि मै खुद आगे जाकर दुश्मन के किले पर झडा फहराअूगा । हजारो सिपाही खाओी में पडते है तब कहीं अेक कोओी आगे बढकर झडा लगाता है । परतु जो सिपाही खाओी में पडते हैं वे यह नही समझते है कि हमने लडाओी हारी । बल्कि यह समझते हैं कि हमने लडाओी जीती । यह नियम अहिंसा को और भी ज्यादा लागू है । अहिंसा बहुत सूक्ष्म और गूढ शक्ति है । पता ही नही चलता कि वह कब, किस तरह और कैसे काम करती है । अक्सर जब अैसे लगता है कि कुछ भी काम नही हो रहा है तब पीछे जाकर देखते हैं कि बहुत काम हुआ है । अिसलिये अूपर अूपर से अहिंसा की सफलता का मान निकालने स बडी गलती होती है । जब आदमी अपने अन्दर अेक बिल्कुल निष्काम कर्म की भावना रखता है और यह समझता है कि मैंने अपने कर्तव्य का पालन किया, बाकी सब ओीश्वरपर निर्भर है, तब काम बनता है । अगर अिसका ओीश्वर पर श्रद्धा रखे बिना कोओी कर

सकता है तो जरूर करे। जो ओीश्वर को नही मानता है अुसकी हम अवगणना न करें। वह जब देखेगा कि मैं जो करना चाहता हूँ वह ओीश्वरनिष्ठा से ही होगा तब वह अुसे अपनायेगा।

नौआखाली में जब हत्याकाड शुरू हुआ तब बापू वहा गये। वहा पर बहुत-से अैसे अिलाके थे जहा फौज भी नहीं घुस सकती थी। जिन्होने कत्ल, खून में हिस्सा लिया था और स्त्रियो पर अत्याचार किये थे वे लोग वही खुले घूम रहे थे, और लोगो के "रक्षक" होने का दावा करते थे। वहाँ जब बापू गये तब लोग समझे कि अिंटरिम गवर्नमेंट में काग्रेस है, अिसलिअे वह सारा सैनिक दल लाकर आतकवादियो को हमेशा के लिये पाठ सिखायेगी। लेकिन बापू ने जाते ही अुन लोगो से कहा कि मैं तो चाहता हूँ कि यहाँ जो भी फौज है वह सारी की सारी वापिस खीची जाय। यह सुनकर लोग हक्के-बक्के हो गये। और कअियों ने भागना भी शुरू कर दिया। तब बापू ने अपने साथियो से कहा कि जो अपनी जान पर खेलने को तैयार है अुसोको यहाँ रहना है, बाकी सब को चले जाना है। जानेवाले की निंदा नही होगी। जिसे रहना है अुसे अहिंसा का सिपाही बनकर रहना है। अिस तरह अुन्होंने अपने सब पुराने साथियो को अकेले अकेले अेक-अेक गाव में जाकर रहने को भेज दिया जिससे कि वे अपने अुदाहरण से भयभीत लोगों को निर्भयता सिखायें। जाते समय अुन्होंने समझाया कि आप लोगो से यह तो नही कह सकते है कि हम तुम्हारी 'रक्षा" वगैरा, परतु यह अुनसे जरूर कह सकते हैं कि यहाँ आप पर कुछ हो अिसके पहले हम खतम होंगे। अहिंसा में आधार सख्याबल पर नही होता है। अहिंसा की सिद्धि कितनी है, अुसकी गहराअी कितनी है, अिसपर होता है। ओीश्वर हमारे साथ है तो अेक होते हुअे भी हम असख्य हैं और ओीश्वर साथ न हो तो असख्य होते हुअे भी हम कुछ नही हैं। आपके साथ संख्याबल हो तो आपको अिसमें से झूठा घमड हो सकता है और विरोधी को बेकार डर का कारण। भय से क्रूरता आती है, अिसलिअे सत्याग्रह का अेक महत्वपूर्ण नियम यह है कि विरोधी को निर्भय करना, जिससे कि अुसमें अिन्सानियत की भावना को जागृत होने का मौका मिले। जब हम शस्त्र का आश्रय लेते हैं तो हम ओीश्वर को सिंहासन से अुतारकर शस्त्र को अपना भगवान बना लेते हैं। अिसलिअे सब प्रकार का शस्त्र-त्याग, सत्याग्रह की बुनियाद है। श्रद्धा वहाँ शुरू होती है जहाँ पुरुषार्थ खतम होता है। जब हम अपने हथियार डालकर केवल ओीश्वर की शरण लेते हैं तब वह निर्बल के बल राम हमें प्राप्त होते हैं। नौआखाली में बापूजी का अपने साथियो से यही आग्रह था कि वे और सब आश्रय छोडकर केवल 'निर्बल के बल राम' का ही आश्रय लें।

अिसी साधना का अुदाहरण अुन्होंने खुद वहाँ दिया। अेक अुजडे हुअे गाव में वे जाकर अकेले रहने लगे। दो-चार व्यक्ति साथ रहे सही, लेकिन वे बापूजी की निजी सेवा के लिअे नही, बल्कि आसपास की पीडित और भयभीत जनता की सेवा के लिअे और अिस तरह की सेवा की तालीम और अनुभव लेने के लिअे। अपना सब काम बापूजी यथासभव खुद ही करते थे। जो काम और साथी करते थे अुसकी भी अतिम जिम्मेवारी वे अपने कधे पर ही डालते थे। कुछ काम बिगडे तो अुसका दोष किसी को

नही, अपने को ही देंगे अैसे अुन्होंने अपने साथ अिकरार किया था।

अपनी तरफ से अुन्होंने अेकात जीवन की यहाँ तक तैयारी कर ली थी कि सब साथी अेक अेक कर छोडकर चले जायें तो भी अुनकी अपनी साधना निर्विघ्न चला करे। अिसकी तैयारी रूप अठत्तर वर्ष के होते हुअे भी अेक खजूर के डडे पर बिना सहारा या किसी की सहायता लिये चलकर नालो को पार करने का अभ्यास करना भी शुरू किया, क्योंकि वहाँ नालो पर अैसे ही पुल होते है। अकेले अैसे पुल पार न कर सके तो क्या वे अपनी यात्रा छोड देंगे? वह तो नही हो सकता था। अिसलिअे अुन्होंने अकेले पार करना सीखा। जनता के हृदय में प्रवेश कर सके अिसलिअे बगला सीखना शुरू किया और जीवन के अतिम दिन तक अेक बार भी चूके बिना यह साधना चलायी। अिससे भी बढकर तो बात यह थी कि जो कुछ स्थानिक जनता दे, अुसमें से जो ग्राह्य हो, वही खाना। बाहर से बकरी का दूध तक नही मगाना। अगर अपने घरो में किसी गाव में लोग जगह न दें तो जगल में सोना होगा अैसा सकल्प अुनका था। और अगर अिस तरह की सख्ती झेलने से या और किसी कारण से स्वास्थ्य बिगडे तो वह अुनकी नालायकी का चिह्न होगा अैसे अुन्होंने घोषित कर दिया था।

यही नियम अुन्होंने अपने पुराने साथियों पर भी लागू किया था। अगर कोअी बीमार पड जाय तो अुसे रामनाम और नैसर्गिक चिकित्सा से ही अच्छा होना है, नहीं तो वही मरना है या हार मानकर कार्यक्षेत्र में से निवृत्त हो जाना है। डाक्टरी अिलाज की किसी को अपेक्षा नही रखनी है।

अुन्होंने तय किया था कि अिस तरह अवधूत की तरह वे आजीवन तब तक गावगाव में अविश्रात घूमते रहेंगे और हिन्दू मुसलमान सब की करुणा-प्रेरित सेवा करते रहेंगे जब तक अुनके अिस अुदाहरण से हिंदुओ के दिलो में वीरता और हिम्मत आ जाय, और यह समझने लगें कि वे मुसलमानो के शत्रु नही किंतु सच्चे मित्र है। हिंदू मुसलमान भाअी-भाअी है और भाअी-भाअी की तरह अुन्हे रहना चाहिये।

बापू के सारे जीवन में वीर की अहिंसा का यह सब से बडा प्रयोग था। कलकत्ता के चमत्कार के वक्त लार्ड मौंटबेटन को भाषा में "वन् मैन बाअुडरी फोर्स" बनकर बापूजी ने वह काम कर दिखाया जो कि पचास हजार सशस्त्र सैनिक पश्चिम पजाब में न कर पाये। यह अुनकी अुपरोक्त अिसी साधना का परिपक्व फल था। तीस जनवरी १९४८ के दिन अुनकी पूर्णाहुति ने अिस साधना के कीर्तिमदिर पर कलश चढा दिया। अुस दिन क्षण भर में रक्त की अुमडती नदियो का प्रवाह थम गया और भाअी-भाअी का गला काटने के लिअे अुठे हुअे हाथ हत्या करने की बजाय परस्पर प्रेम आलिंगन में लिपट गये।

बापूजी ने अपने आत्मबलिदान से जिस अहिंसा शक्ति की पूर्ण कला की हमें झाकी करायी अुसे हमें अपने देश और विश्वशाति के काम के लिअे हमारी जनता में जागृत करना है और सगठन करना है। यह है शाति सेना का अुद्देश्य।

जीवन की तैयारी ही शाला का कर्त्तव्य

निकिता ख्रुश्चेव

[समाज के नवनिर्माण में शिक्षा का महत्व प्रथम है । नये मूल्यो के आधार पर शिक्षा में मूलभूत परिवर्तन किये बगैर नयी समाजरचना असभव होती है । यहाँ तक कि जाने अनजाने शिक्षा में अगर थोडी-सी भी प्रतिक्रियावादी बातें रह जायें तो नये समाज में कअी खामियाँ रह जायेंगी ।

शायद अिस बात को हम पूरी तरह से महसूस नही कर रहे हो । क्राति के बाद के चालीस सालो के लबे अरसे के बाद रूस में आज यही बात अनुभव की जा रही है । अिन वर्षों में रूस ने अनेक क्षेत्रो में अपूर्व विकास किया । अुन्होने सोवियत सिद्धातो के अनुसार शिक्षा पर भी हमेशा ही जोर दिया, तिसपर भी आज अपनी शिक्षा प्रणाली के बारे में श्री ख्रुश्चेव के ये अुद्‌गार हैं । वे हमारी भी आँखें खोलने में सहायक हो सकते हैं— स]

सोवियत राज्य की स्थापना के बाद के अिन चालीस सालो में सोवियत सघ में माध्यमिक और अुच्चशिक्षा की बहुत बडी प्रगति हुई है, अिसमें कोई शका नही । हमारी जो सर्वतोमुख आर्थिक उन्नति हुई, सोवियत वैज्ञानिको, अिजीनियरो और विशेषज्ञो ने जो चमत्कारकारी शोधें की और अुनके परिणाम स्वरूप सिर्फ हमारे ही देश को नही समस्त मानव जाति को ही अत्यन्त महत्वपूर्ण लाभ हुअे, यह सब बहुत हद तक हमारी अुच्चशालाओं का ही काम है, जिन्होने अिन सुयोग्य व्यक्तियो को तैयार किया । फिर भी आज की हमारी माध्यमिक और अुच्चशिक्षा के सगठन या कहना चाहिये कि अुसकी प्रणाली से ही हम सतुष्ट नहीं हो सकते हैं । हमारी शालाओं व अुच्च शिक्षा की सस्थाओं में अैसी कमियाँ है जो अब बिल्कुल ही सहन नही की जा सकती हैं ।

अिनकी मुख्य और मूलभूत कमी यह है कि वे जिन्दगी से विच्छिन्न हैं । अिसके लिअे शिक्षा-विभाग के कर्मियो और अुच्च शिक्षा केंद्रो की बहुत बार बडी आलोचना हुअी है, फिर भी परिस्थिति कुछ विशेष बदली नही ।

माध्यमिक शालाअें

हमारी शालाओं ने बहुत कुछ बातो में क्रान्ति के पहले की शिक्षाव्यवस्था का ही अनुसरण किया और यही कारण है कि अुनका काम पूरा सफल नही हो पा रहा है । अुस समय की शालाओ का अुद्देश्य विद्यार्थियो को कुछ विषयो की अमुक मात्रा तक जानकारी देना मात्र था, जिससे कि वे मैट्रिकुलेशन का सर्टिफिकेट प्राप्त कर सकें । अुसके आगे अुनका क्या होता है अिससे न शालाओ को कोअी सरोकार था, न राज्य को ।

मैट्रिकुलेशन सर्टिफिकेट के लिअे अेक व्यक्ति को तैयार करते समय माध्यमिक शाला का क्या काम होता है ? वह कुछ विशेष जानकारी देना मात्र है, जिसका किसी अुत्पादक अुद्योग से कोअी सबन्ध नही । हाल तक हमें माध्यमिक शिक्षा पूरी किये नवयुवको की कुछ कमी पडती थी । सोवियत शासन के प्रथम काल में

जब कालेजो मे मजदूरो, किसानो और अन्य कर्मचारियो तथा अुनके बच्चो को भरती करने का सवाल खडा हुआ तो माध्यमिक शालाओ ने अिन लोगो को अुच्चशिक्षा केन्द्रो मे प्रवेश के लिअे आवश्यक प्रशिक्षण देने के काम के लिअे अपने आपको तैयार किया था, लेकिन अेकदम अितनी बडी सख्या में प्रशिक्षणार्थियो को लेने में वे असमर्थ हुअे। अुससे भी बडी समस्या मजदूर, किसान जैसे पहले से ही अुत्पादक श्रम से सबन्धित लोगो को प्रशिक्षण देकर अुच्चशिक्षा के लिअे तैयार करने की थी। तब सोवियत सरकार ने अैसे कर्मियोके लिअे कुछ शिक्षा केन्द्र शुरू किये थे, जहा प्रौढो को दाखिल कर माध्यमिक स्तर तक का शिक्षण देते थे और वहा से वे अुच्चशिक्षा केन्द्रो में भेज दिये जाते थे।

धीरे धीरे अिसकी आवश्यकता खतम हो गयी और अब कई सालो से ये प्रशिक्षण केन्द्र नही रहे। और माध्यमिक शालाओ का अुद्देश्य अब सिर्फ कालेजो के लिअे नवयुवको को तैयार करना नही रहा। हमारे देश में माध्यमिक शिक्षा को सार्वजनिक बनाने का ध्येय माना गया है और यह धीरे धीरे सध भी रहा है। हम कोशिश कर रहे हैं कि हमारे सब नवयुवक-लाखो लाखो लडके लडकिया-माध्यमिक स्तर तक की दस साल की शिक्षा पूरी करे।

अिससे यह बात स्वाभाविक रूप से ही निकलती है कि ये सबके सब कालेजो में नही जा सकते है, न ही विशेष प्राविधिक शिक्षा केन्द्रो में। अिसलिअे यह कहना मूर्खता होगी कि हमारे सब लडके लडकियो का जिन्होंने माध्यमिक शिक्षा पूरी की है कालेजो में दाखिल होना ही चाहिये।

लेकिन हमारी आज की दस साल की शालाअें नवयुवको को जिन्दगी के लिये तैयार नही कर रही हैं। वहा सिर्फ कालेजो में दाखिल होने की तैयारी होती है। जो विद्यार्थी माध्यमिक शिक्षा पूरी करके निकलते है, अुनमें, अुनके परिवारो में और शिक्षा विभाग के कर्मचारियो में भी यह विचार जड पकड कर बैठा हुआ है कि यह अैसा ही होना चाहिये, माध्यमिक शालाअें कालेजो के लिअे विद्यार्थियो को तैयार करने के लिअे ही है, अिसलिअे कि अुन्हे वहा फिर अधिक अुच्च शिक्षा मिले।

अितने दिनो के अनुभवो से ही स्पष्ट सिद्ध हुआ है कि यह विचार सर्वथा गलत है। पहले भी जो लडके लडकिया माध्यमिक शिक्षा पूरी करते थे वे सबके सब कालेजो में दाखिल नही होते थे। और अिन सालो में तो दस साल का शिक्षाक्रम पूरी करनेवालो की सख्या अितनी बढ गयी है कि अुसका अेक छोटा प्रतिशत ही कालेजो में प्रवेश पाते हैं। अधिकतर लडके लडकियो को माध्यमिक शिक्षा पूरी करके मेट्रिक्युलेशन सर्टिफिकेट प्राप्त करने के बाद सीधे जीवन में प्रवेश करना होता है और ये अुसके लिये सर्वथा अयोग्य होते है। अुन्हे मालूम नही होता कि अब क्या करे?

क्योकि माध्यमिक शालाओ के शिक्षाक्रम को जिन्दगी के साथ कोअी सबध नही है अिन लडके लडकियो को किसी अुत्पादक काम की जानकारी नही रहती है। अिसलिअे समाज को अिन स्फुर्तिले नौजवानो की सेवा से जो लाभ प्राप्त होना चाहिये वह भी नही मिलता है। परिणाम स्वरूप बहुत सारे युवक और अुनके मा-बाप अिस परिस्थिति से असतुष्ट रहते हैं। और यह समय के साथ बढता ही जाता है।

अब यह अैसी स्थितिपर पहुचा है जिसके अूपर हमें गभीरता के साथ विचार करना चाहिय। अिसके बारे में कुछ साथियो से बातचीत करने का मुझे मौका मिला। वे तो अिसपर भी शका करते है कि दस साल की सार्वजनिक शिक्षा का आग्रह रखना भी ठीक है क्या ?

अेक बात स्पष्ट है-बच्चो की शिक्षा में शुरू से ही यह ध्यान रखना चाहिये कि भविष्य में किसी समाजोपयोगी काम में-शारीरिक श्रम में-लगने की अुनकी मानसिक तैयारी हो, अुनमें समाजवादी राज्यविकास के लिअे आवश्यक मूल्या का बोध हो। हम अभी तक भी शारीरिक और मानसिक श्रम को अलग करके सोच रहे है।

पुरानी राज्य-व्यवस्था से हमें पैतृक के रूप में मिला हुआ यह विचार अभी तक चल रहा है कि युवका का अेक विशेष दल अैसा होता है जिनको विश्वविद्यालयो में या अुच्च शिक्षा केन्द्रो में जाना ही चाहिये और अुन्हे फेक्टरियो और खेतो में काम नही करना होगा। बाकी जो अधिकाश लोग हैं वे "अुस स्तर पर नही पहुँचे" या अुन्होने "अुतनी योग्यता नही दिखायी" और अिसीलिअे अुन्हे काम ही करना है। यह बहुत ही गलत विचार है और हमारे सिद्धातो व आदर्शों के विपरीत है।

आज आम तौर पर लडके लडकियो को यह धारणा हो गयी है कि माध्यमिक शालाओ से निकलने के बाद अुनके लिअे अेकमात्र सम्मान का रास्ता अुच्चतर शिक्षा पाने का, कम-से-कम किसी विषय में विशेषज्ञता प्राप्त करने का ही है। माध्यमिक शाला से अुत्तीर्ण होने के बाद फेक्टरियो में, अन्य किसी अुत्पादक केन्द्रो में या सहकारी खेतो में काम करना वे पसन्द नही करते और कभी तो अिसे अपने गौरव के प्रतिकूल समझते है।

शारीरिक श्रम के प्रति यह निंदा की दृष्टि कुछ परिवारो में भी पायी जाती है। अगर कोअी लडका या लडकी अपनी पढाअी में पूरा ध्यान नही लगाती है तो अुसके मा-बाप और दूसरे लोग यह कहकर अुसे डराते है कि अगर वह अच्छी तरह से पास होकर सोना-चादी का कोअी मेडल नही प्राप्त करता तो अुसे कालेज मे प्रवेश नही मिलेगा और तब अुसे साधारण मजदूर जैसे फक्टरियो में काम करना पडेगा। मतलब यह हुआ कि शारीरिक श्रम बच्चो को डराने की कोअी चीज मानी जाती है, अलावा अिस तथ्य के कि अैसी बाते हमारे समाजवादी देश के मजदूरो के प्रति अपमान सूचक हैं।

अैसी मिथ्यापूर्ण परिस्थिति जिसमें बच्चो की शिक्षा में शारीरिक श्रम के प्रति सम्मान नही है और वह शिक्षा जिन्दगी के याथार्थ्यो से दूर है अब और सहन नही की जा सकती है। क्याकि समाजवादी समाज में श्रम की प्रतिष्ठा अुसकी अुपयोगिता के अनुसार होनी चाहिये और अैसा श्रम करनेवालो को अुचित पुरस्कार ही नही जनता से अत्यत सम्मान भी मिलना जरूरी है। यह आखिरी बात सबसे महत्व की है। बच्चो के मन में हमेशा यह भावना बढानी चाहिये कि समाज के लिअे सबसे अधिक मूल्यवान चीज वह है जिससे समाज जिन्दा रहता है यानी अुत्पादक परिश्रम। सब चीजो का निर्माण अुसी से होता है। काम करना हर अेक सोवियत नागरिक के लिअे अत्यत जरूरी है।

हमें अिस बात का भी ख्याल करना चाहिये कि स्कूल से सोने या चादी का मेडल लेकर

निकलनेवालो को कालेजो में प्रवेश की विशेष सुविधा देन का जो रिवाज हाल तक था अुससे अिस परिस्थिति को और भी बढावा मिला है। अपने बच्चो को मेडल मिले अिस तीव्र अिच्छा स कुछ मा बाप शिक्षको के अूपर भी दबाव डालने लगे।

अिसके अलावा अुच्च शिक्षा केन्द्रो म प्रवेश के लिअ विद्यार्थियो को चुनन के तरीके में और भी गलतियाँ है। अिसके लिअे योग्यता की परीक्षाअें जरूर होती है। लेकिन कालेज में प्रवेश पाने के लिअे अिनमें सफल होना ही काफी नही होगा, अुसके लिअे मा बापो का समाज में स्थान और प्रभाव भी काम करता है। बहुत दफे विद्यार्थियो को यह कहते हुअ सुना जाता है कि परीक्षा में अुनके अुत्तीर्ण होन क बाद मा बापों के बीच अक परीक्षा शुरू होती है, अिसमें बहुत तथ्य भी है। कभी कभी तो आखिरी निर्णय अुसपर ही अवलंबित रहता है। अिस कारण से अुच्च शिक्षा केन्द्रो में और विशेष प्रशिक्षण केन्द्रो में प्रवेश पान का सबको समान मौका नही मिलता है।

हमारी शालाओ में आनवाली पीढी को जो शिक्षा दी जा रही है अुसके बारे में निश्चय ही पुनर्विचार होना चाहिये। अिसम सबसे बडी बात हमारी वृत्ति बदलन की है। अिसके लिअे अेक नारा ही बना लें जिसे शाला में दाखिल होनेवाले सब बच्चे पवित्र समझें, वह यह कि सब बच्चो को अुपयोगी काम करने के लिअे तैयार होना है, खासकर साम्यवादी राज्य के निर्माण में। कोओ भी अुपयोगी काम चाहे वह फक्टरी में हो, या खेतो में, ट्रक्टर बनान के केद्रो म हो या प्रशिक्षण सस्थाओं में, कमशालाओ में हो या कही सरकारी दफ्तरो में–ओमानदारी के साथ किये हुअे काम को हर अेक नागरिक के लिअे अेक पवित्र और सम्मानार्ह चीज समझना चाहिये। जो भी कोओ समाज की वस्तुओ का अुपभोग करता है अुसको अुसके अुत्पादन में भी हाथ बटाना चाहिये। साम्यवादी समाज के हर अेक सदस्य को अुस समाज के निर्माण और विकास के लिअे आवश्यक काम में अपना हिस्सा अदा करना है। अिसलिअे हमारी शालाओ का मुख्य काम हमारी बढती हुओ पीढी को जिन्दगी के लिअे तैयार करने का है—यान अुपयोगी काम के लिअे। अिसी प्रकार से वे साम्यवादी समाज के सिद्धातो के लिअे बच्चो के मन में श्रद्धा पैदा कर सकेंगी।

शालाओ को अिस बात का ध्यान रखना होगा कि शिक्षा अेकतर्फा नहीं बल्कि समग्र जीवन के लिअे हो, अुनका काम है अैसे नागरिक तैयार करना जिनको विज्ञान के मूल-सिद्धातो का ज्ञान हो–और अुसी समय नियमित रूप से शारीरिक श्रम करन की तैयारी हो, जो समाज में अपने आप को अुपयोगी बनाने तयार समाज के लिअे आवश्यक चीजो के अुत्पादन करने के लिअे अुत्सुक हो।

तो अिसके लिअ हमें क्या कार्यक्रम बनाना होगा?

मेरा विचार है कि सब विद्यार्थियो को बिना अपवाद के सात या आठ दर्जे पास करने के बाद औद्योगिक केन्द्रो में या सहकारी खेतो में अुत्पादक काम करना चाहिये। यह गांवो, शहरो, और फेक्टरियों से अनुबंधित बस्तियो के लिअ समान रूप से लागू होगा, कोओ अिससे छूटगा नही। अिससे पहली बात तो यह होगी

कि यह पूरी तरह से लोकतन्त्रात्मक होगा–क्योंकि अुसमें सब के लिअे बिलकुल समान परिस्थिति होगी। मा-बाप की प्रतिष्ठा या अुनकी विनतियो से कोअी अुत्पादक परिश्रम से छूट नही सकेगा। दूसरी बात यह होगी कि यह देश के सब युवकों को किसान और मजदूर वर्ग की वीरता-पूर्ण परपरा में बधुत्व की भावना से बाध देगा।

हमारी शिक्षा को त्रुटियों को दूर करने का अेकमात्र तरीका जो कि आज सभव और अनिवार्य भी है सब लडके लडकियों को शाला में शिक्षा प्राप्त करते ही फेक्टरियो, सहकारी खेतो और अन्य अुत्पादक केन्द्रो में या किसी भी समाजोपयोगी काम में शारीरिक श्रम के लिअे तैयार करना है।

हमारी माध्यमिक व अुच्चशिक्षा का स्वरूप ही अैसा बनाना है जिससे लोगो को काम करने का अच्छा और कारगर प्रशिक्षण मिले। और यह अिजिनियर, डाक्टर, खेतीवाले, वैज्ञानिक, शिक्षक, फेक्टरी के मजदूर सबके लिअे होगा। हमें शिक्षा का सगठन अिस दृष्टि से करना है कि सब काम अब से ज्यादा अच्छा और कुशलतापूर्वक हो।

अिस ध्येय को प्राप्त करने के लिअे शायद माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा को दो हिस्सो में बाट देना अच्छा होगा। पहले हिस्से की शिक्षा सात या आठ साल की होगी और यह सबके लिअे लाजिमी होगी।

बहुत सारे मा बाप और शिक्षाविभाग के कर्मचारी भी कह रहे हैं कि अेक आवश्यक निम्नतर सामान्य शिक्षा देने के लिअे आठ साल का शिक्षाक्रम ज्यादा अुपयुक्त होगा। यह ठीक भी लगता है, लेकिन अिसके बारे में हर अेक राज्य अपनी आवश्यकतानुसार सोचकर अपनी अपनी नीति निर्धारित करे तो ज्यादा अच्छा होगा। अिन आठ सालो के शिक्षाक्रम और अन्तर्गत विषयो के बारे में भी हमें गभीरता-पूर्वक सोचना होगा। ज्ञान प्राप्ति के लिअे आवश्यक मौलिक शिक्षा, काम करने की आदत और अुसके बारे में सही दृष्टि, बच्चो का शारीरिक विकास और अुनमें अच्छे सौंदर्य बोध और ठीक सामाजिक मूल्यो का निर्माण अिन बातो को अुसमें प्रथम स्थान रहेगा।

अिस प्रसग में हमें स्त्रिया की शिक्षा और अुनके काम की विशेष बातो को नही भूलना चाहिये। हमारे देश में काम जहां समान होता है वहां स्त्रियों और पुरुषों का वेतन भी समान है। फिर भी दैनिक जीवन में स्त्रियो के और भी कुछ विशेष कार्य होते हैं जो बिलकुल अनिवार्य भी है। ये हैं शिशु-सगोपन, गृहकार्य, सिलाअी का कार्य अित्यादि। अिसलिअे लडकियो के शिक्षण में अिस प्रशिक्षण की भी व्यवस्था होनी चाहिये।

शहरो और औद्योगिक केन्द्रो में आठ साल का शिक्षाक्रम पूरा करने के बाद बच्चो का शायद किसी विशेष अुद्योग में शिक्षा लेना अच्छा होगा। अुसके साथ साथ अुनकी पढाअी भी चलती रहेगी। लेकिन वह अुनके काम के साथ-साथ पूरा-पूरा सबधित होनी चाहिये। विद्यार्थियो को वस्तुओं के अुत्पादन का ज्ञान और निपुणता से काम करने का अभ्यास होना जरूरी है और यह सिर्फ तात्विक नही, प्रत्यक्ष रूप से होना चाहिये।

देहातो में भी आठ साल की शाला की शिक्षा के बाद विद्यार्थियो को खेती, पशुपालन

(शेषाश पृष्ठ २३४ पर)

मैक्सिको में नयी शिक्षा

के अेस्. आचार्लू

अेक अमेरिकन अतिथि ने सेवाग्राम की संस्थाओं को देखने और नअी तालीम की शैक्षणिक प्रक्रियाओं का निरीक्षण करने के बाद कहा कि मैक्सिको में आजकल जो शिक्षाव्यवस्था चल रही है वह बहुत कुछ हमारे काम के साथ मिल्ती जुल्ती है। अुन्होंने मैक्सिको की शिक्षा पद्धति का जो संक्षिप्त विवरण दिया अुससे मेरी जिज्ञासा जागृत हुअी। और अिस विषय का जो मैंने थोडा सा अध्ययन किया यह लेख अुसका परिणाम स्वरूप है।

मैक्सिको में शिक्षा के द्वारा अेक प्रजातंत्र कायम करने का प्रयत्न हो रहा है। अुस देश में निरक्षरों की संख्या बहुत है, लेकिन वहा के शिक्षाशास्त्रियों ने साक्षरता से ज्यादा अुससे भी गहरी कुछ बुनियादी बातों को प्राथमिकता दी है। अुन्होंने देखा कि अक्षर ज्ञान का प्रसार करने के पहले लोगों के सामाजिक व आर्थिक स्तर अूंचा अुठाना जरूरी है, और बच्चों की शिक्षा तभी सफल हो सकती है जब कि प्रौढसमाज को भी अुसमें शामिल किया जाय। अिसीलिये शुरूआत से ही सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों को सुधारने का ज्यादा प्रयत्न रहा बनिस्बत निरक्षरता निवारण के।

वहाँ की केन्द्रीय सरकार अिस तथ्य से वाकिफ थी कि लोगों के सक्रिय सहयोग के बगैर क्रान्ति नहीं सध सकती है। अिसलिअे अुनका पहला काम अिस नये विचार का सन्देश गाव गाव में पहुँचाने के लिअे निष्ठावान शिक्षकों को भेजना था और गाववालों से खुद माग आने के बाद ही वहाँ शाला की स्थापना होती थी। शिक्षक भी यथासंभव अुसी समुदाय से ही नियुक्त किया जाता है। दूर कहीं से किसी अपरिचित को नहीं बुला लेते हैं। शाला के लिअे मकान बनाने और अुसकी मरम्मत करने में ग्रामसमुदाय पूरी जिम्मेदारी के साथ भाग ले अिस शर्त पर ही शाला शुरू की जाती थी।

खर्चीले मकानों और विपुल साधन सामग्रियों की अपेक्षा नहीं होती थी। वहा की ऋतुओं और आबोहवा के लिअे सादे सरल मकान ही अुपयुक्त हैं और ये ग्रामवासी स्थानीय सामग्रियों से अपने ही परिश्रम के द्वारा बना ले सकते हैं। अिसके लिअे जगह भी गाव वाले ही देते थे। केन्द्रीय सरकार सिर्फ शिक्षकों का वेतन देती थी। शाला की पूरी जिम्मेवारी ग्रामसमाज को है। शिक्षा विभाग से केवल मार्गदर्शन मिलता है।

(पृष्ठ २३३ का शेषांश)

और अन्य कृषि संबंधी विषयों का तात्त्विक तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण मिलना चाहिये। वे अन्यान्य अुद्योग भी सीख सकते हैं।

जिस प्रकार शाला से निकलने पर लडके लडकियों को अुचित शिक्षा मिली होगी, जिसमें कम से कम किसी अेक अुद्योग की अच्छी जानकारी भी हो। तब वे भली भांति तैयार होकर जीवन में प्रवेश कर सकेंगे।

शाला का शिक्षाक्रम किसी बाह्य सत्ता का निर्धारित किया हुआ नहीं था। न ही कुछ विशेषज्ञ या समितियां बैठकर अलग अलग विषयों की पाठ्यविधि बना देती थीं। बल्कि वह समाजकल्याण के लिअे शाला के द्वारा किये जानेवाले विभिन्न कामों पर आधारित था। शिक्षक विद्वान नागरिकों के मार्गदर्शन में अिस तरह की कअी प्रवृत्तियाँ चलाता और अुन्हीं को शिक्षा का माध्यम बना देता था।

जैसे जैसे समाज में समस्याअें अुठती थीं वैसे वैसे अुनका हल निकालते जाते थे। अगर पीने के लिअे आवश्यक शुद्ध पानी का प्रश्न था तो शिक्षक विद्यार्थियों के साथ पानी के स्रोतों का पता लगाने के लिअे निकल जाते, पानी के शुद्धीकरण की विधियों का अध्ययन करते और अुसके लिअे आवश्यक पत्थरों की छलनी वगैरह साधन तैयार करते। अगर अुस अिलाके में कोअी सांक्रमिक बीमारी पैदा हुअी तो अुसके प्रतिबन्ध के अुपायों और अुपयुक्त औषधों की जानकारी प्राप्त करने में लग जाते और प्रत्यक्ष सेवाकार्य भी करते थे। हर शाला में दवाअियों की अेक छोटी पेटी रखी गयी।

कभी कभी अुस प्रदेश की खेती या स्थानीय अुद्योग सुधारने या अुत्पादित वस्तुओं को बाजार में पहुंचाने का काम शाला ने अुठाया और वही शिक्षाक्रम का आधार बन गया। मकानों की मरम्मत करने का प्रश्न खड़ा हुआ तो शिक्षक और विद्यार्थीगण अुसमें प्रत्यक्ष काम करने लगे। तब बढ़अीगिरी का विशेष अध्ययन होता था। और अेक समय अुस अिलाके में खाद्य की समस्या खड़ी हुअी तो पौष्टिक तत्वों की दृष्टि से अुत्तम शाकसब्जी व फल के पेड़ लगाने का काम शुरू किया तथा समतोल आहार के विषय में अध्ययन करके लोगों को अपने भोजन की योजना बनाने में मदद करने लगे। मतलब, शाला की सब प्रवृत्तियां और अध्ययन के विषय समाज की तात्कालिक जरूरतों की पूर्ति में मदद पहुंचाने के अुद्देश्य से ही चुने जाते थे और समाजजीवन पर अुसका बहुत अच्छा परिणाम देखने को मिलता था।

अिस प्रकार शाला की प्रवृत्तियां स्थानीय आवश्यकताओं पर आधारित होती हैं, फिर भी विभिन्न शालाओं के कार्यक्रमों में काफी साम्य पाया जाता है। क्योंकि सरकारी निरीक्षकों का अनुभव अिन कामों में मिलता है जहां कहीं कोअी विशेष अच्छा काम, सफल प्रयोग या नया विचार मिला वे अुसकी जानकारी दूसरी शालाओं में पहुंचाते हैं और वहां के शिक्षक भी अुसका लाभ अुठाते हैं। अिस प्रकार आज हर अेक शाला का अपना बगीचा है। बहुतों में नाट्य, नृत्य आदि के लिअे मंचों की व्यवस्था है। प्रौढ़ शिक्षा और सामाजिक मनोरंजन का कार्यक्रम सार्वत्रिक हो गया है। अेक शाला में जो मद्यनिषेध का काम शुरू किया था वह अब सारे राज्य में फैल गया।

आज सब शालाओं में खेलने का मैदान है। कअियों में कर्मशालायें हैं जहां बच्चे अपनी रुचि के अनुसार के काम करते हैं। खेती और हस्त अुद्योग सब जगह चलते हैं। अिससे बहुत जगह जो स्थानिक कलाअें खतम हो रही थीं वे पुनर्जीवित हो गयीं। फिर भी खास साक्षरता प्रसार का कोअी विशेष प्रयास कहीं नहीं दीखता है। वहां के शिक्षाशास्त्री मानते हैं कि जब समाज का जीवनस्तर अुठेगा तो साक्षरता आनुषंगिक रूप में आ ही जायगी।

शाला के लिअे कअी जगह पुराने मकानों

और गिरजाघरों का अुपयोग हो रहा है। जहा बच्चे बैठकर पढते या काम करते है, वहा खूब प्रकाश और शुद्ध हवा मिले, अिसका पूरा ख्याल रखा जाता है और शाला को खूब सुन्दर बना लेते है। आमतौर पर वह गाव म सब से आकर्षक जगह होती है। दरवाजे पर लिखा रहता है--लोकगृह। सब अुपकरण यथासभव स्थानीय सामग्रियों से तैयार किये होते है। दीवारो को बच्चो के बनाय चित्र, कोओी महान वाणी या किसी पुरानी लोककथा के दृश्यों से सजाते हे।

हर अेक शाला का अेक छोटा पुस्तकालय है। यह बहुत बडा न हो तो भी अेक अच्छा अुपयुक्त सग्रह होता है। शिक्षा विभाग के द्वारा सब शालाओ मे पुस्तके दी जाती है। ये खासकर बच्चो के लिअे लिखी और सुन्दर चित्रित होती हैं। छोटी कक्षाओ के लिअे अुपयोगी पुस्तको पर विशेष ध्यान दिया जाता है, ये विशेषज्ञो के द्वारा तैयार की जाती हैं। ये अुस देश की सस्कृति व परपरा के अनुसार ही हो अिसका विशेष ध्यान रखा जाता है।

ज्यादातर स्कूलो में शिक्षक के लिअे अेक अलग कमरा रहता है। छोटी-से-छोटी शालाओ में भी कर्मशाला तथा मुर्गी या खरगोश आदि जानवरो को पालने की जगह और अुसकी व्यवस्था होती है। कुछ शालाओ के पास खेती के लिअे काफी बडी जमीन है और कहीं-कहीं अेक छोटे मे आदर्श देहाती घर का नमूना भी रहता है। देहातो के लिअे अुपयुक्त अच्छे घर बनाने की कुशलता हर अेक लडके की शिक्षा का अनिवार्य अग माना जाता है।

अब शिक्षक की बात ले। असल में मेक्सिको में शिक्षक ही शाला है। अुनकी नियुक्ति केद्रीय शिक्षा विभाग के द्वारा होती है लेकिन वह हमेशा स्थानीय समाज की सलाह से ही होती है। यह जरूरी माना जाता है कि शिक्षक अुसी प्रदेश का रहनेवाला हो। शिक्षको का चुनाव नये विचारो के अनुसार शाला चलाने की अुनकी योग्यता पर आधारित होता है। अुन्हे अपने काम पर निष्ठा हो, वे लोगो की जरूरते समझ सके, अुनसे हिलमिल कर रहे और अुनमें सेवावृत्ति हो अिन बातो को शैक्षणिक योग्यता से भी ज्यादा महत्व दिया जाता है। कभी-कभी तो वह छठे दर्जे तक ही पढा हुआ होता है या कहना चाहिये कि अेक व्यक्ति मे शिक्षक के लिअे आवश्यक सब गुण अगर हो तो अुसका साक्षर होना मात्र पर्याप्त माना जाता है। अिस विषय पर अेक पुस्तिका में लिखा है, "वहा के शिक्षक अच्छे सहृदय स्त्री-पुरुष है। अुनमे से ज्यादातर की तो प्राथमिक शाला से अूपर कोओी बाकायदा शिक्षा नही हुओी है। पढने लिखने की क्षमता के अलावा अुनमे से अधिकाश किसी तरह के पाण्डित्य का दावा नही कर सकते है। फिर भी शिक्षको मे आत्मविश्वास और नैतिक बल है। वे अपने काम के प्रति अेकाग्रनिष्ठा रखते हैं'।

शिक्षा के अिस नये दर्शन के लिअे अेक नये प्रकार का शिक्षक चाहिये, सिर्फ विद्वानो से काम नही चलेगा। पुराने शहरी शिक्षक गाव म जाकर ग्रामवासियो के साथ रहने, अुनकी आवश्यकताओ को समझने और नये कार्यक्रम को अपनाने के लिअे तैयार नही होते थे। वास्तव में अक्सर पुराने तरीके का प्रशिक्षण बाधारूप ही होता था। शिक्षाशास्त्र के कुछ कोरे सिद्धातो को रटने से ज्यादा जिन्दगी को समझना शिक्षक के लिअे आवश्यक है।

अिसका यह मतलब नही कि शैक्षणिक तत्वो और पद्धतियो के प्रति अुपेक्षा है। शिक्षको को काम करते करते प्रशिक्षण पाने की व्यवस्था है और अिसमें अुनकी सब शैक्षणिक कमिया को दूर करने का भरसक प्रयत्न होता है। शाला का काम साल में दस माह ही चलता है अेक महीने की छुट्टी होती है और अेक महीना शिक्षक प्रशिक्षण-सस्था में अध्ययन करते है।

शिक्षको के प्रशिक्षण के लिअे केन्द्रीय शासन की ओर से प्रचलित विद्यालयो के अलावा कुछ "सास्कृतिक सघ" भी काम करते हैं। अिन सघो में कुछ विशेषज्ञो के दल हैं और ये किसी केन्द्र में न बैठकर चलते फिरते रहते हैं। प्रत्येक सघ का अपना क्षेत्र है और अुसम कोअी अेक केन्द्र चुनकर वे ३० दिन का प्रशिक्षण शिविर चलाते हैं। करीब अेक सौ मील व्यास के सब स्कूलो के शिक्षक अुसमें अिकट्ठे होते हैं। वे अेक साथ रहते हैं, अेक साथ भोजन करते हैं और आपस मे विचार विनिमय करते हे।

सघ के कार्यकर्त्ताओ में अेक खेती का, अेक अुद्योगो का और अेक कायिक शिक्षा का विशेषज्ञ रहता है, अिसके अलावा अेक डाक्टर या नर्स तथा अेक समाज सेवक भी होता है। अुनकी नियुक्ति किसी स्कूल कालेज की अुपाधि के नही बल्कि प्रत्यक्ष काम के अनुभव और सेवा भावना के आधार पर होती है। ये वैसे सज्जन स्त्री पुरुष होते हैं जो अपनी निष्ठा और अूँचे आदर्शों से प्रशिक्षणार्थियो को प्रभावित कर सकें। केन्द्रीय शिक्षा विभाग के साथ अुनका घनिष्ठ सम्पर्क रहता है और विभाग के मार्गदर्शन में ही काम की रूपरेखा तैयार की जाती है।

प्रशिक्षण शिविर अुस क्षेत्र के अैसे किसी केन्द्रीय स्थान पर चलाते हैं जहा अेक आदर्श पाठशाला भी हो। अुद्घाटन के दो तीन दिन पहले ही शिक्षक अिकट्ठे होते हैं और बिना विलब के अपना काम शुरू कर देते हैं। सघ के पास अेक चलता फिरता पुस्तकालय, कायिक शिक्षा के लिये आवश्यक साधन तथा बढईगिरी, गृहविज्ञान, खेती आदि के लिअे अुपकरण भी रहते हैं। अुनका अुद्देश्य ग्रामीण परिस्थिति में व्यावहारिक शिक्षा दन का होता है।

अेक बहुत महत्व की बात यह है कि स्थानीय ग्रामसमाज भी अिस सस्था के काम म रुचि लेता है। अुनम से कुछ लोग खेती, औद्योगिक शिक्षा व गृहविज्ञान के वर्गों में शामिल भी होते हैं। सस्था का अेक मुख्य अुद्देश्य शिक्षा के कामो मे समाज का सहयोग और विश्वास प्राप्त करना है। वह ग्राम-समाज और शाला अक तरह से सस्था की प्रयोग शाला बन जाती हैं। और प्रत्येक प्रशिक्षण शिविर अुस स्थान के लिअे कोअी न कोअी स्थायी लाभ छोड कर जाता है—जैसा अेक अच्छा बगीचा, खेल का मैदान, नाट्यमच, सफाअी की सुविधायें अित्यादि। शिविर का समाप्ति दिवस समाज के द्वारा बडे अुत्साह के साथ मनाया जाता है। गाव की तरफ से शिक्षको को दावत दिया जाता है और प्रदर्शनिया, खेलकूद, नाट्य, नृत्य आदि मनोरजक कार्यक्रम भी रहते हे जिनमे गाव के लोगो के साथ शिक्षक भी भाग लेते हैं।

अिन सब का मतलब यह निकलता है कि शाला का काम बच्चो तक ही सीमित नहीं रहता है, क्योंकि यह पूरी तरह से जान लिया गया है कि समाज के विश्वास और सक्रिय सहकार के बिना शाला का काम सफल नही हो सकता है। अगर समाज के विचारो में

परिवर्तन नही हुआ तो शाला की शिक्षा पाने के बाद बच्चा अुस समाज में जम नही पायेगा। अिसीलिअे शाला की प्रवृत्तियो मे प्रौढ शिक्षा और लोगों के सामाजिक व आर्थिक स्तर अूंचा अुठाने के काम को ज्यादा महत्व देते है बनिस्बत पुस्तकीय शिक्षा के। हरअेक शाला मे रात को प्रौढ शिक्षा के वर्ग चलते है। कअी दफे तो रात की शाला मे उपस्थिति दिन की शाला से ज्यादा रहती है। अिनमें नागरिक स्त्री-पुरुष आते हैं, कभी कुछ पढना होता है, कभी सगीत का कार्यक्रम, कभी किसी विषय पर व्याख्यान और कभी किसी सामाजिक समस्या पर चर्चा होती है। यहा स्वास्थ्यरक्षा-सबन्धी जानकारियां दी जाती है, घरो की व्यवस्था सुधारने के बारे में सुझाव मिलते हैं। अपने सस्कार व परपराओ को कायम रखने के बारे में ये शिक्षक हमेशा जागरूक रहते हैं।

केन्द्रीय शिक्षा विभाग के अधिकारियो द्वारा नियमित रूप से अिन शालाओ का निरीक्षण होता है। ये निरीक्षक शिक्षा के अिस नये दर्शन के तज्ञ होते है और निरीक्षण का अुद्देश्य शाला के सगठन और शिक्षण पद्धतियो को सुधारना तथा समाज के साथ सबन्ध बढाने में शिक्षक की सहायता करना होता है। शाला के काम और विद्यार्थी की प्रगति के आलेख रखने में सतत सुधार का प्रयत्न होता है। निरीक्षक हफ्ते में तीन दिन शिक्षकों के साथ मिलकर चर्चायें करते हैं और तीन दिन विभिन्न शालाओ के काम का निरीक्षण करते हैं। व्यवस्था और दफ्तर का काम कम-से-कम किया जाता है। ज्यादातर शाम का समय या रविवार ही अिसके लिअे दिया जाता है। निरीक्षक यह देखता है कि समाज के लिअे शाला का क्या काम हो रहा है, बच्चो के लिअे औषधो का प्रबन्ध है क्या, पीने के लिये शुद्ध पानी की व्यवस्था है क्या और समाज के साथ शाला का सबन्ध कैसा है।

अिस प्रजातन्त्र देश की शिक्षा व्यवस्था के अेक सामान्य पर्यवेक्षण से भी यह पता चलता है कि लोगो के जीवन पर शिक्षा विभाग की नीतियो और व्यवहारो का क्या असर होता है। अिनकी नीति में समाज-कल्याण के कामो में शिक्षक से नेतृत्व की जो अपेक्षा की जाती है शिक्षक और शाला को जो अेकरूप मानते हैं, समाज के साथ शाला के सबन्ध पर जो जोर दिया जाता है, सास्कृतिक और कलात्मक पहलुओं को क्षति न पहुचाते हुअे व्यावहारिक कामो को शिक्षाक्रम मे जो स्थान दिया जाता है और सामाजिक शिक्षा को बालशिक्षा की बुनियाद माना जाता है ये कुछ अैसी बाते हैं जिनके अूपर हमारे देश के शिक्षणशास्त्रियों को भी श्रद्धापूर्वक विचार करना लाभदायक होगा।

मैं आर्थिक समता चाहता हूँ, पर वह करुणा से, धर्मनिष्ठा से आनी चाहिये, तभी वह कल्याणकारी साबित होगी। नहीं तो विषमता में जैसे दुःख पैदा होते हैं, वैसे ही दुःख समता में दूसरी तरह से पैदा होंगे। यह गुणविकास की दृष्टि बड़े महत्व की है। शरीर-श्रम और करुणा याने नीचे देखने की आदत, हमें अिन गुणों की समाज में स्थापना करनी है। अिसी से समाज में समता स्थापित हो सकती है।

—विनोबा

सरल सेप्टिक पाखाना

अप्पा साहेब पटवर्धन

[हमारे देश के गावो और शहरो में भी अेक मुख्य समस्या पाखानो कीहै । नअी तालीम के और अन्य रचनात्मक केन्द्रो में भी सस्ते और सरल पाखाने के कअी प्रयोग हुअे हैं । सेवाग्राम मे डॉ केसल नाम के अमेरिकन डाक्टर ने अिस विषय में कुछ शोधें की थी और अुन्होने अेक नये किस्म का पाखाना बनाया जिसका विवरण नअी तालीम के जनवरी १९५७ के अक में प्रकाशित किया गया था । श्री अप्पासाहेब पटवर्धन ने अुसमें और कुछ सुधार करके अेक पाखान का प्रकार निकाला है जिसमें यह दृष्टि है कि वह स्थानीय कुम्हारो से ही बनाया जा सके । अुसका विवरण जो यहाँ दिया जा रहा है, अिस विषय में काम करनेवालो के लिअे अुपयोगी होगा । —सं]

देहातो में जहा जगह की खास समस्या रहती है यह अत्यत सस्ता, स्वच्छ और सरल पाखाने का प्रकार है ।

वर्णन–अिसमें सेप्टिक या फ्लश के तरीके का किंतु थोडा-सा फेर-बदल कर बनाया हुआ मलपात्र रहता है । स्थानीय कुम्हारो द्वारा वह बनवाया जा सकता है । अिससे अुसकी कीमत कम हाती है और गाव के कुम्हारो को काम भी मिलता है । अिस पात्र के पीछे के हिस्से में तिरछी अुतरती हुअी अेक नली होती है । अिस नली के मुह के पास अेक परदा रहता है । वह परदा मल को जाने के लिअे रास्ता बना देता है और मल जाने के बाद बद हो जाता है । मल पीछे गड्ढे में गिरता है और यह गड्ढा पूरा ढका हुआ होता है । मल परदे को खोलकर बद गड्ढे में गिरता है । गदी हवा बाहर निकलने के लिअे गड्ढे के बीच में अेक अूची चिमनी-पाअिप लगाया जाता है । गदी हवा बाहर आने का तथा मक्खियो को मल पर बैठने का मार्ग परदे से बद रहता है । अिसलिअे स्वास्थ्य की दृष्टि से यह पाखाना पूर्ण सुरक्षित है । कुआ के आस-पास २५ फीट के भीतर पाखाना न हो अिसका ध्यान अवश्य रहे ।

तालीमी सघ, सेवाग्राम में टीन के बनाये और रबर का परदा लगाये अैसे पाखाने की योजना पहले बनायी थी । अुस योजना में थोडा फेर-बदल कर यह पाखाना बनाया गया है । सेप्टिक टैंक पाखाने की सारी अच्छाअियां अिसमें हैं बल्कि यह कम पानी से साफ होता है और खर्च तो बहुत ही कम है । वैसे ही अुसकी रचना भी बिलकुल सरल है । अिसलिअे अुसका सरल सेप्टिक नाम यथार्थ ही सिद्ध होता है ।

पाखाने की रचना

गड्ढे का नाप–गड्ढे की खाद निकालकर और जगह अुपयोग किया जा सकता है या गड्ढे में ही रखा जा सकता है । अुस गड्ढे पर फल का पेड लगा सकेंगे या चार-पाच गड्ढे भर जाने के बाद बीच में फलो के झाड लगाने से अुनकी जडो को आस-पास की खाद मिल सकती है । खाद निकालकर ले जानी है या गड्ढे में ही रखनी है अिसपर गड्ढे का माप निर्भर रहेगा । गड्ढे में न अुतरते हुअे फावडे से ही खाद

निकाल सकें अिसलिअे गड्ढे की चौडाओी ढाओी फीट और गहराओी तीन फीट से अधिक नही होनी चाहिये । लबाओी चार फिट रख सकेगे । गड्ढे की खाद यदि निकालनी न हो तो चौडाओी तीन फिट तक भी रख सकेंगे । गहराओी होगी । गड्ढे का सामने का हिस्सा लब गोलार्धाकार बनाया जाय । अिस गड्ढे का अूपरी हिस्सा पक्का बाध लेना चाहिये जिससे कि वर्षा का पानी गड्ढे में और गड्ढे के भीतर का गदा पानी बाहर न आ पाये ।

१ मलपात्र अूपर से
२ मलपात्र बाजू से
३ टीन का ढक्कन
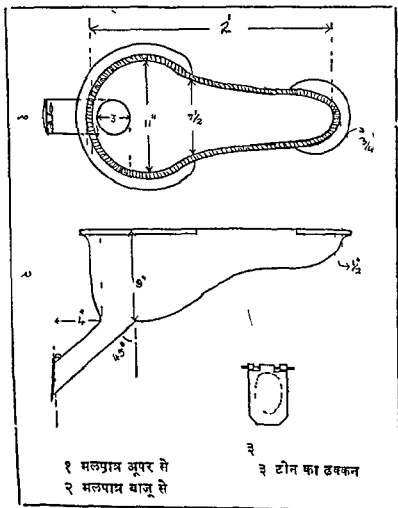
जितनी चाहिये अुतनी रख सकेंगे जिससे गड्ढा अधिक समय तक चल सके ।

गड्ढे का आकार—गड्ढे का आकार चौकोन हो । गड्ढे की दीवारें अन्दर की ओर झुकी हुअी हों जिससे अुनके गिरने की कम संभावना

गड्ढे के लब गोलार्धाकार हिस्से की ओर ९" अूचा २७"×२५" आकार का मिट्टी का अेक चबूतरा बनाकर अुसमें मल्पात्र का सामने का हिस्सा अूचा रखा जाय जिससे नली को अधिक ढाल मिल पाये और मल आसानी से

फिसल जाय। पैर रखने के लिअे मलपात्र के कम चौडे हिस्से के दोनो वाजू दो पायदान भी बनाने चाहिये। पायदान का पीछे का हिस्सा अूचा करने से चबूतरे के पीछे की ओर किये गये ढुलाव की पूर्ति हो जायगी और बैठनेवाले का तोल पीछे की ओर नही जा सकेगा। चबूतरा पक्का लीप पोतकर ठीक बनाने के बाद अूपर रेती की पतली-सी तह दी जाय। सूखने के बाद रेती और सिमेंट को ४ १ के अनुपात में मिलाकर पतला-सा थर दिया जाय और अूपर सिमेंट की पोलिश की जाय। अुसको गीले बोरे से ढककर १०-१२ दिन रखने से चबूतरा पक्का बनेगा और पानी से चबूतरे को कोअी नुकसान नही पहुँच सकेगा। सफाअी करते समय चबूतरा धो सकेंगे। मलपात्र को भीतर से कोलतार लगाना चाहिये।

पाखाने का घेरा--यह घेरा कामचलाअू, मध्यम और कायम-तीनो प्रकार का बना सकेंगे।

कामचलाअू घेरा चार कोनें में चार खभें गाडकर चटाअी, घास, बोरे, पत्ते या पेडो के पत्तो से बनाया जा सकता है। वर्षाकाल में अूपर घास-फूस, टीन या पेड-पत्तो का छप्पर बनाया जा सकता है।

मध्यम प्रकार का घेरा लकडी की चौकट बनाकर अुस पर बास के टट्टे, बोरा या टीन आदि ठोकने से बनाया जा सकता है। यह घेरा अेक जगह से दूसरी जगह कभी भी ले जा सकेंगे। हवा से अिसके गिरने का भय रहता है अिसलिअे दो विरुद्ध दिशाओं में खभो के पास खूटे गाडकर चौकट अुसमें बाध देनी चाहिये।

कायम घेरा पक्की दीवार का बनाया जा सकता है। गड्ढे की ओर की दीवार दो अिंच से ज्यादा चौडी नही होनी चाहिये क्योंकि अुसमें से मलपात्र की नली गड्ढे में निकलनेवाली है। अिसलिअे दीवार का यह हिस्सा चटाअी या पत्तो से ही बनाया जाय। सिमेंट कांक्रीट की दो अिंच चौडाओवाली दीवार भी बनायी जा सकती है। अुसके बीच में लोहे के सलाको के बदले बास की लकडिया दे सकते है।

मलपात्र का ढक्कन--मलपात्र के गड्ढे के मुह पर टीन का ढक्कन दिया जाय। अिस ढक्कन के दोनो किनारो में दो हेंडल लगाये जाय। पात्र के मुह के पास अूपर के हिस्से में अेक छिद्र रखा जाता है। छत्री के तीर का अेक टुकडा ढक्कन के अेक कान से पारकर पात्र के मुह के छेदमें से ढक्कन के दूसरे कान में से निकाला जाय। अिससे खुलने भिडनेवाली ढक्कन तैयार हो जायगी। गड्ढा ढकने के पहले अुसे घास-फूस और पत्तियो से भर देना अच्छा होगा किंतु जिनको गड्ढा अधिक समय तक चलाना है अुन्हे खाली गड्ढा ही बद कर देना चाहिये।

गड्ढे का ढक्कन--गड्ढे के चारो ओर किनारी की जो छोटी दीवार बनायी जाती है अुसके गोली रहते समय ही बास की कलमिया चार-चार अगुल के अतर पर गड्ढे के अूपर फैलाकर रखी जाय ताकि वे पक्की जम सके। पात्र के मुह के अूपर कम से कम दो अिंच अतर रहे अितनी अूचाअी पर बास की लकडियों लगानी चाहिये। अिन लकडियो पर अेक चटाई बिछायी जाय। चटाई में दोनो बाजू डामर पोतने से अुसमें दीमग नही लगेगा। अिस चटाई पर गोबर-मिट्टी का अच्छा-सा पुट देना चाहिये। चटाई में गड्ढे के पीछे की ओर अेक छेद बनाकर अुसमें छ-सात फिट अूचा बास या

और किसी चीज की नली वास की कंची के सहारे खडी करनी चाहिये। सहारे के दो बास और चिमनी की नली अिन तीनो को अेक साथ बाध दिया जाय। नली के नीचे के हिस्से में मिट्टी का लेप भी देना चाहिये। अिस नली के द्वारा बद गड्ढे की दूषित हवा बाहर निकल जायगी। नली के अूपर के हिस्से में अेक बारीक जाली बाधी जाय जिससे मच्छर अन्दर नही जा सके। गड्ढे के चारो ओर काटो का घेरा बनाना चाहिये अन्यथा मवेशी या बालक के पैर पडने से अुसके टूटकर गिर जाने की सभावना है।

अिस्तेमाल का तरीका– पाखाने का अुपयोग करते समय मलपात्र के मुह के पास का हिस्सा पानी डालकर थोडा गीला करना चाहिये। अिससे मल पात्र से चिपकेगा नही और सीधा निकल जाने में मदद होगी। शौच के बाद पानी लेते समय पानी के प्रवाह के साथ साथ मल तो फिसल जायेगा ही। अिसके बावजूद भी थोडा-सा मल चिपककर रह गया तो झाडू व थोडे से पानी की सहायता से पात्र साफ करके रखना चाहिये। अैसा न होने से मल अधिकाधिक अिकठ्ठा होता चला जायेगा और बाद में शौच के लिअे आनेवालो को बडी दिक्कत होगी। पाखाने में पानी और झाडू हमेशा रहे। मल-पात्र की नली में सस्ता तेल बीच बीच में लगाते जाने से मल फिसलने में मदद होगी।

गड्ढे में अेकत्रित होनेवाले मल को कचरा, मिट्टी, राख से न ढकने से भी चलेगा क्योंकि मलपर हमेशा पेशाब और पानी गिरते रहने से मल अपने आप ही पतला होकर गड्ढे में फैल जाता है। मल का अेक ही जगह ढेर होगा अैसी आशका करने की कोअी आवश्यकता नही।

कंपोस्ट–अिस गड्ढे में मल-पात्र के द्वारा घर का कचरा, भाजी के सडे गले खराब टुकडे, केले के छिलके, कागज के टुकडे, फटे पुराने कपडो के चिथडे, अिस तरह की सडनेवाली वस्तुअें डाली जा सकती है जिससे मल की गदगी कम होने में तथा अधिक कपोस्ट बनाने में मदद होगी। यह कचरा नली से अपने आप फिसल नही पायेगा अिसलिअे लकडी से अुसे ढकेल देना चाहिये। हर परिवार में यह पाखाना साथ-साथ कचरे के गड्ढे का तथा मूत्री घर का भी काम देगा। पारिवारिक खाद गड्ढे के भी खुले और बदसूरत दीखने के बदले और मुर्गी, कौओं के द्वारा और भी गदगी फैलाने के बदले अैसी पेटी-बद व्यवस्था विशेष अच्छी होगी। पास-पास में दो मलपात्र और गड्ढे बनाये जाने से अुन्हे अदल-बदलकर अुपयोग में लाया जा सकता है। और खाद भी निकाली जा सकती है।

बार-बार गड्ढे की खाद बाहर निकालते समय गड्ढे की दीवारे गिर न पायें अिसलिअे जमीन के प्रकार के अनुसार गड्ढे का मुह, मलपात्र की ओर की दीवार या तो चारो दीवारे पत्थर या अीटों से बनवानी चाहिये। तल कच्चा ही रहे। पाखाने का घेरा यदि पक्का रहता है तो गड्ढे की दीवारे भी पक्की होनी ही चाहियें।

बच्चो के लिअे छोटे पाखाने––देहातों में सर्वत्र और शहरो में भी अनेक स्थानो पर प्रौढ लोग किसी तरह के पाखानो में या दूर जगलो में शौच के लिये जाने पर भी छोटे बच्चो को घर के आस पास खुले में शौच के लिअे बिठाते है और अुनका मल कौअे, मुर्गियां और कुत्ते फैलाकर गदा कर देते हे। अिसलिअे छोटे

बालकों के लिअे छोटे से मलपात्र का छोटे गड्ढे पर पक्का किया हुआ पाखाने का होना विशेष रूप से जरूरी है। रात के समय प्रौढ लोग मूत्रीघर के रूप में अुसका अुपयोग कर सकते हैं।

पूर्ति—रत्नागिरी जिला खादी संघ–मु० पो० गोपुरी, अिस सस्था से मिट्टी के या टीन के परदे लगाये हुअे मलपात्र ढाअी रुपये में रत्नागिरी जिला खादी सघ ने प्लास्टर ऑफ पेरिस के साचे भी तैयार किये हैं। अुनकी कीमत प्रति साचा १५ रु रखी गयी है। ढलाअी खर्च अिसमें शामिल नहीं है। अेक साचे की सहायता से चाहे जितने मलपात्र बना सकेंगे। छोटे मलपात्र और साचे भी क्रमश डेढ और बारह रुपयों में मिल सकेंगे। पात्रों में कलअी करने का भी प्रबध किया गया है।

१ गड्ढे का खुला भाग
२ गड्ढे पर बैठायी गयी कमचियां
३ कमचियों पर रखी गयी चटाअी
४ चटाअी पर गोबर मिट्टी का लेप और चिमनी।
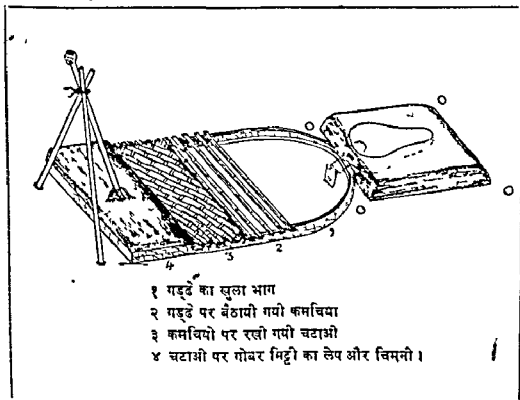
मिल सकते हैं। मिट्टी के मलपात्र को दूर तक ले जाना सुविधाजनक नहीं है अिस कारण स्थानीय कुम्हारों द्वारा बनवाकर सस्था के या ग्राम सेवक के मार्फत लेना ज्यादा अच्छा होगा। अुन्हें बनाने की विधि सरल हो और निश्चित माप के पात्र बन सके अिसलिअे

मदद—अैसे पाखाने अपने घर के अुपयोग के लिअे रखनेवालों के लिअे गांधी स्मारक निधि की ओर से मदद भी मिल सकती है। अुसके लिअे श्री ●चालक, महाराष्ट्र शाखा गांधी स्मारक निधि, काकावाडी, वर्धा अिस पतेपर पूछताछ करनी चाहिये।

गोशाला मंत्री का मासिक प्रतिवेदन

माह-दिसम्बर १९५८

[सेवाग्राम नओी तालीम परिवार में जितनी प्रवृत्तियाँ चलती है अुन सबका विस्तृत विवरण हर महीने पारिवारिक आम सभा के सामने पेश किया जाता है। अिसमें अुस महीने में अिस विभाग में काम की प्रगति, अुस सबंध में अुपार्जित ज्ञान, अुत्पादित वस्तुओ और आमद खर्च के आकडे तथा काम में जो भी कठिनाअियाँ आयी हो वे और अुनके निवारण के लिअे अुपायो का सुझाव भी रहता है। महीने के आखिर में हर विभाग के मंत्री अपना-अपना विवरण तैयार करते है, फिर वह अपने वर्ग में पढकर अुसपर चर्चा और आवश्यक संशोधन होता है। और अुसके बाद यह आम सभा के सामने आता है। दिसंबर महीने के हमारे गोशाला नायक का यह विवरण नओी तालीम के पाठको के सामने पेश किया जा रहा है- सं]

पूज्य अध्यक्षजी, गुरुजनो, तथा बहनो और भाअियो ?

आप लोगो ने मुझे गोशाला नायक बनाकर जो अच्छा मौका दिया वह अविस्मरणीय है क्योकि अिससे मैंने बहुत चीजें सीखी। मै गोशाला कार्य का संक्षिप्त विवरण आपके सामने पेश करता हू। मेरा काम सुबह ४ बजे से शुरू होता था। अिस समय दूध दुहने की पूरी व्यवस्था और गोशाला सफाअी का काम करता था। शाम को ४। बजे पूरी टोली के भाअी आकर अपने अपने कार्य में जुट जाते थे, जैसे चारा काटना, गायो को बर्सीम घास देना, खुराक गायो को देना, अुन्हे ब्रश लगाना धोना आदि। हमारी टोली में नये भाअियोने दिनाक ३-१२-५८ को प्रवेश किया। अिससे काम चलाने के लिये कोअी कठिनाअी महसूस नही हुअी। माह के आखिरी दिनो पाँच भाअी बीमार पडे थ। लेकिन बाकी जो भाअी थे अुन्होने सब कठिनाअियों को झेलते हुअे पूरे कार्य को आनन्द के साथ निभाया। दिनाक १६ को अेक बछड का देहान्त कैसे हुआ, किस बीमारी से हुआ, यह जानने के लिये अिसका शरीर परीक्षण किया गया। अिसमें बहुत चीजें सीखने लायक थी।

दुनिया में जितने भी गोशाला प्रेमी है अुनका कहना है कि गाय, बैल या बछडा बछडी के शव काटकर देखना और अुससे जानकारी लेना गोसेवा का ही अेक अग है। अिसी दृष्टिकोण को सामने रखकर हम लोगोने बगैर किसी प्रकार के संकोच के चीरफाड का काम आनन्द के साथ किया।

पोस्ट मार्टम के जरिये हमको कई प्रकार की शिक्षा मिल सकती है। जानवर के शरीर में क्या बीमारी है। विष या अन्य परिस्थिति के कारण मृत्यु हुअी है या और किसी तरीके से हुअी है यह जानना जरूरी है ताकि दूसरे जानवरो के बारे में हम सावधान रहे।

जानवरो की साधारण बीमारिया हम जान सकते है, लेकिन साप का विष या हृदय बन्द होने की जैसी भयानक बीमारिया हम नही जान सकते है। अिसीलिअे अैसे मृत्यु का कारण

Colostrum

तारीख	समय	लक्टो-मीटर	तापमान	रंग	गंध	चिकनाई	स्वाद	विशेष
२५-१२-'५८	शाम	३८	८४	बहुत पीला	गंध जितनी उग्र कि मनको खराब लगता है।	चिकनाई बहुत कम	लगता है कि खाकर देखने से उल्टी होगी	गाढापन ज्यादा और जल्दी फट जाना
२६-१२-'५८	सुबह	३७	८१	पीला	"	"	"	"
	शाम	३७	८१	"	"	"	"	गाढापन ज्यादा और तीन मिनिट के बाद फट जाना।
२७-१२-'५८	सुबह	३६	८१	आज से पीले रंग में बदल होना शुरू हुआ	उग्रता पहले से कम होने लगी	चिकनाई में भी परिवर्तन होना चालू–	दूध से स्वाद लेने से उल्टी जैसा लगता था वह नहीं है।	गाढापन में भी परिवर्तन होना आरंभ हुआ। दस मिनिट के बाद फटा
	शाम	३६	८१	"	"	"	"	"
२८-१२-'५८	सुबह	३४	८३	रंग दूध से थोड़ा पीला	"	"	"	"
	शाम	३३	८४	"	गंध दूध जैसी ही आती है।	चिकनाई दूध जैसी ही महसूस होने लगी	दूध जैसा लगता था	आज पंद्रह मिनिट के बाद दूध फटा
२९-१२-'५८	सुबह	३१	८२	दूध जैसा ही रंग था	दूध की गंध के समान लगी	दूध के समान चिकनाई थी	दूध के समान स्वादिष्ट लगता था	दूध के समान जिसके ऊपर मलायी आयी और ठीक तरह से दूध उबाला गया लेकिन फटा नहीं
	शाम	कुछ कारण से शाम को दूध का परीक्षण नहीं किया।						
३०-१२-'५८		छठवें दिन से दूध शाला में दूध के रूप में जाने लगा। यह जो क्रिया चल रही थी उसमें दूध के रूप में परिणत होकर समाज को खाने लायक हो गया।						

जानने के लिओ पोस्ट मार्टम की जरूरत होती है। असिसे मृत्यु के कारण का सही सही पता चल सकता है।

हमारे यहा का जो बछडा मरा था असुका कारण कमजोरी ही थी। हमारी यह मनोकामना थी कि मरे हुय जानवर को ठीक तरह से अपयोग में लाया जाय या तो ठीक तरह से दहन या दफन किया जाय जिससे गदगी फैलन की कम सभावना हो। असिको भी सर्वोदय में गो सेवा का अंक अग माना है।

दिनाक १७ को और २५ को पार्वती और सीता गायो न गोशाला परिवार में दो बछडो को जन्म दिया। दिनाक १६ को अक बछडा मरा और दिनाक १७ को अक बछड ने जन्म लिया। मराठी में कहावत है कि "आजा मेला नातु झाला घरचे लोक बरावर" ठीक वैसा ही हुआ। कुछ गायें दूध कम देन से बन्द कर दी गयी। गाय ब्याने से कितन दिनपर दूध होता है और दूध बनने तक चीक (कोलास्ट्रम) में क्या परिवर्तन हाता है यह देखा गया। खुद हम लागा न प्रत्यक्ष काम किया, असुसे पता चला कि दूध में क्या परिवर्तन होता है।

दिनाक २५ १२ ५८ को सुबह ५ बजे गाय ब्याओ। बयाने में कुछ तकलीफ नही हुओ। अूपर दिये हुयें कोलास्ट्रम के आलेख के बारे में सविस्तर जानकारी निम्न प्रकार की है।

कोलास्ट्रम का माने वह चीज जो गाय ब्यान के बाद देती है वह दूध से भिन्न हाती है। असुको ही चिक कहते हे। असुके लेक्टोमीटर अक, तापमान रग, गध, चिकनाओ और स्वाद दूध से निराले होते है।

लेक्टोमीटर अक – दूध का साधारण तरह से देखा जाय तो ३०, ३१ रहता है। लेकिन कालास्ट्रम का वैसा नही। गाय ब्याने के बाद जो चीक निकाला जाता है असुका लेक्टोमीटर अक ४० रहता है। हर दिन यह अक कम होकर ६ वे या ७ वे दिन में दूध जैसा बन जाता है।

तापमान – दूध का तापमान कम रहता है और चिक का तापमान ज्यादा रहता है।

रग – दूध का रग बिलकुल सफेद होता है और चिक का रग पीला होता है। असुके रग को दूध जैसा बनने के लिओ सात दिन का समय लगता है।

गध – दूध से चीक की गध भिन्न रहती है। हम किसी चीज की गध लेते हैं तो जल्दी पता लगता है कि यह चीज गदी है। चिक का वास लेने से वैसा ही होता है। दूध की गध ज्यादा नही आती लेकिन दूध के काम में आनेवाले कपडे को अगर चार पाच दिन तक न धोया जाय तो असुको जैसी अुग्र गध आती है ठीक वैसी ही चीक की आती है।

चिकनाओ – दूध में ज्यादा प्रमाण में चिकनाओ रहती है चीक में अुतनी नही।

स्वाद – देखा गया कि पहिले दिन का जो चीक था असुको गरम करने के बाद तीन मिनिट दो सेकड के बाद फट गया। खाकर देखा तो मीठापन बिलकुल नही था। चबान से असुका टुकडा अिधर अुधर फिसल जाता था। चबान से कच-कच आवाज आती थी। असिी तरह तीन चार दिन तक चला। फिर असुमें थोडा परिवतन होना चालू हुआ। ६ व दिन दूध बन गया। पाँचवे दिन म शामको १५ मिनिट तक दूध ठीक तरह से अुबाला गया, फटा नही, पीकर देखा तो शुद्ध दूध को तरह स्वादिष्ट लगा।

पशु संख्या –

माह के शुरू में पशु सख्या ७१

सीता और पार्वती नाम की गायें ब्याया २

माह में बेचे गये गोरे ४

माह में मृत्यु १

माह के अन्त में पशु सख्या ६८

१ गायें २३

२ बछडे ४०

३ बैल ४

४ साड १

कुल— ६८

हिसाब – दूध देने वाली गायें ९ रही जिनसे १०५२ पौड दूध मिला। अेक गाय का अेक माह का औसत दूध ११७ पौंड और अेक गाय का अेक दिन का औसत दूध ३॥ पौड।

सबसे ज्यादा दूध देनेवाली गाय गगा ने २४२॥ पौड और सबसे कम दूध देनेवाली गाय विश्वनारा ने ६७ पौड दूध दिया।

पिछले और अिस माह के दूध में तुलना

पिछले माह मे कुल १०३८॥ पौड और अिस माह में १०५२ पौड दूध हुआ। पिछले माह से १३॥ पौंड दूध बढा।

आमदनी .

	रु न पै
१०५२ पौंड दूध जिसकी कीमत	२६३ ००
बेचा गयाखाद ३४ गाडी–कीमत	१०२ ००
बेचे गये बछडे ४ जिसकी कीमत	७९० ००
गाय धनाओ	४.००
कुल आमद	११५९ ००

खर्च :

	रु न.पै.
खुराक खर्च	५१५ ४६
मजदूरी	१४७ २३
विद्यार्थी खर्च	५० ००
नगदो खर्च	३१ ६२
कोठार खर्च	१०.२५
व्यवस्था खर्च	१२५ ००
कुल खर्च	८७९.५६

कुल आमद ११५९ ००
„ खर्च ८७९ ५६
बचत– २७९ ४१

कार्य विवरण :

गोशाला सहायक धीरेद्र भाओ थे। जानवरों की खुराक तैयार करने की जिम्मेवारी अिनकी थी। अिन्होने अपना काम बडे चाव से दिलचस्पी के साथ पूरा किया। अिन्होंने अिस काम के लिये ९० घटा समय दिया।

खुराक हिसाब	मन	सेर	रु न पै
अुत्पादन खुराक	२१	३७	२७४ ० २
बछडा खाते	२०	५	२४१ ४७
कुल खुराक			५१५ ४९

बछडा नायक गोविन्द भाओ थे। अिनका काम था बछडो की देखभाल करना। अिन्होंने बछडो की हालत सुधारने के लिये अेक छोटीसी योजना बनाओ।

पहली बात तो यह थी बछडो को ठीक समय पर और नियमित परिमाण में खुराक देना। दूसरी बात थी बछडो को ठीक समय पर नहलाना और किस तरह से अच्छे दिखाओ देंगे अिसके बारे में सोचना। कुछ दिन तक तो

अिन्होंने काम अच्छा सभाला लेकिन बीमार पड जाने के कारण अुनकी जगह पर दूसरे भाअी ने काम किया और बछडा नायक की योजना अुनके मन में ही रह गयी। बछडा नायक ने १६ बार बछडा घर की सफाअी की। माह में ३ बार बछडों को तेल पिलाया। जब गोविन्द भाअी स्वस्थ होकर आ गये तो अपने काम में फिर से दिलचस्पी के साथ लग गये।

खेती नायक मिहिर कुमार भाअी थे। वे माह में चार दिन बीमार पड गये थे। बाकी दिन अिन्होंने खती काम लगन के साथ किया। अिनका काम अिस प्रकार रहा – खेती में अेक टोली लेकर काम करते थे। अेक चार्ट बनाकर प्लाट नम्बर और अुससे कितना घास निकला यह अुस चार्ट में भरते थे। पूरे माह तक बर्सीम काटना, खेत में खाद डालना, और समय समय पर घास को काटना, किसी भी प्रकार काम में ढीलाअी आ जाय तो अुसका सामना करना और अुसको ठीक रास्ते पर लाना। हरदिन औसतन ४ भाअी काम क लिये आते थे, अुन्होंने २ घटे के हिसाब से ३१ दिन में २४८ घन्टे समय दिया।

सात क्यारियो से २४२ मन २ सेर बर्सीम निकला और २ क्यारियो से २७ मन ९ सेर लूसर्न निकला। अिनका आखिर तक यही प्रयत्न रहा कि मेरा काम और भी अच्छा हो। असल बात तो यह है कि बूढे राघोबा दादा ने सबदिन अुसके पीछे पडकर हमारे खेती कार्य की शोभा बढाअी। अभी जो गोशाला की खेती हरी भरी दिखाअी देती है वह अुनके और हमारे गोशाला साथियो के परिश्रम का ही फल है।

कम्पोस्ट नायक सीताराम भाअी थे। अिन्होंने अपना काम माहभर ठीक से चलाया। अिन पर समाज के सहकारी कोठार की जिम्मेवारी होते हुये भी अिन्होंने अिस कार्य को चलाने की भी जिम्मेवारी ली और वह अच्छी तरह से सभाली, जा कठिनाअी बीच में आयी अुसको पार करके अपना रास्ता ठीक किया। अभी तक जो खाद बनाने का काम चलता था वह जापानी पद्धति से होता था किन्तु अिस माह में अिन्दौर तरीके से काम किया। अिससे यह अनुभव हुआ कि देहात में यह तरीका अपनाना आसान न होगा, क्योंकि अुसके लिये पानी ज्यादा चाहिये, हरा घास भी चाहिये और अुसका घोल बनाना अित्यादि काम भी कठिन है। लेकिन जापानी पद्धति से खाद बनाना आसान है। जापानी तरीके से खाद बनाना देहातवालो के लिये आसान होगा।

अिस काम के लिये ६० विद्यार्थियो ने १२० घन्टा समय दिया। कुल औसत हाजरी २ रही। कम्पोस्ट ६४८ घन फिट बना और ३१ गाडी गोशाला से गोबर लिया। ३४ गाडी खाद बेचा गया जिसकी कीमत १०२ रु हुअी।

चिकित्सालय की जिम्मेवारी मेरे अूपर थी। अेक गाय को पहले से ही फोडा हुआ था। अेक बैल के पाव को चोट आयी थी, अेक बछडा फूल गया था। अुनके अुपचार के लिअे तेल पिलाना, चोट को धोकर दवाअियां लगाना, ड्रेसिंग करना और अुनकी देखभाल करना अित्यादि कार्य किये।

दूध शाला – दूध शाला की जिम्मेवारी रामचद्र भाअी पर थी। अिनकी सहायता के लिअे कमलकान्त भाअी ने तीन दिन तक काम किया लेकिन अुसके बाद पूरा महीना वह बीमार रहे। अुनके बदले में और अेक भाअी दूध शाला

का काम करने के लिअे जाते थे। कुछ दिन अुन्होंने अकेले काम सभाला, जिसके लिअे मैं अुनको हार्दिक धन्यवाद देता हूं। अिन्होंने माहभर दूध का काम अच्छे ढग से सभाला। अिनका साधारण काम दूध देने का और हिसाब का रहा। अिन्होंने अिस के लिअे २५० घन्टा समय दिया। दूध शाला का माहभर का हिसाब अिस प्रकार है।

दूध प्राप्ति:-

सहकारी दूधशाला के अुत्पादकों से	३९४० पौंड	जिसकी कीमत	९४८ रु ८३ न. पै.
हमारी गोशाला से	१०५२ पौंड	जिसकी कीमत	२६३ रु. ०० न. पै.
कुल प्राप्ति	४९९२ पौंड	कुल कीमत	१२११ रु ८३ न. पै

दूध वितरण –

सस्थागत–३६०६ पौंड जिसकी कीमत	९८१ रु. ६६ न पै
व्यक्तिगत–१४५० पौंड जिसकी कीमत	३८ रु ५७ न पै.
कुल वितरण ५०५६ पौंड	१३६६ रु २३ न. पै.

आमद		खर्च	
दूध बिक्री	१३६६. ११	अुत्पादकों को	९४८. ८३
		गोशाला	२६३. ००
		विद्यार्थी-श्रम	५०. ००
		मकान किराया	१०. ००
		दूध दूहने की मजूरी	२७. १७
		नगद खर्च	५. ८९
		सहकारी कोठार	१. ०९
		कुल खर्च	१२८५ रु. ९८ न. पै.

गोशाला साथियो ने माह भर लगन के साथ काम किया और जितनी भी कठिनाअी सामने आयी अुसको दूर हटाकर अपना मार्ग खुला किया। मेरे काम में साथियों की हर समय मदद मिली, जिससे मुझे कोअी कठिनाअी महसूस नही हुअी। अैसे ही हर समय किसी भी कार्य में सबको अपने साथियो को सहायता मिलती रहेगी तो हमारे सामने कितना भी कठिन से कठिन काम आ जाय तो भी हम अुसका हसते हसते हल कर सकते हैं।

गोशाला नायक:–
अुत्तर बुनियादी भवन
दूसरी टोली।

सेवाग्राम

मकर संक्रांति, १४ जनवरी '५९

प्रिय नअी तालीम परिवार की बहनों और भाअियो

छ महीनों की विदेश यात्रा के बाद हम दोनों आज सेवाग्राम लौटे हैं। हमारी अिस शैक्षणिक यात्रा का खास अुद्देश्य रहा साम्यवादी राष्ट्रों में और विशेष करके रूस में बच्चों के विकास से लेकर विश्व-विद्यालय तक की समग्र शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन करना। अितनी थोडी अवधि में किसी भी शिक्षा व्यवस्था का सम्यक् अध्ययन करना संभव नहीं है यह हम जानते हैं। तथापि अिस यात्रा में हमें साम्यवादी शिक्षा व्यवस्था का जो प्राथमिक परिचय मिला वह लाभप्रद रहा, अैसा हम मानते हैं।

हमारी शैक्षणिक यात्रा के अनुभव हम धीरे धीरे नअी तालीम के मार्फत आप लोगों की सेवा में अुपस्थित करेंगे। आज सिर्फ आप सबको हमारा सप्रेम नमस्कार निवेदन करते हैं और आशा करते हैं कि अप्रैल के आखिरी सप्ताह में पंजाब में होनेवाले अखिल भारतीय नयी तालीम सम्मेलन में आप सबका दर्शन मिलेगा।

भवदीय

आर्यनायकम्।

आशादेवी।

सूचना

'नअी तालीम' का आगामी अंक मार्च के पहले सप्ताह के बदले तीसरे सप्ताह में प्रकाशित होगा और वह दसवें सर्वोदय सम्मेलन, अजमेर का विशेषांक रहेगा। नअी तालीम के ग्राहक कृपया अिसका ख्याल रखेंगे।

पारिवारिक सामाचार

श्री आर्यनायकम् और आशादेवी के छ महीने की विदेश यात्रा के बाद १४ जनवरी १९५९ को सेवाग्राम वापस लौटने पर तालीमी संघ परिवार तथा वरोरा और सेवाग्राम के लोगोंने सेवाग्राम स्टेशन में अुनका बडे आनद से हार्दिक स्वागत किया। स्वागत के लिअ स्टेशन पर आयी मडली के साथ वे बापू-कुटी पहुचे। वहाँ प्रार्थना होने के बाद अुनके स्वागतार्थ शाति भवन म सभा हुअी। तालीमी सघ परिवार की तरफ से दादुजी और श्री छगनलाल गाधी ने अुनका स्वागत किया। स्वागत के अुत्तर में आर्यनायकम्जी ने कहा–

"यहा से छ माह पहले आप लोगो से विदा लेकर हम विदेश गये। लेकिन लगता तो यही है कि हम कल ही यहा से गये थे। विदेश में कही भी हम रहे हो सेवाग्राम का स्मरण हमेशा रहता था–अिस वजह से समय की दूरी महसूस नही हो रही है। हम विदेश में कअी जगहा पर घूमे। अिस यात्रा में दो चीजो का हम पर खास असर पडा। पहली बात तो यह है कि सब कही अशाति है और सब में शाति की भूख है। वहा सब महसूस कर रहे हैं कि शाति कायम करने के लिअ बापू का रास्ता ही सही है। अिसी वजह से सब कही लोगोने बापू की विचार धारा को समझने और अुसे अमल में लाने की अुत्सुकता प्रकट की।

"दूसरी बात जिसका हम पर काफी असर पडा वह यह है कि विदेश में सब कही बच्चा पर और बच्चा की शिक्षा पर अधिक जोर दिया जाता है। विदेश के बच्चा को देखते समय मुझे अपने सेवाग्राम परिवार के बच्चो की याद आती थी। अिस बात का भी ख्याल था कि सेवाग्राम के बच्चा के पास खाली हाथ नही लौटना है। अिसलिअ यहा के नन्हे बच्चा के लिअ कुछ सौगात ले आया हूँ।'

तेरहवां अखिल भारत नअी तालीम सम्मेलन

आगामी २५ अप्रैल से २७ अप्रैल १९५९ तक राजपुरा (पजाब) म तेरहवा अखिल भारत नअी तालीम सम्मेलन बुलाने का निश्चय हुआ है। अिस सम्मेलन म पूज्य विनोबाजी अुपस्थित रहेंगे।

सम्मेलन के पहले तीन दिन कार्यकर्ताओ की अध्ययन गोष्ठी रहेगी। जिसम नअी तालीम के कार्यक्रम के बारे म गहराअी से चर्चा होगी। सम्मेलन के साथ नअी तालीम की अेक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। शिक्षा के द्वारा राष्ट्र-जनविकास के कार्यक्रम म दिलचस्पी रखनेवाले सभी भाअी-बहना का अिस सम्मेलन में भाग लेने के लिअ सादर निमत्रण है।

राजपुरा दिल्ली से अमृतसर के रास्ते में अम्बाला के बाद का शहर है। यह रेल्वे-स्टेशन अम्बाला, चन्डीगढ और पटियाला से सत्रह मील की दूरी पर स्थित है। पिछले दस साल से राजपुरा में हिन्दुस्तानी तालीमी सघ की ओर से बुनियादी तालीम का काम चला है और अब चार बुनियादी विद्यालय और अेक अुत्तर बुनियादी विद्यालय है। राजपुरा म कस्तूरबा सेवा मदिर का खादी ग्रामोद्योग काम का मुख्य केन्द्र है।

सम्मेलन म भाग लेने के लिअे प्रतिनिधि शुल्क तीन रुपय सम्मेलन मत्री हिन्दुस्तानी तालीम सघ, सेवाग्राम वर्धा को भेजकर प्रतिनिधि पत्र और रेल्वे रियायत फार्म प्राप्त किया जा सकता है। प्रतिनिधियों को अेक तर्फा रेल किराय पर आने जाने की रियायत मिलने के लिय व्यवस्था की जा रही है। यह रियायत अुन्हीं प्रतिनिधियो को दी जाती है जिन्हे सरकार से या किसी सस्था से सफर भत्ता नही मिलता है। सम्मेलन म प्रदर्शनी, निवासस्थान आदि विषयो के सम्बन्ध म मत्री स्वागत समिति तेरहवा अखिल भारत नअी तालीम सम्मेलन कस्तूरबा सेवा मदिर, राजपुरा से प्राप्त किया जा सकता है।

राधाकृष्ण,

मत्री, हि ता सघ, सेवाग्राम

संपादक-मंडल

आशादेवी : मार्जरी साईक्स

देवीप्रसाद

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ

सेवाग्राम

वर्ष : ७] — मार्च-अप्रैल १९५९ — अंक : ९-१०

"नअी तालीम" मार्च–अप्रैल १९५९ : अनुक्रमणिका

'नअी तालीम' के नियम

१ "नअी तालीम" अंग्रेजी महीने के हर पहले सप्ताह में सेवाग्राम से प्रकाशित होती है। अिसका वार्षिक मूल्य चार रुपये और अेक प्रति की कीमत ३७ नये पैसे है। वार्षिक मूल्य पेशगी लिया जाता है। वी पी से मंगाने पर अुन्हें ६२ नये पैसे अधिक देना होगा।

२ किसी भी महीने से ग्राहक बन सकते हैं। अेक साल से कम अवधि के लिये ग्राहक नहीं बनाये जाते हैं।

३ ग्राहकों को चाहिये कि रेपर पर पते के साथ दी हुअी अपनी ग्राहक संख्या हमेशा याद रखें और पत्र-व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

—व्यवस्थापक, "नअी तालीम"

सेवाग्राम (वर्धा) बम्बअी राज्य

नई तालीम

(हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की मासिक पत्रिका)

वर्ष ७] मार्च १९५९ [अंक ९

शांति सेना

विनोबा

शांति सेना का आरंभ तो बापू ने कर ही दिया था। वे शांति सेना के सेनापति थे तथा प्रथम सैनिक भी थे और दोनों नातों से अपना काम पूरा करके वे चले गये। 'शांति सेना' की बात नयी तो नहीं है, पुरानी है। सन्तों ने अैसी सेना बनायी भी है। दुनियां के भिन्न भिन्न देशों में उसका अितिहास भी पढ़ने को मिलता है। मैंने जब तेलंगाना में प्रवेश किया था, तब जाहिर किया था कि मैं यहां पर शांति सैनिक के नाते आया हूं। तो, उसका आरंभ मेरे लिअे वहीं से हो गया और तब से आज तक यही ख्याल मन में रहा कि शांति सैनिक के नाते ही मैं घूम रहा हूँ और अभी काश्मीर जाने का सोचा गया है, उसमें भी मेरी यही दृष्टि रहेगी। अपनी काश्मीर-यात्रा से, बहुत ज्यादा अपेक्षा मैं नहीं रखता, केवल निरीक्षण की अपेक्षा रखता हूं। अीश्वर ने चाहा, तो काश्मीर में बहुत अच्छी सेना बन सकती है।

मैं आशा करता हूँ कि हिन्दुस्तान का दुख मिटाने में यह छोटी-सी सेना कामयाब होगी। अिस सेना में बूढे हैं—बहनें हैं, बीमार लोग भी हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि हिन्दुस्तान का व जगत् का दुख मिटाने का काम यह शांति सेना करेगी। जिस प्रकार भूदान ग्रामदान आदि का थोडा कार्य चला, उसके मसले के बारे में दिमाग साफ हुआ और आगे का रास्ता साफ हुआ। उसी तरह अिस काम से दूसरी राह खुल जायगी।

शांति सैनिकों के दैनंदिन जीवन के बारे में अेक बात मेरे मन में है। मैंने माना है कि शांति सैनिकों को बीमार पडने का हक नहीं है। कोशिश तो मेरी भी रही है, पर लोग यह समझते हैं कि शरीर के विषय में मैं बहुत बे-दरकार हूँ। बचपन में जरूर बे-दरकार था। उस समय ज्ञान-प्रधान वृत्ति थी और दूसरे कहीं पर मेरा ध्यान भी नहीं जाता था। उस समय शरीर का भी कुछ कम ही ज्ञान था। अैसे कुछ कारणों से बचपन में बे-दरकारी थी। लेकिन अिन दिनों मैं अपने शरीर के प्रति बे-दरकार नहीं हूँ। मैं आज जो भी काम करता हूँ बहुत सावधानी के साथ करता हूँ। मैं यह समझता हूँ कि शांति सैनिकों को और दूसरी चीजों का हक हो, लेकिन बीमार पडने का हक नहीं हो सकता; क्योंकि उनका जीवन समाज-सेवा के लिअे अर्पित होता है, हम अपनी असावधानी से समाज-सेवा में विघ्न पैदा करें तो वह हमारी प्राथमिक अयोग्यता ही मानी जायगी।

शांति-सेना : भारत और संसार के सामने चुनौती !

अखिल भारत सर्वोदय-सम्मेलन का निवेदन

महात्मा गाधी के निर्वाण के बाद देश भर में फैले हुअे अुनके साथी तथा अनुयायी सेवाग्राम में मिले। वहां सर्वोदय-समाज नाम के अेक भाअी-चारे की स्थापना की गयी। तब से हर साल सर्वोदय-समाज का अेक सम्मेलन देश के विभिन्न स्थानो पर होता रहा है। अिन सम्मेलनो में भारत के विभिन्न प्रान्तो के सर्वोदय प्रेमी भाअी-बहन अिकट्ठा होते हैं और साल भर के काम का सिंहावलोकन करके भावी कार्यक्रम की चर्चा तथा कार्य अेव तत्त्व के संबध में चिंतन-मनन करते हैं। आरंभ के तीन वर्ष नअी परिस्थिति में सर्वोदय का मार्ग खोजने में बीते। १९५१ में भूदान-यज्ञ का आरंभ हुआ और अुस रूप में देश को अेक अगला मार्ग मिल गया। देश में राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का अेक सफल अहिंसक प्रयोग हो चुका था। अिसमें भूदान कार्यक्रम द्वारा आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का अहिंसक तरीका स्पष्ट हुआ। विनोबाजी की भूदान-यज्ञ शांति-यात्रा में ज्यो ज्यो सफलता मिलती गयी, त्यो-त्यो न सिर्फ देश के सारे सर्वोदय-प्रेमियो का, बल्कि देश के अन्य विचारको का ध्यान भी अिस ओर आकर्षित होता गया। फलत सन् ५२ के सेवापुरी-सम्मेलन के बाद से सभी सर्वोदय-सम्मेलन देश को अहिंसा की दिशा में ले जानेवाले मार्ग के सीमा-चिह्न-से बनते गये।

भूदान का करुणामूलक विचार क्रम-क्रम से ग्रामदान के समत्व-विचार में विकसित होता गया। ग्रामदान ने अेक अैसा रास्ता खोल दिया जिससे आर्थिक क्षेत्र में भारत के गाँवो की समत्वयुक्त प्रगति हो और साथ ही सामाजिक क्षेत्र में जनता का नैतिक गुण विकास भी होता जाये। अिस आन्दोलन के छह वर्षों में भूमि-समस्या संबधी सर्वोदय-दृष्टि का दर्शन हुआ। भूमि-प्राप्ति, भूमि-वितरण, ग्रामदान और अुसके नव-निर्माण का चित्र भी हमारे सामने स्पष्ट होता गया। पिछला वर्ष सर्वोदय-सेवको के लिअे अेक प्रकार से आत्म-निरीक्षण और सबल-संचय का रहा। अिस आत्म-निरीक्षण के फलस्वरूप अेक नयी स्फूर्ति मिली और कुछ नये प्रेरणाप्रद कार्यक्रम भी सामने आये।

ग्रामदान ने हमारे लिये ग्राम-स्वराज्य की राह खोल दी। अिसने हमें गाधीजी के स्वप्न को साकार करने का मौका दिया। स्वेच्छापूर्वक किये गये त्याग के कारण पैदा होनेवाली जन-शक्ति तथा स्वामित्व-विसर्जन के कारण पैदा होने वाले समत्व की भूमिका ने ग्रामदान की नींव डाली। पिछले कुछ वर्षों में संसार की और साथ ही भारत की जो स्थिति रही, अुसने स्पष्ट कर दिया कि अहिंसा-प्रेमियो के लिये शांति का प्रश्न अेक चुनौती है। जब तक हम अपने देश में अहिंसक साधनो द्वारा शांति-स्थापना की जिम्मेदारी नही अुठाते हैं, तब तक हम ग्राम-स्वराज्य को न तो खडा कर सकते हैं और न टिका सकते हैं। परिस्थिति की अिस चुनौती के अुत्तर-स्वरूप ही शांति-सेना का कार्यक्रम निकला है। शांति-सेना और ग्राम-स्वराज्य के कार्यक्रम अेक-दूसरे के पूरक हैं। यद्यपि शांति-सेना के अिस कार्यक्रम का अभी आरंभ ही है, फिर भी अिसे देश के प्राय: सभी प्रमुख विचारको का समर्थन प्राप्त हुआ है। अिस साल केरल, गुजरात और देश के दूसरे

कुछ हिस्सों में अशांति-शमन के जो प्रत्यक्ष कार्यक्रम हुअे, अुनसे शांति-सैनिकों का आत्म-विश्वास बढ़ा है।

हर प्रकार की सेना को लोक-सम्मति की आवश्यकता रहती है। शांति-सेना के लिअे लोक-सम्मति और लोक-आधार में सर्वोदय-पात्र का कार्यक्रम आया, जिसने अिस सारे क्रान्ति-कार्य को व्यापक रूप से जनाधारित करने का अवसर दिया है।

अिस वर्ष अन्य देशों की सर्वोदय-प्रवृत्तियों से भी हमारा अधिक सपर्क हुआ और जमीन के अलावा अुद्योग, व्यापार आदि क्षेत्रों में गांधीजी के ट्रस्टीशिप विषय विचारों के प्रयोग के संबंध में अध्ययन-मनन भी हुआ। अिस वर्ष सर्वोदय की दिशा में बढ़नेवाला अेक अुल्लेखनीय कदम यह भी है कि देश के सभी प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं ने अपने काम को ग्रामदान, ग्राम-स्वराज्य की दिशा में मोड़ने का निश्चय किया है।

आज हमारे सामने सर्वोदय-पात्र, ग्राम-स्वराज्य और शांति-सेना का त्रिविध कार्यक्रम है। सर्वोदय-पात्र द्वारा भारत के हर घर से शांति के लिये सम्मति मिलेगी और जन-मानस में सर्वोदय विचार का प्रवेश होगा। यह आवश्यक दीखता है कि ग्राम-स्वराज्य के लिअे मुख्यतः दो प्रकार से प्रयत्न हों, अेक तो ग्राम-दान द्वारा जमीन के विषय में व्यक्तिगत स्वामित्व का विसर्जन और अुसका ग्रामीकरण, दूसरे, ग्राम-संकल्प के द्वारा ग्रामों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति ग्रामों में ही करने का दृढ़ संकल्प। अिन दो कार्यक्रमों के जरिये हम अपने सारे रचनात्मक कार्यक्रमों को ग्राम-स्वराज्य की ओर मोड़ सकेंगे।

यह भी जरूरी है कि हम अपने अब तक के काम का समुचित मूल्यांकन करें और जो भी जमीन दान में प्राप्त हुअी है, अुसमें से वितरण के योग्य भूमि को यथाशीघ्र बांट दें और शेष भूमि की स्थिति स्पष्ट करें। जनता के द्वारा संकल्पपूर्वक किया गया नव-निर्माण का काम भी अहिंसात्मक क्रांति को आगे ले जाने का अेक साधन है।

स्पष्ट ही है कि अिस सारे कार्यक्रम के आधार हमारे कार्यकर्त्ता हैं। यह जरूरी है कि हमारे कार्यकर्त्ता निष्ठावान और कार्यक्षम हों तथा वे जन-साधारण से अेकरस बनें अिसके लिअे कार्यकर्ताओं की अुचित तालीम की व्यवस्था होनी चाहिये। सम्मेलन अखिल भारत सर्व सेवा संघ को अिस दिशा में अुचित कार्यवाही करने की विनति करता है।

शांति-रक्षा प्रत्येक नागरिक का कार्य है, किन्तु आज के संदर्भ में अिसके अनंतर भी शांति-रक्षा का दायित्व शेष रहता ही है और अिसके लिये शांति-सेना अेक अनिवार्य आवश्यकता है। शांति-सैनिक अशांति के अवसरों पर शांति-स्थापना के लिये दौड़ें आयेंगे और वहाँ अपने प्राण न्योछावर करने को भी तैयार रहेंगे। सामान्य स्थिति में वे अपने क्षेत्र और आस-पास के लोगों की नित्य सेवा करने वाले सेवा-सैनिक होंगे। सम्मेलन भारत में अहिंसक क्रांति के प्रेमी भाअी-बहनों से अिस शांतिमय क्रांति के प्रत्यक्ष कार्यक्रम में अपना पूरा योग देने और सर्वोदय-समाज की स्थापना में अपने पुरुषार्थ द्वारा सहायक होने की नम्रतापूर्वक अपील करता है।

यह श्रद्धा आप रखियेगा ।

विनोबा

मेरे अत्यत प्रिय मित्रो, सम्मेलन मेरे लिअे दर्शन का आनद प्राप्त करने का मौका होता है । मै यहा दर्शन के लिअे आता हू । विचार-प्रचार, चर्चा वगैरा रोजमर्रा चलती ही है । चार-चार घटा पदयात्रा चलती है, अुसमें अनगिनत चर्चायें चला करती है, परतु सालभर में कअी मित्रो से मिलना नही होता है, तो सालभर में अेक दफा मिलने का यह अेक प्रसग आता है । अिसमें आगे क्या काम करना है, अिसकी चर्चा भी होती है । मिलना भी होता है । अिसी के लिअे मै यहा आता हू ।

हमारे साथी अेक-के-बाद अेक परमेश्वर के पास पहुच रहे है, जिनके साथ हमने काम किया है, अैसे साथी जा रहे हैं । किशोरीलाल भाअी, जाजूजी, बाबा राघवदास, गोपबाबू, लक्ष्मीबाबू, भारतन्, देवदास सारे चल गये । यह तो यात्रा चल रही है, अखड यात्रा । लोग जा रहे है, अिस लोक से परलोक में । नये-नये आ रहे है । अिस बीच हमारी भी छोटी-सी यात्रा चल रही है । अिस साल दो दफा मै बीमार पडा था । अुसका मुझे दु ख है । मालूम नही कब तक चलेगा । अितना मालूम है कि जैसे गुरु नानक ने कहा है "हुकम रजाअी चल्लणा, नानक लिखिया नाल", अुसके हुक्म से सारा चल रहा है । यही अेक विश्वास और यही आशा और यही भरोसा लेकर हम काम कर रहे है ।

यह अकारण प्रेम करनेवालो की जमात है । मैं तो कैसे बोलना यह जानता भी नहीं हूँ । मैत्रीभाव कैसे रखना यह भी नही जानता हू, लेकिन अन्दर अेक तडपन, जलन है, स्नेह है—तो रूखा-सूखा राम का टुकडा है और हम अेक दूसरे को मिलने आते है, यही हमारा सम्मेलन का मुख्य कार्य है ।

मेरे प्यारे भाअियो, रोज हम जहा कुछ-न-कुछ बोलते ही है, वहा नयी बात हम क्या रखें, सिवाय अिसके कि मौन की महिमा प्रकट करे ? शब्द से भी हम वह महिमा प्रगट कर सकते है ।

हम समझते है कि यह साल हमारे लिये अेक आत्म-परीक्षण का और निरीक्षण का साल था । १९५७ तक हमने जाहिर किया था कि जो दिशा हमें सूझती है, अुस दिशा में हम आगे बढते जायेंगे । कुछ नयी बाते हमें सूझी है, वे हमने आपके सामने रखी है ।' जो असफलता हमें मिली है, अुसकी पूर्ति के लिये आप काम में लगे है । जहा काम का सम्बन्ध आता है, वहा हमें कुछ-न-कुछ सूझता ही है । अेक अवधि तक काम का अनुभव लोगो को आया । अब थोडा चिंतन, ध्यान करना, बहुत जरूरी है । अिसलिये यह हमारे लिये अेक साल से ध्यान-काल चल रहा है । अेक-अेक शिखर चढने की कोशिश कर रहे हैं । अेक-अेक शिखर चढते है, बीच बीच में ठहरते है और देखते जाते है तो स्पष्ट दर्शन होता है । ॠग्वेद में कहा है–

"यत् सानो सानु आरुहन्

यह प्रक्रिया अुसमें बतायी है। अेक शिखर से दूसरे शिखर पर चढते हैं, तो फिर-फिर से दर्शन होता है। चढने के बाद जरा रुककर देखते हैं तो पता चलता है कि हमने गलतिया कौन-सी की हैं। कहा तक आगे बढना है, यह भी हम देख सकते हैं। अिन दिनो टीकाकारो ने भी हमें बहुत मदद पहुचायी है। अिस आदोलन पर बहुत टीका हुअी है। अुनका हमें बहुत लाभ हुआ है। अुन सब टीकाकारो का हम अुपकार मानते हैं। हम चाहते हैं कि अिस तरह से आन्दोलन पर टीका हो, चर्चायें चले और कुछ दोष-दर्शन भी हम चाहते हैं। वह सारा हमारे काम में मदद देगा। अिसलिअे हम अुनका अुपकार मानते हैं जिन्होने अिस आन्दोलन पर टीका की। अुस अनुभव को पाकर हमें कुछ सूझा है और जो सूझा है, वह में आपके सामने रखता हू।

समझने की जरूरत है कि अभी दुनिया का कुछ विचार-प्रवाह बदल रहा है। कुल दुनिया जिसमें हम भी हैं, अुसमें वह प्रवाह जोरो से बह रहा है और वे विचार के प्रवाह हमें प्रेरित कर रहे हैं। अभी अेक भाअी अिंग्लैंड से आये थे। अिस तरह बीच-बीच में परदेश के भाअी मिलने आते हैं। अुस भाअी ने हमें कहा कि भूदान आन्दोलन से हम कुछ लेना चाहते हैं और अिसमें से कुछ देखना भी चाहते हैं। अुन्होने कहा कि हम आशा रखते हैं कि हिन्दुस्तान दुनिया को शाति की राह दिखायेगा। हिन्दुस्तान भी दिखायेगा, लेकिन अिंग्लैण्ड भी दिखा सकता है। अुन्होंने पूछा कि अिस आशा के लिअे आपको क्या आधार है? तब हमने कहा कि हमें आधार मिला है, क्योंकि हिन्दुस्तान की मालकियत अिंग्लैण्ड मानता था और वह मालकियत अिंग्लैण्ड ने छोड दी, तो अुससे अिंग्लैण्ड की नैतिक शक्ति बढी है, अैसा हम मानते हैं और यह मालकियत छोडने का विचार ही वह है, जिसके आधार पर ग्रामदान का आन्दोलन चल रहा है। तो अुसका आरम्भ अिंग्लैण्ड ने किया है। बहुत लोग समझते हैं कि अिस आन्दोलन का आरभ १८ अप्रैल १९५१ को हुआ था। यह मालकियत विसर्जन का आरम्भ हैदराबाद स्टेट में हुआ था। परतु हम तो मानते हैं कि अिसका आरम्भ अिंग्लैण्ड ने १५ अगस्त १९४७ के दिन किया है और अुससे हमें स्फूर्ति मिली है। यह सुनकर अुस भाअी को बहुत आनंद हुआ और कुछ आश्चर्य भी हुआ कि हमारा स्फूर्तिस्थान अिंग्लैण्ड है। हमने यह भी कहा कि हम बहुत आशा रखते हैं कि अिंग्लैण्ड जैसा बलवान देश जो बहुत बडा साम्राज्य था और जिसकी सत्ता कुल पृथ्वी पर थी, अुस देश ने आखिर अुस सत्ता को छोड दिया। यह हिम्मत वह कर सकते हैं तो यह हिम्मत भी कर सकते हैं। अिंग्लैण्ड हिंसा-शक्ति का भी सन्यास ले सकता है। अिस तरह वहा अहिंसा का प्रयोग हो सकता है। हमने यह भी कहा कि लदन जैसा स्फूर्तिदायी शहर दूसरा कौनसा हो सकता है, जहा दुनिया भर के स्वातत्र्य-प्रेमी लोगो को आश्रय मिला है। मैझिनी को वहा आश्रय मिला है। डा सत्यतसेन वहा रहे थे। कार्ल-मार्क्स भी लदन में रहे हैं। गाधीजी भी वहा से प्रेरणा पाकर आये थे। दुनिया के स्वातत्र्य प्रेमी लोगो का स्फूर्तिस्थान लदन था यह मानना पडेगा। अिंग्लैण्ड से यह आशा में करता हू कि वह सामने आये और शाति का काम वहा अुठाये। यह सुनकर अुस भाई को बहुत ही आनद हुआ। यह कहानी मैंने आपको अिसलिअे सुनायी कि मेरे दिल में क्या चल रहा

है यह आप जानें । मैं अपने अिस काम को राष्ट्रीय आन्दोलन नही मानता हू, जागतिक आन्दोलन मानता हू । जागतिक पृष्ठभूमि में अुसका विचार मैं करता हू कि अिसमें कौन से कदम अुठाये जाय ? अुसके लिये हमें सही तरीके ढूढने होगे और यह हम तभी कर सकते है जब हम जागतिक परिस्थिति में अपने को रख सकेगे। अिसीलिओ "जय जगत्" का अुद्घोष हम करते हैं। सयुक्त कर्नाटक अब हो गया। एस् आर सी के बाद बहुत सकीर्ण मनोवृत्ति का दर्शन हिन्दुस्तान में हुआ था। वह कर्नाटक में भी हुआ। जब हम वहा पहुचे थे तब सयुक्त कर्नाटक हो चुका था। हमने वहा कहा था कि सयुक्त कर्नाटक सयुक्त विश्व बनाने के लिये कदम हो तो अुसका गौरव है। वहा के लोगो ने बहुत प्रेम से अिस विचार को माना। हमने यह कहा था कि सयुक्त कर्नाटक बनाया तो क्या हिन्दुस्तान से अलग होने के लिये ? नही, तो क्या सयुक्त विश्व बनाने के लिये ? अिस विचार का अुन लोगो को आकर्षण मालूम हुआ और वहा के बच्चे बच्चे ने "जय जगत्" की पुकार शुरू की। बच्चे बच्चे जय जगत् बोलने लगे। यहा राजस्थान में हम आये तो गाव गाव के लोग हमें अभिवादन करने के लिये "जय जगत्-जय जगत्" अैसा बोलते हैं। यह कोई छोटी बात नही है। दस ग्यारह साल में हम जय हिंद से जय जगत् तक पहुच गये हैं। यह अेक सकल्प दुनिया म काम कर रहा है जो कुल दुनिया को अेक करके ही रहेगा, और जिसमें राष्ट्र-राष्ट्र के भेद टूट जायेंगे। अिसके लिअे विज्ञान अनुकूल है और अुसका बल हमारे पीछे है। अिन दिनो जितना विज्ञान का बल मेरे पीछे महसूस करता हू अुतना अिसके पहले कभी नही किया था। परतु आत्मज्ञान का भी बल ग्रामदान और भूदान के पीछे है। तो अिस विचार के पीछे जितना विज्ञान का बल है अुतना ही वेदान्त का बल है। विज्ञान सकुचित मनोवृत्ति को नही रखने देगा। वह अिसके खिलाफ ही है। वह आवाहन कर रहा है कि हे मानव! तू या तो मिट, या तू अेक बन, व्यापक बन। दो के सिवाय तीसरी बात नही। वह कह रहा है कि हे मानव! तू अगर मिटना चाहता है तो मैं तुझे मिटा सकता हू और अगर व्यापक बनना चाहता है तो अुसमें भी मैं मदद दे सकता हू। अुसके लिये वातावरण तैयार है। जब हम अिस पर सोचेंगे, तब ध्यान में आयेगा कि हमें अपने को अेक बनाना चाहिये और व्यापक बनाना चाहिये। यह कैसे करना है तब हमें सूझेगा। यह विचार हमें अैसी कल्पना में ला रहा है जिससे अब हमें ध्यान में आयेगा कि हम समन्वय की भूमिका में काम करते रहे हैं। आस्ट्रेलिया से अेक भाअी हमें मिलने आये थे। अुन्होने पूछा था कि आस्ट्रेलिया के लिये भूदान का क्या सदेश है ? मैंने कहा कि चीन और जापान के लोगो को यह आवाहन करो कि भाअियो आप लोग हमारे देश में आअिये, हम आपका स्वागत करते हैं। यह भूमि आपका स्वागत करती है। यहा ज्यादा भूमि पडी है। अिसलिये आप यहा खुशी से आअिये। यही भूदान का विश्व-मानवता का सदेश है। भूदान विश्वमानव बनाना चाहता है। अब वे दिन लद गये जब हम अपने देश का अभिमान रखते थे और अुसी अभिमान में मस्त थे। "सारे जहा से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा।" क्यो ? क्योकि हमारा है। यह हमारा नही होता, तो सारे जहा से

अच्छा अुसको हमने नही कहा होता। यही हम जगह-जगह देखते है। हमने अेक राष्ट्रीय गीत पढा था, फ्रेंच में। फ्रेंच लोग अपने देश का गौरव, महिमा गाते हैं तो अुसमें अिग्लैण्ड, हिन्दुस्तान वगैरा दूसरे देशो की कमिया बताकर गाते हैं। "हमारे देश में अैसी अैसी कमिया नही है, जैसी अिग्लैण्ड में है, हिन्दुस्तान में है।" मै देखने लगा कि हिन्दुस्तान की कौनसी कमियां अुन्होने बताओी हैं जो फ्रान्स में नही हैं? अिस तरह अपने देश का गौरव दूसरे देशों को कुछ न्यूनताओ के साथ करने में लज्जत और शायद इज्जत भी मालूम होती थी। लेकिन आज तो अैसा नही हो सकता है। अपने देश का गौरव गाने में, दूसरे देश का अगौरव करने में आज न लज्जत है न अिज्जत। अपना यह सार्वराष्ट्रीय आन्दोलन है। अुसकी पृष्ठभूमि में हमें काम करना है।

हमें बहुत लोग पूछते हैं कओी छोटे-छोटे सवाल है, दुख है, अन्याय हैं, भूमि के क्षेत्र में बहुत अन्याय होते हैं। तो छोटे-छोटे सत्याग्रह भी क्यो नहीं चलने चाहियें? अैसी सूचना लोग हमें देते हैं तो अुनसे हम कहते हैं बापू के जमाने में जो सत्याग्रह हो गये अुसी का अगर अनुकरण अिस जमाने में करेगे, अुसीका अनुवर्तन, बाह्य अनुकरण करेंगे तो अैसा ही होगा जैसा राणा प्रताप का और शिवाजी का अनुकरण करके हम किले बनायेंगे। जिस जमाने में राणा ने जैसे किले बनाये वैसे बनाने से देश की रक्षा नही होगी। अुन दिनो किले देश की रक्षा कर सकते थे। अिन दिनो तो किले बनायेंगे तो बमवालो को बहुत आसान हो जायगा, अनुकूल हो जायेगा। अिसलिये हम स्थूल अनुकरण, स्थूल अनुवर्तन कैसे करे? किस तरह करे? लोग हमें कहते हैं-भाओी, गाधीजी तो बहुत पुराने जमाने में नहीं हुअे अुनका जमाना अभी पुराना नही हुआ है तो अितने में क्या बहुत फर्क पड गया? मै कहता हूं भाओी, हां अितने में बहुत बहुत फर्क पड गया है। अेक फर्क तो यह है कि वे परराज्य में काम करते थे और हम स्वराज्य में काम कर रहे हैं। दूसरा फर्क यह हुआ है कि वे अनियंत्रित सत्ता में काम करते थे और हम लोकशाही में काम कर रहे हैं। तीसरा फर्क जो मेरी दृष्टि से सबसे महत्व का फर्क है वह यह कि आज अणु-युग का अवतार हुआ है। ये बाते हम भूल नही सकते हैं। गाधीजी के जमाने मे वह अणु शुरू ही हुआ था, आज अुसका नया दर्शन हो रहा है। विज्ञान में जो शक्ति है, वह संहारक शक्ति है, रुद्र शक्ति है। वह रुद्रावतार हो सकता है और वह विष्णु का भी अवतार साबित हो सकता है। अब अेक विशाल शक्ति का अवतार हुआ है और हमें सोचना चाहिये कि लोकशाही में, स्वराज्य में और विज्ञान के जमाने में यह विचार गौण नही है। यह सब से महत्व का विचार है कि सत्याग्रह का विज्ञान के जमाने में रूप क्या होगा? मेरे भाअियो, यह हम सबको सोचना होगा। अगर हम सत्याग्रही नही है तो हम कुछ भी नही हैं। अगर हम कोओी हे तो सत्याग्रही ही हैं। याने हमारा और कोओी दावा ही नही हो सकता है। हमारे जो मार्गदर्शक थे, वे सत्याग्रह के गुरु नही थे तो और किस बात के थे? अुनके पीछे अुनके विचार के प्रचार की जिम्मेवारी आप और हम पर आयी है और अुनके पीछे वह जिम्मेवारी बढ गयी है। अिसका चिन्तन हम सबको करना होगा। हिंसा करनेवाले आज अेक जगह बैठकर कुल

दुनिया का सहार कर सकते हैं। अैसी शक्ति मनुष्य के हाथ में जहा आ गयी है, वहा मेरे सामने सवाल खडा होता है कि अब सत्याग्रह का स्वरूप क्या होगा? अगर मेरे सामनेवाला मनुष्य असत्याचरण कर रहा है, अुनके खिलाफ मैं खडा हू, तो मेरे चेहरे में वे करुणा देख सकते हैं। मेरी जबान में अगर कही माधुर्य सुन सकते हैं, मेरी चाल-चलन में अुनको प्यार का दर्शन होता है तो अुसमें परिवर्तन हो सकता है। परन्तु न वाणी में, न आख में, न चेहरे में, न मेरी चाल चलन में अुसे कुछ नही दीखता है, तो अुस सत्याग्रह का परिणाम क्या होगा? कोअी अैसी शक्ति सत्याग्रही के हाथ में चाहिये कि घर बैठे बैठे जैसे वे सहार कर सकते हैं, वैसे हम घर बैठे-बैठे सारी दुनिया का बचाव कर सकते हैं, यह खोज का विषय है। अैसी अन्दर से प्रेरणा मानव के हृदय में जिमने की, वह जिन हाथो से बम बनें, अुन्ही हाथो से अुनको समुद्र में डलवा देगा। मैं नही जानता कि समुद्र में बम डालने से क्या होता है या अुसका क्या करना पडता है। लेकिन जिन हाथो से वह पैदा हुआ है, वे ही हाथ अुसकी समाप्ति करे, अैसी प्ररणा अुनको हो, अिस तरह अुनके हृदय में प्रवेश करने की शक्ति हममें होनी चाहिये। अेक अमेरिकन भाअी मुझे अमेरिका के लिअे सदेश मागन आये थे। मैं तो अिस तरह कभी सदेश नही देता हू। मैंने कहा अमेरिका को सदेश देने की धृष्टता मैं नही करूगा, तो भी वे भाअी कहने लगे कि आप कुछ बताअिये। तो मैंने कहा कि आप लोग ये जो शस्त्रास्त्र बनाते है अिस तरह के शस्त्रास्त्र आपको खूब बनाने चाहिये। अुसमें कोअी कमी नही रखनी चाहिये क्योकि अुसमे अेम्प्लायमेन्ट का सवाल थोडा हल होगा अिसलिअे वह काम तो आपको खूब करना चाहिये। परतु आगे जब क्रिसमस का दिन आयेगा अुस दिन हिम्मत के साथ भगवान अीसामसीह का नाम लेकर वे सारे शस्त्रास्त्र समुद्र में डुबो दीजिये। नही तो आज क्या होता है! आपके शस्त्रास्त्र को रूस खत्म करता है और रूस के शस्त्रास्त्र को आप खत्म करते हैं। अिस तरह परस्परावलम्बन का काम क्यो करना चाहिय? तुम स्वावलम्बी बनो। अमेरिका के हवाअी जहाज अमेरिका डुबायेगा, रूस के हवाअी जहाज और दूसरे अस्त्र रूस खत्म करेगा। अिसकी क्या जरूरत है कि मेरे हवाअी जहाज वे तोडें और अुनके मैं तोडू? अैसा मैंने अुस भाअी को कह दिया।

हमें गणपति की कहानी याद है। बचपन में हमारे दादा गणपति अुत्सव करते थे। तो हम चदन घिस घिस कर अपने हाथो से गणपति की मूर्ति बनाते थ, अुसकी पूजा करते थे और हमें अुसमें बडा सतोष मालूम होता था। १३-१४ दिन अुसकी पूजा और आरती वगैरह होती थी और आखिर अुस गणपति का तालाब म या कुअें में विसर्जन करना पडता था। हमें अितना दु ख होता था क्योकि हमारे हाथो से ही गणपति बना हुआ था, हमारे हाथो चदन घिसा हुआ था और हमारे दादा अुस सुदर मूर्ति की पूजा करते थे, आरती करते थे और अेक सद्भावना हमारे मन में पैदा होती थी और आखिर आज गणेशजी को डुबोने का दिन आता था, तो हमें दु ख होता था। आवाहन के बाद विसर्जन अपने ही हाथो से करना पडता था। अुसका अर्थ यही है कि आपने अुसे भगवान के तौर पर बनाया, याने भगवान को बनानवाले हम हैं। यही हमारा शास्त्र कहता है कि भगवान

को बनानेवाले तुम हो। अिसलिअे सबसे श्रेष्ठ देवता मानव है। अिस तरह हमारे गणेश की पूजा की प्रक्रिया हमारे पूर्वजों ने हमें दिखाअी है। तुम पूजा तो करो, पर तुम यह पहचानो, कि तुमने अिसको बनाया है और अिसकी प्राण-प्रतिष्ठा करनेवाले तुम हो। तुम्हारी ताकत से भगवान बना है। ऋग्वेद में यह मंत्र आता है। "अय मे हस्तो भगवान्, अय मे भगवत्तर" मैं भगवान हू और भगवान से भी श्रेष्ठ हू। अिससे बेहतर मन्त्र और कौन-सा हो सकता है? यहा ऋषि कहता है कि मैं भगवान हू और दूसरे वाक्य में कहता है कि "भगवत्तर" याने भगवान से श्रेष्ठ हूँ। आखिर भगवान अव्यक्त है और हम व्यक्त है। हमारे हाथो से जो सेवा होगी वह व्यक्त होगी और अुस सेवा के कारण अुसका गौरव होगा। अुस पूजा से भगवान का वैभव बढ गया है। यह समझाने के लिअे हमारे पूर्वजो ने गणपति विसर्जन की प्रक्रिया हमें सिखायी है। यह प्रक्रिया आवाहन की प्रक्रिया है। अुसमें आवाहन के बाद विसर्जन किया है। तो हमने अुन अमेरिकन भाअी को समझाया कि क्रिसमस के दिन कुछ अपने-अपने शस्त्रास्त्र डुबो दीजिये। यही हमारा सदेश है।

हम कहना चाहते थे कि अिस आन्दोलन का केवल अेक राष्ट्रीय भूमिका पर मत मानो। जागतिक भूमिका अिसके पीछे है, अैसा माना तो अुत्साह आयेगा। मेरी समझ में नहीं आता है कि कौनसी ताकत मुझ में है। लोग मुझे कहते हैं कि आप तो बहुत काम करते हैं तो मैं अुनको कहता हूँ कि मैं आकाश खाता हूँ। आठ साल से मेरा खाना बन्द रहा है। मेरा आकाश-सेवन चल रहा है। अुससे मुझे ताकत मिलती है। अिसलिअे मरने के समय के पहले मैं कभी मरूगा नही। लेकिन मुझे तो भास ही नही होता है कि मैं कुछ काम कर रहा हू। अेक बहुत बडी ताकत, अेक बहुत बडा विचार मुझे घुमा रहा है, मैं खुद नही घूम रहा हू। आखिर हम और आप कौन है? बिलकुल नाचीज है। हमारी कोअी हस्ती नही है। तमिलनाड में मैं घूम रहा था। माणिक्यवाचकर के भजन मैं गाता था। माणिक्यवाचकर के भजन का अेक वचन मुझे याद है।

'नान यारु? यार अरिवार् एन्नै

तमिलनाड का सर्व श्रेष्ठ महाकवि माणिक्यवाचकर है, वह कह रहा है, 'मैं कौन हू, मुझे कौन जानता है? मुझे कोअी नही जानता है।' यह भजन मैंने पढा, तो मुझे लगा कि यह मुझे लागू हो सकता है। मुझे अिस दुनिया में कौन जानता है? मैं कौन हू? मैं बिलकुल नाचीज हू और आप भी कौन है? जिन्होंने अितना काम किया है, अत्यन्त अुपेक्षित लोग अगर कोअी हों, तो यह आप लोग है। नवबाबू की बात ही लीजिये दो साल लगातार झगडा कर करके अुन्होंने मुक्ति पायी है। अिस आन्दोलन में वे कूद पडे। मैं अुनकी तारीफ तो क्या करू? अिसके पहले भी कअी बार मुझे मिलने का मौका आता था, लेकिन अेक शब्द से भी मैंने अुनको यह कभी नहीं सुझाया कि आप यह काम कीजिये। व्यक्तिगत मतभेद के बारे में सुझाने का मेरा स्वभाव ही नहीं है। लेकिन अुनके दिल मे आग थी, अिसलिये अुन्होंने यह पद छोडा। अब अुनकी तारीफ मैं करू तो अुसमें शोभा नहीं है, अिसलिये मैं चुप रहा। अेक बार हुआ था सात-आठ महीने हुअे मुझे टीब

याद नही है परतु अुनके त्याग की अितनी अुपक्षा हुअी थी कि अितनी गनीमत समझो कि अुन्हाने मूर्खता की," अैसा किसी ने नही कहा। अुन्होंने बहुत बडा त्याग किया था, परतु अुसे कोअी त्याग समझकर वह काम अुन्होन नही किया। अुसमें अुनको आनंद महसूस हुआ। और यह आनद का काम है, या समझकर अुन्होंने यह निर्णय लिया, परतु मुझसे रहा नही गया और अेक सभा में मेन कहा— माणिक्यवाचकर भो अेक राज्य के मुख्यमत्री थे और अुन्होंने अुस राज्य के प्रधान मत्री-पद का *त्याग किया था। यह बात* मशहूर है। अुसका जिक्र मैंने अुस दिन अुनके गाव म अुस सभा में किया और मैंने कहा कि अैसा ही भगवान बुद्ध न किया था अैसा ही काम माणिक्यवाचकर ने किया था और अैसा ही काम नवद्याबू न किया। अैसा अेक वाक्य मुझ जोडना पडा, अत्यन्त लाचारी से, क्योंकि अुनके त्याग की अितनी अुपेक्षा हुअी, जो मुझसे सहन नही हुअी। यह तो नवद्याबू की बात हुअी। अेक हमारी लडकी अच्छी पढी लिखी है। पहले प्रोफेसर थी। वह छोड कर मेरे पास आयी। सात-आठ साल से मेरे साथ घूम रही है और काम कर रही है। कुछ ग्रन्थ भी अुसन लिखे हैं। अेक रचनात्मक कार्यकर्ता, गाधीवादी, बुजुर्ग अुसे सलाह दे रहे हैं कि अरी लडकी, तू *यह क्या कर रही है? तू तो अभी जवान है।* विनोबा बूढा हो गया है। अभी तो तेरी जवानी का काल चल रहा है, तू जरा सोच। आगे चलकर कमजोर हो जाओगी, अिसलिये तुम जरा जीवन स्थिर कर लो। अैसी सलाह वे अुसे देते हैं। अितनी अुपेक्षा, हद दर्जे की। अैसी हालत में भी आप लोगो ने काम किया है। मैं जानता हू कि भगवान काम चला रहा है। भगवान को ही कृपा है और अिसलिये यश-अपयश की तुलना आप मत कीजिये। कुछ लोग कहते थे कि आपन अितना काम किया है, अितने ग्रामदान प्राप्त किये हैं, लेकिन अुसके आगे का काम करने में आप फेल हो गये। मैंने कहा, मेरे फेल होन स आप पास होते हैं तो मैं पचास दफा फेल होन के लिये तैयार हू। मुझ बडी खुशी होगी। मेरे फेल होने से आप पास होते हैं और यह बोलने में आपको अिज्जत मालूम होती है क्या? क्या अिसमें आपकी शोभा है? क्या यह मेरे घर की लडकी की शादी थी? अिस तरह मैं जब गर्जना करता हू, सिंह-गर्जना, तो वे मेरे सामन नही टिकते हैं। मेरा *अैसा दर्शन होता है, मेरी गर्जना सुनते* हैं तो चुप हो जाते हैं। तो क्या अिसमें तुम्हारी अिज्जत है, अैसा सवाल मैं अुनको पूछता हूँ।

कल की बात है। अिस भूदान में चालीस लाख अेकड जमीन मिली है और आठ लाख से ज्यादा बटी है, अुसमें अच्छी फसल पैदा होती है। बाकी जमीन बाटना बाकी है। अुसमें मदद की जरूरत है। बहुत मेहनत का काम है, और लोग अुसे कर रहे हैं। अुसमें कुछ अैसी भी जमीन है जिसपर रिक्लेम करना पडगा। अुसके लिये कुछ पैसा सरकार न मजूर किया है। जयप्रकाश *जी ने मुझे कहा, बिहार के मत्री* कहते थे कि जो थोडा-सा पैसा अिसमें आप लगाते हैं अुसके आधार से अुत्तम फसल पैदा हो सकती है। वे मत्री कहते थे कि बिहार में अितनी जमीन में अितनी फसल लान के लिये हमें हजारो रुपये खर्च करने पडते हैं, लेकिन अितने कम खर्च में यहा कितनी अच्छी फसल हो रही है। लेकिन

अिसके वाद भी अितनी कजूसी से अुन्होने पैसा मजूर किया-तीस लाख रुपया। जहा आर्मी के लिये तीन सौ करोड रूपया खर्च होता है और केवल डर से। और वे हमें कहते हैं कि तुम्हारी बेसिक अेजुकेशन कितनी महगी है, अिसलिअे अुसमें जरा खर्च कम करो, अुसका मूल्य बडा है। हम कहते हैं कि अच्छी तालीम सस्ती होनी चाहिअे यह आपको किसने कहा ? आपकी आर्मी के खर्च को जरा कम करो। अच्छी तालीम महगी जरूर होनी चाहिअे यह खूब घ्यान में रखो। कुबेर का दर्शन भिखारी को हुआ, तो भिखारी ने तरकारी के लिअे चार पैसे मागे। और कुबेर ने अुसको दो पैसे दिये। वाह रे कुबेर। मागा कितना और दिया कितना। कअी लाख अेकड जमीन अभी पडी है। अुसमें भी मागनेवालो ने बहुत जोर लगा कर कुछ लाख रुपये ही मागे। मैंने कहा कि गलती तुम्हारी ही है। तुम जरा करोड मागते तो क्या जाता ?

मैं कहना यह चाहता हू कि अिस आदोलन को तराजू में डालकर नापना नही है। हमें यह नही देखना है कि हमने कितने ग्रामदान प्राप्त किये हैं, कितनी जमीन प्राप्त की है। हमें जागतिक दृष्टि से सोचना है। तब सत्याग्रह की बात आप अिस तरह नही करेंगे। विज्ञान युग में छोटे सत्याग्रह नही होते हैं। सत्य तो बडा ही होना है। जो सबका घ्यान खीच सकता है, सबका घ्यान खीचने की प्रेक्टिस हमें करनी चाहिअे। तो भाअियो, सत्याग्रह का शास्त्र विकसित करने की जिम्मेवारी आप पर और हम पर विज्ञान युग ने डाली है। अिसलिअे हमें सोचना चाहिअे और हमें अैसी युक्ति की खोज करनी चाहिअे जिससे कि सामनेवाला अपने अन्दर देखेगा और अुसके हृदय में धर्मक्षेत्र, कुरुक्षेत्र शुरू होगा। लडाअी का क्षेत्र शुरू होगा। मै कहता हू कि सत्याग्रह की लडाअी सामनेवाले के हृदयक्षेत्र में होनी चाहिअे। अुस को अन्दर यह महसूस होना चाहिअे कि मैं गलती कर रहा हू, निरी गलती कर रहा हू।

बडी मशहूर कहानी है-सेट पाल की, जिसने अीसाअी धर्म को खूब फैलाया। वह पहले कोअी महापडित था और क्रिश्चियनिटी के विरोध में था। पर अीसा के शिष्य तो बिलकुल सीधे-सादे थे। कोअी मच्छीमार था, कोअी बुनकर था। मच्छीमार को क्राअिस्ट ने कहा था "मेरे पीछे तुम आओ, मच्छीमार नही लेकिन मैं तुम्हे मनुष्यमार बनाअुगा।" तो वह अपना जाल छोडके क्राअिस्ट के पीछे गये। अेक के बाद अेक मारे जाते थे, सताये जाते थे, और यह पाल अुनको बहुत सताता था। अेक दिन क्राअिस्ट के अनुयायी कही जा रहे थे और अुनको पाल सतानेवाला था। पर अुसके पहले दिन की रात में पाल को नीद नही आयी। सपने में भगवान आये और बोले "मुझे क्यो सताते हो"। अुसने पूछा "तुझको मैं नही सता रहा हू, मैं तुझको कब सता रहा हू"। तब भगवान् बोले, "तू मेरे लडके को सताता है, तो मुझे ही सताता है।" यह वाक्य अुसने सुना और दूसरे दिन अुसका परिवर्तन हुआ और वह सेन्ट पाल बना। क्राअिस्ट का अुत्तम, सब से श्रेष्ठ शिष्य बना और अिसके दिलमें भगवान का प्रवेश हुआ। अिस तरह सामनेवाले के हृदय में ही हमारा प्रवेश होना चाहिये। मनु ने कहा है, "हे मेरे प्यारे भाईयो, तुम्हारी असफलताओ से तुम अपने को अपमानित मत करो।" मैं आपसे कहना चाहता हू कि हमें जो असफलता मिली है वह अत्यन्त अुज्जवल है

(शेषांश पृष्ठ २६३ पर)

हमारी शिक्षण यात्रा

प्रिय नअी तालीम परिवार,

मैंने पिछले पत्र में आपसे निवेदन किया था कि हम अपनी शिक्षण यात्रा पूरी करके सेवाग्राम लौटे हैं और धीरे-धीरे हमारा अनुभव आपके साथ बाट लेगे ।

हमारी शिक्षण यात्रा पहली सितम्बर १९५८ से शुरू हुअी । वैसे तो हम जुलाअी महीने में ही यूरोप पहुचे थे । लेकिन जुलाअी और अगस्त के महीने यूरोप में ग्रीष्म ऋतु के दिन माने जाते हैं । और सारा यूरोप अिन्हे छुट्टी के रूप में मनाता है । स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय, बालवाडिया सब बद हो जाती हैं, विद्यार्थी-विद्यार्थिनी, अध्यापक-अध्यापिकायें, दफ्तरो और कारखानो में काम करने वाले स्त्री-पुरुष, बच्चे, यहा तक कि राजा, रानी, राष्ट्रपति, मत्रीमडल और लोक सभा, धारा-सभाओं के सदस्य कर्तव्य के तौर पर गर्मी की छुट्टी मनाने निकल पडते हैं । कोअी पदयात्रा करते हैं, तो कोअी नावो में, मोटरो में, या यान-वाहनो से घूमने निकलते हैं । कोअी छुट्टी मनाने के लिअे दुर्गम पर्वतो के शिखरो पर चढते हैं, कोअी वैज्ञानिक और सास्कृतिक अनुसधान के लिअे निकल पडते हैं और कोअी सिर्फ ग्रीष्म ऋतु की सुनहली धूप के आनद का अुपभोग करने के लिअे दक्षिण की ओर यात्रा करते हैं । क्रियाशील प्रवृत्तिशील पाश्चात्य समाज में छुट्टी मनाना भी अेक प्रबल प्रवृत्ति ही है ।

सच कहे तो ग्रीष्म ऋतु यूरोप में प्रकृति का अेक आनदोत्सव ही है । हमारे देश में जब हम ग्रीष्म ऋतु, अिस शब्द का अुच्चारण करते हैं या गर्मी के दिनो के बारे में सोचते हैं तो हमारी कल्पना दृष्टि के सामने प्रकृति का अेक रूक्ष कठोर चित्र खडा होता है । प्यासी और तपी हुअी धरती के अूपर तपे हुअे आकाश से अग्नि का वर्षण हो रहा है । प्रचण्ड ग्रीष्म से त्रस्त शान्त मानव, पशु पक्षी छाया का आश्रय

(पृष्ठ २६२ का शेषाश)

और अगर नही मिली है, तो अुज्जल हैं ही । अिसलिअे हम अपन को कभी अपमानित न करे, यह मैं आपसे कहना चाहता हू । यह समझें कि हमारा काम हम नही कर रहे हैं । हम नाचीज हैं । वह हमें चला रहा है, हिला रहा है, बुला रहा है, घुमा रहा है । अैसी भावना लेकर हम काम करेग तो हम आपको यकीन दिलाना चाहते हैं कि यह जमात हमीर बनेगी । दुनिया के मास को परिवर्तित करेगी अिसमें कोअी सदेह नही है । यह शक्ति हमारी नही है, भगवान हमसे यह काम करा रहा है । हमारी कोअी हस्ती नही है, लेकिन यह अुसकी लीला है, वह नाचीज और कमजोर औजारो से काम कराना चाहता है । अैसी भावना, अैसा विश्वास लेकर आप काम कीजिये, परीक्षण कीजिये, निरीक्षण खूब कीजिये । आप गलतिया सुधारे और यह ध्यान में रखिय कि बावजूद अिन सब गलतियो के अेक पवित्र हाथ, भगवान का हाथ हमारे सिर पर है । अुसने वह रखा है, यह श्रद्धा आप रखियेगा ।

ढूंढ रहे हैं। हमारे देश में ग्रीष्म ऋतु में भगवान का रुद्ररूप प्रगट होता है।

लेकिन पश्चिम की ग्रीष्म ऋतु में भगवान की प्रसन्न मूर्ति दीखती है। आकाश अुज्वल, नील, श्यामला धरती, अुसके अूपर रंग-बिरंगे फूलो का आलिंपन और सुनहली धूप। सारी पृथ्वी जैसे हंस अुठती है। ठंड और अंधेरे के कारागार से छुटकारा पाकर स्त्री-पुरुष सृष्टि के अिस सुंदर रूप को देखने के लिअे पागल होकर निकल पडते हैं। अिसलिअे गर्मी के दिनो की छुट्टी पश्चिमी दुनिया का अितना बडा आनंदोत्सव है।

अिन दिनो में स्कूल-कालेज आदि शिक्षण संस्थायें तो बंद रहती हैं, लेकिन शैक्षणिक प्रवास, शिक्षण-शिविर वगैरा प्रवृत्तियो के द्वारा शिक्षण का काम चलता ही रहता है। कुछ देशो में, खासकर साम्यवादी देशो में, शिक्षा विभाग अपने ही खर्चे से स्कूल के बालक-बालिकाओ को शैक्षणिक प्रवासो के लिअे भेजते हैं। ये देश राष्ट्र के बच्चो को शैक्षणिक प्रवास के लिअे भेजना, शिक्षा के कार्यक्रम का अेक आवश्यक अंग मानते हैं और अिसके लिअे खर्चा करना अपना कर्तव्य समझते हैं। जिन देशो में शिक्षा का संपूर्ण राष्ट्रीकरण नही हुआ है वहा भी माता-पिताओं की ओर से, शिक्षण-संस्थाओं की ओर से और समाज-सेवा की संस्थाओ की ओर से अधिक-से-अधिक विद्यार्थियो को शैक्षणिक प्रवासो का लाभ मिले, अिसलिअे गर्मी की छुट्टियो में शैक्षणिक प्रवासो का अेक व्यवस्थित यूरोप-व्यापी कार्यक्रम चलता है।

शैक्षणिक प्रवासो के अलावा बडे विद्यार्थी और अध्यापको के लिअे विविध प्रकार के सम्मेलन, शिक्षा शिविर और ज्ञानगोष्ठियो (सेमिनार) का आयोजन किया जाता है। अिन सम्मेलनो और शिविरो में राजनैतिक, वैज्ञानिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक हर प्रकार की समस्याओ पर चर्चा-विचार होते हैं। पिछले वर्षों में तरुण समाज में श्रम शिविरो (वर्क केम्प) का संगठन बढता जा रहा है और यह अेक शुभ लक्षण है। पहले विश्वयुद्ध के बाद स्विट्झरलैण्ड के अेक शांतिवादी अिंजिनीयर ने विश्वशान्ति के लिये श्रम शिविरो का आंदोलन शुरू किया था। अिस आन्दोलन की बुनियाद में यह विश्वास रहा कि युद्ध के परिणाम स्वरूप या दंगा आदि हिंसात्मक कार्यक्रम के परिणाम स्वरूप जो ध्वंस होता है अिन्ही स्थानो में विभिन्न राष्ट्रो के तरुण-तरुणी अगर अपने सम्मिलित शरीर श्रम के द्वारा पुनर्निर्माण कार्य करें तो यह विश्वशान्ति की ओर तैयारी का अेक कार्यक्रम बन सकता है। धीरे-धीरे श्रम शिविरो का कार्यक्रम बढता गया। और दुनिया के सब शिक्षा-शास्त्री, समाज सेवक और शान्ति प्रेमियो ने अिसका स्वागत किया। आज श्रम-शिविरो का संगठन करने के लिअे बहुत-सी संस्थायें स्थापित की गयी हैं। और युनेस्को (अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा-विज्ञान-संस्कृति संघ) का श्रम शिविर विभाग सारी दुनिया में श्रम शिविरो के संगठन में सहायता करता है। अिस प्रकार तरुण-तरुणियो के लिअे श्रम शिविरो में भाग लेना भी छुट्टी का अेक कार्यक्रम रहता है।

हम भी विद्यार्थी की हैसियत से ही यूरोप गये थे। अिसलिअे छुट्टी के शैक्षणिक कार्यक्रम में भी हमने यथासंभव भाग लिया। पुराने मित्रो से मिले। और प्रत्यक्ष अनुभव से और

आपसी बातचीत से वर्तमान यूरोप की समस्याओं को समझने का प्रयत्न भी किया। क्योंकि यूरोप की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक समस्याओं को समझे बिना शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन वास्तविक नहीं होता।

अिस बार हमारी शैक्षणिक यात्रा का मुख्य अुद्देश्य रहा साम्यवादी राष्ट्रों में और खास करके सोवियत संघ के राष्ट्रों में नन्हे बच्चों के पोषण और शिक्षण से लेकर विश्व-विद्यालय तक की पूरी शिक्षा-व्यवस्था और शिक्षा-पद्धति का निरीक्षण और अध्ययन करना। सन् १९३० में श्री आर्यनायकमृजी विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकूर के साथ रूस गये थे और अुस समय अुन्होंने साम्यवादी शिक्षा पद्धति का पहला अध्ययन किया था। अिस भूमिका को लेकर वे यह भी समझना चाहते थे कि पिछले २९ वर्षों में सोवियत संघ में शिक्षा के क्षेत्र में किस हद तक और किस दिशामें प्रगति हुअी।

लेकिन साम्यवादी शिक्षा का अध्ययन हमने सोवियत संघसे प्रारम्भ किया। वर्तमान दुनिया में सबसे नया साम्यवादी राष्ट्र है पूर्वी जर्मनी जिसका नाम जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक रखा गया है। अिसी नवीनतम साम्यवादी राष्ट्र में हमने साम्यवादी शिक्षा का अध्ययन शुरू किया और जेकोस्लावेकिया में अिस बार के लिअे अुसे समाप्त किया।

अिस अध्ययन का कार्यक्रम शुरू करने के पहले शान्ति से पूर्व तैयारी के लिअे बेल्जियम के अेक छोटे-से गाव में हमारी अेक शान्तिवादी बेल्जियम बहन के पास हम गये थे। यह बहन बेल्जियम की अेक प्राचीन अभिजात वंश की है। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय अुनका घर जर्मन सेना के अधिकार में था। अिस प्रकार अुनको हिंसा का व्यक्तिगत अनुभव मिला था। युद्ध के बाद जब से अुनके पति की मृत्यु हुअी तब से वे विकराल विश्व-परिस्थिति के समाधान के लिअे अेक शांतिमय मार्ग ढूढ रही थी। बहन भक्तिमती रोमन केथलिक है, अिसलिअे सब से पहले, अपने गाव में श्रमदान द्वारा अेक गिर्जा बनाने का काम अुन्होंने हाथ में लिया। वर्तमान यूरोप की जनता आज धार्मिक जीवन के बारे में अुदासीन है और गिर्जाघर दूर होने के कारण अुनके गाव के अधिवासियों ने गिर्जा जाना करीब करीब छोड ही दिया था। अिस गिर्जाघर के निर्माण के सिलसिले में श्रम शिविर आंदोलन के साथ अुनका संपर्क स्थापित हुआ और अन्तर्राष्ट्रीय श्रम शिविर सम्मेलन के अवसर पर यूरोपीय प्रतिनिधि की हैसियत से वह भारत आयी थी। अपनी भारत यात्रा में अुन्होंने कअी श्रम शिविरों में भाग लिया, सेवाग्राम आयी और विनोबाजी के साथ भी पदयात्रा में रही। अिस प्रकार सर्वोदय के विचार और कार्यक्रम के साथ अुनका परिचय हुआ, श्रद्धा अुत्पन्न हुअी और वह अंतर्राष्ट्रीय सर्वोदय परिवार की अेक बहन बन गयी।

जब हम अुनके घर पहुचे तब भारत सेवक समाज के चार कार्यकर्ता श्रमशिविरों का अध्ययन करने के लिअे यूरोप आये हुअे थे और अुनके घर ठहरे थे। अुनका घर अुस समय अेक प्रकार का सर्वोदय शिविर ही बना रहा। हम अुनका नाम और पता नीचे देते हैं। कोअी भी सर्वोदय कार्यकर्ता यूरोप जाने पर अिस बहन के घर में जायें तो सप्रेम आतिथ्य मिलेगा।

श्रीमती दी कक
गाव-मेरेलवेके
वाया गें-(Via gand)
बेलजियम (Belgium)

अगस्त के अंत में देहाती यूरोप की शोभा अनिर्वचनीय सुन्दर होती है। हरे-भरे खेतो के अूपर सूर्य भगवान् की प्रसन्न अुज्वल किरणें जैसे कि प्रसाद-वर्षण करती हैं। किसान परिवारो के स्त्री-पुरुष बच्चे और घोडे दिनभर खेतो में काम करते हैं। हम जब बेल्जियम में थे अुस समय ब्रसेल्स नगरी मे अतर्राष्ट्रीय प्रदर्शिनी चल रही थी। ब्रसेल्स नगरी में देश-विदेशो के यात्रियों की भीड थी, लेकिन बेल्जियम के गावो में वह आलू निकालने का मौसिम था। घुटने टेककर स्त्री पुरुष मिट्टी खोदकर हाथो से आलू निकाल रहे थे। असा प्रतीत होता था कि बेल्जियम के गावो के स्त्री पुरुष अपने खेतो की भूमि पर प्रार्थना कर रहे हैं।

बहन के घर के चारो ओर पुराने सायेदार अूंचे-अूंचे वृक्षों का अेक गहन वन था। अिस वन के आगे गाव, गाव के घर, गाव के खेत, गाव का गिर्जा और गाव की शाला। गाव के आगे प्राचीन नगरी Gand या Ghant-गेंट नगरी में टूरिस्टो की भीड थी। लेकिन गाव तक अुसका असर नही पहुचता था।

अिस शातिमय परिवेश में अेक सप्ताह बिताकर पहली सितबर को हम बर्लिन के लिअे रवाना हुअे। बहुत दिनो की बात नही है कि अैश्वर्य के प्रताप में व्यापार और अुद्योग के क्षेत्र में, कला, ज्ञान और विज्ञान में बर्लिन का स्थान यूरोप में ही नही सारी दुनिया मे बहुत अूचा था। देश विदेश के लोग बर्लिन का अैश्वर्य देखने आते थे। यूरोप के पिछले बीस बरसो के अितिहास के परिणाम-स्वरूप आज बर्लिन में युद्धोत्तर यूरोप की सब समस्याओ का, सब दु खो का अेकत्र-दर्शन मिलता है। आज बर्लिन अतर्राष्ट्रीय राजनैतिक समस्याओ की मुख्य रगभूमि है।

पिछले विश्वयुद्ध में प्रस्फोट वर्षण से बर्लिन नगरी करीब करीब खतम हो चुकी थी। पिछले चौदह वर्षो में थोडा बहुत पुनर्निर्माण का काम हुआ है। पश्चिमी बर्लिन फिर से अेक आधुनिक समृद्धिशाली यूरोपीय नगर का रूप ले रहा है। लेकिन पूर्वी और पश्चिमी दोनो बर्लिनो के बहुत-से हिस्से अभी खडहर के रूप में ही खडे हैं। हम जब रात को बर्लिन पहुचे अिन्ही खडहरो के अूपर रात्रि की छाया अुतर रही थी। पूर्वी बर्लिन के जनशून्य रास्तो में और अधकार-विषादाच्छन्न खडहरो में वर्तमान यूरोपीय समाज का जो दर्शन मिला अुसी की पटभूमिका मे हमने साम्यवादी यूरोप की शिक्षा-व्यवस्था का अध्ययन शुरू किया।

सेवाग्राम
२०-३-५९

—आशादेवी

सर्वोदय आन्दोलन तथा युवसमाज

मनमोहन चौधरी

सर्वोदय की क्रांति के लिअे भारत की युवकशक्ति जुट पडने पर ही वह सफल हो सकेगी। अिसमें विद्यार्थी वर्ग का महत्व विशेष है क्योंकि अुन्ही में से ही भविष्य के निर्माता तैयार होंगे।

आज वास्तव में सर्वोदय आन्दोलन के साथ विद्यार्थी समाज का सबध बहुत ही कम है। अितना ही नही किसी प्रकार की सेवा या समाज-सुधार के काम में अुसका सपर्क कम होता जा रहा है। अुल्टे आज विद्यार्थी समाज अनुशासन-हीन बनता जा रहा है। अैसा आक्षेप हम चारो ओर से सुनते हैं, तथा देखते भी हैं कि जगह जगह पर विद्यार्थियो की हलचलो को काबू में रखने के लिअे पुलिस का अुपयोग किया जा रहा है।

सिर्फ शहर में नही गावो में भी मैंने कअी कार्यकर्ताओ से सुना है कि नवयुवक भूदान ग्रामदान आदि के कार्यक्रम में रस नही लेते हैं। अिसलिअे युवक समाज को अपनी ओर आकर्षित करने के लिअे तथा क्रांति के काम में अुनकी शक्ति के अुपयोग के लिअे विशेष प्रयत्न करना पडगा। हम नये कार्यकर्ताओ की प्राप्ति के लिअे कोशिश करते है तथा हमें अिक्के दुक्के कार्यकर्ता मिल भी जाते हैं। अब विनोबाजी ने अेक लाख शाति सैनिको की माग की है। हमें अितनी भारी तादाद में सेवक प्राप्त करने के लिअे कही अधिक सख्या में विद्यार्थियो तथा युवको के सपर्क में आना होगा। अगर हम करोडो की तादाद में विद्यार्थियो तथा ग्रामीण युवको में सर्वोदय के लिअे सिर्फ आकर्षण ही नही बल्कि अुत्साह पैदा कर सकेंगे तभी हमको लाख की तादाद में सेवक मिलेंगे।

अिसके लिअे हमें जरा बुनियाद में जाकर सोचना होगा। हर नयी पीढी के विचार पुरानी पीढी से अलग होते हैं। भारत में अेक दूसरा वैचारिक भेद भी है। भारत का समाज परपरा को माननेवाला हो गया था। नयी पीढी पुरानी पीढी के ही विचार को बिना सोचे समझे मान लेने की आदी बन गयी थी। लेकिन जब से हमारा पश्चिम के साथ सबध हुआ तब से व्यक्ति स्वातत्र्य के नये विचार देश में आये और पुराने प्रचलित विचार तथा नये विचारो में भेद जोरो से शुरू हुआ।

आज भारत में सिर्फ विचार के स्वाभाविक विकास का भेद नही, बल्कि दो सास्कृतिक भूमिकाओ का ही भेद चल रहा है। पुरानी पीढी गावो की पुरानी सस्कृति, गीता, रामायण आदि की बुनियाद पर रची हुअी है। तथा स्कूल कालेज के विद्यार्थी जो तालीम पाते हैं, अुसकी बुनियाद पश्चिम के विचारो पर है और जिसमें विज्ञान का दृष्टिकोण अधिक से अधिक महत्व का स्थान ग्रहण कर रहा है। आचार के भेद भी अिसके कारण पैदा हुअे हैं।

पिछले दिनो हमने राष्ट्रीयता के नाम से अिस पाश्चात्य विदेशी सस्कृति का विरोध किया था, और हमने अपनी क्राति को देश की सस्कृति की बुनियाद पर खडा करने की कोशिश की। यद्यपि गाधीजी भारत के सबसे ज्यादा पाश्चात्य

सम्यता को समझने वाले अैसे मनुष्यो मे से थे जिन्होने पश्चिम के सारे अच्छे विचारो को आधुनिक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाया था, फिर भी अुन्होन अपने विचारो को भारतीय परपरा का जामा पहनाया। यहा तक कि गाधी-विचार पश्चिम में पनपनेवाले वैज्ञानिक विचार का व सारी पाश्चत्य सस्कृति का विरोधी था, अैसा भास होने लगा। अुस समय गाधीजी के सामने अिसके लिअे अेक परिस्थिति का तकाजा भी था। शिक्षित वर्ग मे तथा जनता की सामाजिक भूमिका में भेद अितना गहरा और जबरदस्त था कि दोनो की समझ में आ सके अैसी सामान्य भाषा का अुपयोग असभव था। अगर 'रामराज्य' शब्द शिक्षित वर्ग को रुचता नही था तो 'लोकतत्र और समाजवाद' जैसी भाषा जनता की समझ के बाहर की थी। तिसपर भी गाधीजी ने जनता की ओर ही देखा और अुसकी भाषा का अुपयोग किया। मगर आज अिस खाअी को पाटने का समय तथा कर्तव्य हमारे सामने आ खडे हुअे हैं

आज भारत के शिक्षित वर्ग सर्वोदय विचार को बहुत ही साधु, अच्छा, पवित्र, त्याग पूर्ण मानने के साथ साथ अव्यवहार्य और आज को दुनिया में न चलनेवाला मानते हैं। अुनमे अुसके लिअे कुछ सहानुभूति तो पैदा होती है लेकिन अुत्साह पैदा नहीं होता।

सर्वोदय विचार मूलत भारतीय है और अुसका जन्म भारतीय राष्ट्रीय सग्राम की कोख में से हुआ है। अुसको भारतीय राष्ट्रीयता का रग लगा हुआ है। अुसकी भारतीय विशेषता पर हम फख्र भी करते हैं। किंतु हमें आगे चलकर अुसे अतर्राष्ट्रीय भूमिका पर खडा करना है तभी हम अिन शिक्षितों के दिमाग को छू सकेंगे। विनोबाजी विज्ञान पर, अतर्राष्ट्रीय सस्कृति पर काफी अरसे से जोर देते आ रहे हैं। लेकिन अुनके अिन विचारो को शिक्षित वर्ग के पास पहुँचाने का काम हमें जितना करना चाहिये था अुतना हम नही कर पाये हैं। वैज्ञानिक विचार की भूमिका भी सामनय कार्यकर्त्ता को समझाने का काम कम हुआ है।

अेक तीसरी बात भी है जो पुराने धर्म की परपरा में से आयी हुअी है। मनुष्य स्वभाव से बुरा है और अुसको दबाव से हर प्रकार की जजीरो में जकडकर, बाडो में घेरकर ही अच्छा किया जा सकता है, शुद्ध रखा जा सकता है, यह विचार सारी दुनिया मानती आयी है। अैसी मान्यता में से कानून बनते हैं और अैसी मान्यता में से धर्म के नीति नियमो को बधनो का रूप आता है। मा-बाप अक्सर यही मानते हैं कि बच्चो को घर में बद करके रखने से ही वे अच्छे रहेंगे। जीवन की स्वाभाविक स्फूर्ति तथा आनद के साथ नैतिकता का, धार्मिकता का अेक प्रकार का विरोध है अैसी कल्पना हममें है। सर्वोदय विचार भी अिसी प्रकार मनुष्य को हर प्रकार की नीति के बधन में जकडकर सन्मार्ग पर रखनेवाला अेक विचार है अैसा भास सामान्य जनता तथा शिक्षित वर्ग दोनो को होता है। सामान्य जनता बधन स्वरूप धर्म से अभ्यस्त है, अिसलिअे अुसे यह अखरता नही है। मगर शिक्षित वर्ग अपने को परपरा के बधन से मुक्त मानता है और अिसीलिअे बधन रूपी धर्म को स्वीकार करने को तैयार नहीं होता।

सर्वोदय विचार अहिंसा तथा सत्याग्रह की जिस बुनियाद पर खडा है वह विचार अिस परपरागत विचार से बिलकुल अलग तथा अुल्टा

है । मनुष्य का स्वभाव मूलतः सत् है और अुस पर हर प्रकार के जो दबाव तथा बंधन हैं अुनसे अुसको मुक्त करने पर ही वह अपने सत् स्वरूप में प्रकट होगा । गांधीजी के असहकार तथा सत्याग्रह के आन्दोलन ने भारतीय जनता को अिस तरह के दबाव से मुक्ति दिलायी और फलत. भारत में जागृति तथा अुत्साह का ज्वार आया । अुस जमाने का सत्याग्रह अिस अर्थ में अभावात्मक (negative) था कि हमने तो खुद दबाव से मुक्ति पायी, मगर हमारे प्रतिपक्षी पर दबाव डालना सही मार्ग है अैसा हमने समझा । मुझे नम्रता के साथ कहना पड रहा है कि अिस तरह मनुष्य को मुक्ति दिलाकर नही, बंधन में बांधकर सन्मार्ग पर रखने की वृत्ति हममें अब भी बची है। और यही कारण है कि हम लोगों मे सर्वोदय के लिअे भक्ति (रूढिगत अर्थ में) पैदा करने में जितना सफल होते हैं अुत्साह पैदा करने में अुतना नही । जब हम लोकसेवक का निष्ठापत्र, सर्वोदय-पात्र या किसी भी चीज पर सोचने बैठते हैं तो हमारा सोचने का ढंग यही होता है कि अुस मनुष्य को हम किस तरह के नियमों में जकडें, जिससे वह फिसलने, खिसकने न पावे । हम अक्सर विकेन्द्रीकरण, शरीर-श्रम-निष्ठा आदि अपनी योजनाओं को अिस तरह समझते हैं और समझाते हैं मानो वे लोहे के चौखटे हैं, जिनमें डाल देने पर समाज को बुरा बनने का मौका ही नही मिलेगा । हर मनुष्य आठ-दस घंटे मेहनत करता रहेगा तो शैतान को मौका मिलेगा ही नही ।

जिस प्रकार से अल्पवयस्क हिंदू विधवा को चारों ओर से घेरकर वैधव्य धर्म पालन करने के लिअे मजबूर किया जाता है, अुसी प्रकार भारत में धर्म को आचरण में लाने का सनातन रूप, कम से कम जनता में रहा है । हमारे सर्वोदय की व्रत-नियम निष्ठायें आधुनिक जमाने के व्यक्ति को आकर्षक नही लगती । लोगों को लगता है कि सर्वोदय याने सब की भलाओ, शांति, अहिंसा आदि के लिअे हमें जीवन की कओ मूल्यवान सरसताओं को छोडना पडेगा और अपने को वंचित करके ही हम सर्वोदय समाज की रचना कर सकते हैं ।

जब तक हम यह न समझेंगे तथा समझा सकेंगे कि अपने को वंचित करके सर्वोदय करना नही है, अुलटे आज के समाज में हम कओ प्रकार से वंचित हो गये हैं, और सर्वोदय में अुन्हें भर-भरकर पायेंगे तब तक अिसके लिअे अुत्साह पैदा नही होगा ।

लोगों को लगना चाहिये कि अपरिग्रह से हमारे बालबच्चों की आर्थिक सुरक्षा मिटेगी नही, अुलटा सौ प्रतिशत आर्थिक तथा सामाजिक सुरक्षा (total social security) मिलेगी। शरीरश्रम से हमें सृजन, स्वास्थ्य तथा तेजस्वी बुद्धि का नया मजा मिलेगा । आज की तालीम से हम जितना आगे बढ सके हैं नओ तालीम से अुससे कओ गुना जल्दी आगे बढ सकेंगे । राष्ट्रभाषा को स्वीकार करने से विज्ञान का विकास कुंठित नही होगा बल्कि वह अधिक तेजस्वी होगा, मगर वह विचार सामान्य कार्यकर्ता तक कम अुतरा है । हमारा दृष्टिकोण अक्सर नैतिकता की सीख पर भाषण देने का ही होता है । आज के शहर के लोगों के आचार बाहर से आये हुअे हैं । विद्यार्थी ट्राअुज़र पहनते हैं, सिनेमा देखते हैं, सिगरेट पीते हैं आदि बातों पर ही हमारा ध्यान पहले जाता है और अुसीका निषेध हम पहले करने लगते हैं । प्रेम करुणा

आदि को प्रथम महत्व दिया जाय और अिन चीजो को जरा गौण स्थान दिया जाय तो हम ज्यादा कामयाब हो सकेंगे। मनुष्य के रहन सहन, आचार अन्तर्राष्ट्रीय रूप लेंगे यह भी हमें समझ लेना चाहिये।

जिस पुराने अनुशासन की हमने चर्चा की हमारे समाज में तथा पुरानी तालीम में वही चलता है और जो क्रमश अपनी शक्ति खो रहा है। पिछले पचास सालो से अिधर शिक्षण-शास्त्र में अहिंसा के जो तत्व दाखिल हुअे हैं, और सारे जगत् में सर्वमान्य हुअे हैं, अुनका स्पर्श तक हमारे विद्यालयों और घरो को नही हुआ है। अुधर समाज की व्यवस्था, विचार आदि अिस तरह बदल रहे है कि पुराना अनुशासन–घर में बद करने का अनुशासन—बेकार साबित हो रहा है और अिधर नये अनुशासन का कही दर्शन नही हो रहा है। अैसी परिस्थिति म अगर युवक अपनी मनमानी राह चल रहे हैं तो अिसमें आश्चर्य की कोअी बात नही।

फिर यह भी अेक मुसीबत है कि युवको में जो स्वाभाविक प्रेरणायें होनी हैं, अुनके स्वस्थ प्रकटन के लिअे, खास करके शहरो में, कोअी अवसर नही है। पराक्रम का शौक युवक को होता है। सिनेमा में अुसका अुपभोग अुलटे ढग से होता है, बगैर टिकट के रेल बसा में सफर करना, किसी की मोटर लेकर भाग जाने में अुसका प्रकाश होता है। निसर्ग के साथ शहर के विद्यार्थियो का कोअी सबध ही नही होता। हमारे समाज में लडके लडकिया के स्वाभाविक मेलजोल का रिवाज नही है और अिधर प्रेम के अपने साथी चुन लेने के नये आदर्श तथा विचार समाज में आ गये हैं। अिन सबके कारण हमारे स्कूल कालेजा में लडके-लडकियो का सबध विकृत हो रहा है। काम के जरिये अपनी सृजनात्मक शक्तियो के स्फुरण का मौका अुन्हे नही मिलता। अिसलिअे भी अत्यन्त निराशा अुनमें पैदा होती है। अक्सर अधिक सख्यक विद्यार्थी जो देहातो से आकर शहर में रहते हैं वे अेक तरह से शरणार्थियो का-सा जीवन व्यतीत करते हैं। अुनके जीवन में किसी तरह का प्रेम का स्पर्श तथा आश्रय नही होता जो अुन्हे अपने घर म कम व बेश मिल सकता था। अुनकी अुलझनो में सहानुभूति के साथ, दृढता क साथ अुनका मार्गदर्शन करनेवाला कोअी नही होता। अत अुनका भावनागत विकास कुठित हो जाता है और सर्वोपरि आर्थिक अरक्षितता का, बेकारी का विकट प्रश्न, धधा प्राप्त करने की समस्या अुनके सरपर मडराती रहती है।

हम विद्यार्थियो में काम करना और सर्वोदय क्राति के लिअे अुनमें अुत्साह पैदा करना चाहेंगे तो अुनके जीवन को छूनेवाली समस्याओ के हल में सर्वोदय क्रान्ति की कारगरता को व्यक्त करना होगा। अपने कार्यक्रम में अिस प्रकार की प्रवृत्तिया रखनी होगी जो अुनके जीवन की अिन वचनाओ के अभावो की पूर्ति में सहायक हो। "आत्म-प्रकटन के द्वारा आत्म नियत्रण" अिसके लिअे अनुकूल स्थिति पैदा करनी होगी। पालको तथा शिक्षको को हमें अिसमें दिलचस्पी दिलानी पडेगी तथा अुनमें अिस प्रश्न के बारे में समझदारी पैदा करनी होगी। मेरा अनुभव है कि अपने पुत्र-पुत्रियो के, अपनी सतान के भविष्य के बारे में पालको को आजकल काफी चिंता रहती है और आज के जमाने में अमुक-अमुक प्रकार के अवाछनीय बरताव युगधर्म हैं अैसा मानकर वे

असहाय रूप से सहन करते रहते हैं। अगर हम अुनके सामने अिस युग आन्दोलन का अेक रचनात्मक कार्यक्रम रखेंगे तो हम मध्यम वर्ग के पालको को अुसमें दिलचस्पी दिला सकते हैं और शहरों के लिअे भी यह अेक शुद्ध कार्यक्रम बन सकता है।

पालक भी अिसमें आगे आयें और अपने लडके-लडकियों को साथ लेकर सेवा तथा सास्कृतिक कार्यक्रमों में जुटें यह हमारी अुनसे माग होनी चाहिये। अिसके द्वारा लडके-लडकियो के आपस में स्वस्थ और स्वाभाविक मेलजोल का सौम्य परिवेश बन सकेगा। दोनो पीढियो में भी मानसिक सयोग और सहयोग स्थापित हो सकेगा। अिस आन्दोलन में हम देहातों में पदयात्रा आदि का आयोजन करेंगे तो अुसमें पराक्रम तथा प्रकृति के रसग्रहण के प्रति भी ध्यान होना चाहिये। युवकों के जो क्लब आदि हैं अुनमें भी हमें रस लेना चाहिये।

विद्यार्थियों के लिअे शगल के केन्द्र स्थापित हो सकते हैं जिनमें श्रम का सृजनात्मक आनंददायक पहलू सामने आये। अिसके जरिये गरीब विद्यार्थियों की आर्थिक सहायता का भी अेक मार्ग मिल सकता है। हमारे आन्दोलन में शहर में घर छोडकर आये हुअे विद्यार्थियो को भावनात्मक भूख मिटाने की खुराक भी मिलनी चाहिये। सज्जनों की, पालको तथा शिक्षको की अैसी मंडली शहर में या मुहल्ले में बने जो विद्यार्थी तथा दूसरे नवयुवको के साथ व्यक्तिगत संपर्क में आये तथा अुनकी जीवन की व्यक्तिगत समस्याओ में मार्गदर्शन करे।

अिन सबके पीछे सर्वोदय का विश्वात्मक विचार तथा प्रेरणा हो तभी यह सारा अेक क्रातिकारी रूप ले सकता है।

आज भारत के विद्यार्थीसमाज तथा शहरों के युवकसमाज में अेक शून्यता पैदा हुअी है। वह शून्यता सर्वोदय आदोलन के द्वारा ही भरी जा सकती है। आज दूसरे किसी आन्दोलन या कार्यक्रम में वह शक्ति नही है।

संकुचित दृष्टि से व्यापक सेवा करने पर भी यह सकुचित हो जाती है; और व्यापक दृष्टि से, निर्मल बुद्धि से, निष्काम भाव से, छोटी सेवा करने पर भी यह बडी बन जाती है। यह सेवा का रहस्य है।

—विनोबा

('विद्यार्थियो से'-बगलोर १७-१०-५७)

कल के स्कूल कैसे हों ?

("अिडियन ओपीनियन" के १० जून १९११ के अंक से)

[दक्षिण आफ्रिका में गाधीजी "अिडियन ओपीनियन" नाम का पत्र निकाला करते थे । समय समय पर वे शिक्षा व शिक्षाव्यवस्था के बारे में अपने विचार अिस पत्र द्वारा व्यक्त करते थे । अुस समय की अन्य पत्रपत्रिकाओ में भी अुनके विचारो के अनुकूल अगर कुछ लेख निकले तो वे अुन्हे अिडियन ओपीनियन में दिया करते थे । अिन लेखो से पता चलता है कि गाधीजी प्रारभ से ही शिक्षा में क्रातिकारी परिवर्तन की कल्पना रखते थे ।

न्यूयार्क के पत्र 'वर्ल्ड्स वर्क' ने अुस समय शिक्षा का काम करनेवालो से लेख मागे थे । लेखको से अपेक्षा की गयी थी कि वे भविष्य की पाठशालाओ की तुलना अुस समय की पाठशालाओ से करें और यह बतायें कि अुनकी कल्पना के अनुसार नये स्कूल बालक-बालिकाओ के भले के लिअे पुराने स्कूलो की अपेक्षा में क्या क्या करेगे । अुनके पास अिस सिलसिले में ३०० लेख आये थे । लेखको में कालेजो के प्रोफेसर से लेकर गावो के प्राअिमरी स्कूलो के शिक्षक तक थे । "अिडियन ओपीनियन" के अिस लेख में "वर्ल्ड्स वर्क" के सपादक का मतव्य और अिस लेख-स्पर्धा के प्रथम पुरस्कार विजेता के विचारो का साराश दिया गया है-स.]

"वर्ल्ड्स वर्क" के सपादक कहते है कि अिन ३०० लेखो में अिस बात पर सर्वानुमति पायी गयी कि आनेवाली पाठशालाअें "शास्त्रीय पद्धति" और 'थियरी" से मुक्त हो जायेंगी । वे बौद्धिक डिसिप्लिन, रटने की परपरा, परीक्षाओ और अैसी बातो पर कम ध्यान देंगी और अिस तरह आगे बढेंगी जिससे कि युवक को अैसी सीधी शिक्षा मिले कि वह अुस आदर्श जीवन के लिअे तैयार हो सके जिसे वह बितानेवाला है और अुस काम के लिअे तैयार हो जो अुसे करना चाहिये ।

"आम राय है कि अिस तब्दीली से कोअी भी नुकसान नही होगा । "बौद्धिक" व सास्कृतिक विकास और शिक्षा के दूसरे भी अुद्देश्य अधिक अच्छी तरह सिद्ध होगे, क्योकि अुनको अैसी दिशा मिलेगी जिसमें बालको की अधिक रुचि होती है । पाठशाला को जीवन से अलग रखने के बदले जीवन का अेक अग बनाने से अनेक लाभ होगे । यह तब्दीली अितनी शक्तिशाली है कि अिसे अेक शैक्षणिक क्राति कहना गलत नही होगा । पुरानी "पेडगोगि"-शिक्षा-शास्त्र-अब अुन लोगो के साथ की लडाअी में हार चुका है जो पाठशाला को जीवन की अधिक व्यावहारिक तैयारी का माध्यम बनाना चाहते हैं ।"

अिस लेखमाला के पुरस्कार विजेता श्री अे'डी. डीन थे । वे अुस समय न्यूयार्क स्टेट के शिक्षा विभाग के वाणिज्य विद्यालयो के प्रमुख थे । अुस लेख में अुन्होने अपने पिता को वास्तविक जीवन में रहते हुअे किस प्रकार शिक्षा मिली अुसका वर्णन किया है । अुसे अुन्होने "यूनिवर्सिटी ऑफ हार्ड नॉक्स" (कडे धक्को का विश्व विद्यालय) कहा है ।

"मेरे पिता ने मुझे अेक पुराने स्कूल में भेज दिया जिससे कि मै "शिक्षा" से वचित न

रह जाअूँ। अुनके विचार से जो "शिक्षा" अुन्होने कठिनाअी से पायी थी, जो शिक्षा पुस्तको से ही मिल सकती है, वह मुझे भी अुसी रूप से मिलना जरूरी था। फल-स्वरूप मैं करीब करीब असल शिक्षा से वचित ही रह गया। न जाने कैसे मेरे पिता यह भूल गये कि अुनका अितना अच्छा स्वास्थ्य, विवेकपूर्ण दृष्टि, काम करने की ताकत और जीवन की ओर सही वृत्ति का कारण, शिक्षा की अुन शक्तियो के साथ सपर्क था जो स्कूल के कमरे में नही मिलती, और बाल्यकाल का सख्त जीवन ही अुनकी शिक्षा की प्रक्रिया थी।

"अुनके पास दो डिग्रिया थी–अेम् सि (मास्टर आफ केरेक्टर–अुच्च चरित्रवाला) और अेस आअी (मास्टर ऑफ अिडस्ट्री–कर्म कुशल)। ये डिग्रिया अुस विद्यालय की थी जो अुस समय देश का सब से बडा और योग्य विद्यालय था—"कडे धक्को का विश्व-विद्यालय।" मुझे शका है कि जिन स्कूलो में मैंने पढा अुनका पाठ्यक्रम अिसके पाठ्क्रम की बराबरी कर सकेगा। मेरे पिता की शिक्षा का प्रारभ "न्यू अिंग्लड" के अेक अच्छे घर में हुआ जिसका सचालन होशियार, चारित्र्यवान माता पिता करते थे। अिस घर के शिक्षाक्रम में खेत के काम के द्वारा यथेष्ट व्यायाम और प्रकृति के साथ सपर्क होता था। यहा मधु-मक्खियो के गुजन में, अन्न कुटाअी के सामूहिक कार्यक्रम में और गिरजा घर के सायकालीन भोजनो में समुचित मनोरजन मिलता था। दर असल मेरे पिता को आनवाले स्कूल की शिक्षा के मूलतत्व अेक न अेक रूप से मिल गये थे। वे थे–शारीरिक व नैतिक शिक्षा, अपने धधे में प्रशिक्षण व मार्गदर्शन, प्रकृति के साथ सपर्क और अुद्देश्यपूर्ण मनोरजन।

"आनेवाली पाठशालाओ के दरवाजे पर लिखा होगा–"हम समग्र बालक की सुरक्षा करते हैं।" पुरानी शालाओ का मूल-सूत्र रहा है–"हम पूरे पाठ्यक्रम को बचानेवाले है।" जो लोग पुराने स्कूलो को चलाते थे अुनकी मान्यता थी कि बालक का जन्म पाठ्यक्रम की अुपयोगिता को सिद्ध करने के लिअे हुआ है। आनेवाली शालाओ का नियामक सिद्धात होगा कि पाठ्यक्रम बालक की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिअे होना चाहिये। आज की शिक्षण की फेक्टरियो के यत्रसचालको की जगह तब अैसे शिक्षक होगे जो विषयो को पढाना नही, बच्चो को पढाना ही अपना कर्तव्य समझेंगे। अेक दफे मैंने कुछ शिक्षको से पूछा कि वे क्या पढाते हैं। अेक ने कहा "गणित" दूसरे ने कहा "अग्रेजी' और अेक ने कहा "विज्ञान"। लेकिन खुदा हाफिज चौथे ने कहा "जनाब, केवल लडको को पढाता हूँ"।

"आनेवाले स्कूलो में काम के द्वारा स्वास्थ्य और आनद की प्राप्ति अुनका अुद्देश्य होगा। अिसलिअे अुनका कार्यक्रम अत्यधिक छुट्टिया से बाधा नही पायेगा। दरअसल शिक्षा की प्रक्रिया अिस प्रकार होशियारी से स्कूल के व घर के काम में सतुलन रखते हुअे सगठित की जायगी कि हर दिन काम का दिन होगा और छुट्टी का भी। स्कूल अपना कार्यक्रम मौसम की आवश्यकता के अनुसार बनायगा।

"आनेवाले स्कूल में शिक्षक कुशल कारीगर होगा। वह कलाकार होगा, मशीन का पूर्जा नही। वह मानवरूपी माध्यम को अुसके अपने लिअे अुपयुक्त तरह तरह के आकार देगा, न कि

परपरा और अेक-से स्वरूप के आम साचे में ढालने के लिअे अुसमें थोप देगा। अुनके सामने नमूने के लिअे आनेवाले आदर्श मनुष्य की मूर्ति होगी, जो मनुष्य शरीर से स्वस्थ सुगढ और सुदर होगा। वह मनुष्य बुद्धिमान सवेदनाशील श्रद्धायुक्त और अुत्पादन शक्ति में कुशल होगा। शिक्षक और विद्यार्थी-जो भावी मानव हैं—कल के सामाजिक ध्येयो की पूर्ति के के लिअे अपने अिन गुणो को सेवा में अर्पित करेगे।

"आप पूछेंगे कि यह सामाजिक ध्येय क्या है? वह केवल भौतिक नही, मानवीय समृद्धि भी है।"

प्रेम कैसे मरता है—

सन् १९४० की बात है। महायुद्ध के समय अेक जर्मन बोम्बर हवाअी-जहाज स्कॉटलैण्ड के फर्थ-ऑफ फोर्थ पुल को बम्बारी करके तोड डालने के प्रयत्न में स्वय गिरा दिया गया। आठ साल का बालक टोनी सयानो को अिसके बारे में चर्चा करते सुन रहा था। वह बडा परेशान हुआ, अुसकी कोमल दृष्टि वाली आखें फाड फाड कर घबराहट से देख रही थी। वह दौड कर छात्रालय की मुख्य अध्यापिका के पास यह बात कहने गया। बेचारा परेशान था, और अुसका दम फूल गया था। बोल भी कठिनाअी से पाया। अुसने कहा, "आपको मालूम है, अुन्होने अुसे गोली मारी और अुसे चोट पहुँचाअी। अुसे लगभग मार ही दिया। अुन्होने अैसा क्यो किया?" स्पष्ट था कि टोनी बडा दुखी था, अुसका कण्ठ भी वेदना से भरा था। मुख्य अध्यापिका नहीं जानती थी कि टोनी को क्या जवाब दे, वह खुद भी लडाअी को भयानक चीज समझती थी। परन्तु कमरे में अेक और स्त्री थी जिसने क्रुद्ध भाव से कह दिया,—'पर टोनी, जर्मन लोग हमारे पुल को तोडना चाहते थे। वह बडा खराब आदमी था, अुसे यहा नही आना चाहिये था।' "परन्तु टोनी अपनी बात पर डटा रहा, और अुसने कअी बार दोहराया, "हमें अुसे मारने की कोशिश नही करनी चाहिये थी।"

पर, दो सप्ताह के बाद अेक दिन टोनी बगीचे में अेक मुर्गी की गरदन मरोडते हुअे पाया गया। यह मुर्गी गोभियो में घुस आयी थी। जब अिसकी चर्चा टोनी से की गयी, तो अुसने अपने कन्धे सिकोड कर कहा, 'वह बडी खराब मुर्गी थी। वह हमारी गोभिया खा रही थी और अुसे यहा नही आना चाहिये था।"

श्रीमती पेन की 'क्रिअेटिव अेजूकेशन'
नाम की पुस्तक के १२ वें अध्याय से।

मेरा रूस की शिक्षा का निरीक्षण

अेडलाअी स्टीवन्सन

[पिछली गर्मियों में अेडलाअी स्टीवनसन रूस की यात्रा करने के लिअे गये थे । श्री स्टीवनसन अमेरीका के बडे राजनीतिज्ञ हे ।

अुन्होने अपनी यात्रा के ससमरण और अुसके बारे में अपने विचारो को प्रकट करते हुअे अेक लेखमाला "न्यूयार्क टाअिम्स" में दी है । यह अुस लेखमाला का दसवा लेख है, जिसमें अुन्होने रूस की शिक्षा का जो निरीक्षण किया अुसका वर्णन दिया है । लेख की जो राजनैतिक या अेकतर्फा बाते हे ये हमने छोड दी है ।

पाठको को याद होगा कि "नअी तालीम" के पिछले फरवरी के अक में श्री ऋुश्चेव, रूस के प्रधानमत्री के अपने भाषण का कुछ हिस्सा दिया गया था । अुसमें अुन्होने रूस की शिक्षा पद्धति के बारे में बुनियादी बातें रखी थी । —स.]

सोवियत राष्ट्रसघ की शैक्षणिक सस्थाओ में सर्वत्र ही शिक्षको की काबिलियत और अपने काम के प्रति निष्ठा देखकर मैं प्रभावित हुआ । सब जगह बहुत अच्छे अुपकरण थे और सस्थाअें खूब कार्यकुशल मालूम पडी । अेक पितामह की हैसियत से मेरा ध्यान अिस ओर विशेष रूप से आकृष्ट हुअ कि वहाँ के बच्चे बहुत कम रोते हैं । बहुत छोटे बच्चे भी शात थे और अुनका बर्ताव सुन्दर था ।

रूस का शिक्षा विभाग मानता है कि औपचारिक (फार्मल) शिक्षा शुरू करने के लिअे छ साल की अुम्र बहुत छोटी है । अिसलिअे सात साल के बाद ही बच्चो का 'स्कूल' शुरू होता है । देहातो में सात साल की ही शिक्षा लाजिमी मानी जाती है और शहरों में दस साल की । श्री क्रुश्चेव ने आजकल ही कहा था कि रूस के बीस प्रतिशत बच्चे सात साल का शिक्षाक्रम भी पूरा नही करते ।

स्कूलो में बच्चो के बौद्धिक और आदर्शात्मक विकास की तरफ पूरा पूरा ध्यान तो दिया जाता है, लेकिन स्कूल के बाहर के समय की भी अुपेक्षा नहीं होती है । ७ से २६ साल तक के सब नव-युवको से अपेक्षा है कि वे किसी न किसी युवक सगठन में शामिल हो । रूस में कअी प्रकार के युवक सघ हैं और ये शारीरिक शिक्षा, कलात्मक प्रवृत्तिया, दस्तकारिया, साम्यवादी सिद्धातो का अध्ययन अिन सबका अेक सुचिंतित समतोल कार्यक्रम युवको के लिअे अुपस्थित करते हैं ।

हम लोग यूराल राज्य में स्वरड्लोस्क नाम की जगह युवको के अेक "महल" (यग पायोनियर पेलेस) जो औसत से अच्छा था, देखने गये । यह अेक बहुत बडे अैसे मकान में था जो क्राति के पहले अेक लखपति का घर था । यहा स्कूल के विद्यार्थी अपनी फुरसत का समय, खेल-कूद, कला प्रवृत्तियो, दस्तकारियो, विज्ञान के अनुसधान, फोटोग्राफी आदि में लगाते हैं । वे कोयले की खान से लेकर अणुशक्ति अनुसधान के केन्द्रो तक सब प्रकार की अुद्योग शालाओ के नमूने (मोडल्स) बनाते हैं । बगीचे में बच्चो की अपनी लगायी हुअी क्यारिया थी,

यहा वे वनस्पति-शास्त्र का अध्ययन और प्रयोग करते थे। अेक बहुत अूचे स्तर का छोटा नाट्य मच भी यहा था जहा बच्चे खुद ही तैयार किये नाटको का अभिनय करते थे। बच्चो का अेक अखबार भी यहाँ प्रकाशित होता था जिसके द्वारा १०-१५ साल के बच्चा को वही खबरे दी जाती हैं जो रूस का अधिकृत अखबार "प्रावडा" वडो को देता है।

सात या दस साल की अनिवार्य शिक्षा की अवधि के बाद जिन्होने "विशेष योग्यता नही दिखायी" वे सब काम में लग जाते हैं। जो ज्यादा बुद्धिमान हैं या समाज में जिनका स्थान ज्यादा अूचा है वे अुच्च प्रावैधिक शिक्षा केन्द्रो में प्रवेश पाते हैं।

मै अिस प्रकार का अेक केन्द्र देखने गया था। यह अेक बहुत वडी अैसी फेक्टरी के साथ सलग्न है जहा विभिन्न यत्रो का निर्माण होता है। अिसमें १५ साल के अूपर के आठ सौ नवयुवक तीस शिक्षको के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। फेक्टरी के विभिन्न विभागो के विशेषज्ञ भी अिनकी मदद करते हैं। प्रशिक्षण काल के पहले डेढ साल में अिन्हे अपने चुने विषय के अलावा अितिहास और रूसी भाषा की भी शिक्षा मिलती है। लेकिन बाद के पाच सालो का विनियोग प्रावैधिक शिक्षा के लिअे ही होता है और अुस समय का भी ३० प्रतिशत फेक्टरी में प्रत्यक्ष अुत्पादक काम में जाता है।

यह स्पष्ट है कि अुच्च शिक्षा केन्द्रो में प्रवेश पाने के लिअे "मैत्रीपूर्ण स्पर्धा" खूब चलती है। रूस में सात सौ विशेष प्रावैधिक शिक्षाकेन्द्र और ३५ विश्व-विद्यालय हैं। दस साल का सपूर्ण शिक्षाक्रम पूरा करने के बाद जो विशेष परीक्षाओ मे अुत्तीर्ण होते हैं अुन्ही को अिन में प्रवेश मिलता है। ये परीक्षायें काफी सख्त होती हैं, पिछले साल सात लाख लडके-लडकिया अिनमें असफल हो गये थे। प्रति साल साढे चार लाख विद्यार्थियो को अिन प्रावैधिक शिक्षण केन्द्रो में प्रवेश मिलता है। अिनमें से आधे दिन में अध्ययन करते हैं और आधे रात में। विश्व-विद्यालय की अुच्चतर कक्षाओ में स्पर्धा और अधिक सख्त होती जाती है। यूरल राज्य की स्वास्थ्य मन्त्रिणी श्रीमती मेरिया कोव्रिजिना ने मुझे कहा कि मेडिकल कालेज के प्रत्येक स्थान के लिअे १५ आवेदन पत्र आते हैं। दूसरे राज्यो में भी यह अेक के पीछे आठ या दस के अनुपात में होता है।

कोअी गरीब लडका शिक्षा के लिअे मुश्किल महसूस कर रहा हो, अैसी परिस्थिति रूस में अज्ञात है। ८० प्रतिशत से ज्यादा विद्यार्थियो को राज्य की ओर से छात्रवृत्ति मिलती है, यह अुनकी योग्यता के अनुसार कम या ज्यादा होती है। समाज में बुद्धिजीवियो की जो प्रतिष्ठा है अुसके कारण अुनके निर्वाह का कोअी प्रश्न नही अुठता है। अधिक बुद्धिमान लोग विश्व-विद्यालय का शिक्षाक्रम पूरा करने के बाद शिक्षा या अनुसधान के काम में लग जाते हैं।

विश्व-विद्यालय की फेकल्टी के अधिकतर सदस्य कम्यूनिस्ट पार्टी के नही हैं। मुझे अैसा लगा कि कम्यूनिस्ट सिद्धातो और आदर्शवाद के प्रति विद्यार्थियो का अुत्साह कुछ मन्द ही है। अगर यह सही है तो १९२६ में रूस के नव युवको में मार्क्सवाद और जागतिक क्राति के बारे में जो तीव्र अुत्साह मैंने देखा था अुससे आज की स्थिति में बहुत फरक है। आज

भुनकी अभिरुचि कार्यक्षमता, अधिक अुत्पादन, जीवन का स्तर अूचा अुठाने और बाहरी दुनिया के साथ सपर्क बढाने में ज्यादा है ।

शिक्षा के काम में स्त्रिया जो प्रमुख भाग लेती है अुसका मेरे मन पर बहुत प्रभाव हुआ । विश्व विद्यालय के कर्मियो की अेक तिहाअी अेव विद्यार्थियो की आधी सख्या स्त्रिया है । श्रीमती कोविजिना ने मुझे कहा कि मेडिकल स्कूलो में दो तिहाअी स्त्रिया ही है । अिस स्थितिपर अुन्होने कुछ आशका भी प्रकट की, क्योकि स्त्रियो की अभिरुचि अपने धधे से ज्यादा विवाह और अपने परिवार की तरफ रहती है ।

मुझे विशेष रूप से कहना यह है कि सोवियत सघ अब अपनी शिक्षा व्यवस्था को बहुत बदल रहा है । शिक्षा विभाग के अधिकृतो और विशेषज्ञो से जो मेरी बातचीत हुअी अुससे मालूम हुआ कि अुच्च शिक्षा केन्द्रो में प्रवेशार्थियो की बडी भारी भीड है जब कि फेक्टरियो और अन्य जगह काम के लिअे कम लोग मिलते है । और अगले कुछ सालो में यह परिस्थिति और जटिल होने की आशका है ।

जाहिर है कि अिस "मजदूरो के राज्य" में अधिकतर नौजवान सफेद पोषाकवालो में शामिल होना चाहते है, विशेषज्ञ और व्यवस्थापक बनना चाहते है । योजना बनानेवाले स्कूल के शिक्षाक्रम को कालेज की तैयारी नही, बल्कि काम की तैयारी बनाकर अिस समस्या का हल करना चाहते है । अिसके लिअे वह आज के दस साल के शिक्षाक्रम को बदलकर स्कूलो में अेक आठ साल का बुनियादी शिक्षाक्रम शुरू करने का सोच रहे है । जिसमें सब बच्चो को अेक "सामान्य बहुधधी शिक्षा" मिलेगी और साथ-साथ विज्ञान के अध्ययन की नीव भी पक्की डाली जायगी । वे अिस बात पर बहुत जोर दे रहे थे कि बच्चो में काम करने की पक्की आदते डालने मात्र से नही होगा, अुनमें यह भावना पैदा करनी होगी कि "श्रम के बगैर मानव जीवन अविचारणीय" है । परिश्रम की जिन्दगी के लिअे अुनकी मानसिक तैयारी होगी ।

आठ साल के शिक्षाक्रम के बाद विशेष अुच्च विद्यालयो में अुन लडके-लडकियो को लिया जायगा जिन्होने असाधारण योग्यता दिखायी हो । लेकिन अधिकतर नौजवान १६ साल की अुमर में अुद्योग या खेती के क्षेत्र में अपना काम शुरू करेगे । जो लोग अपनी पढाअी आगे भी चालू रखना चाहते है वे काम करते-करते कुछ समय अुसके लिअे दे सकते है । और अगर वे सच्ची कार्बालयत दिखाते है तो बाद में कालेज में दाखिल भी हो सकते है ।

सोवियत शिक्षा विभाग के अधिकारी आशा कर रहे है कि अिस योजना के परिणाम स्वरूप सोवियत नौजवान मेहनत से जी चुराने-वाले या 'सफेदपोश' बनने से बच जायगे ।

यह नअी योजना १९६० में कार्यान्वित की जायेगी । तो भी यह कहना गलत नही होगा कि अुच्च शिक्षा पाने का सघर्ष वहा बढता ही जायगा और साथ साथ प्राविधिक दक्षता का स्तर भी और अूचा अुठेगा ।

सोवियत शिक्षा व्यवस्था की अेक खूबी के बारे में यहा कहे बिना नही रह सकते । वह अुनकी भाषा शिक्षा की प्रणाली है । वहा के पुराने पडित भाषा के विषय में हम से कुछ विशेष अच्छे नही है । परन्तु अब नवयुवको को पाच साल तक कोअी न कोअी विदेशी भाषा

(शेषाश पृष्ठ २८५ पर)

कोरापुट का शिविर

अण्णा सहस्रबुद्धे

मैंने तीन महीने का अेक प्रशिक्षण-शिविर चलाया। कोरापुट जिले के अपढ आदिवासियो का यह शिविर था। अिस शिविर के लिअे कोअी शिक्षाक्रम निश्चित नही किया गया। मैं अभी तक के अपने अनुभवो म अिस शिविर के अनुभव को अग्रगण्य मानता हू और दूसरो के लिअे अनुकरणीय कह सकता हू। यह शिविर हर दृष्टि से सफल रहा।

ग्रामीण अिकट्ठे हुअे। पूछा—'आप लोग क्या सीखना चाहते है ?" अुत्तर मिले—"हम लोग आदिवासियो के लिअे बने सरकारी कानून जानना चाहते है। गाव की पचायतो और सहकारी समितियो के व्यवहार समझना चाहते है। महाजन का व्याज लेन का गणित, अुसके ठगने का तरीका पढना चाहते हैं और कुछ चिट्ठी पत्री लिखना सीखना चाहते है।' य ही शिविर के विषय मान लिये गये।

शिविर शुरू हुआ। सुबह शिविरार्थी काम करते थे। काम के समय मुक्त चर्चा चलती रहती थी। शाम को अुक्त विषयो का शिक्षण चलता था। अिस बाच दिन में वे कताअी, बुनाअी और बुनी हुअी खादी को देखते रहते थे। दूसरे अुद्योगो की प्रक्रियायें भी अुनके देखने में आती थी। पर खादी ग्रामोद्योग का अुन्हें कोअी शिक्षण नही दिया गया और न अुनसे शिक्षण लेन को कहा ही गया। केवल अुनकी अिच्छा के अुक्त विषय सिखाये गय। तीन महीने तक यह शिविर चलता रहा।

शिविर की समाप्ति पर आगे के शिक्षण के लिअ जब अुनस पूछा, तो अुनका अुत्तर रहा-"अबकी बार हम लोग अपनी स्त्रियो और बच्चो को भी लायेंगे। अुनको आप अम्बर चरखा और ग्रामोद्योग सिखाअियेगा। हमारा लिखना-पढना कुछ और बढा दीजियेगा। फिर बाद में हम भी अम्बर चरखा व ग्रामोद्योग सीखेंगे।"

ये शिविरार्थी अपने-अपने गाँवो के प्रमुख थे। अिनको अुनके गाँवों का नेता भी कह सकते हैं। शिविर के बाद गाँव में पहुँचने पर स्वभावत गाँववालो के पूछने पर वे सीखी हुअी बाते दुहरायेंगे। सच्चे अर्थो में ये ग्रामसेवक हुअे।

आज जो हमारे ग्राम-सेवक हैं, चाहे वे सरकार के विकास विभाग के ग्राम-सेवक हो, चाहे समाज कल्याण विभाग के या गाधी स्मारक निधि के, सब व्यवस्थापक वर्ग की श्रणी में आते हैं। भले ही वे मैट्रिक पास हो या ग्रेजुअेट और अुनको सरकार की ओर से अेक वर्ष या दो वर्ष का ग्रामसेवा-प्रशिक्षण भी मिला हो, पर ग्राम सेवा में वे गाँव के बढअी, लुहार या कत्तिनो के मुकाबिले में कोरे साबित होते हैं। जो कत्तिन वर्षों से महीन सूत कातती रही है, जो बढअी वर्षो से गाँव की जरूरत के हल-फावड और अन्य आवश्यक वस्तुअें बनाता रहा है, वह ग्राम सवा के क्षेत्र में ग्रजुअेट से कही अेक्सपर्ट है। हाँ, शिक्षण-विधि सम्बन्धी अुसे 'रिफेशर कोर्स' दिया जा सकता है। अुसे काम करना सिखान की शिक्षा दी जा सकती है।

कोरापुट में जब गाँव-गाँव में गाँव की सहकारी दूकान खोलने की योजना हाथ में ली, तब पहल पहल अेक गाँव का बडा प्रेरक अनुभव

(शेषांश पृष्ठ २८५ पर)

हटुन्डी परिसंवाद, अजमेर

जनवरी २१–२५–१९५९।

सर्व सेवा सघ ने पिछले साल पढरपुर सर्वोदय सम्मेलन के पहले लगभग पचास सर्वोदय कार्यकर्त्ताओ का अेक परिसवाद आयोजित किया था। यह परिसवाद पढरपुर के नजदीक खरडी नाम की जगह तीन दिन तक चला। खरडी परिसवाद के अनुभव को देखकर यह सोचा गया कि अिस प्रकार के परिसवाद समय समय पर होते रहे तो सर्वोदय दर्शन का सपूर्ण स्वरूप कार्यकर्त्ताओ के सामने स्पष्ट होता रहेगा। और अिसीलिअे अजमेर सम्मेलन के पहले भी अेक परिसवाद हो, अैसा निर्णय किया गया। सघ ने परिसवाद के आयोजन की जिम्मेवारी श्री देवीभाअी को सौंपी। और अुनकी मदद के लिअे तीन व्यक्तियो की अेक समिति भी नियुक्त की गअी।

समिति की अेक बैठक सोखोदेवरा आश्रम में ८ और ९ दिसम्बर १९५८ को हुअी। अुसमें निमत्रिता की सख्या और सूची व परिसवाद की अवधि अेव विषय योजना के ढाचे पर चर्चा हुअी। सख्या के सिलसिले में तय हुआ कि हालाकि १५० की सख्या बहुत बडी होती है, तो भी अधिक से अधिक १५० व्यक्ति हो अैसा अिन्तजाम किया जाय। परिसवाद की अवधि पाच दिन की रखी जाय और अुन पाच दिनो में क्या क्या विषय चर्चा के लिअे रखे जायें यह भी तय हुआ। स्थान हटुडी में श्री हरिभाऊ उपाध्याय का आश्रम निश्चित किया गया।

अध्यक्षपद ग्रहण करने के लिअ श्री जयप्रकाश नारायण से प्रार्थना की गयी जो अुन्होंने मजूर की।

ता २१ की सुबह १०-३० बजे महिला-शिक्षा सदन की महिलाओ के अेक गीत से परिसवाद का कार्यक्रम शुरू हुआ। महिला शिक्षा सदन के प्रमुख श्री हरिभाअू अुपाध्याय ने अतिथियो का स्वागत किया। अुसके बाद देवीभाअी ने परिसवाद की पृष्ठभूमि और योजना पेश की। जिन जिन विषयो पर चर्चा करनी है अुनको कौन प्रारम्भ करेगे और कौन अुनका समारोप करेगे, यह पहले से ही तय करके सबको सूचित कर दिया गया था। प्रारम्भ करनेवालो से प्रार्थना की गयी थी कि अपने अपने प्रारम्भिक भाषण को वे सक्षेप मे लिखकर भेज दें ताकि ये निमन्त्रित व्यक्तियो को सकुलेट किये जा सके।

पहले दिन की चर्चा का विषय सर्वोदय आन्दोलन का सिंहावलोकन था। अिसके मुख्य दो विभाग है—अेक तो आन्दोलन के अूपर की गयी टीकायें और आलोचनायें, और दूसरा आन्दोलन की हमारे अपने द्वारा की गयी समीक्षा।

हमें मुख्य बात तो यह समझनी चाहिये कि आन्दोलन पीछे हट रहा है, यह टीका गलत है। आन्दोलन दरअसल बढ रहा है। खास बात तो यह है कि कमियो की सख्या कम होने पर भी अितना बडा काम हो गया। परिसवाद के सामने विनोबाजी के साथ हुअी चर्चा का सार रखा गया। अुन्होने कहा है कि अेलवल सम्मेलन मे ग्रामदान आन्दोलन लोकमान्य बना। अब हमें अुसे लोकप्रिय बनाना चाहियें। अुसके लिये कार्य-

कर्ता चाहिअे। कार्यकर्त्ताओ को आध्यात्मिक और भौतिक आधार सर्वोदय-पात्र द्वारा मिलेगा। हमें अेक साल तक यानी अगले वर्ष अन्य कार्यों को समेट कर सर्वोदय-पात्र के काम में लगना चाहिये। कार्यकर्ताओ का निर्वाह सर्वोदय पात्र, सूनाजलि और सम्पत्तिदान द्वारा ही हो। योगक्षेम के लिये सरकारी सहायता और सचित निधि का सहारा वर्ज्य माना जाय। निर्माण कार्य के लिअे सरकारी मदद कितनी भी ली जा सकती है।

हमें निर्माण कार्य के कुछ नमूने पेश करने चाहिये, अुससे देश को कुछ रास्ता दीखेगा और कार्यकर्ता भी मिलेगे।

जनशक्ति का विकास करने के लिये जो असहयोग आन्दोलन और पुराने ढग के सत्याग्रह की आवश्यकता कुछ लोग महसूस करते हैं, अुसके बारे में भी स्पष्टीकरण हुआ। सत्याग्रह का आज का सन्दर्भ अलग है। लोकशाही में जो अधिकार लोगो को मिले हैं, अुन्हें हमें सकुचित नही करना है बल्कि अुनकी वृद्धि करनी चाहिये। पिछले सात वर्षों में सत्याग्रह का काफी विकास हुआ है। तात्कालिक प्रश्नों का हल पुराने सत्याग्रह द्वारा नही हो सकता। हमारा आन्दोलन शार्टकट का नही है। यह तो हृदय परिवर्त्तन का है। अुस परिवर्त्तन को लाने के लिये सत्याग्रह का स्वरूप सौम्य से सौम्यतर और फिर सौम्यतम करना होगा।

सर्वोदय आन्दोलन केवल भूमि की समस्या तक ही सीमित है अैसी बात नही। यह समाज का मूल रूप से परिवर्तन करना चाहता है। हमारे आन्दोलन को अुद्योग और व्यापार में भी प्रवेश करना चाहिअे। अुद्योग और व्यापार का कोओी मालिक नही, वह तो सामाजिक क्षेत्र होना चाहिये। अुसके लिये कुछ सद्भावी व्यापारियो और अुद्योगपतियो को तैयार करना चाहिये।

मुख्य बात तो यह है कि जनता हमें हमारी तराजू से ही तौलती है। अिसलिअे अुसका ध्यान हमें सतत रखना चाहिये।

दूसरे दिन सर्वोदय-पात्र और शान्ति-सेना का विषय था। सर्वोदय-पात्र लोक सम्मति का चिह्न है। वह काम प्रारम्भ हुअे जो कुछ समय हुआ है अुसके अनेक अनुभव हमें मिले हैं। अुन अनुभवों के आधार पर जो चर्चा हुओी अुससे जो खास खास मुद्दे निकले अुनका सार अिस प्रकार रहा :—

अहिंसक समाज का प्रतीक चर्खा है; क्या सर्वोदय-पात्र चरखे की जगह नये समाज का प्रतीक हो सकता है? अिस प्रश्न पर आम राय यह रही कि सर्वोदय-पात्र का अुद्देश्य यह नही है, वह तो लोक सम्मति का प्रतीक है और क्योकि लोक सम्मति के लिये अैसी चीज चाहिये जो लोअेस्ट कामन डिनामिनेटर हो, यानी कार्यक्रम अैसा हो जिसे हर कोओी फौरन प्रारम्भ कर सके। अिसलिये सर्वोदय-पात्र ही अुसके लिये अुपयुक्त कार्यक्रम है।

सर्वोदय-पात्र के कार्यक्रम में सातत्य का रहना अत्यन्त आवश्यक है। अिसलिअे यह जरूरी है कि पात्र की स्थापना के बारे में लोगो के पास बार बार जायें। हमारी पत्रिकाओं से परिचित करायें। जब भी अुनके पास जायें पत्र-पत्रिकायें लेकर जायें। अुसके लिये गाव में और मुहल्लो मे रात को प्रौढ वर्ग आदि लेना चाहिये। शान्ति-सेना यानी सेवा-सेना का

जितना काम चलेगा अुतनी ही हमारे सर्वोदय-पात्र को ध्येयसिद्धि होगी ।

पात्र की व्यवस्था की तफसील के बारे में यह जरूरी है कि हमारी दृष्टि शिक्षा की हो और हमें जनता की और हमारी अपनी शक्ति को समझ कर ही काम हाथ में लेना चाहिये । पात्र की स्थापना के बारे में यात्रायें करें पर यात्राओं में अुनकी स्थापना न की जाय । क्योंकि स्थापना के बाद वहा बार-बार जाना पडता है जिसके लिअे सगठन की आवश्यकता है । महापात्र की जगह निश्चित होनी चाहिये । साथ साथ यह भी विचार आया कि हमें सर्वोदय-पात्र के कार्यक्रम को कुछ और सहज बनाना चाहिये । कुछ लोग जो रोज मुट्ठी डालने में कठिनाअी महसूस करते है अुन्हे माहवारी अेकसाथ डालने से शुरू कराया जा सकता है । धीरे धीरे अुन्हे बाकायदा सर्वोदय-पात्र स्थापित करने मे प्रवृत्त किया जाय । यह काम केवल नियमो से नही चलेगा । अगर हमारा परस्पेक्टिव समग्र होगा तो ही यह काम ठीक चलेगा । क्योंकि यह सस्कार और गुण-विकास का कार्यक्रम है ।

यह काम अैसा नही है कि जिसे हम दो चार मास या अेकाध वर्ष में पूरा कर सकते हैं । अिसे करने में तो लम्बा समय लगेगा । परन्तु अिसे हमें अब कुछ गति से करना पडेगा, जिसमे कि अेक अच्छा खासा ढाचा आठ-दस महीनो में खडा हो जाय । अुसके लिये अिस कार्यक्रम पर कुछ अधिक ध्यान देना होगा । और दूसरे कार्यक्रमो से अिस पर अधिक जोर देने के लिये अन्य कार्यों को कुछ सीमित भी करना पडे तो करना चाहिये ।

शान्ति-सेना के प्रश्ना पर जो चर्चा हुअी अुनमें से ये प्रश्न मुख्य थे —

शान्ति-सेना में प्रवेश के लिये पक्षमुक्त होने का सवाल महत्वपूर्ण है । व्यावहारिक दृष्टि से यह आम तौर पर सम्भव नही होता कि अेक पक्ष में रहते हुअे शान्ति-सेना का काम निष्पक्ष वृत्ति से किया जाय । हालांकि अधिक महत्वपूर्ण बात तो यह है कि व्यक्ति पक्ष में रहते हुअे भी पक्षातीत हो सकता है । परन्तु आज यह आवश्यक है कि हम पक्षमुक्ति की मर्यादा कायम रखें ।

शान्ति-सेना आन्दोलन है या सगठन ? यह प्रश्न भी परिसवाद के सामने आया । यह साफ है कि शान्ति सेना बुनियादी तौर पर क्रान्तिप्रेरित विचार है । अिसलिये यह आन्दोलन ही है । परन्तु अुसके लिये जो थोडा सगठन करना आवश्यक होगा, करना पडेगा । ख्याल यह रहे कि अिस सगठन के द्वारा क्रान्ति की प्रक्रिया और शान्ति-सैनिक की स्वय प्रेरणा को धक्का न लगे ।

शान्ति-सेना का मुख्य अुद्देश्य समाज परिवर्तन है, यह अुसके सब कार्यक्रमो की बुनियाद है और यही आकाक्षा है कि सामाजिक मूल्यो का आमूल परिवर्तन हो । परन्तु बिना शान्ति स्थापना के शान्ति-सेना का काम कोअी अर्थ नही रखता । अिसलिये तात्कालिक सामाजिक खिचाव और तनाव को मिटाने के लिये जो शान्ति स्थापना का काम करना है, वह शान्ति-सेना का ही कार्यक्रम है ।

शान्ति-सेना का सबसे बडा प्रश्न शान्ति-सैनिक की तालीम का है । हमें अुसके लिये भरसक प्रयत्न करना चाहिये और शिबिरो का सगठन और अिस प्रकार के केन्द्रों की स्थापना करनी चाहिअे जिनमें शान्ति-सैनिक की ठोस तालीम हो सके । तालीम के लिये शिक्षाक्रम

आदि मुख्य नही है मुख्य तो यह है कि शिविरार्थी अैसे व्यक्तियो के सम्बन्ध में आय जो सच्चे और अनुभवी शान्ति सैनिक हो ।

तीसरे दिन दो विषयो की चर्चा हुअी, सर्वोदय आन्दोलन और सर्व सेवा सघ और आन्दोलन के विकास के लिय सर्वोदय अिकाअियो का निर्माण । सर्व सेवा सघ की स्थापना दस साल पहले हुअी थी । भूदान यज्ञ जब प्रारम्भ हुआ तो सघ न अुसे अपना मुख्य काम मानकर अपना लिया । तब से सघ की वृत्ति रही है कि वह और व्यापक बने । आज समय आया है कि सघ अेक अैसा स्वरूप ले जिसके द्वारा लोगो को अेक जन आधारित अहिंसक आदोलन का स्वरुप सामन दीख सके । सघ के तन्त्र मुक्ति के निर्णय के सन्दर्भ में सगठन आवश्यक है या नही ? अगर सगठन हो तो कैसा हो ? वह अूपर से न बनकर नीचे से 'ग्रो' करे । अुसकी अिकाअी क्या हो ? ग्राम अिकाअी, नगर या मोहल्ला अिकाअी और प्रान्तीय अिकाअियो का निर्माण । केन्द्रीय सगठन सर्व सेवा सघ हो जो विचार प्रचार और मार्गदर्शन का काम करे । परन्तु नीचे की अिकाअियो को अपना काम करन के लिये पूरी पूरी स्वतन्त्रता हो । अहिंसा के सगठन में चुनाव का कोअी स्थान नही है । हमारा सारा काम सर्वानुमति से होना चाहिय । अिसके पीछे यह सिद्धान्त है कि हम हर व्यक्ति के अन्दर विश्वास करते है, अुसके चेतन में विश्वास करते है और सबसे बडी बात है कि अेक व्यक्ति के अूपर भी दबाव न दिये बिना हमारे निर्णय लिये जाय ।

अिन बातो को ध्यान में रखते हुअे सर्व सेवा सघ के मौजूदा स्वरूप को किस प्रकार बदला जाय ? सघ या समाज की अन्य अिस दिशा में काम करनेवाली सस्थाओ और व्यक्तियो के साथ किस प्रकार सम्बन्ध स्थापित किया जाय ? शान्ति और अहिंसा के क्षेत्र में शोध के काम किस तरह किये जाय, अिन प्रश्नो पर गहरा चिन्तन हुआ ।

सर्वोदय आन्दोलन की बुनियाद तभी पक्की होगी जबकि हम गावो में, मुहल्लो में और शहरो मे अैसी मण्डलियो का निर्माण करे जो अपना जीवन अहिंसक सहजीवन के आधार पर बिताने के लिये तैयार हो । अिस तरह की अिकाअियाँ जितनी होगी अुतनी ही हमारे काम की गहराअी बढेगी । अिसलिये हमें सर्वोदय अिकाअियो का निर्माण करने के काम में लगना चाहिये । अिस सिलसिले मे क्वेकर मित्रमडल की बात आयी और अिस परिसवाद की यह राय रही कि अुस परम्परा का गहरा अध्ययन करना चाहिये और अुससे प्रेरणा लेनी चाहिये । अिन सब बातो की पृष्ठभूमि में अेक मोटा ढाचा सर्वोदय सगठन का और सर्वोदय अिकाअियो का तैयार किया गया जिस पर सर्व सेवा सघ मे और गहरा चिन्तन किया जायगा ।

चौथे दिन का विषय था—सर्वोदय आन्दोलन और युवक । आज सामाजिक कार्यो में युवक कम आते है और जो आते भी है अुन्हे किसी भी कार्यक्रम में तृप्ति नही मिलती । हमारे पास युवको को अिस ओर काम देने, अुनका विकास करने और अुनकी शक्ति मानवीय कार्य के लिये सगठित करने का रास्ता है । अिस सिलसिले में नीचे लिखे मुद्दे सामने आये ।

विद्यार्थी और युवको का आज का सास्कृतिक और सामाजिक सन्दर्भ अलग है । हमें अुनकी आवश्यकताओ को समझना चाहिये । अुनकी मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि का अध्ययन

करना चाहिये । अिसलिये जरूरी है कि हम अुनके सामने सर्वोदय समाज का भावात्मक (पाजिटिव) स्वरूप पेश करें । अुन्हें यह दर्शन हो कि सर्वोदय समाज में केवल त्याग पर ही जोर नहीं, बल्कि शुद्ध तृप्ति पर भी खूब महत्व दिया जाता है । हमारे कार्यक्रम अैसे हो जिनमें युवकों को पराक्रम की (अेडवेंचर) भावना की तृप्ति हो और शिविरों में अगर शरीरश्रम हो तो वह आनन्दमय हो । अुन्हें सृजनात्मक प्रवृत्तियां के लिअे मौका मिले । सच्चे ज्ञान और विज्ञान को समझने के लिये स्वाध्याय मण्डल आदि की स्थापना हो । और यह अत्यन्त आवश्यक है कि युवकों को सर्वोदय आन्दोलन के साथ सम्पर्क होने पर सच्ची फेलोशिप और "डेमोक्रेट्रिक वे आफ लाअिफ" का अनुभव हो ।

अिसके लिये सब से कारगर योजना सर्वोदय इकाइयों का निर्माण है । वही सर्वोदय आन्दोलन का दर्शन देनेवाला कार्यक्रम होगा ।

हमें शिविर चलाने होंगे । विद्यार्थियों के छात्रालय और क्लबों में हमारा प्रवेश होना चाहिये । सामूहिक पदयात्रायें, कलापथकों का निर्माण, लेक्चर-टूर अित्यादि हमारे कार्यक्रमों के अंग हों । विद्यार्थी और शिक्षक का सम्बन्ध आत्मीयता का हो अिसका प्रयत्न किया जाय ।

विद्यार्थियों के प्रश्न की अेक कठिनाअी आज राजनैतिक पार्टियों का विद्यार्थियों के बीच कार्य करना है । आज विद्यार्थी बड़े कन्फ्यूज़न में है । विद्यार्थी जीवन में राजनैतिक भेदभाव के प्रवेश के कारण अनेक मुश्किलें आ गयी हैं । अिसलिअे अैसा अेक विचार आया कि हमारी कोशिश हो कि देश की सब राजनैतिक पार्टियों में अैसा समझौता हो जिससे वे विद्यार्थियों में कोअी संगठन न करें । हां, वे अपना प्रचार करना चाहे तो करें पर अुनमें संगठन न करें, अुन्हें अिससे मुक्त ही रखें ।

अुस दिन का दूसरा विषय था, सर्वोदय कार्य की दृष्टि से समाज की तात्कालिक समस्याओं की ओर हमारा क्या रुख रहे ? हम अुनमें पड़ें या नहीं ? और अगर पड़ना है तो कहां तक अुन्हें हाथ में लें ?

पहली बात मतप्रदर्शन की है । राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर सब से अनुभवी साथी कार्यकर्ता अपना मत अुचित समय प्रकट करें । सर्व सेवा संघ सर्वसम्मति के आधार पर बड़े-बड़े प्रश्नों पर अपना मत प्रकट करे । स्थानीय समस्याओं पर स्थानिक कार्यकर्ता मिलकर सर्वानुमति से मत प्रकट करें ।

जो समस्याअें अपनी पहुंच की हों और जिनमें हम आखिर तक जा सकें अुन्हें अगर शक्ति हो तो ले सकते हैं । अधिकतर मौकों पर सलाह मशविरा दें, जनता के साथ रहें, पर जिम्मेवारी लोगों की हो ।

अिस तरह की समस्याओं का सामना करते समय यह ध्यान रखें कि जनता के अूपर अैसा असर न पड़े कि हम पक्षपात कर रहे हैं, या हमारी स्वार्थ-सिद्धि अुसके द्वारा हो रही है ।

'दरअसल बात हमारे चेतनत्व की है, हमारी सेन्सिटीविटी की है । वह चेतनत्व करुणा-प्रेरित होता है । अिसलिये अगर हममें सच्ची करुणा होगी तो यह सेन्सिटीविटी भी होगी । परन्तु हमें सदा अपने सामने सामाजिक क्रान्ति और सामाजिक मूल्यों का मूलतः परिवर्तन का ही ध्येय रखना है । तात्कालिक समस्याओं के हल करने के पीछे ही पड़ेंगे तो क्रान्ति नहीं सधेगी । अिसका विवेक हममें हो कि वही काम

हम अपने हाथ में ले जिससे हमारा आन्दोलन आगे बढे।

पाचवे दिन का विषय था निर्माण कार्य और विकास योजनाओ के साथ हमारा सहयोग। निर्माण कार्य की दृष्टि क्रान्ति की ही है। असलिये निर्माण कार्य अैसा प्रोसेस (प्रक्रिया) है जो बुनियादी तौर पर शैक्षणिक हो। वह केवल डवलपमेंटल अेक्टिविटी ही न रह जाय। निर्माण काय का कोअी निश्चित अेक ही ढाचा सारे देश के लिय नही हो सकता। गाव की परिस्थिति, हमारी और स्थानिक कार्यकर्ताओ की योग्यता और अुनकी व्यवस्थाशक्ति के हिसाब से अलग अलग स्थाना पर निर्माण कार्य का ढाचा अलग अलग होगा। निर्माण कार्य का पहला सवाल नतृत्व का है। हमें यह देखना है कि आखिर नतृत्व स्थानिक हो, और अैसे लोगो के हाथ मे हो जो स्वय काम करनवाले ही हो। नही ता डर अिस बात का है कि अेक मैनजीरियल वर्ग का निर्माण न हा जायगा।

ग्राम का सगठन ग्रामसभा द्वारा होगा। अुसमें यह आवश्यक है कि स्त्री-पुरुष दोनो अपनी जिम्मेवारी महसूस करे और ग्रामसभा में समान हिस्सा ले। सगठन की दृष्टि से भी सहकारी कार्य, आर्थिक सयोजन का कार्य और शिक्षण का कार्य अिन तीनो को अलग अलग नही होना चाहिये। ग्राम निर्माण का ध्येय और सगठन दोना साथ-साथ चले। कार्यकर्त्ताओ का प्रश्न सबसे मुख्य है। अगर कार्यकर्त्ता बाहर से आयेंग तो फिर वही भद की बात खडी हो जाती है। अिसलिये यहीं के कार्यकर्त्ता तैयार हा और बाहर से कम-से-कम जाय। कार्यकर्त्ता की दृष्टि निर्मा की हो जिससे कि सर्वसामान्य नागरिक की तालीम का काम हो सके। अिसके लिअे अल्पकालीन या लम्बे शिविर भी रख सकते हे। शिविर का काम निर्माण के प्रत्यक्ष काम के साथ जुडा हुआ हो। शिविर में हिस्सा लेनेवालो को लिखना पढना अनिवार्य ही हो अैसा नियम नही रखना चाहिये, क्योकि अनेक बिना लिखे-पढे लोग गावो की समस्याओ को अधिक समझनेवाले होते हे।

अन्य विकास कार्यों के साथ सहयोग के बारे में हमें यह समझ लेना चाहिये कि अक वेलफेयर-स्टेट में हर जगह अिस तरह के कार्य होते रहते हे। हमें अपने विचारो और तरीको का विकास करन के लिअे सहयोग करना चाहिये। जहा अैसा लगे कि क्राति के काम में हम विकास कर रहे हे वहां साथ काम करना चाहिये और जहा भी हो वहा सुझाव आदि देना और शिविर का सगठन करना चाहिये।

हम अभी बडे पैमाने पर निर्माण के काम अपने हाथ में न लेकर देश में बीस तीस स्थानो पर अपने ढग से काम करना चाहिये। साथ साथ दूसरे कार्यों के साथ सहयोग देते रहना चाहिये। ख्याल यह रहे कि हमारा कार्य क्राति का हो। काम करन में यह आवश्यक है कि किस काम को अधिक महत्व देना किसे कम, अिसका विवेक हमें हो।

ग्राम निर्माण के काम का प्राण बाटकर खाने की वृत्ति है। जितना बाटकर खाने की वृत्ति का विकास होगा अुतनी ही गांव की सम्पत्ति बढेगी। कार्यकर्त्ताओं का यह हार्दिक विश्वास हाना चाहिये कि सहकारिता द्वारा गाव की खेती और अन्य कार्यों का विकास हो सकता है। हमारे प्रशिक्षण केन्द्रो में अिस तरह

का तुलनात्मक अध्ययन होना चाहिये कि सामान्य ढंग से विकास और ग्रामदानी गाव में विकास में अन्तर होता है।

निर्माण कार्य का सबसे पहला कदम भूमि-वितरण होना चाहिये, वह भी भूमि की क्वालिटी की दृष्टि से। ग्रामसभा की स्थापना भी प्राथमिक आवश्यकता है।

श्री जयप्रकाश ने अपने समारोप भाषण में जिन सब प्रश्नो पर प्रकाश डाला और कहा कि सर्वोदय अिकाइयों का निर्माण करने की ओर हमें अधिक ध्यान देना चाहिये। क्योंकि व्यक्ति का विकास और विशेष तौर पर सहजीवन के साथ साथ व्यक्ति का विकास ही सर्वोदय समाज का प्राण है।

—देवीप्रसाद

(पृष्ठ २७७ का शेषांश)

पढाअी जाती है। विश्व विद्यालय के स्तर पर अिसके अूपर और चार सात भाषाओ के लिअे दिया जाता है। करीब आधे लोग अंग्रेजी चुनते हैं, अुसके बाद जर्मन और फ्रेंच भाषा आती है। अिससे रूसवालो का निकट भविष्य मे ही दूसरे देशो के साथ सास्कृतिक, राजनैतिक, अेव वैचारिक विनिमय तथा प्रचार के काम में बहुत बडा फायदा होगा। सोवियत सघ में शिक्षा के गुणात्मक विकास पर तो अत्यत महत्त्व दिया ही जाता है, अुसके अलावा यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि वे अिस पर बहुत खर्च भी करते हैं। कुछ अमेरिकन विशेषज्ञो का कहना है कि हम (अमेरिकन) शिक्षा को जितना महत्व देते हैं अुससे दुगुना महत्व रूसवाले देते हैं। अपनी राष्ट्रीय आयका जितना प्रतिशत हम शिक्षा पर खर्च करते हैं वे अपनी राष्ट्रीय आय का अुससे दुगुना भाग खर्च करते हैं।

(पृष्ठ २७८ का शेषांश)

प्राप्त हुआ। गांव वालों ने डेढ रुपया प्रति घर जमा करके गांव की दूकान खोली। अुनसे पूछा कि अब अिसे चलायेगा कौन? गांववालो ने अपने गांव के अेक युवक का नाम लिया। फिर पूछा कि अिसे वेतन क्या दोगे, तो वे यह सुन कर आश्चर्य में पडे। बात अुनकी समझ में नही आयी। अुन्होंने कहा, हम सब गांववाले अिसकी जमीन जोत देंगे और यह हमारे गांव की दूकान का काम करेगा। सही अर्थों में ग्राम-सेवा की यही आर्थिक व्यवस्था टिकनेवाली है।

साहित्यकों से

विनोबा

गत सात-आठ वर्षों से साहित्यका के सामने बोलने का सौभाग्य मिलता रहा है। मुझे भी बहुत खुशी होती है, जब मैं अपने को अुनके बीच पाता हूँ। सिर झुकाने के जितने अधिक स्थान मिलते हैं, मनुष्य का विकास अुतना ही शीघ्र होता है। जिसे सारी सृष्टि के कण-कण में आत्म दर्शन, परमात्मा की विभूति का दर्शन होता है, अुसके लिअे तो सर्वत्र ही सिर झुकाने की सहूलियत हो जाती है। अैसे जितने स्थान अुपलब्ध हो, अुतना ही मनुष्य के लिअे अच्छा है। मेरे लिअे साहित्यिको का अेक अैसा स्थान है, जहाँ स्वभाव से ही मैं नम्र हो जाता हूँ।

ऋग्वेद में यह वचन आया है कि ब्रह्म जितना व्यापक है, अुतनी व्यापक वाणी भी है। यहाँ 'वाणी' शब्द का अर्थ केवल वह स्थूल वाणी नही, जिसे हम बोलते है बल्कि अेक ब्रह्म शक्ति है, जिसके आधार पर मनुष्य चिन्तन करता है, जिसे 'चिन्तन प्रकाशन' कहते हैं। चिन्तन को समझना भी पडता है। चिन्तन करना, अुसे प्रकाशित करना और अुसे समझना ये तीनो वाणी द्वारा होते हैं। मन चिन्तन करता है, वाणी बोलती है और कान सुनते हैं। मन, वाणी और कान के ये भेद तो स्थूल ही है, किन्तु यहाँ तो 'वाग' शब्द का ही प्रयोग किया गया है। अुसमें मन, वाणी और कान तीनो आ जाते है। वह वाक्-शक्ति साहित्य है। साहित्य से ब्रह्म चिन्तन और फिर ब्रह्म प्रकाशन कर सकते हैं। अुसके बिना ब्रह्म अप्रकाशित ही रह जायगा। अिसीलिअे साहित्यिक का ध्यान स्वाभाविक ही सृष्टि की सभी बातो की ओर जाता है। वह भला बुरा गुप्त-प्रकट, वर्तमान और भविष्य सभी चीजो का ध्यान रखता है। तब जो काम मैंने सात-आठ सालो से अुठाया है, अुस तरफ भी अिनका ध्यान होना ही चाहिये। अत अुनसे यह कहना कि 'आअिये, हमें सहायता कीजिये, हमारे काम की ओर ध्यान दीजिये' अज्ञान है। वे अिन बातो पर ध्यान नही देते, बल्कि बातें ही अुनके ध्यान में आ जाती हैं। अिसलिये मैं यह महसूस नही करता कि वे ध्यान नही दे रहे हैं। जब कभी साहित्यिको से बात करने का मुझे मौका मिला, यही पाया कि अुनके दिल में पर्याप्त सहानुभूति है। हर प्रान्त और हर भाषा में जो मगल, सत्य और शिव है, अुस तरफ साहित्यिको की स्वाभाविक ही सहानुभूति होती है। भूदान, ग्रामदान, मालकियत छोडने की बात, शरीरपरिश्रम का महत्त्व, विश्व-मानुष का निर्माण, ये सारी बाते अैसी हैं, जिनका स्थूल अर्थ करने पर दोष ही पैदा होंगे। किन्तु सूक्ष्म दृष्टि से अुनकी ओर देखें, तो वह अेक बहुत ही मगल और शुभ विचार दीख पडेगा।

आगे हमारे लिअे किसी प्रकार सकुचित बनना या बने रहना सुखकर नही होगा। आज विज्ञान की शक्ति मदद में आ गयी है और आत्म ज्ञान की तो अपने देश में पहले से थी ही। आत्मज्ञान हमें व्यापकता तो सिखाता ही था, किन्तु अब विज्ञान अुसकी भौतिक आवश्यकता भी बताता है। अिस युग में अगर हम व्यापक नही बनेंगे, तो हमारा भौतिक जीवन असभव हो जायेगा, अैसी परिस्थिति विज्ञान अुपस्थित करता है। कारण आत्म ज्ञान और विज्ञान अेक हो गये हैं। तीसरी भी अेक शक्ति

है और मुझे अिन तीनों शक्तियों का दर्शन हो गया है। अुस तीसरी शक्ति को मैं 'विश्वास-शक्ति' कहता हूं। विज्ञान-युग में राजनीति, सामाजिक योजनाओं और समाज-शास्त्र में अिसकी बहुत जरूरत है। हममें जितनी विश्वास-शक्ति होगी, अुतने ही हम अिस युग के अनुरूप बनेंगे। किन्तु अिन दिनों बहुत ही अविश्वास दीखता है। खासकर राजनैतिक, धार्मिक और पांथिक क्षेत्र में यह अविश्वास चला आ रहा है, फिर भी वह टिकनेवाला नहीं है। अगर हम टिकाना चाहें, तो भी वह न टिकेगा। राजनीति में अविश्वास को अेक बल माना जाता है। अुसे सावधानता का लक्षण माना जाता है। लेकिन मैं मानता हूं कि जिस क्षण मनमें यत्किंचित् भी अविश्वास पैदा हो वह क्षण हमारे लिअे असावधानता का है। पूर्ण विश्वास के बिना राजनीति नहीं सुधरेगी। राष्ट्रों में झगडे बढेंगे, पांथिक झगडे भी बढेंगे और विज्ञान युग में अुसका परिणाम बहुत खतरनाक होगा।

'वेदान्तो विज्ञान विश्वासश्चेति शक्तयस्तिस्र ।
येषा स्थैर्ये नित्य शांतिसमृद्धी भविष्यतो जगति ॥'

वेदान्त याने वेद का अन्त, वेद का खात्मा। वेद याने सब प्रकार के काल्पनिक धर्म। दुनिया में जितने 'कन्वेन्शनल' धर्म हैं, अुन सब का अंत ही वेदान्त है। अिसलिअे अुसमें अिस्लामात, जैनान्त, बौद्धांत, सिखान्त अिन सबका अन्त आ जाता है। सत्य की खोज, सत्य की पहचान और सत्य को मानना ही वेदान्त है। विज्ञान याने सृष्टितत्त्व की खोज अगर हमारा शारीरिक जीवन अुनके अनुकूल बने, तो संपूर्ण स्वास्थ्य की अुपलब्धि होगी। आगामी युग का चित्र मैं अपने मन में यही रखता हूं कि अुस युग में हर बीमारी के लिअे अुपाय अुपलब्ध होंगे, लेकिन मनुष्य को कोअी भी बीमारी ही न होगी। अुपाय अुपलब्ध होने पर भी अुनके अुपयोग का अवसर ही अुपलब्ध न होगा। आंखों के लिअे अुत्तम-से-अुत्तम चश्मा अुपलब्ध रहेगा, पर आंखों को अुसकी किसी प्रकार की जरूरत ही नहीं रहेगी। हर गांव में डाक्टर हो, अैसा अेक आदर्श अिन दिनों माना जाता है। लेकिन आगे की दुनिया में डाक्टर का नाम ही नहीं रहेगा, सभी तन्दुरुस्त रहेंगे। बीमारियों के कारणों का निर्मूलन नहीं होता, अिसीलिअे अुपायों के अुपयोग करने का मौका मिलता है।

अिस तरह राजनैतिक, सामाजिक या कौटुंबिक कोअी भी हो, ये तीनों शक्तियां दुनिया के लिअे *तारक होंगी, अैसा हमने माना है और* यही बात हम आपके सामने भी रखते हैं। अिसमें यदि आपको शुद्धि या वृद्धि करनी हो, तो आप कर सकते हैं। सौभाग्य से मुझे हिन्दुस्तान की सब भाषाओं के सर्वोत्तम साहित्य से परिचय प्राप्त करने का मौका मिला है और नित्य कुछ-न-कुछ अध्ययन करता ही रहता हूं। बीच में अेक जापानी भाअी आये थे। वे दो महीना रहे। अुतने में अुन्होंने मुझे जापानी भाषा सिखा दी। अेक जर्मन बहन साथ में थी, अुसने मुझे जर्मन भाषा सिखायी। अिस तरह मैं सीखता ही रहता हूं, क्योंकि मैं स्वभावतः विद्यार्थी ही हूं। अतअेव मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि हम जो कर रहे हैं, अुस तरफ आपका ध्यान तो है ही, किन्तु अुसका परीक्षण भी कीजिये और अुसी दृष्टि से हमारे सामने अपना निचोड रखिये। अुससे हमें बहुत मदद मिलेगी। साहित्यिक बंधुओं का आशीर्वाद मिलेगा, तो मेरा काम तीव्र तथा बलवान बनेगा।

समाजवाद, सर्वोदय, सत्याग्रह : अेक व्याख्या

जैनेन्द्रकुमार

समाजवादी विचार

समाजवादी विचार को आज आम तौर पर सभी जगह मान्यता मिल चुकी है। अिसकी व्याख्या और प्रयोग की मात्रा के बारे में जहा-तहा मतभेद जरूर हैं, लेकिन अितना तो स्वीकृत हो चुका है कि मूल्य समाजाश्रित है और व्यक्ति को तदनुरूप और तन्निमित्त रहना चाहिअे। वह समाजवाद, जो अपने को वैज्ञानिक कहता है—यहां तक जाता है कि सत्ता, सम्पदा और सामर्थ्य का सब अधिष्ठान समाज के व्यक्त प्रतीक स्टेट में ही होगा। कालान्तर में स्टेट यों अनावश्यक हो जायेगा, लेकिन अुससे पहले समाज के विशेषकर बहु-सख्यक दीन-हीन के नियुक्त प्रतिनिधि के रूप में स्टेट का ही वह तत्र रहेगा जहा अधिकार का स्रोत होगा। समाजवाद के अन्यान्य रूप भी अधिकार (मूल्य) के केन्द्र को अमुक समुदाय या सगठन में निहित करते हैं।

अिस प्रकार समाजवादी विचार के अमल के लिअे सगठन और चुनाव की पद्धति का आधार आवश्यक होता है। अुसके भीतर व्यक्ति की जितनी स्वीकृति आ जाती है, अुतनी ही अुसे पर्याप्त है, अधिक नहीं।

यों तो आज अधिनायक-तत्र और लोकतत्र नाम की दो प्रकार की समाज-व्यवस्थायें चलती मानी जाती हैं। पर दोनों समाजवाद के मूल विचार को स्वीकार करती हैं। पूंजीवादी कहे जानेवाले देशों में भी समाजवाद की मान्यता कम नहीं है।

व्यवस्था के क्षेत्र में लगभग यह विचार अन्तिम बन गया है। भारत में भी कम्युनिस्ट पार्टी की तो बात ही क्या, काग्रेस और दूसरे दल भी अपनी वैसी ही श्रद्धा जतलाते हैं। दूसरा विचार यदि है, तो वह व्यवस्था के क्षेत्र में मानो गणनीय नहीं समझा जाता। आध्यात्मिक, नैतिक और आदर्शवादी कहकर अुसे किनारे रहने दिया जाता है, यानी अुसका सबध व्यक्ति भर से है और अन्तत. वह व्यक्तिमत्ता को बढाने वाला और सामाजिकता को घटानेवाला है। अिस दृष्टि से अुसे प्रतिक्रियावादी और कभी खतरनाक भी कहा जाता है।

सर्वोदय विचार

मेरी दृष्टि से सर्वोदय-विचार अुसी प्रकार का खतरनाक विचार है। खतरा दोहरा है। अेक यह कि वह आत्मा की ओर से व्यक्तियों को ले और वहीं अपने ध्यान की सीमा बाध कर समाज से अछूता और अूंचा बन रहे। दूसरी ओर खतरा यह भी है कि नाना समाजवादों की भांति सामाजिक योजनाओं में वह अितना सनिविष्ट हो जाये कि व्यक्ति-सस्कार अुससे छूट जाये और अैहिक (सेक्यूलर) कर्म योजना ही हाथ रह जाये।

फिर भी सर्वोदय-विचार को अपनानेवालों ने जान-बूझकर यह खतरा अुठाया है। निश्चय ही सर्वोदय-विचार नैतिक और आदर्शवादी है। पर साथ ही दावा है कि वह समाज-परिवर्तन और यदि आवश्यक हो, तो समाज-क्राति के अिष्ट के लिये भी न केवल सगत है, प्रत्युत समाज और साम्यवादी विचार से वह अुस दिशा में अधिक अुपयुक्त और अधिक समर्थ है। यह

दावा सर्वोदय में श्रद्धा जतलानेवाले लोगो के लिये स्वय अपने-आपमें अेक चुनौती है । अुसे ही फिर हम अुनके व्यवहार की परीक्षा के लिअे कसौटी भी कह सकते हैं ।

भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस का समाजवादी लक्ष्य है । सर्वोदय के लिअे वह भाषा और वह दृष्टि पर्याप्त नही ठहरती । यहा मे अुस भेद को अपने लिअे स्पष्ट कर लेना चाहता हू ।

सर्वोदय गाधीजी की परम्परा से हमें प्राप्त हुआ । अुनको हम महात्मा कहते है और राष्ट्रपिता कहते हैं । राष्ट्रपिता कहकर हम अुनके राजनैतिक कर्तृत्व और नेतृत्व का अभिनन्दन करते हैं, पर महात्मा कहकर मानो यह भी जतलाते हैं कि वह कर्तृत्व अुनकी अियत्ता नही है, वह राष्ट्रीय से अधिक है ।

असल में जीवन के सदा दो तट रहे हैं । अुनका दोपन अितना साफ है कि कोई तत्ववाद सफलता के साथ अुन्हे लाँघ नही पाता । विचार कभी दूर तक जाता है, तो अुसे कहना होता है कि सत्य ब्रह्म है, जगत् मिथ्या है । कभी विचार दूसरे छोर पर जाकर कह अुठता है कि ब्रह्म आदि भ्रम है, जगत् ही सब ओर सत्य है । अैहिक और आध्यात्मिक, आर्थिक और पारमार्थिक—ये किसी भी अुपाय से पूरे तौर पर अेक हो नही पाते । अिस ओर-छोर के बीच ही जीवन की परिभाषा और अुसका पुरुषार्थ है ।

गाधी अेक व्यक्ति अिधर अितिहास में अैसा हुआ कि अिस या अुस ओर बिठा कर अुसे समझ लेना सम्भव नही हो पाता । सन्तों के लिअे आदर्श सन्त कहे, तो अयुक्त प्रतीत नही होता, कूटनीतिक राजनेता के लिये अुसे ओीर्प्या का विषय कहे, तो भी अन्यथा नही लगता । अैसी घटना अितिहास में यदा-कदा घटित होती है, और होती है तो जैसे अितिहास को जोर से झकझोर जाती है । जन-मानस में अेक आलोडन मचता है और अेक नये समन्वय का आरम्भ होता है ।

कर्मक्षेत्र यानी कुरुक्षेत्र वह युद्धक्षेत्र बने बिना नही रहता । सघर्ष वहाँ अनिवार्य है । अितिहास जैसे मुख्यता से युद्धो का अितिहास बन जाता है । कितना भी टालिये, सघर्ष सामने दिखाओ देता है । अुससे बचना सभव नही है । मुड कर हटना बचना नही, बल्कि केवल आँख बचाना साबित होता है, क्योकि बाहर के सघर्ष से हटते ही वह द्वन्द्व पहुँच जाता है और वहाँ वह अधिक ही विकराल बनता है ।

गाधी के महात्मापन का निर्माण अिस कुरुक्षेत्र में से हुआ । शान्ति और शास्त्र में से नही, युद्ध और कर्म में से हुआ । अुनका जीवन सतत युद्ध में से चला और बना तथा मृत्यु अुन्होंने योद्धा की ही पायी ।

अिस योद्धा, महात्मा की युद्धनीति को दो शब्दो से व्याख्या मिलती है । अेक सर्वोदय, दूसरा सत्याग्रह ।

सत्याग्रह का मार्ग

सर्वोदय और सत्याग्रह से व्याख्या पाकर गाधी की युद्धनीति, सही शब्दो में जीवन-नीति, समाजवादी लोकनीतियो से मूलत भिन्न हो जाती है । अिस भिन्नता को समझ लेना बहुत आवश्यक है ।

समाजवादी विचारसरणी, समूह और श्रेणी की गणना से छूट नही सकता । अल्पमत और बहुमत का आधार अुसके लिये अनिवार्य है ।

अल्पमत को अधिक-से-अधिक सरक्षण देने की अिच्छा रखते हुअे भी बहुमत अुसके बल से अपने को वचित किये बिना रह नही सकता। अधिकाश तो अल्पमत के प्रहार से अपने को सुरक्षित बनाये रखने की चिन्ता में बहुमत को व्यग्र होते रहना होता है। अिस और अिसी आधार पर बने दूसरे परे-पन (Exclusivism) की अनिवार्यता समाजवादी विचार मे से निकल ही नही सकती।

सर्वोदय में अिस परे-पन का सर्वथा अस्वीकार है, सौ में निन्यानबे अेकत्रित हो, तो भी बचे सौवे को परे रखने या पराया गिनने का समर्थन सर्वोदय में से नही प्राप्त होगा। अुस अन्तिम को, अेकाकी को, कहो कि असामाजिक को भी—तिरस्कृत या अस्वीकृत करने की सीख सर्वोदय में से नही मिलेगी। सर्वोदय की यह निष्ठा अिस तरह सबको परस्परपूरक बनाने की है और कभी किसी अवस्था में किसी को असामाजिक या अपराधी कह कर समाप्त करने की भावना को वह अनुमोदन नही दे सकता।

अहिंसा का आधार

अिस तरह सर्वोदय अेक ही बार सदा के लिये अहिंसा को अपना धर्म स्वीकार करता है। अहिंसा का मतलब है बहुमत पर अल्पमत की, सबल पर निर्बल की सुरक्षा का दायित्व। अल्पमत को न केवल अभय मिले, बल्कि समादर प्राप्त हो। अपराधी को समाज की ओर से चिकित्सा मिले, वह पूरी सुविधा और सभाल मिले, जो रोगी को अस्पताल में देने की कोशिश की जाती है, अर्थात् अेक व्यक्ति की भी सभावना से वचित रह कर समाज अपने को सतुष्ट न माने। अुसका प्रयत्न रहे कि कब और कैसे अुस व्यक्ति की आतरिक सभावनाओ को अवसर और विकास प्राप्त हो।

गणना के आधार पर निर्मित होनेवाली समाजवादी निष्ठा अन्तत: किसी-न-किसी सीमा पर जाकर परे-पन और पराये-पन की भावना के अधीन हुअे बिना रह नही सकती। यो चाहे बडे-से-बडा सगठन बनाने में वह सफल हो जाये। मान लीजिये कि राजनीति को मूल म रख कर रूस के नेतृत्व में अिधर कम्युनिस्ट देश और अुधर अमरीका के नायकत्व में मित्र देश आपस में आज किसी सन्धि पर आ जाते हैं और विश्व-शान्ति की परिस्थिति बन जाती है। तब वह शान्ति वास्तविक और सजीव होगी, अैसा क्या किसीके मन को आश्वासन होना सभव है? और यह आश्वासन का अभाव अिस कारण न होगा कि अुस सन्धि की धाराओ मे कुछ त्रुटि होगी, बल्कि अिस कारण कि मेरे-तेरे का भेद-भाव अुसके नीचे विद्यमान रहने ही वाला है। अपने-पराये स्वार्थों के हिसाब पर जो समझौता है, अुसमें बीज अेकता के विकास के अुतने नही रहते, जितने फूट के रहते हैं। यही कारण है कि दलगत पद्धति कर्म योजना में कितनी भी सफल होती दीखे, मानव सबधो में अुस कारण दुर्भाव और दुर्गंध भीतर-ही-भीतर मनपे बिना नही रहते। यहाँ तक कि अुससे छुटकारा पाने के लिये फिर अन्त में 'पर्जेज' (Purges) की आवश्यकता हो आती है। अिन पर्जेज की विकराल हिंसा, आप सच मानिये, द्वेष और आवेगपूर्वक नही होती, बल्कि वैज्ञानिक तटस्थता के साथ होती है। यह मानने का आधार नही है। स्टालिन के मन में अुनके शासन-काल में जो फासियाँ हुअी, अुनके लिये तनिक भी दोष-स्वीकार का

भाव नही था, बल्कि सत्यता यह है कि अिस सब दारुण व्यापार को स्टालिन सह सके, तो अिस भरोसे कि वे क्रान्ति के रक्षण में अपना कर्तव्य पाल रहे और अेक प्रकार की तपश्चर्या कर रहे थे। स्टालिन की महानता नही तो और किसी प्रकार अुन क्रूर काण्डो से मेल नही खा सकती, और यही कर्मवादी विचार की विडम्बना है।

दुनिया अेक है

आज विज्ञान की प्रगति के साथ दुनिया छोटी पडती जा रही है। मतलब कि हमारा अपनेपन का भाव अब किसी तरह सारी दुनिया तक फैले बिना नही रह सकता। वार्ता या यात्रा के साधन अितने द्रुत हो गये है कि देश-विदेश की सीमायें हमें साफ फर्जी नजर आने लगी है। विमान में जा रहे है और नीचे कब कोअी देश पार हो गया, पता नही चलता ! यह जाने बिना रहा हो नही जाता कि पृथ्वी अखड है। किसी देश की राजधानी लीजिये, वहा आपको सहसा ही विश्व-दर्शन हो जायेगा। सब देश और सब भाषाओ के लोग वहा आपको घूमते-फिरते दिखाओ देंगे। तो आज की अिस हालत में समझ नही आता कि कैसे कोअी के विचार काम दे सकता है, जो अपने परायेपन को आधार में लिये बिना चल नहीं सकता। अनिवार्य है कि अुन्नति और विस्तार के अिस युग में हमारे पास सामाजिक और राजकीय कोअी अैसा विचार हो, जो अनुरूप, विशाल और मौलिक हो, विभक्त नही, समग्र हो, समाज को ही जो न ले, समष्टि को ले, वस्तु का ही न हो, आत्मा का भी हो, विषयगत न हो, जीवन व्यापी हो, सवपेप में जो अखण्ड विचार हो और आचार भी, जिसमें गर्भित हो। सर्वोदय वह अविचल विचार है, जो मानव-समस्या के हार्द पर पहुचता है। वह व्यक्ति और समाज अिन दो को पृथक रूप से नही लेता और न अिस तरह स्व पद की समस्या को तीखी धार मिलने देता है। वह अिस मूल निष्ठा से कभी किसी कारण अच्युत होने को तैयार नही है कि विश्व अेक और अखण्ड है और जो चिन्मय सत्य परिपूर्णता को थामे है, अुसके सदर्भ में सब आत्मीय है, अनात्मीय कही कुछ नही है।

'सर्वोदय' शब्द में अिस मूल श्रद्धा की घोषणा है। विश्वासी के लिअे मानो वह अेक प्रण है और अुसमें से जो निरपवाद धर्म प्राप्त होता है, वह है अहिंसा अर्थात् शर्तहीन, प्रश्न-हीन जीवन का स्वीकार और प्रेम।

अिस सर्वोदय-निष्ठा और अहिंसा की शर्त से अलग चल कर कोअी विचार स्थिति नही दे सकता कि जिसमें सबकी, कुल की, सौ में सौ की सभावनाओ का लाभ समाज को मिले। अिससे हट कर जो भी विचार होगा, फिर अुसे चाहे अुदारता की अुत्कर्ष सीमा पर ही क्यो न ले जायें, वह सौ में से निन्यानवे के अेक जुट होने पर नये सौवे को तज रहन या ऋण कर देने की अनुमति दिये बिना नही रह सकता। साफ ही वह विचार समाज में हार्दिक आत्मीयता और अेक रसता लाने में अन्त तक भला कैसे सफल हो सकता है ?

सत्याग्रह-सूत्र

यह तो अुस जीवन-नीति की निष्ठा और भावना का अन्तर-पक्ष हुआ। सर्वोदय अुसका सूत्र है। आगे अुसका शोपार्थ दूसरा है धर्म पक्ष और अुसका सूत्र है सत्याग्रह।

सत्याग्रह में खण्ड का और गणना का विवेक है। सत्य सम्पूर्ण है। पर हम तो अपूर्ण

है। अैसे हमें लगने वाला सत्य भी अश सत्य होगा। पर हमें अपने को ही नही टालना है, तो अुस अश सत्य को भी हम टाल नही सकते। यहाँ से अुस सत्य के प्रति जीने और अुसके लिये मर जाने तक का धर्म प्राप्त होता है--यही सत्याग्रह।

आग्रह हो नही सकता, अगर अपूर्णता न हो। अिस अपनी अपूर्णता का गहरे में यदि भान हो, तो हमारे पास विनय क सिवा दूसरे के लिअे कुछ रह नही जाता। अिस तरह सत्याग्रह में किसी की अवज्ञा नही की जा सकती, न किसी का अनिष्ट विचारा जा सकता है, सबके प्रति अिस विनय-भाव, प्रेम-भाव को रखते हुअे अपने को लगने वाले सत्य के प्रति तत्पर और आग्रही रहने का कर्तव्य और अधिकार स्वय ही व्यक्ति को मिल जाता है।

बस, यही है सर्वोदयी युद्ध और योद्धा का रूप। अिसमें से हृदय-परिवर्तन की अद्‌भुत शक्ति या प्रादुर्भाव हो सकता है। हृदय-परिवर्तन के आधार पर व्यवस्था-परिवर्तन अवश्यभावी और स्थायी होगा। अुसमें से फिर प्रतिक्रिया न अुपजेगी। अिसमें कष्ट दिया नही जायेगा, सिर्फ लिया और सहा जायेगा। सामने से आये प्रहार का प्रतिरोध प्रहार से नही होगा, हिंसा का प्रतिकार हिंसा से नही होगा, सख्या-बल अथवा शरीर-बल या मेल अुस बल से नही होगा, वह केवल सविनय सत्याग्रह से होगा।

यह सूत्र गर्भित रूप में था तो शास्त्र में, लेकिन जब अुसका प्रयोग तत्पर आचरण द्वारा गाधीजी ने व्यापक समस्याओ पर किया तो जैसे अेक नयी सामाजिक चालना शक्ति (Social Dynamism) का दर्शन और आविष्कार हुआ। अब तक मानव-अितिहास और मानव-विज्ञान जैसे विरोधी-प्रतिरोधी शक्तियो के संघर्ष के रूप में विकास की प्रक्रिया को समझता आया था, वही से समाज-विज्ञान और समाजवाद ने विकास के अभिक्रम का अपना निर्धारण किया था। गाधी के अभियान से जैसे मानव-चिन्तन को अेक नया प्रकाश और नया आयाम मिला। मालूम हुआ कि सच्चे क्रातिकारी सघर्ष का रूप विरोधी-प्रतिरोधी बलो की टक्कर का नही है, बल्कि विरोधी को अविरोधी-शक्ति से मोर्चा देने का है। विरोधी द्वेष का सही पराभव अविरोधी प्रेम से ही हो सकता है। विरोध का शमन प्रतिविरोध से नही साधा जा सकता, बल्कि अुस तरह विरोध-चक्र को और तीव्र ही किया जा सकता है।

आज विश्व जिस सकट के कगार पर अपने ज्ञान-विज्ञान के अुत्कर्ष के बल पर चढ कर आ टिका है, वहाँ अिसके सिवा रक्षा का अुपाय नही रह जाता कि वह पहचाने कि विरोध का सामना प्रतिविरोध से करना व्यर्थता और मूर्खता है, वह अवैज्ञानिक है। और अनुभव करे कि अुस चिन्तन-पद्धति और विचार-धारा को अेकसाथ छोड देना होगा, जो अुसीको अुपाय के रूप में प्रस्तुत करती है। विरोधो के सामने के लिये विरोधी शक्ति के निर्माण की कला सीखनी होगी, अन्यथा निस्तार नही है। जीवन के सपूर्ण ध्वस को दूसरी तरह बचाया नही जा सकेगा।

राजनीति का माप

दलगत राजनीति से अलग किसी दूसरी व्यावहारिक राजनीति का दर्शन सहसा हमें नही होता, अुसकी सभावना को कल्पना में भी जुटाना कठिन होता है। अिस पर गांधीजी की याद को भी हम सहसा यह कह कर तरह

देते हैं कि वे महात्मा थे और कि अुन्हें विदेशी सत्ता से युद्ध करना पडा था। अुनके काम की परिस्थिति परतन्त्रता की थी, अब स्थिति स्वतन्त्रता की है। मानो तब जो त्याग का, सेवा का, अकिंचनता का मूल्य था, वह देश की पराधीनता के ही कारण सही था। स्वाधीनता के समय में मूल्य वह नहीं रहना चाहिये, पलट जाना चाहिये। यों महत्व जो सेवा से हट कर शासन में आ गया है, अुससे सहसा अुस विचार और दृष्टि का मोह और गौरव भी बढ गया है, जिसमें दल सगठित करना और प्रचार चुनाव के द्वारा सत्ता प्राप्त करना लोक-कल्याण का सबसे अुपयोगी ढग समझा जाता है।

जिस नीति का सर्वोदय अेक बाजू है, सत्याग्रह अुसीका दूसरा पहलू है। अुसके बिना सर्वोदय अधूरा है। वह फिर जैसे निर्वीर्य भावुक सदाशयता का रूप हो जाता है। सर्वोदय के बिना सत्याग्रह भी अुसी तरह अेक अुद्दण्ड और अुच्छृखल प्रकरण बन जाता है। सर्वोदय अन्तरग और भावनात्मक किन्तु अन्तर्भाव में यदि वह प्रखर और प्रबल है यानी भीतर सबके प्रति प्रेम की आकुल विह्वलता है, तो किसी-न-किसी प्रकार सत्याग्रही धर्म के रूप में प्रकट हुअे बिना वह न रह पायेगा। भावना सदा सर्वोदयी हो, पर अनुरूप धर्म सदा सत्याग्रही होगा। यह अिसलिये कि प्रत्येक स्थिति में गति की आवश्यकता गर्भित होती है। अिस आवश्यकता की सुधि जागृत मानस में अिस रूप में होती है कि स्थिति में अमुक दोष है। अिस तरह सत् का आविर्भाव सदा ही असत् को अुखाडता और ललकारता हुआ आता दिखाओ देता है। स्थिति में, हर स्थिति में गर्भित दोष अ र विकार से लडते चलना, गतिशील चेतना का धर्म हो जाता है। यही कारण है कि अितिहास में सर्जक चेतना को कष्ट भोगना, बलि होना पडता है, जब कि शासन बनने का मान और भोग दूसरो को मिलता है।

अेक ही रास्ता

सत्याग्रह की यह अमोघ, समाज-संस्कारणी चित्-शक्ति यदि चिन्ताग्रस्त, शिथिल और निष्क्रिय होगी, तो सर्वोदय अुतना ही स्वप्न होता जायगा। आदमी के भाग्य में क्या कभी ठडा होना बदा है। न प्रकाश ही अपने में बन्द हो सकता है। अूपर विदेशी सत्ता की स्थिति सत्याग्रह को विहित बनाती और विदेशी हुकूमत अुसे निषिद्ध कर देती है—अिस क्रान्ति का अुस सत्याग्रह से कोओी सम्बन्ध नहीं है, जो सतत और अनिवार्य धर्म है। देश की पराधीन-स्वाधीन स्थिति के अन्तर से मानव-मूल्यों में अन्तर नहीं हो जाना चाहिये। भारत के लिअे यह सौभाग्य की बात नहीं है कि मूल्य जो मौलिक थे, अुन्हें परिस्थितिजन्य कह कर जैसे अुनसे छुटकारे का मार्ग पा लिया गया है।

शासन को केन्द्र मान कर जिन जीवन-मूल्यों का निर्माण हुआ और हो रहा है, समाजवादी विचार अुनमें परिवर्तन नहीं ला सकता। लगभग समाजवाद शब्द से अुन कृत्रिम मूल्यों को पोषण ही दिया जाता है। मूल्य वे स्थायी हैं और वे ही सहायक होंगे, जहाँ केन्द्र में मानव है, सत्ता अथवा सगठन नहीं है। अुन मूल्यों को बुनियाद पर चलने वाला रचनात्मक, सामाजिक या राजकीय काम हमें आगे बढा सकता है और स्थिति में सान्त्वना ला सकता है, अन्यथा काम भी बहुत होता रहेगा और समस्या भी भीतर से अुलटी अुलझती जायगी। छटपटा कर हम बहुत कुछ करते-धरते दीखेंगे। लेकिन

(शेषांश पृष्ठ २९४ पर)

हमें विश्वव्यापक बनकर सेवा का काम करना है।

विनोबा

गंगोत्री में गंगा बहुत निर्मल और परिशुद्ध होती है, पर अुसकी धारा छोटी होती है। आगे-आगे अुसका प्रवाह जोरदार और शुद्ध होता है, अुसका विस्तार होता जाता है। सागर-संगम के स्थान पर तो वह अत्यधिक बढ जाता है। फिर भी जैसे-जैसे अुसका विस्तार बढता है, वैसे-वैसे स्वच्छता और निर्मलता कम होती है। दुनिया में बहुत दफा अैसे ही अनुभव आते हैं कि जहाँ संख्या-वृद्धि हुअी, वहाँ गुण का कुछ ह्रास ही हुआ और जहाँ गुण पर जोर दिया गया, वहाँ संख्या कम हुअी। मैं अिस घटना पर बहुत चिंतन करता हूँ। चिंतन का मूल आधार या परम आदर्श परमेश्वर है। जब अुसकी तरफ देखता हूँ, तो यही दीख पडता है कि वह परम शुद्ध और परम व्यापक है। वहाँ शुद्धि और व्यापकता का विरोध नही दीखता, दोनो अेक साथ दीखते हैं। हम आसमान की तरफ देखते हैं तो यही दृश्य दीख पडता है कि अुसकी व्यापकता के साथ अुसकी निर्मलता में कोअी कमी नही है—वह परम निर्मल और परम व्यापक है। लेकिन गंगा की हालत कुछ दूसरी ही है और हमारी हालत गंगा के समान है। आखिर अैसा क्यों? हम परमेश्वर की प्रतिमा नही बन सकते हैं। अुसके साथ हमारे जीवन और अनुभव का मेल नही बैठता, अिसकी क्या वजह है?

अेकाग्रता में समग्रता साधी जाय

अिस पर जब मैं बहुत सोचता हूँ, तो मालूम होता है कि जो अेकदेशीय रह कर शुद्धि की कोशिश करते हैं, अुनकी शुद्धि संकोच में टिकती है। हमारा चिंतन अेकदेशीय होता है, अिसीलिये व्यापकता याने संख्या और शुद्धि, याने गुण के बीच में विरोध पैदा होता है। व्यापक चिंतन में यह विरोध लाजिमी नही है। हमें सोचना पडेगा कि हमारा चिंतन कहा तक ठीक चलता है? हम अेक बात निकालते हैं, तो दूसरी बात ढीली पड जाती है। दूसरी निकालते है, तो पहली ढीली पड जाती है और तीसरी निकालते हैं, तो दोनो ढीली पड जाती हैं। अिस तरह अेकाग्रता और समग्रता में बाधा पहुँचती है। अैसा जहा होता है, वहा कहना होगा

(पृष्ठ २९३ का शेषांश)

जिस वेदना के कारण छटपटाहट हुअी है, वह भी अुन सब चेष्टाओं से बढती और फैलती ही प्रतीत होती है।

मेरी श्रद्धा है कि सर्वोदय विचार में यह पर्याप्तता और अनुकूलता है, जिसमें से स्थिति को, देशीय-अन्तर्देशीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को पूरा अुत्तर आ सकता है। किन्तु साथ ही आवश्यक है कि वह सत्याग्रह से संयुक्त हो, तभी वह समर्थ कर्मयोगी और क्रान्तिकारी होगी। अन्यथा सर्वोदय-विचार स्वयं दलीय और शास्त्रीय हो बैठेगा, जैसे कि समाजवाद है।

कि अेकाग्रता की अुस कल्पना में ही कोई दोष है। कोअी अैसी युक्ति सधनी चाहिये, जिसमें अेकाग्रता और समग्रता अेकत्र हो सके। जबकि साधक अक्सर सब लोगो को टाल कर ध्यान के लिअे अेकात में जाते हैं और वहा परमेश्वर के साथ अेकरूप होने की कोशिश करते हैं, मीरा सारे बन्धन तोड दुनिया के सामने नाचती है और कहती है–'मैं तो गिरधर आगे नाचूंगी,' तो कहना पडेगा कि अवश्य ही अुसे कोअी अैसी युक्ति सध गयी है, जिससे समग्रता में अुसकी अेकाग्रता बाधक नही होती है। कोअी अैसी वस्तु अुसे हासिल हो गयी है, जिससे विविध रूपो से मडित सारी सृष्टि में अुसको अेकता की अखड अनुभूति होती है, किन्तु जब हम अेक चीज पर जोर देते हैं, तो दूसरी चीज ढीली पड जाती है। बाबा ने सर्वोदय-पात्र की बात शुरू की तो कुछ लोग पूछने लगे कि आपका ग्रामदान का विचार तो पीछे रह गया। यह चिंतन का दोष है। मैं यह सूचित करना चाहता हूँ कि हमें अपने चिंतन का दोष देखना और सशोधित करना चाहिये।

पक्षमुक्त और पक्षातीत

पक्षमुक्त और पक्षातीत यह अेक नयी परिभाषा है। अुस पर अब हमें अुदारता से सोचना है। मैंने 'पक्षातीत' शब्द को स्वीकार करके दरवाजा खोल दिया है। लेकिन मेरा मन दार्शनिक होने से किसी दरवाजे को खोलते समय सभावित खतरो पर अवश्य सोचेगा। मैंने दरवाजा तो खोल दिया, लेकिन अुसमें जो खतरे हैं वे मेरी आँखो से ओझल नही हुअे हैं। वे मौजूद हैं, फिर भी यह समझ कर दरवाजा खोल दिया कि अगर वास्तव में हममें गुण हैं, तो सख्या-वृद्धि के साथ गुण-वृद्धि भी हो जायगी। दृष्टि व्यापक करने से दोनो में विरोध नही आयेगा।

अेकांगीपन का परिहार करें

मैं समझता हूँ कि गुण और सख्या का विरोध वही होता है, जहाँ प्रयत्न अेकागी होता है। अीसा मसीह ने यूरोप और अेशिया में नव-विचार फैलाने का प्रयत्न किया। अुनके अुत्तम शिष्य थे और विचार भी बहुत ही सुन्दर थे। दुश्मन पर प्यार करना, अपनी सभी चीजें सबके साथ बाँट कर खाना, अेक ही परमेश्वर मानना, ये कोअी अैसी बाते नही जिनमें वैचारिक आक्षेप आयें। जीवन की *अितनी सर्वांग-सुन्दर* दृष्टि लेकर वे निकले थे। लेकिन बाद में अुनके शिष्यो द्वारा अुसमें अेक अैसी चीज दाखिल हो गयी, जिससे विचार अच्छा होने पर भी वह अेक देशीय बन गया और अुसका परिणाम यह हुआ कि जब तक सख्या नही बढी थी, तब तक तो गुण था और जहाँ सख्या बढने लगी, वही गुण छूट जाने का अनुभव आया। वह अेकागी विचार यही था कि 'अेकमात्र अीसा मसीह ही परमेश्वर के पुत्र हैं और *अिन्ही के द्वारा* हम परमेश्वर तक पहुँच सकते हैं।' अिसके बजाय अगर वे यों कहते कि 'हम सब मानव मात्र परमेश्वर के पुत्र हैं और अुन पुत्रो में अेक अुज्ज्वल पुत्ररत्न अीसा मसीह भी है' तो कोअी अुच्च न होता। अिसीके परिणामस्वरूप यह अेकदेशीय विचार बना।

पहले सर्वोदय-सम्मेलन की बात लीजिये। गाधीजी के प्रयाण के बाद सेवाग्राम में अेक सम्मेलन हुआ, तो *अुस समय* अुसके नामकरण की बात चली। कुछ लोगो ने कहा कि अिसे गाधीजी का नाम दिया जाय। मैंने कहा–'अैसा

क्यो करते है ? 'सर्वोदय' शब्द गाधीजी ने ही दिया और वह बडा ही सुन्दर है। अिसलिअे असको हम क्यो न चलायें ? अुसीको हम चलायें और गाधीजी का नाम न रखें, तो बेहतर होगा।' खुशी की बात है कि लोगो ने यह बात मान ली और अुनकी समझ में वह बात आ गयी। कुरान म कहा है—'ला अिलाहि अिल् अिल्लाह' और अुसके साथ जोड दिया "महमदुर्रसुल अुल्लाह"—याने ओश्वर के सिवा कोओी महान नही, कोओी पूजनीय नही और मुहम्मद हमारा रसूल है। अिसी तरह अगर हम भी यह कहते कि 'सत्य निष्ठा और अहिंसा हमारे अुपास्य देवता है और गाधीजी हमारे गुरु है,' तो हम नि सन्देह अपने सद् विचार में अक देशीय विचार दाखिल करते। अुसके परिणाम स्वरूप यह आपत्ति आती कि सख्या वढती, पर गुण घटता, लेकिन वह आपत्ति टली क्योकि हमने अुस नाम को अपने हृदय में रखा, वाणी में नही आने दिया।

अिस तरह स्पष्ट है कि जहा चिन्तन में अेकदेशीयपन आ जाता है, वहा गुण और सख्या-विरोध खडा होता है। किन्तु जहा अकदेशीयपन नही, वहा अिस प्रकार का भय नही रहता। अिन दिनो अिसी चीज पर मेरा चिन्तन चल रहा है।

सत्याग्रह की ही बात लीजिये। प्रश्न यही से आरम्भ होता है कि सत्याग्रह का लोकशाही में क्या स्थान है ? अेक कहता है 'स्थान नही है,' तो दूसरा कहता है 'है। किन्तु दोनो ही सत्याग्रह की शुद्ध कल्पना से कोसा दूर है। वे सत्याग्रह की असत् कल्पना से ही पीडित है। अगर हम सत्याग्रह की परिशुद्ध कल्पना कर, तो कहना पडेगा कि लोकशाही में अुस अक विशेष स्थान है। अुसका दूसरी शाहियो में जितना स्थान हो सकता है, अुससे अधिक स्थान लोकशाही में है। किन्तु लोकशाही में अुसका अर्थ अेकागी नही, व्यापक ही बन सकता है। अगर हम लोकतन्त्र में सत्याग्रह को व्यापक न बना सके, तो अुसमें भी वही आपत्ति आयेगी—जहा सख्या वढाने की बात आयेगी, वहा गुण घटेगा और जहा गुण बढाने की कोशिश होगी, वहा सख्या घटेगी।

वेदान्त को सही समझ

मैंने कहा था कि वेदात, विज्ञान और विश्वास, ये तीन शक्तियाँ अिस जमाने को चाहिअे। वेदा त का अर्थ है वेदो का अन्त याने खातमा, याने सभी कृत्रिम धर्मों का अन्त। वेद को अुसका प्रतिनिधि मान ले, तो वेदान्त का अर्थ होता है—बाअिबिलान्त, पुराणान्त, कुरानान्त और जितनी पुस्तके है, अुन सबका अन्त। अिस तरह यह वेदान्त अत्यन्त व्यापक वस्तु हो जाती है। यदि मै वेदान्त का अर्थ अुपनिषद् वगैरह कहूँ, तो फौरन अकदेशीयपन आ जायगा, अिसलिअे मै सकुचित विचार नही मानता। मनुष्य को मनुष्य से अलग करने वाली, सभी कल्पनाओ का अन्त ही वेदान्त है।

विवेकानन्द न अमेरिका की धर्म परिषद में जो गजना की थी वह यहा है। वेदान्त में हम किसी अक पुरुष के साथ बँध हुअे नही है जैसे ओसाअियत ओसा के व्यक्तित्व के साथ बधी है या जैसे कुछ कम मात्रा में सही, मुहम्मद के साथ अिस्लाम की विचारसरणी गौतम के साथ बौद्ध धर्म की विचारसरणी, जुडी दीख पडती है।

हमारे सामन अक समस्या है 'ग्रामदानी गावो की सख्या बढाते चले जाने से कुछ

ग्रामदानी गाव बोगस भी हो जाते हैं ।' मुझसे किसी ने पूछा भी था कि 'क्या अैसा नही होता ?' अिस पर मुझे जो अुपमा सूझी, वह तो मैंने कह ही दी · 'शिवाजी ने पचास किले कमाये, पर बीस गँवा दिये और तीस हाथ में रह गये ।' पर मैं जानता हूँ कि अिस अुत्तर से समाधान नही हो सकता । अिसलिअे यह सही है कि अिस पर हमें चिन्तन करना चाहिअ । हमारे ग्रामदानी गाँव ढीले पडते हैं, अिसका कारण कुछ भी हो । फिर भी आप ही न अुन्हे बनाया है और आप ही कहते हैं कि 'वे कच्चे हैं,' ता जाअिये, पक्के बनाअिये । खूँटा जरा ढीला हो गया, तो पक्का बनाअिये । परिस्थिति ने अुसे ढीला बना दिया, तो क्या आप अुसे अुठा कर फेंक देंगे ? तब ता आपकी चक्की ही कैसे चलेगी ? अिसलिअे आप ही खूटे को पक्का बनाअिये । अगर वह पक्का नही बनता, पक्का बनान में टूट जाता है, तो अलग बात है । लेकिन अुसको पक्का बनाने की कोशिश तो करनी ही चाहिय । अिसलिअे स्पष्ट है कि हम लोगो में जो यह विचार चलता है कि हम थोड-थोड ग्रामदान हासिल कर वहाँ मजबूत काम करे, अुसका परिणाम तो अच्छा होगा, पर अुससे व्यापकता नही आयेगी ।

दूसरा विचार यह चलता है कि 'चन्द ग्रामदान हासिल करोग, ता तुम पर जिम्मेवारी आयेगी ।' मैं कहता हूँ कि जितने ज्यादा ग्रामदान हासिल हाग, अुतनी समाज पर जिम्मेवारी आयगी, हमारी जिम्मेवारी न रहेगी । अुस हालत में विचार व्यापक बनेगा और लोगो को विविध प्रयोग करने होगे । अगर हम अिसकी व्यक्तिगत जिम्मेवारी लेते हैं, तो क्या कदाचित् हमारे नालायक साबित होने, नाकामयाब होने पर ग्रामदान का विचार ही नालायक, नाकामयाब सिद्ध हो जायगा ? मान लो, अेक जगह विनोबा बैठा और अुसन कुछ काम किया, तो लोग कहेगे कि वहाँ विनोबा जैसा व्यक्ति बैठा है, अिसीलिये कुछ काम हुआ है, नही तो नही होता । याने अगर हम यशस्वी हुअे, तो हार गये और हार गये तो मर गये—जैसे आधुनिक लडाअी में होता है—जो जीता सो हारा और जो हारा सो मरा ।

अेक भाअी ने मुझ कहा कि आप काफी घूम चुके, अब अेक जगह बैठ कर कुछ काम कीजिये । अिस पर मैंने अुसे वेद मन्त्र सुनाते हुअे यह समझाया कि सबका सृजन करने वाला परमेश्वर है । वही सब कुछ करेगा । अुसके काम में दखल देन की जिम्मेवारी मेरी नही है । कार्ल मार्क्स न समाज के सामने जो कुछ रखा, अुस समय अुसे किसी न नही कहा कि तुम कुछ करके दिखाओ । फिर मुझ पर कुछ करके दिखान की जिम्मेवारी कहा से आ गयी ? अिसलिअे ये दो विचार चलते हैं, वे अेक दूसरे को काटने वाले हैं । अिनसे सारा विचार ही सकुचित, कुठित हो जायगा । दोनो मिल कर अेक ही विचार है । कुछ ग्रामदान मजबूत बनाय जायें और साथ ही नये-नये ग्रामदान हासिल भी किये जायें । ग्रामदान के लिये हवा भी खूब बनायी जाय, प्रचार भी खूब किया जाय । सख्या की वृद्धि से हम डरे नही । सख्या-वृद्धि के साथ-साथ गुणवृद्धि होना भी लाजिमी है । अैसी व्यापकता के साथ हम काम करेंगे, तो हमारी ताकत बढगी । मैं अिस विचार को बहुत महत्त्व दे रहा हूँ । हमारे कार्यकर्ताओ के मन में दुविधा ही नही, त्रिविधा और चौविधा भी प्रकट हो सकती है—याने हम यह करे या

वह करे, अैसा वे सोच सकते हे । लेकिन पहले हमें यही समझना चाहिये कि हम ही करन वाले कौन होते हैं ? सर्वोदय पात्र कहेगा 'हम याने कुल हिन्दुस्तान ह । फिर हर अेक से जितना बन सके, अुतना वह करे, वह हमारा काम माना जायगा ।

अिसी तरह शाति सेना के बारे मे भी बहुत व्यापक भावना से विचार करना है । किसी तरह का आग्रह हमें नही रखना है । नियमो की कैद में लोगों को नही फँसाना है । भावना का विकास करना है । यदि हम आग्रह रखेंग, तो पिछड जायेंगे ।

स्पष्ट है कि मैंन आग्रह छोड दिया है । मैंन कहा कि सत्याग्रह का अथ यही है कि 'सत्य को ही आग्रह करन दीजिये, आप सत्य का आग्रह नही, पालन कीजिये ।' अगर आप समझते हैं कि हमारा आग्रह ठीक है और सामन वाला भी आग्रह रखता है तो अेक आग्रही मन के खिलाफ दूसरा आग्रही मन खडा हो जायगा और दो मनो की टक्कर होगी । फिर विज्ञान युग के निअे वह सत्याग्रह का स्वरूप नही होगा । विज्ञान-युग में तो मन से अूपर अुठना और मन को टक्करों को टालना पडता है । अिस युग में सज्जना के मनो की विरोधी टक्करे नही होन देनी चाहिअे । अिसलिअे अगर कोअी भी सज्जन आकर मुझसे कहता है कि तुम्हारा विचार सकुचित होता है, तो मैं अुससे यही कहूँगा कि 'तुम्हारे लिअे मैंन अुस खोल दिया है । मै सज्जन के विरोध में खडा नही हो सकता । यह मैं जानता हूँ कि सामन वाला सज्जन है और वह भी जानता है कि मैं सज्जन हूँ । अिस तरह दोनों अेक-दूसरे को जानते ह, तो सकुचितता नही होनी चाहिअे । मेरी हमेशा यही कोशिश रहती है । अिसलिअे सकुचितता छोड कर परिणाम देखना चाहिअे । सही विचार मालूम करना चाहिअे और मन में किसी तरह का आग्रह नही करना चाहिअे ।

हम जितने व्यापक बन सकते हैं, अुतने व्यापक बने और सबको अेक करे । हम सब सज्जनो को अेक करना चाहते हैं, यही हमारी दृष्टि है । किंतु अुस दृष्टि में भी हमने अकुश तो रखा ही है, क्योकि हम जानते हैं कि बिना अकुश के और काम हो सकता है किन्तु शाति सेना का काम नही हो सकता । सिर फूटेंगे, पर सफलता नही मिलेगी । फिर सिर फुडवाना ही हमारा लक्ष्य हो, तो अलग बात है । अत हमें सफलता का अिन्तजाम करके ही सिर फुडवाना चाहिये । अगर अैसा नहीं करते, तो वह हमारी मूर्खता ही साबित होगी ।

रविशकर महाराज की बात है । वे हमारे साथ चार-पाच महीन रहे हैं । मैंने भी अुनके साथ रह कर अपने विचारो में जो दोष थ, वे दुरुस्त कर लिय । अुनके अनुभव की बात है । अहमदाबाद में महागुजरात के प्रश्न पर दगा हुआ और कुछ गोलियाँ भी चली, यह आप जानते ही है । अुस समय महाराज न कहा था 'जिनके हाथ में दड शक्ति है, अुन्हे गोली चलानी पडी, अिसमें अुतना हर्ज नही है, किन्तु जब कॉंग्रस-आफिस स गोली चली, तो मेरे मन में यह विचार आया कि कांग्रेस आफिस गोली चलान की जगह नही है, वह तो मरन की जगह है, मारन की नही । अिसलिये मेरा दिल बगावत करता है ।' अुनसे मिलन के लिअे कांग्रस के कुछ भाअी गये थ । महाराज अहमदाबाद स चालीस पचास मील दूर भूदान के प्रचार के काम में थ । अुन्होंने महाराज

से कहा कि 'अगर आप अहमदाबाद आयें, तो शान्ति का प्रचार कर सकते हैं । लोग भी आपकी बात मानेंगे ।' महाराज ने कहा कि 'मैं आने को राजी हू, जरा प्रयत्न करना होगा । किन्तु कहा तक वह सफल होगा, नही कह सकता । लेकिन मैं अुसके साथ यह भी कहूगा कि काग्रेस-आफिस से गोली नही चलनी चाहिये ।' यह बात सुन कर काग्रेसवाले भाओी सहम गये । फिर अुन्होंने महाराज को वहा आने के लिअे आग्रह नही किया । यह अिस बात का अुदाहरण है कि पक्षो में रहने से शाति-स्थापना का काम कठिन होता है ।

मै कह यह रहा था कि हम खूब व्यापक बनना और सबके साथ सम्बन्ध रखना चाहते है । फिर भी महाराज अगर गोलीवाली बात पर लोगो के पूछने पर खामोश रहते, तो शाति स्थापना में चाहे वे बहुत महान हो, पर नाकामयाब ही होते । सिर फुडवाना हो, तो अलग बात है । लेकिन सत्य बोल कर हो वे शाति की स्थापना कर सकते थे । निष्पक्ष होकर ही सत्य बोला जा सकता है । यदि कोअी पूछे कि क्या पक्ष के अदर रह कर सत्य नही बोला जा सकता है ? तो, मै यही कहूँगा कि बोल कर दिखाओ, मुझे मत पूछो, मैं मानने को राजी हूँ । पक्षातीत कोअी नही हो सकता है, अैसा मैं नहीं कहता, लेकिन अिन दिनो बहुत मुश्किल मामला है, क्योकि पक्ष के साथ लडाअी-झगडे जुड ही जाते हैं । भले ही वे पक्षमूलक झगडे न हो, तो भी पक्ष बीच में आ जाता है और किसी-न-किसी तरह से वे पक्ष के मामले बन जाते है । अुस हालत में जो भी हो और जिस किसी पक्ष में हो अगर वहाँ जाकर यह बोलने का हिम्मत करेगा कि अमुक काम गलत हुआ है, वह पक्ष में रह कर भी पक्षातीत ही बन जायगा । महाराज तो किसी पक्ष में नही हैं, अिसलिअे वे तो पक्षमुक्त हैं ।

आज हम सब भेद मिटा रहे हैं

हमने जो कुछ मर्यादायें बनायी है, वे सकुचित नही, कारगर बनने के लिअे ही बनायी है । शाति-सेना के काम में सफल होने के लिअे हमें जो मर्यादायें जरूरी मालूम पडी, अुन्हे हमने रखा । लेकिन मान लीजिये कि अुन मर्यादाओ से कुछ सज्जनो को, जो अिसमें आने के लिअे अत्यन्त अुत्सुक है, बाधा पड रही हो, तो अुन्हे हटाने के लिअे हम राजी हैं, यही मान कर कि यहाँ अिससे थोडी संकुचितता आ सकती है ।

अपने कार्यकर्ताओ से हम यह निवेदन करना चाहते है कि अिस कार्य के जिस किसी अग में, अुनको श्रद्धा और विश्वास हो, वे लगे रहे । मान लीजिये कि सर्वोदय-पात्र का काम करना चाहिये अैसा बाबा ने कहा है, तो कोअी जरूरी नही है कि आप वही करे । अगर वे जमीन के बँटवारे का काम करने की जिम्मेवारी महसूस करते हो, तो अुसी में लगे रहे । अिस व्यासपीठ (प्लेटफार्म) से किसीको सकुचित करने वाला कोओ भी आदेश नही मिलेगा । मुझसे तो और भी नही मिलेगा, क्योकि मेरे विचार में तो वह चीज है ही नही । अिसलिअे कअी लोग मुझसे पूछते है कि अैसी हालत में शाति-सेना कैसे बनेगी, तो मै कहता हूँ, 'देखिये कैसे बनेगी, यह तो प्रयोग करके देखने की बात है ।' मैं चाहता हूँ कि हमारे किसी भी विचार को बाधा न पहुँचाते हुअे काम व्यापक बने । मेरी श्रद्धा भी यही है । फिर गुण और व्यापकता में कोअी विरोध आयेगा, अैसा मैं नही मानता ।

[१ मार्च ५९, सर्वोदयनगर, अजमेर]

कला परिचय *

देवीप्रसाद

कला परिचय कला शिक्षा का अेक अंग है। कला परिचय का सामान्य अर्थ अपने देश की और अन्य देशों की कला शैलियों से परिचय होना ही माना जाता है। परन्तु हम 'कला परिचय' में केवल अुतना ही नही, बल्कि "कला-बोध" को अधिक महत्व का स्थान देते हैं। अिसलिअे प्रस्तुत चर्चा में "कला-बोध" का निर्माण करने के लिअे क्या कार्यक्रम बनाया जा सकता है और कला शैलियो का ज्ञान, अिन दोनों मुद्दों का जिक्र होगा।

कुछ अुम्र होने पर-करीब करीब किशोर अवस्था में पहुंचने के समय बालकों को प्राचीन और आधुनिक कला से परिचय हो, यह जरूरी है। छोटी अुम्र में न तो अुन्हें अुसकी आवश्यकता होती है और नही ही अुससे अुनके अपने कला विकास में कोअी लाभ ही होता है। हाँ, शायद कला परिचय की दृष्टि से जरूर कुछ जानकारी होती है। बच्चो की अपनी कला पर तो मैं सोचता हूँ अुससे अगर कुछ होता भी होगा तो वह नुकसान ही होगा। हमने देखा है कि बालक पर प्रौढ की कला का प्रभाव अच्छा नही होता। परतु अब बालक किशोर अवस्था के नजदीक पहुचता है और जब अुसे बड़ो की तरह काम करने को जरूरत महसूस होती है, तब अुसे कला से परिचय कराना जरूरी होता है।

यह परिचय दो प्रकार से होगा। मनुष्य को प्रकृति के साथ परिचय होना चाहिये; अुसे प्रकृति के साथ अेक रूपता का अनुभव होना चाहिये। अिसलिअे कला के माध्यम से प्रकृति तक पहुचना और प्रकृति की मदद से कला को समझना ये दोनो रास्ते हमें अपनाने होंगे।

अेक बात स्पष्ट करना चाहता हूँ। आम तौर पर जो "आर्ट अेप्रीसियेशन" "कला अितिहास" का शिक्षाक्रम होता है, अुसमें केवल जानकारी की बात ही होती है। अेक व्यक्ति भारतीय कला का अितिहास खूब बारीकी के साथ जानता है, वह अुसपर पुस्तकें भी पाडित्य की लिखता है, किंतु वह जब बाजार में चित्र खरीदने जाता है, तो वही केलेन्डर वाली तस्वीरें पसन्द करता है। राजपूत शैली की हर तस्वीर को देखते ही कह सकता है कि यह तो फलानी शैली या फलानी शताब्दी की है, परतु अुसके बैठकखाने में बाजारू तस्वीरे लगी होंगी। अैसे ज्ञान से कोअी लाभ नही। हम तो कला-बोध चाहते हैं, सुन्दर और असुन्दर को समझने की विवेक बुद्धि हो, वह पहली नजर में ही अपने बोध के द्वारा अच्छी कलाकृति में प्रवेश कर सके अैसी शक्ति का निर्माण करना है।

अिस तरह की शिक्षा किस प्रकार दी जा सकती है, अुसके बारे में नया लिखने की आवश्यकता हमें महसूस नही होती। कलागुरु नन्दलाल वसु ने अिसके बारे में अत्यत सुन्दर सुझाव बताये हैं। हम अुन्ही के शब्दो को यहा अुद्धृत करते हैं। यह अुन्होंने आज के विश्वविद्यालयो को ध्यान में रखते हुअे कहा था, हम अगर अुन बातो को अपनी परिस्थिति और वातावरण में लागू करे तो असमे अधिक कोअी सुझाव न देने पर भी यथेष्ट होगा।

"पहली बात है, लडकों के विद्यालयो, पुस्तकालयो में पढने और रहने के कमरो में कुछ अच्छी अच्छी मूर्तिया और दूसरो चारु

* 'बच्चों की कला और शिक्षा' नाम की पुस्तक का अेक अध्याय।

और कारु शिल्पो के नमूने, (नमूने न होने पर अुनके अच्छे फोटो या प्रति छवि) सजाकर रखना होगा।

"दूसरी बात है, अच्छे-अच्छे शिल्प निदर्शनो के चित्र और अितिहास दिये गये सहज ही समझ में आनेवाली लडको के योग्य पुस्तके अुपयुक्त व्यक्तियो द्वारा यथेष्ट परिमाण में लिखानी होगी।

"तीसरी बात है, चित्रपट की सहायता से, बीच बीच में स्वदेश और विदेश की चुनी हुअी शिल्प-वस्तुओ से लडको को परिचय कराना होगा।

"चौथी बात है, बीच बीच में अुपयुक्त शिक्षको के साथ जाकर लडके निकटस्थ संग्रहाल्यो तथा चित्र-शालाओ में अतीत की शिल्प कीर्ति का निदर्शन देख आया करेगे। विद्यालयो से जब फुटबाल मैच खेलन जाने का कार्यक्रम हो सकता है तो चित्रशाला व सग्रहालय देख आना भी असभव नही होगा। अिस बात को याद रखना होगा कि अेक अच्छी शिल्पवस्तु को अपनी आखो से देखने और समझन स शिल्पदृष्टि जितनी जागृत होती है, अुतनी १०० भाषणा के सुनने से नही होती। छोटी वय से अच्छे चित्रो, मूर्तियो को देखते देखते कुछ समझकर, कुछ विना समझे ही लडको की दृष्टि बनती रहेगी, अपने आप ही अुसमें शिल्प के भले-बुरे का विचार करन की शक्ति पैदा होगी और धीरे-धीरे सौंदर्य बोध जागृत होगा।

"पाचवी बात है, प्रकृति से लडको का सबध स्थापित कराने के लिअे भिन्न भिन्न ऋतुओ म भिन्न भिन्न अुत्सवो का आयोजन करना होगा। अुस आयोजन में होगा—अुन ऋतुओ के फल फूलो का सग्रह और शिल्प तथा काव्य में अुन ऋतुओ के सबध में जो सुन्दर रचनाअें हुअी है, अुनसे यथासभव लडको का परिचय कराने की व्यवस्था।

"छठी बात है, प्रकृति में जो ऋतु अुत्सव हो रहे है, लडको का अुनसे परिचय करा देना होगा। शरद् में धान के खेत और कमल के सरोवर, वसत में पलाश, सेम्भल के मेले को जिससे अपनी आखो से देखकर आनद पा सके अिसकी व्यवस्था करानी होगी। अिन ऋतु अुत्सवो के लिअे वन-भोजन और ऋतु अुपयोगी वेशभूषा तथा खेल-कूद की व्यवस्था करनी होगी। प्रकृति से अेक बार सबध स्थापित हो जान पर, प्रकृति से वास्तविक प्रेम करना सीख लेने पर, लडको के हृदय में रस का अुद्गम फिर कभी नही सूखेगा, क्योकि प्रकृति ही युग युग से शिल्पी को शिल्प सृजन का अुपादान जुटाती आयी है।

"अतिम बात है, वर्ष के किसी समय विद्यालयो में शिल्पसर्जन का अेक अुत्सव करना होगा। प्रत्येक विद्यार्थी को कुछ न कुछ शिल्प वस्तु अपने हाथो से बनाकर अिसमें श्रद्धा के के साथ सम्मिलित होना होगा। वह शिल्पवस्तु चाहे कितनी भी सामान्य क्यो न हो, लडको की सर्जन शक्ति की वस्तुअें अुत्सव के अर्घ्य रूप में सग्रहीत होकर सजायी रहेंगी। नृत्य, गीत, जुलूस आदि के द्वारा अुत्सव को सर्वांग सुन्दर बनाने के लिअे चेष्टा करनी चाहिये। अुत्सव के लिअे निश्चित समय ठीक कर देना कठिन है, देश भेद से वह बदलेगा। बगाल में शरत् ऋतु ठीक मालूम पडता है।"

शिल्पगुरु की ये बात स्पष्ट करती है कि कला और प्रकृति में कितना सबध है। अेक दूसरे की मदद से ही दोनो समझ जा सकते है। अिन सुझावो के द्वारा बालको की शिक्षा

तो होगी ही, पर शिक्षकों के लिअे अुनपर चिंतन, मनन और आचरण करने से सच्चा लाभ होगा। यह दृष्टि वही शिक्षक दे सकता है जो स्वयम् अुसमें रत हो या कम से कम अुस तरह की साधना में लगा हो।

कला बोध के अूपर कहे गये पहलू के साथ अगर कला अितिहास आदि विषयों पर ध्यान दिया जाय तो अुससे लाभ ही होगा। परंतु यह ख्याल रहे कि केवल कला का पुस्तकीय ज्ञान होने से कला द्वारा जिस तरह के व्यक्तित्व का निर्माण करने की बात सोची जाती है, वैसा अल्पमात्रा में भी होना असंभव है। वह तो सृजनात्मकता और सम्वेदना का विकास करने से ही निर्मित हो सकता है।

स्थायी कलाबोध तभी विकसित हो सकता है जबकि अुसके साथ जीवन का संबंध हो। जैसा कि पहले भी जिक्र किया है कि बुद्धि से व्यक्ति कला का अितिहास और किसी कला के अच्छे बुरे पहलुओं को समझता हो, पर अुसके अपने जीवन में सौंदर्य के कुछ दूसरे ही मापदंड काम करते हों, तो वह किस काम का। यानी मनुष्य की बुद्धि और अुसकी रुचि "टेस्ट" -में अैक्य होना चाहिये। अिसलिअे प्रश्न है– शिक्षा के द्वारा अेक सुरुचि का निर्माण करना। अिसके लिअे अूपर जो सुझाव रख गये हैं अुनके अलावा दो चार बात और सुझाना चाहता हूं।

कला बोध का निर्माण करने का अेक कारगर तरीका है व्यक्ति को अैसे काम देना जिसमें अुससे सौंदर्य निर्माण की अपेक्षा हो। कक्षा या कमरा या छात्रालय का कमरा पूरा पूरा खाली करके नय ढंग से सजाने का काम अेक विद्यार्थी को या विद्यार्थियों की अेक टोली को देना चाहिये। अुपयोग की दृष्टि से कमरे का संगठन सरल हो; और सजावट की दृष्टि से अुसमें अेकाध चित्र चुनकर ठीक जगह लगाना और फूलदान में ठीक ढंग से फूल सजाने तक का प्रोजेक्ट आखिर तक पूरा किया जाय। अुसमें सादगी और सजावट का सामंजस्य हो, रंगमेल की दृष्टि पर पूरा-पूरा ध्यान दिया जाय। प्रोजेक्ट पूरा होने के बाद टोली के विद्यार्थियों से व्यक्तिगत तौर पर समालोचना की अपेक्षा हो, साथ साथ सब मिलकर भी समालोचना करे। अिसमें सजावट के मूल सिद्धांतों का अच्छा विस्तार किया जा सकता है। अिसी प्रकार छोटी छोटी प्रदर्शिनियों का आयोजन, अुत्सव त्योहारों के समय सजावट और नाट्यमंच आदि की सजावट में भी विद्यार्थियों को प्रोजेक्ट दिये जाय।

किसी व्यक्ति या राष्ट्र की रुचि और अुसके सौन्दर्य बोध के स्तर का अिस बात से भी पता चलता है कि वह 'वेस्ट मेटीरियल' (टूटन) का अुपयोग कैसे कर लेता है। अिस सिलसिले में दो अुदाहरण सामने आते हैं। अेक तो जापान का और दूसरा बंगाल की कांथा बनाने की परंपरा का। सुना है जापान में टूटन से अनेक प्रकार की सुन्दर-सुन्दर चीजों का निर्माण कर लेते हैं। कपड़े की कतरों से और लकड़ी के टुकड़ों से, तरह-तरह की अत्यंत सुन्दर गुड़िया बना लेना, कागज की छीजन से पेपर मेशे–कूट–का काम अित्यादि वहां की विशेषतायें हैं। छोटे छोटे बांस के टुकड़ों का अितना सुन्दर अुपयोग कर लेते हैं कि देखते ही बनता है। अेक छोटी सी बांस की कमची को लेकर अुसे तराश-तराश कर अुसपर कुछ केलीग्राफी या चित्र बना लेना आम तौर पर देखा जाता है।

अिसी तरह पुरानी धोतियो और साडियो को लेकर अत्यत अूची रुचि की सुजनिया, कार्य बनाने की बगाल की परपरा भी अिस बात को द्योतक है कि वहा की स्त्रिया वेस्ट मेटीरियल को लेकर कैसे कलाकृतियो में परिणत कर सकती है। यही गुण कलाबोध का अेक अश बन जाना चाहिये। किसी शाला में अिस तरह के वेस्ट मेटीरियल का कितना और कैसा अुपयोग होता है यह देखकर वहा की शिक्षा के स्तर का पता चलना चाहिये। हमारी शिक्षा में अैसे कार्यक्रम रखे जाने चाहिये जिससे बालको को अिस प्रकार की वस्तुओ का कलात्मक अुपयोग करने की रुचि का निर्माण हो। अिसके लिअे प्रदर्शिनिया भी रखी जा सकती है।

मनुष्य का बोध कल्पना के सूक्ष्म विकास के द्वारा भी बनता है। हमने अच्छी रुचिवाले काफी अैसे व्यक्तियों को तरह तरह की अजीब चीजें सग्रह करते हुअे देखा है। तरह तरह के पत्थरों के टुकडे, पेड की पुरानी टेढी-मेढी जडो या डालियो के टुकडे अिस तरह का आकार ले लेते है कि सूक्ष्म कल्पना वाला व्यक्ति अुसमें अनेक प्रकार के रूपो को देख सकता है। अिस तरह की चीजो में कुछ कल्पना जगत् का निर्माण कर लेना अेक अच्छी ट्रेनिंग है। अुससे व्यक्ति में बोध का, सृजनात्मकता का विकास होता है। शाला में अिस तरह की प्रवृत्तियो को अुत्साह मिलना चाहिये।

आजकल प्रोग्रेसिव शालाओ में अेक और कार्यक्रम चलता है। अखबारो और पत्र पत्रिकाओ से फोटो और चित्रो को कटिंग जमा करने का यह विचार अच्छा है, परतु अुससे अुद्देश्य सिद्धि तभी हो सकती है जबकि वह कार्यक्रम सुरुचिपूर्ण हो। जैसे तैसे भडकदार चित्र काटकर अलबम में रख लिये, अुससे तो रुचि अच्छी बनने के बदले बिगडेगी।

अिस कार्यक्रम के स्पष्ट दो भाग करने चाहिये। पत्रपत्रिकाओ में से कुछ तो अैसे चित्र सग्रह किये जायगे जो सामान्य ज्ञान-विज्ञान से सबध रखनेवाले होंगे। अिनको भी अलग अलग विषयो के अनुसार अलग अलग अलबम में सजाकर रखना चाहिये।

टेकनीकल दृष्टि के अलावा अिसमें यह ध्यान रहे कि सब चित्र साफ और सुदर हो। अिसमें अधिकतर फोटो और डायग्राम आदि होंगे। फोटो हो तो टेकनीकल दृष्टि से अच्छे होने चाहिये। अिस प्रवृत्ति का दूसरा विभाग कला के दायरे का होगा। अिसमें अच्छे-अच्छे चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला और दस्तकारियो के नमूनों के फोटो या प्रिंट होंगे। अिसके चुनाव के काम को करना कुछ कठिन है। कठिनाओ दो कारण से है,—अेक तो किस चित्र को चुनना और किसको नही, यह काफी जानकारी के बाद सधता है, दूसरा, चित्र शायद सचमुच माना हुआ अच्छा है, पर क्या वह प्रिंट चित्र के रग को सचाओ के साथ दिखाता है या छपाओ में अुसके मूल रग अितने बदल गये कि प्राय अुसके सारे गुण समाप्त ही हो गये। अिसलिअे अिस काम के लिअे विशेष प्रयत्न की आवश्यकता है। मेरा अेक सुझाव अिसके बारे में है। शाला में कुछ अुच्च कोटि के प्रिंट हो। यह बात आसान नही है, क्योकि अैसे प्रिंट बडे महगे होते है। हर शाला के लिअे अिनपर खर्च करना सभव नही हो सकता। अिसके लिअे सबसे अच्छा तरीका यह है कि सरकारी पैमाने पर कुछ अच्छे अच्छे सेट तैयार की

अलग-अलग कला शैलियों के, स्कूलों में घूमते रहें। यह घूमती प्रदर्शिनी बीच-बीच में शिक्षकों और बालकों को देखने को मिले, यह अुसका अुद्देश्य है। अिस तरह की परपरा बनने के बाद जो शिक्षक स्वाध्याय करके अपने स्कूल में पत्र-पत्रिकाओं से कटिंग द्वारा प्रिंट सग्रह करना चाहे कर सकते हैं। अुनका सग्रह सुरुचिपूर्ण होगा।

कला अितिहास और कला के सिद्धातों का महत्व कम नही है। जगत् में जो खजाना मनुष्य की कलाकृतियो का भरा पडा है अुससे परिचय करना और अुसको जानना कला-बोध के विकास में महत्वपूर्ण कदम है। अिस में विशेष ध्यान जागतिक दृष्टि की ओर रहना चाहिये। भारतीय कला का अितिहास जान लेने से नही चलेगा और नही ही चलेगा केवल भारतीय कला को पहचान लेने से; क्योकि अुससे सकुचित दृष्टि का निर्माण हो सकता है। मनुष्य ने अलग-अलग देशों में, अलग अलग परिस्थितियो में अलग-अलग अुपकरणों से अपने आतरिक रूप जगत् को किस किस तरह प्रकट करने की कोशिश की है, यह जानना जरूरी है। बुनियाद में बात अेक ही है। मनुष्य हर जगह अेक ही है। अुसकी आकांक्षाअें अुसकी आनंदप्राप्ति के रास्ते अूपरी ढग से देखने में अलग अलबत्ता दीखते हैं, किन्तु अुनके अन्दर अेक ही दृष्टि है-सौंदर्य निर्माण की। कही वह कुछ काल के लिअे अधिक विकसित हुअी, कही कभी कुछ पिछड गयी; पर वह अमुक जाति या अमुक देश की होने के कारण नही। अिस तरह के अूपरी भेद बडे समुद्र की अलग अलग लहरों की तरह हैं, जिनके नोचे है महासमुद्र और यहां है अगाध मनुष्य हृदय।

कला-अितिहास के विषय का अिसी दृष्टि से अध्ययन किया जाय। यह आवश्यक है कि जो हमारे अधिक नजदीक है, यानी जो अैतिहासिक नजर से भारतीय है, वह पहले देखा समझा जाय। पहले का अर्थ यह नही कि अुसे देखें और दूसरे को नही, पर क्योकि अुसे समझना हमारे लिअे सरल और स्वाभाविक है, अुसे हम अच्छी तरह से समझें। अगर अपनी सास्कृतिक बुनियाद अच्छी तरह से समझ ली जाय तो दूसरी परपराओ को समझना आसान हो जाता है।

कला का अर्थ

हर कोअी कला को समझना चाहता है। पक्षी के गीतों को क्यों नहीं समझने की कोशिश करते? हम रात्री को, फूलों को, हमारे चारो तरफ की वस्तुओं को बिना समझे क्यों प्यार करते हैं? पर चित्र को समझना पडता है। और बातों के परे लोग अितनामात्र समझ लें कि कलाकार केवल अपनी आन्तरिक आवश्यकता के कारण ही काम करता है, और वह अिस संसार का अेक सामान्य छोटा सा अंग है, और यह समझ लें कि अुसे अुससे अधिक महत्व नहीं मिलना चाहिये जितना दूसरी अुन अनेकानेक चीजों को मिलता है जो हमें आनंद देती हैं, पर जिनका हम अर्थ नहीं जानते। जो लोग चित्रों का 'अर्थ' समझना चाहते हैं, वे गलत पेड की छाल निकाल रहे हैं।

—पाब्लो पिकासो
('आर्टिस्ट्स ऑन आर्ट' नाम की पुस्तक से।)

---

* पाब्लो पिकासो संसार के सबसे प्रसिद्ध कलाकार हैं। वे स्पेन के हैं और फ्रान्स में रहते हैं।

परीक्षायें

मॉर्जरी साँइक्स

यह परीक्षाओ का महीना है। स्कूल का साल खतम हो रहा है और सब जगह बच्चे और मा बाप पास होने की, सर्टिफिकेट की और अगले दर्जे में प्रवेश मिलने की ही बातें कर रहे हैं। बुनियादी स्कूलो में भी अकसर यही अुत्कण्ठा का वातावरण रहता है, बुनियादी शिक्षक-प्रशिक्षण केन्द्रो में और कअी स्कूलो में भी लिखित परीक्षायें होती है, जिसके नतीजो पर विद्यार्थियो का भविष्य बहुत हदतक निर्भर रहता है। हर साल शिक्षक अिस व्यवस्था पर असन्तोष प्रकट करते हैं, कअी प्रधान अध्यापक अिस विवशता में रहते हैं कि अमुक विद्यार्थी को, जिसको कि अेक दो मार्क कम मिला, लेकिन साल भर पढाअी में अच्छा था, पास कराना चाहिये कि नही। हर साल कॉलेजो में अधिक अूचे मार्क वालो को ही लेने का निश्चय होता है, क्यो कि जगहोंकी सख्या मर्यादित है, फिर भी हर साल विश्व-विद्यालयो की डिग्री—परीक्षाओं में असफल होनेवालो की सख्या बढती जाती है और विश्व-विद्यालयो के पुराने प्रमुख कहते रहते हैं कि अिस कडी छानने की प्रक्रिया के बावजूद "अयोग्य" विद्यार्थियो को प्रवेश मिल रहा है, जिनका "बौद्धिक स्तर" अितना अूचा नही कि अुन्हें "अुच्च शिक्षा" से कुछ फायदा मिल सके। फिर करना क्या है? कहा जाता है कि अिन "गुणनिश्चयात्मक" परीक्षाओ को हटा देने का नतीजा और भी अवान्छनीय होगा। शिक्षा विभाग के अधिकारी अिस व्यवस्था की बुराअियो को जानते हैं, अुस पर की गयी आलोचनाओ की सत्यता को मानते हैं, फिर भी अुनका कहना है कि व्यवहार में यह दो बुराअियो में से अेक को चुनने का प्रश्न है। तो परीक्षाओ की व्यवस्था अिनमें से कम बुरी है। वे कहते हैं कि अगर हम अिन परीक्षाओ को और सर्टिफिकेटो को छोड देते हैं तो काम के लिअे और अुच्च-शिक्षा केन्द्रो के प्रवेश के लिअे स्पर्धा में कोअी नियामक तत्व नही रहेगा, अधिकारो के दुरुपयोग और भ्रष्टाचार का स्वच्छन्द विहार होगा। और अिसलिअे परीक्षाओं की व्यवस्था असन्तोषजनक होते हुअे भी दूसरे विकल्प के अभाव में अिसको चलाना ही होगा।

क्या यह दु खपूर्ण विचार सत्य है? अिस लेख का अुद्देश्य यह कहना है कि नही, यह सच नही। अिससे कही अच्छा और व्यावहारिक रास्ता अुपलब्ध है। आज समय आया है कि राष्ट्र अुसे आग्रहपूर्वक अख्तियार करे। आज हमारे राष्ट्रीय स्वास्थ्य व राष्ट्रनिर्माण के सारे कार्यक्रम के लिअे यह नितात आवश्यक है कि हर-अेक काम में अुसके लिअे योग्य तथा स्वभाव अेव वृत्ति से अुसके अनुरूप व्यक्ति नियुक्त हो, गलत व्यवस्था से राष्ट्र की लोकशक्ति और सपत्ति का अपव्यय न हो। जिस किसी काम में जिसकी भी विशेष दक्षता व अभिरुचि हो अुसे वह काम करने का मौका मिले। अिस दृष्टि से समीक्षा और चुनाव की अधिक अच्छी और कार्यक्षम पद्धति लागू की जा सकती है।

यह कहना ठीक है कि बुनियादी तालीम में समीक्षा की प्रणाली अुस शिक्षा के अुद्देश्य और पद्धतियो के अनुरूप होनी चाहिये। लेकिन अुतना मात्र भी पर्याप्त नही है। आज की परीक्षाओं की व्यवस्था के पीछे जो बुनियादी मान्यतायें हैं अुनका असर सारे राष्ट्रीय जीवन

पर पडता है। किसी व्यक्ति की स्वाभाविक वृत्तियो व योग्यताओ की जाच करने के पीछे जो विचार है अुन्ही में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। आखिर परीक्षाअें किसलिअे हे ?

हमारी मूलभूत गलती यह है कि हमने अपनी सार्वजनिक परीक्षा-व्यवस्था (Public examination system) में व्यक्ति की स्वाभाविक वृत्ति व अभिरुचि और अुसकी पढाअी के द्वारा प्राप्त योग्यता में फरक नही किया है। हम मानते हैं कि किसी ने स्कूल का पाठ्यक्रम पूरा करने में अमुक योग्यता दिखायी, अितने साल अुसने अिसमें विताये, अिसलिअे अवश्य ही वह अुच्च विद्यालयो में अध्ययन के लिअे, विभिन्न प्रकार की यान्त्रिक व प्रावैधिक विधियो में प्रशिक्षण के लिअे, शासन व्यवस्था के विविध अधिकृत पदो के लिअे और भी कअी तरह के विशिष्ट कार्यों के लिअे योग्य होगा। यह मान्यता बिलकुल निराधार है। योग्यता शब्द का जो अर्थहीन अुपयोग साधारण हो गया है वही अिसका प्रमाण है। असल में अुसका अर्थ होना चाहिये कि कोअी व्यक्ति अपने चरित्र से, स्वभाव से और कुशलता से अेक विशेष काम करने के लिअे सर्वथा योग्य है। लेकिन अब अुसका मतलब यह हो गया है कि अुसके पास फलाना सर्टिफिकेट है या अुसने अमुक परीक्षा पास की है। अिन दोनो बातो में बहुत अतर है।

दो व्यक्तिगत अुदाहरण अिस बात को स्पष्ट कर सकते हैं। लेखिका स्वय स्कूल में पढते समय गणित में अभिरुचि रखती थी और स्कूलो में जैसे साधारणतया होता है त्रिकोणो और वृत्तो को सोचकर अुनके 'नियमो को सिद्ध" करने में वैसे ही मजा अनुभव करती थी जैसे किसी खेल की हार-जीत मे। स्वाभाविक ही था कि अुसको स्कूल में गणित में अच्छे "मार्क" मिले। लेकिन थोडे ही अनुभव से मालूम हुआ कि विश्वविद्यालय के गणित के परोक्ष सिद्धातो को समझना अुसकी मानसिक वृत्ति और शक्ति के बाहर था। स्कूल के गणित में अच्छा मार्क मिलना अिस बात का निदर्शक नही है कि किसी को गणित की सच्ची वृत्ति है।

२५ साल पहले जबकि बुनियादी तालीम का विचार ही नही हुआ था, लेखिका अेक साधारण लडकियो का स्कूल चलाती थी। आठवे दर्जे में अठारह साल की अेक लडकी थी जिसका नाम कमला था। यह अपने क्लास के लिअे अुमर में ज्यादा बडी थी और पढाअी लिखाअी में कमजोर। गणित की समस्यायें, व्याकरण और विदेशी भाषा की अुलझनें कमला की शक्ति के बाहर थी। लेकिन वह सीधी, सरल, विश्वसनीय और मेहनती थी। स्वभाव अुसका मृदु और सहानुभूतिपूर्ण था और अुसके क्लास की छोटी लडकिया अुसे बडी बहन की तरह स्नेह और आदर से देखती थी। वह अपने काम में व आदतो में भी साफ और नियमित थी। अुसकी किताबें हमेशा सुन्दर सजाकर रखी हुअी होती थी। कमला की अिच्छा थी "नर्स" बनने की। वह अपनी वृत्ति से अिस काम के लिअे विशेष रूप से अुपयुक्त थी। फिर भी जब तक अुसको आठवा दर्जा पास होने का सर्टिफिकेट न होता तो वह किसी अस्पताल में प्रशिक्षण के लिअे "योग्य" नही समझी जाती थी। और पाठ्यक्रम में निर्धारित गणित, व्याकरण और अंग्रेजी में पास होना अुसके लिअे मुश्किल था। अेक "नर्स" के

काम के लिअे अिन विषयो का कोअी विशेष प्रयोजन भी नही है। अिस तरह की सैकडो कमलाओ की समस्यायें हर साल शिक्षको के सामने आती है। अगर प्रधानाध्यापक कमला को आठवा दर्जा पास होने का सर्टिफिकेट नही देते तो वह अुस काम में प्रवेश पाने से वचित रह जाती जिसके लिअे वह सर्वथा योग्य थी। और अगर वह सर्टिफिकेट दे देते तो सभव है कि अुसके मा बाप कमला को अुच्च विद्यालयो में दाखिल कराने के लिअे अुसका अुपयोग कर लेते और कमला तो अुसके लिअे योग्य थी ही नही। अैसी दुविधाजनक परिस्थिति होनी ही नही चाहिये। जिन्हें किसी अुपयोगी काम में अभिरुचि और अुसके लिअे आवश्यक गुण हों तो अुन्हें अिस कारण से क्यो रोके कि अुनको कुछ अैसे विषयो में पास होने का "सार्टिफिकेट" नही मिला जिनका कि अुस काम से कोअी सबध ही नहीं।

अिसी पीढी को अिंग्लैंड की अेक लडकी से हम अिसकी तुलना करे। विश्व-विद्यालय में पढते समय मेरी जान पहचान "मेरी" नाम की अेक लडकी से थी। अिसके पिता कोयले की खान में मजदूर थे। चौदह साल की अुमर में वह स्कूल छोडकर किसी बडे घर में नौकरानी का काम करके अपनी रोटी कमाने लगी (अिंग्लैंड में चौदह साल से छोटे बच्चो से काम कराना कानून से निषिद्ध है)। लेकिन अुसकी भी अभिलाषा नर्स बनने की थी। जैसे ही वह अठारह साल की हो गयी, जो कि नर्स के प्रशिक्षण के लिअे निम्नतम अुम्र है, अुसने अपना आवेदन पत्र भेज दिया और अुसको अेक अस्पताल में प्रोबेशन पर लिया गया। अुसके पास मैट्रिक का कोअी सर्टिफिकेट नहीं था। न ही अुसकी आवश्यकता थी। अपने काम में वह बहुत ही अच्छी साबित हो गयी और प्रशिक्षण पूरा करने के बाद वह बच्चो के अेक अस्पताल में बडी जिम्मेदारी का काम सभालने लगी। अब वह बहुत कार्यव्यस्त गृहिणी और मा के रूप में भी कुछ समय अपनी अिष्ट सेवा के काम में देती है, अुस क्षेत्र में आधुनिकतम वैज्ञानिक प्रगतियो के साथ अपने आपको परिचित रखती है, और कभी कभी अल्पकालीन पुन प्रशिक्षण शिबिरो में भी शामिल होती है। कमला के जैसे ही अुसको "परिचारिका" काम में स्वाभाविक अभिरुचि और अुसके लिअे आवश्यक मानसिक गुण थे। कमला के जैसे ही अुसको गणित और व्याकरण में कोअी प्रवीणता नही थी। लेकिन कमला के जैसे वह अपनी स्वाभाविक वृत्तियो का विकास करने से परिस्थितियो के कारण वचित नही रह गयी। अुन स्वाभाविक वृत्तियो के विकास के फल-स्वरूप वह अेक सुशिक्षित और अुपयोगी नागरिक बन गयी।

दूसरे क्षेत्रो में भी अैसे वैपरीत्य पाये जाते हैं। आजकल ही में प्रोफेसर जे बी अेस् हाल्डेन ने अेक अखबार में लिखा था कि वह स्वय किसी भारतीय विश्वविद्यालय में जीवशास्त्र के अध्यापन के लिअे "अयोग्य" माने जायगे क्योंकि अुनके पास अिस विषय में कोअी डिग्री नही है। जीव विज्ञान में अुनकी गहरी अभिरुचि, लबा और नियमित अनुसधान व अध्ययन है, जिसके कारण वे प्रामाणिकता के साथ अिस विषय पर बोलते और पढाते है, ये सब अुनकी सर्टिफिकेट-हीनता के सामने निरुपयोगी है। क्या अब समय नहीं आया है कि अिस तरह के

अपहास्य नियमो को हटा दिया जाय। अेक शिक्षक को अपने विषय में तत्परता, अेकाग्र ज्ञानसाधना और आत्मानुशासन की शक्ति के अलावा कौन सी "योग्यता" चाहिये ? हमारी पुरानी भारतीय परपरा ने विद्वत्ता के असली मूल्य को पहचाना था। यह मानी हुअी बात थी कि ज्ञान अपने आपमें ही प्रमाण है, अुसके लिअे किसी बाह्य प्रमाण की अपेक्षा नही है। कम से कम अिस विषय में हमें अपनी राष्ट्रीय परपरा को पुन स्थापित करना चाहिये।

हमारे रूढिगत विचारो की भ्रमात्मकता को आजकल की अेक और घटना स्पष्ट करती है। समाज कल्याण मडल (सोशियल वेलफेयर बोर्ड) अेक स्वतत्र सगठन है, जिसके अूपर सरकारो के या विश्वविद्यालयो के कानूनो का बधन नही है। फिर भी अुसने निश्चय किया है कि ग्राम सेविका प्रशिक्षण के लिअे निम्नतम "योग्यता" मेट्रिक पास है। अिसका यह मतलब हुआ कि अुन्होने कलम की अेक मार से हजारो सस्कारसपन्न समझदार स्त्रियो को, जिन्हे ग्रामीण जीवन की जानकारी है, और अिसलिअे सच्ची सेवा करने की काबलीयत है, अिस काम के लिअे 'अयोग्य' साबित किया और अुनकी जगह अैसी प्रवेशार्थिनियो को लिया जिनकी "योग्यता" अुस काम से कोअी सबध नही रखती है। मै जानती हू कि मेट्रिक पास कअी लडकिया बहुत अच्छी ग्राम-सेविकाअें हुअी हैं, लेकिन अुनकी सफलता का कारण सर्टिफिकट नही था।

अब करना क्या चाहिये ?

१ हर अेक कालेज, अस्पताल, प्रावैधिक स्कूल और अैसी हर कोअी सस्था जो किसी विषय विशेष या धधे का प्रशिक्षण देती है प्रवेशार्थियो की अुस खास विषय के लिअे अुपयुक्त वृत्तियो और जानकारियो की जाच अपने ही तरीके से करे। अिसके लिअे अुपयुक्त पद्धतिया सोची जा सकती हैं। हा, यह जरूर है कि किसी मोटर अिंजिनियरिंग के स्कूल में प्रवेशार्थियो की जाँच का तरीका किसी अस्पताल में प्रशिक्षण के लिअे परिचारिकाओ को चुनने के तरीके से बहुत विभिन्न होगा, कला केंद्रो में जहा हाथ और आख की सूक्ष्म नियतता की जरूरत है, विद्यार्थियो को अुन कुशलताओ के आधार पर नही चुनेगे जिनपर से अितिहास और भाषा के गहरे अध्ययन के लिअे अुनकी योग्यता की जाच होगी। ये अेडहॉक परीक्षायें अुन सब के लिअे खुली होगी जो भी अुनमें शामिल होना चाहे और कोअी भी अिस कारण से रोका नही जायगा कि वह अमुक स्कूल के बदले अमुक स्कूल में पढता था या अमुक सर्टिफिकेट हासिल नही कर सका। जिस सस्या में विद्यार्थी प्रवेश चाहता है वही के शिक्षक अुचित जाच के बाद अपनी जिम्मेदारी पर यह तय करेगे कि असमे अुस विषय के लिअे आवश्यक मौलिक गुण हैं या नही ' और अगर वे गलत व्यक्तियो को प्रवेश देते हैं तो अुसमें किसी दूसरे का कसूर नही होगा।

२ जहा भी काम के लिअे व्यक्तियो को लिया जाता है, जैसे सरकारी दफ्तर, स्कूल, कालेज, व्यापार की सस्थायें, फेक्टरिया, याता-यात की कपनिया अित्यादि अुन सब में कर्मियो का चुनाव अिसी प्रकार होना चाहिये; वे अपनी अपनी समितियो के द्वारा खास खास कामो के लिअे प्रवेशार्थियो की योग्यता और स्वाभाविक वृत्तियो की जाच करेंगे, न कि किसी विशेष स्कूल या कालेज के सर्टिफिकेट वालो को ही

लेने की बात होगी। पब्लिक सर्विस कमिशन की परीक्षाओं में बैठने के लिअे किसी विश्व-विद्यालय की डिग्री की जरूरत नही होनी चाहिये यह प्रस्ताव सही दिशा में अेक कदम है। यह कोअी नया सिद्धात नही है, दुनिया भर में समझदार व्यवस्थापक यही करते आये हैं। प्रवेशार्थियों में जो भी योग्य पाये जाते हैं अुन्हें लिया जाता है, डिग्रीवालो को ही नही।

३ अिन सिद्धातो के अनुसार यदि काम होता तो अुपरोक्त "अधिकारो के दुरुपयोग की गुजाअिश नही होनी चाहिये। आज परि-स्थिति अैसी है कि विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिअे मेट्रिकुलेशन सर्टिफिकेट की जरूरत है, कअी कामो में प्रवेश के लिअे भी अुसीकी माग है। होना यह चाहिये कि जो विद्यार्थी अुच्च शिक्षा के लिअे योग्य पाये जाते हैं अुन्हें कालेजो में लिया जायगा। दूसरो को नही, दोनो को भी किसी सर्टिफिकेट की जरूरत नही होगी।

४ अैसे कुछ पेशे अवश्य हैं—डाक्टरी नर्सिग, वकालत, अित्यादि—जिनमें वे काम करनेवालो से अेक अमुक निम्नतम स्तर की योग्यता की अपेक्षा रखना पडता है। वह लोकहित के लिअे जरूरी है। अिसलिअे अुस काम में प्रवेश करने के पहले अुन्हें अपनी कुशलता का कुछ न कुछ प्रमाण देना आवश्यक होगा। अिस लेख में हम अिसके आखिरी रूप पर नही, बल्कि प्रशिक्षण के लिअे विद्यार्थियो को लेने या चुनने के तरीके पर ही विचार कर रहे है।

५ यह बिलकुल स्पष्टता से समझ लेना चाहिये कि राष्ट्र के सब बच्चो के लिअे अनिवार्य सार्वजनिक शिक्षा का सिद्धात लागू करने पर सब के लिअे अेक ही निर्धारित स्तर की अिन बाह्य परीक्षाओं को हटाना ही होगा, जो आज के स्कूलो पर लादी जा रही हैं। बच्चो के व्यक्तित्व विशेष तथा विभिन्न वृत्तियो, अभिरुचियो, और कुशलताओं के लिअे समान आदर का ढिढोरा पीटते हुअे अुसी समय सबको यात्रिक रूप से अेक ही सांचे में डाल देने का प्रयत्न निरर्थक है। मानव-जीवन में जो भी शुद्ध, सत्य और सुन्दर है अुसपर अिस सार्वत्रिक अेकरूपता के प्रयास से अितनी भयकर विपत्ति आ पडी है कि अुसपर जितनी भी सख्ती से बोली अपर्याप्त ही होगा। अिंगलैंड में सार्वजनिक शिक्षा की व्यवस्था के अब ६० साल हो गये हैं, लेकिन अेक सार्वजनिक 'स्टैंडर्ड' के सर्टिफिकेट की व्यवस्था कभी नही थी, आज भी नही है। यह वाद जो अक्सर सुनाअी देता है कि सब स्कूलो के अेक विशेष स्तर पर पहुचने के लिअे बाह्य परीक्षाओं की जरूरत है, सर्वथा भ्रम-मूलक है। सब स्कूल अेक-जैसे क्यो होने चाहियें? भाग्यवश सब बच्चे अेक जैसे तो नही हैं। जब यह सिद्धात मान्य होगा कि अुच्चशिक्षा केन्द्रो में और कामो में प्रवेशार्थियो को अुनके व्यक्तिगत गुण और कुशलताओं के आधार पर ही लिया जायगा, यह अुनसे मुला-कात करके और विशेष जाचो के द्वारा ही तय किया जायगा, किसी बाह्य सर्टिफिकेट की अपेक्षा नही होगी, तब यह सार्वत्रिक स्टैंडर्ड का वाद भी अपने आप खतम हो जायगा।

६ अगर हम अिस विचार को अेक दफे हटाने में समर्थ होते हैं कि फलाना सर्टिफिकेट होने से फलाना काम और अुसमें अितनी तनख्वाह और फलाना स्टैंडर्ड पहुचने से फलाने कालेज में प्रवेश मिलेगा, तब आज जो

"पास" "प्रोमोशन" और "इनाम' का लोभ विद्यार्थियो के मन को जितना घरकर रखता है, अुसके बदले सारी शिक्षा की प्रक्रिया की तरफ ज्यादा स्वस्थ वृत्तियो का निर्माण हो सकता है जिससे बच्चा नयी नयी अनुभूतियो के आनदपूर्ण जगत् में स्वतत्र विकास पायगा। वर्तमान व्यवस्था की परीक्षाओ में किसी न किसी तरह पास होन के तकाज के कारण जो असत्य और अन्याय की प्रवृत्तिया बढती हैं अुनका विस्तार यहा करना आवश्यक नही है। मै कहना यह चाहती हू कि जब ये बाधाअें और बधन हटा दिय जायग तब शिक्षक और विद्यार्थी अेक मुक्ति का अनुभव करेग, तब अुनपर अपने ही सत्य और कतव्यबोध का बधन रहेगा–अपने समाज के सब बच्चो को अपनी शक्ति की मर्यादा के अदर शरीर की मन की, और आत्मा की अच्छी से अच्छी शिक्षा देने का कतव्य, हर अेक बच्चे को अुसकी अपनी स्वाभाविक वृत्तिया और जरूरतो के अनुसार ज्यादा से ज्यादा विकास पान का मौका देन का कर्तव्य। मुझ अेक ही डर है कि हम अपने कैदखान की व्यवस्था के–पाठयक्रमों के, परीक्षाओ के–अितन आदी हो गय है कि कही जब अिनसे छूटकारा पान का मौका मिलता है तो हम अुसे लेना नही चाहगे। अगर अैसा हुआ तो 'पूण स्वराज्य की हमारी आकाक्षा अब स्वप्न मात्र रहेगी।

सार्वजनिक परीक्षाअें नही होगी तो सार्वजनिक पाठ्यपुस्तको की भी जरूरत नही होगी। भाषा की समस्या हल करने के लिअे अेक नया रास्ता खुल जायगा, नयी सभावनायें निकलेगी। प्रतिभाशाली शिक्षको को नये तरीके से सोचने और काम करने का मौका मिलेगा। अुनके द्वारा किये गये नये प्रयोग और नये अनुभव शिक्षा जगत् को अधिक समृद्ध बनायग। खुले क्षेत्र में नअी तालीम के सिद्धातो की असली जाच होगी। पुराने तरीको के साथ–जिनसे नअी तालीम का मेल नही है–अुसे जोडने का प्रयत्न नही करना पडेगा। अुससे निकल विद्यार्थी अपन ही गुणो के आधार पर आगे बढेंग या अयोग्य साबित होग।

अिस लेख में अक सार्वजनिक परीक्षा के बदले–जिसके नतीजो पर विद्यार्थी का सारा भविष्य निर्भर रहता है–विभिन्न कामो तथा विभिन्न विषयो के अध्ययन के लिअे विभिन्न गुणो और कुशलताओ की स्वतत्र जाच होन की आवश्यकता बतान का प्रयास किया गया है। अिन जाचो का रूप क्या हो और अुनमें सुधार कैसे किया जाय अिसकी चर्चा नही की, करने की जरूरत भी नही है। कअी नअी तालीम सम्मेलनो में अैसी जाचो के विशिष्ट स्वरूपो पर चिंतन और मनन हुआ है। अिस क्षेत्र में प्रत्यक्ष प्रयोग के लिअ पर्याप्त सामग्री अुपस्थित है, केवल अमल करन की आवश्यकता है।

राजपुरा नअी तालीम सम्मेलन का कार्यक्रम

२३-२८ अप्रैल १९५९

'नअी तालीम' के पाठकों को पहले ही सूचना दी गयी है कि अिस साल अखिल भारत नअी तालीम सम्मेलन अप्रैल के आखिरी हफ्ते में राजपुरा, पंजाब में आयोजित हो रहा है। सम्मेलन के आखिरी दिन सुबह विनोबाजी राजपुरा पहुंचेगे और समारोप के अवसर पर अुनका प्रवचन सुनने का सोभाग्य हमको मिलगा।

सम्मेलन २५ अप्रैल दोपहर को शुरू होगा और प्रदर्शिनी का अुद्‌घाटन २३ ता० तीसरे पहर होगा। परन्तु २३ ता. सुबह से शिक्षकों के अेक विशेष सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है और अिसकी चार बैठके २३ और २४ ता० के दोनों वक्त होंगी। पिछले सालों के अनुभव से अैसे सम्मेलन अत्यंत मूल्यवान पाये गये हैं। अिसमें स्कूलों में प्रतिदिन प्रत्यक्ष काम करने वाले शिक्षकों को अपने अनुभवों व विचारों का आदान-प्रदान करने तथा अपनी समस्याओं को साथियों के सामने रखने का मौका मिलता है। यह स्वाभाविक ही है कि अिस सम्मेलन में अधिकतर शिक्षक पंजाब के ही रहेंगे, लेकिन आशा की जाती है कि दूसरे राज्यों की भी विशेष समस्याओं पर चर्चा होगी। चर्चा के लिअे निम्नलिखित विषय रखे गये हैं। अेक या दो भाअी विषय की शुरूआत करेंगे, फिर अुसपर चर्चा होगी।

१ बुनियादी तालीम क्या है?

२ बुनियादी शाला का संगठन, प्रचलित शालाओं का अिस पद्धति में परिवर्तित करना—आवश्यक साधन सामग्री, अुत्पादित वस्तुओं की बिक्री या अुपयोग, समाज के साथ शाला का संबंध।

३ बुनियादी तालीम की शिक्षा पद्धति।

४ बुनियादी शाला के शिक्षकों की कठिनाअियां और समस्यायें।

आशा की जाती है कि प्रत्यक्ष क्षेत्र मे काम करनेवाले शिक्षकों के अिस सम्मेलन में जो विचार और निष्कर्ष निकलेंगे वे आगे अखिल भारतीय सम्मेलन में विचार और चर्चा के लिअे बहुत अुपयोगी साबित होंगे।

अप्रैल २५ ता० शामको ५ बजे सम्मेलन का अुद्‌घाटन समारंभ होगा। अिसमें स्वागताध्यक्ष का भाषण, सम्मेलन का अुद्‌घाटन भाषण और अध्यक्षीय भाषण होंगे। फिर केन्द्रीय सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकार के शिक्षा विभागों के प्रतिनिधि १९५७ नवंबर में तुर्की नअी तालीम सम्मेलन के बाद देश में बुनियादी तालीम के विस्तार और विकास का जो काम हुआ अुसकी संक्षिप्त रिपोर्ट सम्मेलन के सामने पेश करेंगे। अुसके बाद विभिन्न विषयों पर अधिक गहरे चिंतन के लिअे सम्मेलन चंद अध्ययन मंडलियों में विभक्त होगा। अिन मंडलियों में विचार के लिअे शिक्षक सम्मेलन के निष्कर्ष भी अुपलब्ध होंगे। पिछले अनुभवों और नतीजों के आधार पर कुछ अध्ययन सामग्री (वर्किंग पेपर) तैयार की जा रही है। अध्ययन मंडलियों के लिअे ये विषय सुझाये जा रहे हैं।

१ बुनियादी शिक्षा की व्यवस्था व संगठन।

२ शिक्षकों की तालीम व तैयारी ।

३ शिक्षा के लिअे अुपयुक्त साहित्य ।

४ नअी तालीम में अनुसधान की आवश्यकता और सभावनाअें ।

५ शिक्षा और शाति

६ पूर्व बुनियादी शिक्षा

अप्रैल २६ ता०का पूरा दिन तथा २७ ता० की सुबह का ज्यादातर समय अिन अध्ययन-मडलियो के काम के लिअ मिले अैसी योजना है। अिनके निष्कर्ष २७ ता० दुपहर की सभा में विनोबाजो के प्रवचन के पहले सम्मेलन के सामने रखे जायगे ।

ता० २७ अप्रैल रात को स्वागत समिति की ओर से सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जायगा ।

सम्मेलन के बाद ता २८ अप्रैल को स्वागत समिति की ओर से राजपुरा के आसपास कुछ दर्शनीय स्थानो को देखने का प्रबध किया जा रहा है। अिनका सक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है ।

१ गुरुद्वारा आनदगढ साहब—यहा गुरु गोविंद ने आत्मबलिदान की नीव पर सिखधर्म की स्थापना की ।

२ गुरुद्वारा फतहगढ साहब ।

३ पटियाला–पेप्सू की राजधानी–यहा का मोती किला अित्यादि ।

४ भाखडा बाध

५ नागल ।

६ गोविंद सागर ।

७ चढीगढ–पजाब की नयी राजधानो ।

८ पिंजोर–मुगल साम्राटो के प्रसिद्ध अुद्यान ।

पाठकों से—

'नअी तालीम' के फरवरी १९५९ के अक में सूचना दी गयी थी कि माच का अक सर्वोदय सम्मेलन बीच में आने के कारण कुछ देरी से निकलेगा। अुसका कारण यह भी था कि अुस अक में हम सर्वोदय परिसवाद तथा सम्मेलन की कुछ महत्वपूण चर्चाअें और भाषण भी देना चाहते थ । अब शीघ्र ही नअी तालीम सम्मेलन भी आ रहा है । अुसकी तैयारी के लिअे कुछ सामग्री 'नअी तालीम' में देना जरूरी था । यह सब तैयार करन में कुछ समय लग गया और अब माच और अप्रैल का सम्मिलित अक आपके सामन आ रहा ह ।

माच का अक नहीं मिलन से जो असुविधा हुअी है अुसके लिअे हम पाठकों से क्षमा चाहते हैं ।

—सपादक मडल

हिन्दुस्तानी तालीम संघ की बैठक
बुनियादी तालीम की कुछ समस्यायें

हिन्दुस्तानी तालीमी सघ की अर्धवार्षिकी बैठक १८ फरवरी १९५९ को श्री आर्यनायकमजी की अध्यक्षता में हुअी। अिस बैठक में बुनियादी तालीम की कुछ मुख्य बातो पर चर्चा हुअी जैसे बुनियादी शिक्षा की सरकारी मान्यता, बुनियादी, अुत्तर बुनियादी विद्यालयो की जाच। अुसका साराश नीचे दिया जा रहा है।

विश्वविद्यालयों में बुनियादी तालीम

१ बुनियादी तालीम सर्वव्यापक अेक राष्ट्रीय शिक्षा का कार्यक्रम बने अिसलिअे यह आवश्यक है कि केन्द्रीय सरकार का शिक्षा मत्रालय अपनी ओर से नअी देहली में अेक अैसा अुच्च स्तर का बुनियादी विद्यालय चलाये जिसमें अुच्च आर्थिक वर्ग के बालक बालिकाओ को भी शिक्षा, बुनियादी तालीम की पद्धति से प्राप्त करने का मौका मिले। बुनियादी शिक्षा अब तक जनप्रिय नही बनी है। आज अिससे जनता में बुनियादी शिक्षा के बारे में यह विचार है कि बुनियादी तालीम गरीब वर्गों के लिअे है और अिसके लिअे सरकार की मान्यता और समर्थन नही है। अिस प्रकार के अुच्च स्तर के शहरी बुनियादी विद्यालय चलाने से जनता का विश्वास प्राप्त करने में सहायता होगी।

२ नअी देहली के बाद देश के मुख्य शहरो में राज्य सरकारो की ओर से अिस प्रकार के अुच्च स्तर के बुनियादी विद्यालय स्थापित हो।

३ आज राष्ट्र में जितने विश्वविद्यालय ह अुनके शिक्षा विभागो (फेकल्टी ऑफ अेजूकेशन) और शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयो में प्राथमिक से लेकर अुच्च माध्यमिक स्तर तक बुनियादी शिक्षा की प्रयोग शालाओ के निर्माण हो जहा बुनियादी शिक्षा के बारे में प्रयोग, खोज और परीक्षण का काम चले। अिस कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के लिअे पहले कदम के तौर पर सघ सिफारिश करता है कि आज केन्द्रीय सरकार की ओर से चलाय जानवाले चारा विश्वविद्यालयो के शिक्षा विभागा म और प्रशिक्षण महाविद्यालयो में अिस कार्यक्रम का प्रारभ हो।

४ अिस दिशा में आग के कदम के तौर पर देहली में केन्द्रीय सरकार की ओर से सेन्ट्रल अिन्स्टीट्यूट ऑफ अजूकशन और नशनल अिन्स्टीट्यूट ऑफ बेसिक अेजूकशन में अुच्च स्तर की बुनियादी शिक्षा का प्रयोग हो।

सघ केन्द्रीय शिक्षा मत्रालय से अनुरोध करता है कि अिस प्रश्न पर विचार करके शीघ्र ही कोअी कदम अुठाये। हिन्दुस्तानी तालीमी सघ अिस काम में यथासभव सहयोग देने को तैयार है।

५ नअी तालीम में परीक्षा का स्थान —

नअी तालीम के सर्वजनमान्य अेक राष्ट्रीय शिक्षा के रूप से विकास के प्रश्न पर चर्चा क सिलसिले में परीक्षा का प्रश्न भी सदस्यो के सामने आया।

यद्यपि बुनियादी शिक्षा की योजना में परीक्षा का स्थान नही है तथापि वस्तुस्थिति यह है कि आज करीब करीब सभी राज्यो में

बुनियादी और अुत्तर बुनियादी विद्यालयों की जांच शिक्षा विभागों के द्वारा प्रचलित शिक्षा पद्धति के अनुसार ही की जाती है और जो नअी तालीम के अुद्देश्य और कार्यक्रम से विपरीत दिशा में है।

अिस प्रश्न पर विचार करने के बाद संघ ने फिर से अपना आग्रह दोहराया कि नअी तालीम की अवधि में जांच, अिस अवधि के शिक्षाक्रम के अुद्देश्य व कार्यक्रम को सामने रखकर ही की जानी चाहिये। बुनियादी तालीम का आठ साल का शिक्षाक्रम अखंड माना जाय और अुसमें पांचवी के बाद परीक्षा देकर अेक नये ढंग का शिक्षाक्रम आरंभ न किया जाये। विद्यार्थी की अंतिम जांच में साल भर के काम का विवरण का ही स्थान मुख्य होना चाहिये। आज बुनियादी शिक्षा पूरा करने के बाद जो विद्यार्थी या विद्यार्थिनी आगे की शिक्षा के लिअे विश्वविद्यालयों में प्रवेश करना चाहते हैं अुनकी कठिनाअियों के बारे में बाद में विचार हुआ।

संघ की राय यह रही कि परीक्षा या जांच दो प्रकार की होनी चाहिये। अेक माध्यमिक या अुत्तर बुनियादी शिक्षाक्रम पूरा करने के बाद शालांत योग्यता की जांच और दूसरा विश्वविद्यालयों के विभिन्न विभागों में प्रवेश के लिअे योग्यता की जांच। विद्यालय में प्रवेश–योग्यता की जांच के लिअे विद्यार्थी की पूर्वोक्त शिक्षा जिस पद्धति से हुअी अिसका कोअी आवश्यक संबंध जोड़ा जाये। चाहे वह विद्यार्थी प्रचलित पद्धति के अनुसार या बुनियादी पद्धति के अनुसार शिक्षा प्राप्त हो। विश्वविद्यालय प्रवेश–परीक्षा में अगर अुत्तीर्ण हो तो अुसे विश्वविद्यालय में प्रवेश पाना चाहिये।

६. बुनियादी शिक्षा की अवधि

संघ का ध्यान अिस बात पर आकर्षित किया गया कि अब सरकार की नीति आठ साल की मुफ्त व लाजिमी तालीम के बदले पांच साल तक करने की है।

यद्यपि संविधान में कहा गया है कि भारत के प्रत्येक बालक व बालिका को १४ साल की आयु तक शिक्षण देने का प्रबंध करना है, सरकार ने आर्थिक व व्यावहारिक कारण बताकर ग्यारह साल तक के बच्चों की ही शिक्षा का प्रबंध करने का कार्यक्रम बनाया है। यह नीति शिक्षा की दृष्टि से बहुत असंतोष जनक और अव्यावहारिक है। जबकि दुनिया के काफी राष्ट्र लाजिमी तालीम की मीयाद को चौदह साल से आगे बढ़ा रहे हैं, यह कदम राष्ट्र के हित के लिअे प्रगति कारक सिद्ध नहीं होगा। संघ महसूस करता है कि बुनियादी तालीम का विकसित रूप सामने रखकर हमें शीघ्रातिशीघ्र अैसी राष्ट्रीय शिक्षा की योजना बनानी चाहिये कि जिसमें चौदह साल तक के हर अेक बालक बालिका की शिक्षा का प्रबंध हो।

"नअी तालीम" पत्रिका की जानकारी

फार्म ६, रूल ८.

प्रकाशन का स्थान	सेवाग्राम
प्रकाशन काल	मासिक
मुद्रक का नाम	द्वारका प्रसाद परसाअी
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा)
प्रकाशक	अी. डब्ल्यू. आर्यनायकम्
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा)
संपादक	आशादेवी आर्यनायकम्, मार्जरी साअिक्स और देवीप्रसाद
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा)
पत्र के मालिक	हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा)

मैं अी. डब्ल्यू. आर्यनायकम् विश्वास दिलाता हूँ कि अुपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

३१ मार्च १९५९

—अी. डब्ल्यू. आर्यनायकम्
प्रकाशक

बुनियादो और अुत्तर बुनियादी विद्यालयो को जाँच शिक्षा विभागो के द्वारा प्रचलित शिक्षा पद्धति के अनुसार ही की जाती है और जो नअी तालीम के अुद्देश्य और कार्यक्रम से विपरीत दिशा में है ।

अिस प्रश्न पर विचार करने के बाद सघ ने फिर से अपना आग्रह दोहराया कि नअी तालीम की अवधि में जाच, अिस अवधि के शिक्षाक्रम के अुद्देश्य व कार्यक्रम को सामने रखकर ही की जानी चाहिये । बुनियादी तालीम का आठ साल का शिक्षाक्रम अखड माना जाय और अुसमें पाचवी के बाद परीक्षा देकर अेक नये ढग का शिक्षाक्रम आरभ न किया जाये । विद्यार्थी की अतिम जाच में साल भर के काम का विवरण का ही स्थान मुख्य होना चाहिये । आज बुनियादी शिक्षा पूरा करने के बाद जो विद्यार्थी या विद्यार्थिनी आग की शिक्षा के लिअे विश्वविद्यालयो में प्रवश करना चाहते हें अुनकी कठिनाअियो के बारे में बाद में विचार हुआ ।

सघ को राय यह रही कि परीक्षा या जाच दो प्रकार की होनी चाहिय । अक माध्यमिक या अुत्तर बुनियादी शिक्षाक्रम पूरा करन के बाद शालात योग्यता की जाच और दूसरा विश्वविद्यालयो के विभिन्न विभागा में प्रवेश के लिअे योग्यता की जाच । विद्यालय में प्रवश–योग्यता की जाच के लिअे विद्यार्थी की पूर्वोक्त शिक्षा जिस पद्धति से हुअी अिसका कोअी आवश्यक सबध जोडा जाये । चाहे वह विद्यार्थी प्रचलित पद्धति के अनुसार या बुनियादी पद्धति के अनुसार शिक्षा प्राप्त हो । विश्वविद्यालय प्रवेश–परीक्षा में अगर अुत्तीर्ण हो तो अुसे विश्वविद्यालय में प्रवेश पाना चाहिये ।

६. बुनियादी शिक्षा की अवधि

सघ का ध्यान अिस बात पर आकर्षित किया गया कि अब सरकार की नीति आठ साल की मुफ्त व लाजिमी तालीम के बदले पाच साल तक करने की है ।

यद्यपि सविधान में कहा गया है कि भारत के प्रत्येक बालक व बालिका को १४ साल की आयु तक शिक्षण देन का प्रबध करना है, सरकार ने आर्थिक व व्यावहारिक कारण बताकर ग्यारह साल तक के बच्चो की ही शिक्षा का प्रबध करने का कार्यक्रम बनाया है । यह नीति शिक्षा की दृष्टि से बहुत असतोष जनक और अव्यावहारिक है । जबकि दुनिया के काफी राष्ट्र लाजिमी तालीम की मीयाद को चौदह साल से आगे बढा रहे हें, यह कदम राष्ट्र के हित के लिअे प्रगति कारक सिद्ध नही होगा । सघ महसूस करता है कि बुनियादी तालीम का विकसित रूप सामन रखकर हमें शीघ्रातिशीघ्र अैसी राष्ट्रीय शिक्षा की योजना बनानी चाहिये कि जिससे चौदह साल तक के हर अेक बालक बालिका की शिक्षा का प्रबध हो ।

"नअी तालीम" पत्रिका की जानकारी

फार्म ६. रूल ८.

प्रकाशन का स्थान	सेवाग्राम
प्रकाशन काल	मासिक
मुद्रक का नाम	द्वारका प्रसाद परसाअी
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा)
प्रकाशक	ओ. डब्ल्यू. आर्यनायकम्
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा)
संपादक	आशादेवी आर्यनायकम्, मार्जरी साअिक्स और देवीप्रसाद
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा)
पत्र के मालिक	हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा)

मैं ओ. डब्ल्यू. आर्यनायकम् विश्वास दिलाता हूँ कि अुपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

३१ मार्च १९५९

—ओ. डब्ल्यू. आर्यनायकम्
प्रकाशक

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम

हिन्दी पुस्तकें

	मूल्य रु न पै
शिक्षा पर गान्धीजी के लेख व विचार	
१ शिक्षा में अहिंसक क्रान्ति	१-००
बुनियादी शिक्षा सम्मेलनो की रिपोर्ट	
२ बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा (डॉ जाकिर हुसेन समिति की रिपोर्ट)	१-५०
३ समग्र नअी तालीम	२-७५
४ आठवा न ता सम्मेलन विवरण	१-२५
५ नवा " " "	०-६३
६ दसवा " " "	०-७५
७ ग्यारहवा " " "	१-००
८ बारहवा " " "	१-५०
बुनियादी शिक्षा के आम सिद्धांत	
९ प्रौढ शिक्षा का अुद्देश्य (शाता नारुलकर और मार्जरी साअिक्स)	०-७५
१० जीवन शिक्षा का प्रारम्भ (पूर्व-बुनियादी तालीम की योजना और प्रत्यक्ष काम) (शाता नारुलकर)	१-२५
अलग अलग विषयों पर पुस्तके	
११ मूल अुद्योग कातना (विनोबा)	०-७५
१२ खेती शिक्षा (भिसे और पटेल)	१-००
पाठ्यक्रम की पुस्तके	
१३ आठ सालो का सम्पूर्ण शिक्षाक्रम	१-५०
१४ अुत्तर बुनियादी शिक्षाक्रम (सक्षिप्त)	०-२५
१५ पूर्व-बुनियादी शिक्षको की ट्रैनिंग का पाठ्यक्रम	०-६३
अन्य पुस्तके	
१६ भारत की कथा (अभिनय तथा सगीत)	०-५०
१७ नअी तालीम का आयोजन	०-०६
१८ सेवाग्राम—गाधीलोक	०-३१
१९ सेवाग्राम के काम पर कुछ विचार (प्रो राअीस)	०-०६
नये प्रकाशन	
२०. शाति-सेना	०-१२
२१ शिक्षको से (विनोबा)	०-२५
२२ शाति-सेना का विकास	०-३१
२३ विद्यार्थियों से (विनोबा)	०-२५
२४ ग्राम स्वराज्य नअी तालीम	१-००

नोट-१ पुस्तक की कीमत पर प्रत्येक ५० नये पैसे पर प्राय ६ नये पैसे के हिसाब स डाक खर्च लगेगा। अिसके अलावा वी पी या रजिस्ट्री से मगाने पर ६३ नये पैसे अधिक लगेंगे।

नोट-२. प्रत्येक ऑर्डर के साथ अेक चौथाअी रकम पेशगी रूप में आनी चाहिये।

प्रकाशक – श्री आर्यनायकम्, अध्यक्ष, हिन्दुस्तानी तालीमी सघ, सेवाग्राम।
मुद्रक – श्री द्वारका प्रसाद परसाअी, नअी तालीम मुद्रणालय, सेवाग्राम।

संपादक-मंडल

आशादेवी : मार्जरी साईक्स

देवीप्रसाद

सम्मेलन विशेषांक

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ

सेवाग्राम

वर्ष : ७] मअी १९५९ [अंक : ११

नओी तालीम

'नओी तालीम' मओी १९५९ : अनुक्रमणिका

'नओी तालीम' के नियम

१ "नओी तालीम" अग्रेजी महीने के हर पहले सप्ताह में सेवाग्राम से प्रकाशित होती है। अिसका वार्षिक मूल्य चार रुपये और अेक प्रति की कीमत ३७ नये पैसे है। वार्षिक मूल्य पेशगी लिया जाता है। ग्राहक बनने के अिच्छुक सज्जन चार रुपये मनीऑर्डर से भेजें, तो अुत्तम होगा। वी पी से मगाने पर अुन्हे ६२ नये पैसे अधिक देना होगा।

२ किसी भी महीने से ग्राहक बन सकते हैं। अेक साल से कम अवधि के लिअ ग्राहक नही बनाय जाते हैं।

३ पत्र प्रकाशित होते हो सावधानी के साथ ग्राहको को भेज दिया जाता है। अगर दस दिन के अदर अक न मिले, तो पहले डाकखाने से पूछताछ करके फिर लिखना चाहिय। पत्र न मिलने की पुरानी शिकायता पर ध्यान न दिया जायगा।

४ तीन महीने से कम के लिअे पता बदलवाना हो, तो अपने डाकखाने से अितजाम कर ल।

५ ग्राहको को चाहिअ कि रेपर पर पते के साथ दी हुअी अपनी ग्राहक सख्या हमेशा याद रखें और पत्र व्यवहार में ग्राहक सख्या लिखना न भूले, वरना अुनको शिकायत पर कोओी कार्रवाओी न की जा सकेगी।

—व्यवस्थापक, "नओी तालीम"
सेवाग्राम (वर्धा) बम्बओी राज्य

नई तालीम

(हिन्दुस्तानी तालीमी सघ की मासिक पत्रिका)

वर्ष ७] मओ १९५९ [अंक ११

अेक नअी तालीम के शिक्षक के नाते मेरी यात्रा चल रही है ।

विनोबा

यहा पर हिंदुस्तान भर के नअी तालीम के आचार्य और विद्यार्थी आये हुअे हे । अुसके वलावा गाव के लोग भी अुपस्थित हे ।

आप देखते हे कि हमारी यात्रा आठ साल से चली है । अनेक भाषाओ में अेक कहावत है कि मनुष्य अेक सोचता है और भगवान कुछ दूसरो ही बात सोचता है । लेकिन मुझ वैसा अनुभव नही आया । मुझे तो यही अनुभव आया कि हम भक्त होकर जो सोचते हैं, हमारे लिय भगवान वही सोचता है । याने अक्सर जो कहा जाता है कि अिस जीवन में अपनी सोची हुअी बात नही बनती है वह ठीक भी है क्योंकि कअियो का वैसा अनुभव है, लेकिन वह बात मेरे अनुभव से मेल नही खाती है । मै याद करता हू, तो मालूम होता है कि बचपन से आज तक वही चीज हुअी जो में चाहता था । मेरा बहुत पुराना सकल्प था कि आखिरी अुम्र में परिव्राजक बनूगा, किस तरह से, वह मालूम नही था । बीच में व्यक्तिगत सत्याग्रह के समय जेल में रहने का मौका मिला था, अुस समय मैंने यह फैसला कर के ही जेल छोडा कि अब आखिरी दिन परिव्राजक बनकर बिताने हैं । लेकिन मेरा यह फैसला बचपन में ही हुआ था और मैं अुसकी राह देखता था । गाधीजी के जाने के बाद मैंने कुछ भारत का नाटक अिधर-अुधर थोडा सा देख लिया और थोडा-सा देखने पर ही मन में निश्चय हुआ कि हमारा नया विचार लोक हृदय में तब तक नही पहुचेगा, जब तक अुस के लियें मैं परिव्राजक नही बनूगा । वैसे परिव्रज्या का विचार मेरे मन में पडा ही था लेकिन अुसके लिय हेतु की जरूरत थी । तो वह हेतु मिल गया । जिस दिन मुझे प्रथम भूदान मिला, वह अेक अैसी घटना थी, जिसे आकस्मिक घटना कहकर मैं छोड सकता था । अुसके पहले भी मदिर, मसजिद, स्कूल आदि के लिये लोगो ने जमीन दी थी, अिसलिअे वह कोअी अद्भुत घटना नही थी, लेकिन वहा पर हरिजनो ने जमीन मागी और लोगो ने दी । अिसका मेरे मन पर बहुत असर हुआ और मुझे लगा कि अिसमें अीश्वर का अिशारा

है। तब से आज तक मैं अुस अिशारे पर चल रहा हूं। परिव्रज्या का तो सकल्प था हो। वही परमेश्वर का भी सकल्प था। कहा गया है कि कुर्वन्तम् अिमम् ओीश्वर: कारयति। ओीश्वर कराता है, परन्तु करनेवाले से कराता है। न करनेवाला हो, तो ओीश्वर अुनसे नही करायेगा। मेरा गणित का स्वभाव है, अिसलिये मैंने अुस दिन गणित भी कर लिया था कि भूमि का मसला हल करने के लिये छठे हिस्से की याने पाच करोड अेकड की जरूरत है। मन में सवाल अुठा कि क्या मैं अिस तरह दान मागते फिरूगा तो पाच करोड अेकड जमीन हासिल हो सकती है? अुस रात अन्दर खूब सवाद हुआ, जिसे मैं कृष्णार्जुन-सवाद कहता हू, और आखिर फैसला हुआ कि अिसका नतीजा क्या आयेगा अिस पर सोचना अपना काम नही। नतीजा जो भी आये, लेकिन अपनी परिव्रज्या के लिये अेक हेतु मिल गया। जिसके मन में जो सकल्प होता है, अुसकी सिद्धि के लिये भगवान हेतु देता है। फिर भी वह अुस बात को न समझे, तोमानना होगा कि भगवान की अुस पर अवकृपा है। लेकिन मुझ पर अुसकी अवकृपा नही हुओी। क्योंकि मैंने कोओी वैसा काम नही किया था जिससे कि अुसको अवकृपा हो। अुस दिन से मेरी परिव्रज्या चल ही रही है। लोग पूछते हैं कि आपकी यात्रा कबतक चलेगी तो मैं कहता हू कि मुझे मालूम नही कि यात्रा कब तक चलेगी। क्योंकि मुझे मालूम नही कि जीवन कब तक चलेगा। जब तक जीवन चलेगा, तब तक यात्रा चलेगी। भावान मुझे अुसमें नही रोकेगा। मेरा यह अनुभव है कि आत्मा सत्यकाम. सत्यसकल्प.-मनुष्य के हृदय में कोओी निर्मल कामना आती है तो वह पूरी होने ही वाली है। जो भी ओीश्वर से मदद मागे, वह देने के लिअे खडा ही है लेकिन मांगता ही कौन है?

अिस तरह मेरी यात्रा के लिअे हेतु मिल गया। लेकिन जब मुझ से पूछा जाता है कि आप कौन-सा काम कर रहे हैं, तो मेरे मन में यह नही आता है कि मैं भूदान का काम कर रहा हू। भूदान का काम तो भूमिवाले करते हैं, वे जमीन देते हैं। वह काम मैं नही करता। शुरू के दिनों में जब लोग मुझे मान-पत्र देते थे तो मैं कहता था कि मान-पत्र तो मैं आपको दूंगा। आप मुझे दान पत्र दीजिये। अिसलिअे भूदान में जो दान मिलता है अुसकी जिम्मेवारी देनेवालो की, है, अुसका सारा श्रेय अुनका है। फिर मेरी यात्रा किसलिअे चल रही है? अिसका जवाब मेरे मन में यही अुठता है कि अेक नओी तालीम के शिक्षक के नाते मेरी यात्रा चल रही है। मेरे साथ यात्रा करनेवाले जानते हैं कि हमारी यात्रा में हर रोज सुबह तीन घटे वार्किंग सेमिनार होता है, जहा खूब ज्ञान-चर्चा चलती है। मेरा अपना अनुभव है कि आकाश के नीचे जो विचार सूझते हैं वे मदिर-मसजिद या स्कूल में नही सूझते हैं। आकाश में विचार-प्रवर्तक शक्ति पडी हुओी है। अिसका मुझे बहुत ही अनुभव आया है। मुझे सतत नये-नये विचार सूझते ही रहते हैं।

अिन दिनो मुझे अेक नया विचार सूझा है, जो मैं आपके समाने रखना चाहता हू। अिंग्लिश में अेक शब्द है-स्प्लिट् पर्सनालिटी-याने दुभा आत्मा, भान आत्मा, भग्न-हृदय। मनुष्य अेक परिपूर्ण मूर्ति है, लेकिन अुसकी आत्मा के दो टुकडे हो गये हैं। अेक दिल अिधर खीचता है तो दूसरा दिल अुधर दिल खीचता है। अिस

तरह मनुष्य के दो दिल बन जाते है। अुसके जीवन में खंड पडते है। जो कि वास्तव में पूर्ण होना चाहिये, अखड होना चाहिये, वह खडित होता है। अिसका कारण यह है कि मनुष्य का प्रेम-क्षेत्र और कर्म-क्षेत्र अलग-अलग पड गये हैं। दोनों अलग होने के कारण मनुष्य के जीवन के टुकडे हो गये है। काम के लिअे कुछ लोग हमारे साथी बनते है, जिनके साथ हमें व्यवहार करना पडता है वह कर्म-क्षेत्र के साथी कहलाये जाते है। लेकिन कुछ हमारे प्रेम-क्षेत्र के साथी होते है, जैसे मा-बाप, बच्चे, बहन-भाअी आदि। जब तक ये दोनो क्षेत्र अेक नही होंगे तब तक मनुष्य की आत्मा भग्न ही रहेगी। अुसे अभग्न अखंडित आत्म-भाव का अनुभव नहीं आयेगा। अिसलिये ये दोनो अेक होने चाहिये। जो प्रेमक्षेत्र के साथी है, वे ही कर्म-क्षेत्र के साथी बनने चाहिये और जो कार्य-क्षेत्र के साथी है वे प्रेम-क्षेत्र के साथी बनने चाहिये। महापुरुषो जीवनो में यही बात दीख पडती है कि अुनके दोनों क्षेत्र अेक हो जाते हैं। जहां प्रेम-क्षेत्र और कर्म-क्षेत्र अेक हो जाते हैं वहां धर्म-क्षेत्र बन जाता है।

कर्मक्षेत्र+प्रेमक्षेत्र=धर्मक्षेत्र।

लेकिन हमारा जीवन दो टुकडों में बट जाता है तो अुसका धर्मक्षेत्र नही बनता है और अुसके परिणामस्वरूप सच्चाअी नही आती है। हम न अपने घरवालो पर सच्चा प्रेम करते हैं न साथियों पर करते है। मैंने अैसे कअी कुटुंब देखे हैं जहा पति-पत्नी बीस साल तक साथ रहे है, बच्चे भी हुअे हैं, लेकिन पति-पत्नी के बीच परदा है। पति के हृदय की बात पत्नी नही जानती है और पत्नी के हृदय की बात पति नहीं जानता है।

मनुष्य का पूर्ण प्रेम अपने पर होता है और जिसे हम अपना रूप समझते हैं वही पूर्ण प्रेम का अधिकारी होता है। अीसा-मसीह ने कहा है 'लव दाई नेबर अेज दाईसेल्फ।' अपने पडोसी पर अुतना ही प्यार करो जितना तुम अपने पर करते हो। और अुसने अितना ही कहा होता कि पडोसी पर प्यार करो, तो वह मामूली बात हो जाती। क्योंकि हम पडोसी पर प्रेम करते ही हैं। परन्तु अुसने कहा कि जितना और जैसा प्रेम हम अपनी आत्मा पर करते हैं, अुतना और वैसा प्रेम पडोसी पर करो। यह ब्रह्मविद्या के बिना संभव नही है। सामने जो चीज खडी है, अुसमें हमें अपना ही दर्शन होना चाहिअे जो ब्रह्मविद्या से ही होता है। मां का बच्चे पर पूर्ण प्रेम होता है। चाहे देह द्वारा भी हो, परन्तु वह सोचती है कि बच्चा मेरी आत्मा का विस्तार है, वह देह का विस्तार, (अेक्स्टेन्शन) है। संस्कृत में बच्चे को तनय कहा जाता है। अुसका मतलब है–माता-पिता का विस्तार। हम आत्म-तत्व हैं और यह तनु याने शरीर हमारा विस्तार है। तन का मतलब ही विस्तार है और हमारा अपत्य भी अुसका विस्तार है। अिस तरह अुत्तरोत्तर विस्तार होता है। अिसीलिअे मां का बच्चे पर आत्मवत् प्यार होता है। कभी-कभी अपने से ज्यादा प्यार भी होता है, लेकिन वह आसक्ति मानी जायगी। परन्तु जितना हम अपने पर प्यार करते हैं, अुतना दूसरे पर करे, तो वह आत्मदर्शन माना जायेगा। माता का आत्मदर्शन सीमित होता है, दो-चार बच्चों तक ही सीमित होता है। हम मित्रों पर प्रेम करते हैं, क्योंकि अुनके साथ काम करना पडता है, लेकिन वहां काम प्रधान बनता है और प्रेम गौण बन जाता है। हम घरवालों से भी काम लेते है, लेकिन वहां काम गौण बनता है और

प्रेम प्रधान बनता है। अिस तरह अेक क्षेत्र में कार्यप्रधान और प्रेम गौण तो दूसरे क्षेत्र में प्रेम प्रधान और काम गौण बनता है। अिसलिअे अगर कोअी अेक क्षेत्र में हमारी तसवीर खीचे और फिर दूसरे क्षेत्र में खीचे तो दोना बिल्कुल अलग हो जायेंगी। कोअी आदमी बाल-बच्चे के साथ बैठा हो, तो वहा पर अुसकी फोटो खीची जाय और मीटींग में बैठा हो और वहा पर फोटो खीची जाय तो दोनो फोटो में अितना अन्तर दिखेगा कि सवाल पैदा होगा कि क्या यह अेक ही व्यक्ति है? हमारे लिअे यह सोचने की चीज है। हमें समझना चाहिअे कि जहा प्रेम और काम दोनों अेक हो जायेंगे, वहा धर्म-चक्र हमारे लिअे खुल जायेगा।

पजाब के लोगो को पजाब की वे चीजें मालूम नही है जो मुझे मालूम है। १९१८ में मेरी मा की मृत्यु हुअी। और जिस दिन मृत्यु हुअी अुसी दिन मैंने ऋग्वेद पढना शुरू किया। अब ४१ साल हो गये मेरा ऋग्वेद का अध्ययन चल ही रहा है। ऋग्वेद मे विश्वामित्र नदी-सवाद का जिक्र आता है जिसमें विश्वामित्र और नदी अेक दूसरे से बात करते है। वियास और सतलज के सगम स्थान पर विश्वामित्र खडे है और भारतीय मित्रा को लेकर अुस पार जाना चाहते है। नदी में बाढ आयी है।

विपाट् छुतुद्री पयसा जवेते

४१ साल पहले जब मैंने यह श्लोक पढा था अुसी दिन नक्शे में वह स्थान देख लिया था। दूसरे किसी स्थान का अुल्लेख अितना प्राचीन नही मिलता है। काशी और कुरुक्षेत्र का अुल्लेख आता है, परन्तु अुपनिषदो में, लेकिन ऋग्वेद में अिसका अुल्लेख आया है। याने वेद की ध्वनि यहा से निकली है। विश्वामित्र नदी से कहता है:— रमध्व मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरुप मुहूर्तमेवैः हे मेरी माता, तू मेरे लिअे सुपारा, सुतरणीय बन जा। मेरी सौम्यवाणी सुनकर अेक मुहूर्त के लिअे रुक जा।

निपूनमध्व भवता सुपारा

तो नदी अुत्तर देती है "नि ते नैसे पीप्यानेव योषा मर्यायेव कन्या शश्वचै ते ॥ मै तेरे लिअे झुक रही हू, जैसे माता बच्चे के लिअे झुकती है। यह कहने पर नदी को लगा कि विश्वामित्र को बेटे की अुपमा देने के बजाय बाप की अुपमा दू तो अुसने कहा कि जैसे कन्या बाप की सेवा के लिअे झुक जाती है, वैसे मैं तेरे लिअे झुक जाती हू। यों कहकर नदी का पानी अुतर गया और विश्वामित्र भारतीयो को लेकर नदी पार पर के चला गया। . . सस्कृत साहित्य में मुझे कही भी अितना प्राचीन दूसरे किसी स्थान का स्पष्ट अुल्लेख नही दिखाअी दिया। वह स्थान पजाब में है। अुसी पजाब में अब मैं आया हू।

ब्रह्मविद्या यही पर पैदा हुअी थी। वेद, अुपनिषद, गीता आदि सारा का सारा ब्रह्मविद्या का प्रवाह जो है, अुसका अुगमस्थान पजाब है। अैसे अुगमस्थान में मै आया हू। तो यहा के लागों के साथ मै अेकरूप बन गया हू। मै यहा के भाअियो के चेहरो की तरफ देखता हू तो सोचता हू कि क्या यह अर्जुन का चेहरा है, या कृष्ण का या विश्वामित्र का है। और जब अिस पजाब में मै झगडे देखता हू तो मुझे लगता है कि गभीर समुद्र में हवा के कारण अूपर के स्तरो में हिलोरे अुठ रही है, परन्तु अन्दर गभीरता है। अुस अन्दर की गभीरता में हम प्रवेश करते है, अुस ब्रह्मविद्या में प्रवेश

करते हैं जो वेदों से लेकर गुरु-ग्रन्थ तक चली आयी है ।

यह मेरे जीवन का अन्तिम पर्व है, सन्ध्या-काल है । अुस काल में मैं जिस ब्रह्मविद्या को लेकर घर छोडकर निकला था अुसी का स्मरण सन्ध्याकाल में कर रहा हू । मैं मानता हू कि हमने पचासो विद्याअें सीखी लेकिन ब्रह्मविद्या नही सीखी तो कुछ भी नही सीखा । हम लोग आश्रम खोलते हैं तो अुसका अेक ढाचा बन जाता है । वहा पर चर्मालय, कोल्हू, चरखे, बढअीकाम आदि पचासो प्रकार की विद्याअे सिखायी जाती है । लेकिन अिन सब विद्याओ की जो शिरोमणि विद्या है, वह नही होती है । अिसलिअे जहा भी हम जाते हैं, वहा मनुष्यो के बीच परदा देखते हैं ।

नअी तालीम के बारे मे चर्चा चलती है कि अुद्योग के जरिये तालीम दी जाय या निसर्ग के जरिये या परिस्थिति के जरिये आदि । अिस पर मैं कहना चाहता हू कि आत्मा में कुछ गुण होते हैं, अुन गुणों को प्रकाश में लाना यही तालीम का काम है । अिसलिअे गुण-विकास से बढकर तालीम का कोअी अुद्देश्य नही है । अुस गुण-विकास के लिअे चाहे आप ग्रन्थ का अुपयोग कीजिअे, चाहे कुदरत का, चाहे अुद्योग का । लेकिन जहाँ गुण-विकास नही है, वहाँ तालीम नही है । गुण-विकास की प्रक्रिया कहाँ-से-कहाँ जाती है, अिसे हम जरा देखें तो पता चलता है कि पचास गुणो का अधिष्ठान जो आत्म-तत्व है, अुसे टाल कर गुण-विकास की चर्चा कैसे की जा सकती है ? सब गुणो का अधिष्ठान है निर्भयता और निर्भयता का अधिष्ठान क्या है ? क्या अपने पास शस्त्रास्त्र आ गये तो निर्भयता पैदा हो जाती है ? क्या हम से बडे शस्त्र दूसरे के पास आ गये तो भी हमारी निर्भयता कायम रहेगी ? समझने की जरूरत है कि सामने जो खडा है, वह मेरा ही रूप है । अिस तरह आत्मरूप का दर्शन हो, तो निर्भयता आती है । आत्म-तत्व के बिना कौन-सा गुण स्थिर होगा ? अिसलिअे मेरे दिल में बार-बार विचार आता है कि यह भूदान, ग्राम-दान बिल्कुल आसान हो जायगा, अगर जो मूल चीज ब्रह्मविद्या की है, जो पजाब की अपनी चीज है, अुसकी गहराअी में हम जा सकेंगे ।

मैंने अिस प्राथमिक भाषण में आपसे चद बाते कही हैं । अुनका सार अिस प्रकार है .

१ मनुष्य जो सोचते हैं, अुससे परमेश्वर बिल्कुल भिन्न नही सोचता है, बशर्ते कि मनुष्य भक्त बन जाय । परमेश्वर यह नही चाहता है कि भक्तो की फजिहत हो । वह तो निरहकारिता का शिरोमणि है, अिसलिअे वह यही चाहता है कि भक्त के सकल्पों की पूर्ति हो ।

२ मनुष्य-हृदय के आत्मा के टुकडे नही होने चाहिअे । अिसलिअे प्रेम-क्षेत्र और कर्म-क्षेत्र को अेक करके हृदय का धर्म-क्षेत्र बनाना चाहिअे ।

३. हम पचासो चीजे सीखें, लेकिन अुनके मूल में जो ब्रह्म-विद्या है, अुससे कतराते रहेंगे, तो गुण-विकास नही होगा । गुण-विकास की गहराअी तबतक नही आयेगी, जबतक हम आसमान में नही जायेंगे ।

४. ब्रह्मविद्या पजाब की अपनी चीज है, अिसलिअे मैं पजाब के भाअियो में अिन सब ऋषियो का दर्शन करता हू पजाब के भाअी अिसका ख्याल करे कि अपने पीछे सस्कृति का कितना बल है । तब अूपर-अूपर के झगडे अैसे ही खतम हो जायेंगे ।

तालीम में पूर्ण अहिंसा और पूर्ण आजादी होनी चाहिये ।

विनोबा

यहा पर सारे हिन्दुस्तान की सोचनेवाली जमात आयी हुओ है, जो यहा चर्चा करेगी, कुछ फैसला करेगी और अपने अपने स्थान पर जाकर अमल करेगी। स्वराज्य प्राप्ति को अब करीब १२ साल हो चुके हैं। और नई तालीम का विचार सरकार ने मान्य किया है। अिसलिअे अिस मजलिस में सरकारी लोग भी हैं और गैर सरकारी लोग भी हैं।

मैं कबूल करता हू कि मेरे कओी विचार अैसे हैं कि जो मेरे अपने हैं और जो शायद अिस जमाने में अेकदम से कबूल किये जानेवाले नही हैं। लेकिन फिर भी वे विचार मुझे सही मालूम होते हैं अिसलिअे मैं अुनको रखा करता हू। मेरा अेक विचार यह है कि किसी भी देश को तालीम सरकार के हाथ में नही होनी चाहिअे। मैं मानता हू कि तालीम का यह अेक बुनियादी असूल है। नही तो तालीम का रेजिमटेशन होगा, तालीम अेक ढाचे में ढाली जायेगी और लोगो का दिमाग आजाद नही रहेगा। अुस हालत में डेमाक्रेसी का नाटक ही होगा और हरेक को अेक वोट का अधिकार दिया गया है, वह बेकार साबित होगा। अगर सरकार के हाथ में तालीम रही तो जिस रंग की सरकार होगी वही रंग तालीम पर चढेगा।

जमाने से तालीम आजाद रही है। लेकिन अिन दिनो वेलफेअर स्टेट का ख्याल पैदा हुआ है और सरकार के हाथ में तरह-तरह की सत्ताअें दो जाती है। अुनमें तालीम का भी अेक सत्ता और तालीम की जिम्मेदारी डाली जाती है। आप जानते हैं केरल अेक कम्युनिस्ट स्टेट है। वहाँ की सरकार ने तालीम के बारे में अेक बिल बनाया। अैसा बिल था कि वह जरा कमता था—बस कर के जनता में तबदिली करनेवाला बिल था। अुसके अच्छे पहलू भी थे, लेकिन अुसका नतीजा वह हानेवाला था। अिसलिअे बहुत होहल्ला मचा, आखिर वह चीज गयी राष्ट्रपति के पास। और राष्ट्रपतिजी ने अुचित समझा कि वह न्यायालय में भेजा जाय। आखिर वह बिल न्यायालय में पहुचा और न्यायाधीश ने कुछ थोडे फर्क सुझाय, बहुत बडे फर्क नही थे, अैसे फर्क नही कि अुस बिल में जो मूल विषय था अुसमें विशेष फर्क होता था, जितने फर्क सुझाये अुतने कबूल कर लिये गये और अिस बिल का अक्ट बन गया। बहुत अुसके बारे में होहल्ला चला हिन्दुस्तान भर में। लेकिन वह बात हुअी और अुसकी शिकायत हमारे लोग करते हैं कि वहा तालीम पर कब्जा पूरा स्टेट के हाथ आ गया। लेकिन हम शिकायत करने के अधिकारी नही है। अिसलिअे कि वही चीज हम भी करते हैं। फर्क अितना ही है कि कम्युनिस्टो में अफिसिअन्सी (कार्यक्षमता) होती है अिसलिअे वे अफिसिअन्सी के साथ काम करते हैं। अिसके सिवाय और कोअी शिकायत हो नही सकती। हमारे यहा भी तालीम सरकार के हाथ में है। तालीम में कौन विषय सिखाये जाय, कितना सिखाया जाय, गणित के कितने पिरिअड रहें, मातृभाषा के लिअे कितने पिरिअड दें—पिरिअड्स तक लिख के आते हैं। यह ढाचा रहेगा अैसा लिखकर के आता है तदनुसार गुरुजी जो आजकल के सरकार के नौकर हैं

अुस पर अमल करते हैं। फर्क नहीं कर सकते। जो सरकार तय करती है, वही करना है। अंग्रेजी कहा से शुरू करनी है, सरकार तय करेगी। अिस भाषा को कितना स्थान देना सरकार तय करेगी। अेक बुक सरकार निश्चित करती है, वह टेक्स्ट बुक कुल स्कूलो मे चलती है। मैने बार-बार कहा कि किसी भी ज्ञानी मनुष्य के हाथ में जो सत्ता नही थी, वह हमने अेज्युकेशन डिपार्टमेंट के हाथ मे दे दी। अुत्तर-प्रदेश में सवा छ करोड जनता है, जो टेक्स्ट बुक सरकार निश्चित करती है वह कुल-के-कुल बच्चो को पढनी पड़ेगी अुसका अच्छी प्रकार अध्ययन करना पडेगा, अुसकी परीक्षा देनी पड़ेगी। अिस तरह से मुझे तो सबसे बडा खतरा यह मालूम होता है और दुनिया को अगर बचाना है और आजादी के मान कायम रखना है तो अिनमें से हमें मुक्त होना ही चाहिये अिसमें कोओ सदेह नही। खैर, यह मेरा पहला विचार है।

अब अिसके बाद नअी तालीम के बारे में कुछ कहना चाहता हू। नअी तालीम यह नित्य नअी तालीम है। याने अिसका जो ढाचा दस साल पहले बना होगा, वह आज नअी तालीम नही कहलायेगी। वह पुरानी तालीम हो जायेगी। जमाना जोरो से आगे बढ रहा है। विज्ञान-युगका जमाना है, दस साल से हम कहा से कहा चले गये है कितनी पुरानी चीजें बेकार साबित हो चुकी हैं, अैसी हालत में पुराना ढाचा ही जैसा के वैसा रखेंगे तो नहीं चलेगा। अिसलिये नअी तालीम में नित्य नये प्रयोग होते रहने चाहिये। आजकल अुसका भी ढाचा बनने जा रहा है। और जहा कहीं ढाचा बनता है मेरा दिल बगावत करता है। मैं सहन नही कर सकता अुस ढाचे को। नअी तालीम का जो मकसद है, वह यही है कि विद्यार्थी अेक पूर्ण वस्तु है, परिपूर्ण चीज है, टुकडा नही है, अेक मुकम्मिल चीज है और जहा अुसे अपूर्ण समझ कर पूर्ण बनाने की कोशिश की जाती है वहा तालीम नही है। वह पूर्ण ही है, अैसा समझ कर हम चलते हैं। बहुतो का ख्याल है और जिस ढग से वे सोचते हैं, गलत नही कहा जायेगा कि बच्चा का दिमाग अिम्प्रेशनेबल् होता है। अुनका दिमाग ताजा होता है, अिसलिये चीजो को ग्रहण करने के लिअे तैयार होता है। अिसलिये हमारी चीजें हम अुनके दिमाग मे न ठूसे यह बहुत जरूरी है। अक्सर यह माना जाता है कि बच्चो को बनाना हमारा काम है। *अरे भाअियो, बच्चो को बनानेवाला* बना देता है। अुसके बनाने वाले आप नही हैं। हमें समझना चाहिये कि वे तो परमेश्वर के बहुत नजदीक होते हैं और यू समझकर साफ दिल से पेश आना चाहिये बच्चो के साथ। सस्कृत में कुछ अैसे शब्द हैं पुत्र, पुत्री और कन्या और कुछ तो लडका-लडकी, बेटा-बेटी, तो यह जो पुत्र शब्द है अुसका अर्थ होता है पावन करनेवाला, पाक बनानेवाला। याने जहाँ बच्चा माता-पिता के पास पहुँच गया वहाँ अुसने माता पिता को पावन करना शुरू कर दिया। अब वे माता-पिता जिम्मेवार बन गअे और अुनके ध्यान में आ *गया कि अपने यहाँ परमेश्वर आया है* अुस परमेश्वर की हमको पूजा करनी है, अिबादत करनी है, सेवा करनी है। अब अिसलिअे हमारी हरेक कृति में, हमारे बोलने में, बैठने में, व्यवहार में, बर्ताव म सावधानता होना चाहिअे। तो यह जो बच्चा, किसी कवि ने अुसके बारे में कहा था, –Child is father of the man-

बच्चा अुस्ताद का अुस्ताद है, बाप का बाप है। वह बाप को सिखाता है, अुस्ताद को तालीम देता है। तो अेक विचार में हमेशा रखता हूँ कि अुस्ताद और विद्यार्थी-दोनो अेक दूसरे के अुस्ताद है। वे दोना अेक दूसरो के दोस्त होते हैं। जैसे भाअी होते हैं, तो अेक दूसरे के भाअी होते है, वैसे विद्यार्थी और गुरुजी दोनो अेक दूसरे के गुरू होते हैं। अैसे नम्र भाव से हमको पेश आना चाहिअे बच्चो से।

बच्चे नअी दुनिया हैं और हम पुरानी दुनिया हैं। अिसलिये हम अुनकी तरक्की के मार्ग में रोडे न अटकायें अिस तरह हमें काम करना चाहिये। तब हमारा काम बहुत आसान हो जाता है। आजकल तालीम का जो आडबर चलता है अुसकी जरूरत नही है। सिर्फ बच्चो के मार्ग में जो रुकावटें आती हैं, अुन्हे हम दूर कर दें तो वे खुद ब खुद आगे बढेंगे। वे आगे बढने के लिये ही हैं। बहुत दफा हमारी यात्रा में कुछ साथी बच्चो से कहते हैं कि तुम पीछे रहो तो बच्चे अुस चीज को समझ ही नही पाते। अुन्हे लगता है कि हमें पीछे रहने के लिये ये बूढ़े लोग कहते हैं? यह क्या बात है? तो मैं अुनसे कहता हू कि बच्चो तुम पीछे नहीं रहो, आगे बढ जाओ, बहुत आगे बढो। तब बच्चे खुश हो जाते हैं। जब अुनसे पीछे रहने के लिअे कहा जाता है तो अुन्हे लगता है कि क्या हम पीछे रहने के लिअे पैदा हुअे? अिसलिअे हमें यह समझना चाहिअे कि बच्चा के मार्ग में हम जो रुकावटें डालते हैं, वे नही डालनी चाहिअे।

हम अक्सर फ्री अेन्ड कम्पलसरी अेज्युकेशन की बात करते हैं। तो मैं कहता हू कि भाअियो भगवान फ्री अेन्ड कम्पलसरी अेज्युकेशन दे ही रहा है। अुसकी योजना अुसने कर रखी है। अुसने हरेक के पेट में भूख रखी है, यह भगवान की तरफ से कम्पलसरी अेज्युकेशन की योजना है। पेट में भूख है, अिसलिअे अिन्सान को कुछ न-कुछ करना होगा और जहा कुछ करना होगा वहा ज्ञान भी आयेगा। अिस तरह भगवान ने सब को लाजिमी तौर पर ज्ञान दने की योजना बनायी है। अुसी तरह फ्री अेज्युकेशन की भी योजना बनायी है। अुसने अुसी तरह हर बच्चे को माता के अुदर में जन्म दिया है। अुसका परिणाम यह होता है कि बच्चे को बहुत सारी तालीम-मातृभाषा का ज्ञान, व्यवहार आदि का ज्ञान मुफ्त में ही माता के जरिये मिल जाता है। और अिस तालीम की जिम्मेवारी स्टेट पर डाली होती, सब को मादरी जबान सिखाना, अच्छा सलूक कैसे किया जाय, अिसकी तालीम देना आदि की योजना सरकार को करनी पडती तो अरबो रुपयों की योजना बनती। परन्तु भगवान ने फ्री अेज्युकेशन की योजना कर रखी है।

अिस हालत में तालीम में हमें कुछ बहुत ज्यादा करना नही है। हमें यही करना है कि हम अपने दिमाग में जो रुकावटें डालते हैं, वे न डाले, अपनी खराबियों से बच्चो को बचायें। जहा बच्चा घर में आया वहा बाप को समझना चाहिये कि यह मुझे सुधारनेवाला मेरा गुरू आया है। अुससे मुझे तालीम पानी है।

नअी तालीम में किसी भी प्रकार का ढाचा न हो, हरेक को सीखने की, न सीखने की, गलत सीखने की पूरी आजादी हो। आजादी में डर नही रखना चाहिये। आजादी में कभी किसी का बुरा नहीं हो सकता है। खास कर बच्चा को जब आजादी मिलती है,

तो असमें डर का कोअी कारण नही है । आपके पास जो बच्चा आता है, वह अितनी श्रद्धा से आता है कि जब मा कहती है कि देखो, यह चाद है, तो बच्चा मान लेता है कि यह चाद है और असे चाद कहने लग जाता है । असके मन में शक सुबह पैदा नही होता है कि यह चाद है या नही । बल्कि वह तो पूरी श्रद्धा से अस चीज को मान लेता है । अिस तरह अेक शख्स पूरी श्रद्धा से आपके पास आया और अजीब बात है कि आपको असे मारने पीटने की जरूरत महसूस होती है । और माता-पिताओ को भी मारने-पीटने की जरूरत महसूस होती हो, तो फिर ये राज्य-कर्ता मारने-पीटने से बाज आयें ? अिसलिअे तालीम में पूरी आजादी और पूरी अहिंसा होनी चाहिअे । तालीम याने अहिंसा और अहिंसा याने तालीम ।

हम बच्चो को अपदेश देते है कि झूठ नही बोलना चाहिअे तो बच्चा अिस बात को समझता ही नही । वह जानता ही नही कि झूठ क्या चीज है । और कभी वह झूठ बोलने के लिअे तैयार होता है, वह अिसलिअे होता है कि अस पर दबाव आता है और असके मन में डर पैदा होता है । अिसलिअे मै मानता हू कि तालीम में पूर्ण अहिंसा और पूर्ण अजादी होनी चाहिअे । असमें कोअी दबाव नही होना चाहिअे ।

अिसीलिअे मैंने कहा है कि तालीम का कोअी ढाचा नही हो सकता है । लेकिन फिर भी हम सोचने बैठते है, तो कुछ-न-कुछ कार्यक्रम टाईम-टेबल आदि बनाते है और वह ठीक भी है । हिसाब के लिये वह बनाया जाता है । परन्तु असका आग्रह नही होना चाहिये । अिन दिनों बात चलती है कि अंग्रेजी किस जमात से सिखायी जाय । बम्बअी राज्य में पहले तय हुआ था कि सातवी या आठवी जमात से अंग्रेजी पढाई जाय, लेकिन अब कुछ लोग कहते है कि पाचवी जमात से ही अंग्रेजी पढाना शुरू किया जाय । अिस पर काफी चर्चा चलती है । अब सोचने की जरूरत है कि क्या अिस का तालीम के साथ कोअी ताल्लुक है ? बच्चे की तालीम के साथ असका कोअी ताल्लुक नही है । तालीम के साथ जिसका ताल्लुक था, वह मादरी जबान असको सिखायी गयी है । असके आगे कुछ ज्ञान हासिल करना हो, तो मादरी जबान के जरिये ही हासिल करना होगा । अगर मादरी जबान के जरिये हासिल नही हो सकता है, तो वह हमारी कमी है । मै मानता हू कि आज की हालत में दूसरी जबानो की भी जरूरत पडती है । परन्तु मै कहना यह चाहता हू कि असका तालीम के साथ सम्बन्ध नही है । यह सारा हमें व्यवहार के लिये सोचना पडता है ।

बच्चो को अेक पूर्ण तालीम, कम-से-कम तालीम देना चाहते है, तो वह क्या दें ? अिस पर चर्चा चलती है। जहा देने का ताल्लुक है, वहा कम-से-कम ही तालीम देनी चाहिअे । ज्यादा-से-ज्यादा ली जानी चाहिअे और कम-से-कम दी जानी चाहिअे । बच्चे को अितनी अक्ल होनी चाहिअे कि रोज वह खूब तालीम हासिल करे । तालीम ज्यादा-से-ज्यादा लेने की चीज है । कम-से-कम तालीम क्या दे, अिसका हम छोटा-सा नक्शा बनाते है । मेरा ख्याल है कि अगर हम अस नक्शे में अंग्रेजी को डालेंगे, तो अपने साथ भी अन्याय करेंगे और अंग्रेजी भाषा पर भी अन्याय करेंगे । मुझे अनेक भाषा सीखने का मौका मिला है और असका मुझे शौक भी है । अिस पैदल यात्रा में दो साल पहले अेक जापानी साधु आये थे । अनसे मैंने जापानी

सीखी है। हर रोज अेक घंटा अुनके पास बैठकर मैं जापानी का अध्ययन करता था। अिस साल अेक जर्मन लड़की हमारे साथ रही तो अुससे मैंने जर्मन सीखी। यह सब मैं अिसलिअे कह रहा हूं या मैं कहना चाहता हूं कि दुनिया में जो अनेक जबान हैं, अुनकी मैं कद्र करता हूं और अंग्रेजी भाषा की कीमत जानता हूं। अंग्रेजी ने बहुत पराक्रम किया है, अुस भाषा में अमोल रतन पड़े हैं, अिसलिअे कोअी अंग्रेजी सीखना चाहता है तो जरूर सीखें। परन्तु भाषा कैसे सिखी जाय अिसका अेक शास्त्र है। पहिले मातृभाषा का व्याकरण के साथ पूरा अध्ययन कर लेना चाहिअे। तो अुसके बाद अिन्सान आसानी से दूसरी भाषा सीख सकता है। मैं जब चाहे कोअी भी भाषा दस-पन्द्रह दिनों में पढ़ने लायक सीख सकता हूं। अुसका अेक शास्त्र अेक अिल्म है। अिल्म यह है कि बच्चों को अपनी मादरी जबान का पूरा, पक्का ज्ञान होने के बाद ही दूसरी जबान सिखायी जाय।

पं० नेहरू कअी दफा मानस-शास्त्र का अेक आधार पेश करते हैं और कहते हैं कि बच्चे के दिमाग में अनेक सेल्स होते हैं, अिसलिअे अनेक भाषाअें सीखना हो, तो बचपन से ही आरंभ करना चाहिअे। यह बात सही है कि बचपन में कोअी भी भाषा जल्दी सीख लेता है। बचपन में मैंने संध्या-ब्राह्मण की अुपासना-तीन दिन में याद कर ली, तो मेरी मां मेरा बखाण किया करती थी कि विन्याने तीन दिन में संध्या सीख ली। कुछ दिन बाद मैंने मां से कहा कि तुझे और अेक बात मालूम नहीं है, कि विन्या तीन दिन में संध्या सीखा और चार दिन में भूल गया।.... बच्चे के दिमाग में कअी सेल्स होते हैं, अिसलिअे वे किसी चीज को फौरन पकड़ लेते हैं और झट से भूल जाते हैं और सतत अभ्यास न रहा, तो कोअी भी चीज भूलने के लिअे अुन्हें समय की जरूरत नहीं रहती है। अिसलिअे भाषा सीखाना हो, तो बातचीत के जरिये सिखायी जा सकती है और बातचीत का सिलसिला जारी रखा जाय, तभी भाषा का ज्ञान टिकता है। व्याकरण के जरिये तुलनात्मक दृष्टि से भाषा पढ़ाअी जाय, तो वह पक्की बनती है। लेकिन वह बाद में भी हो सकता है, अिसलिअे मैं मानता हूं कि बहुत जल्दी अंग्रेजी सीखाना अंग्रेजी पर भी अन्याय है। अगर अैसा आप चाहते हैं कि अिसके आगे हिन्दुस्तान में अंग्रेजी अुत्तम चलेगी, अुसका स्टेन्डर्ड बढ़ेगा, तो आपको क्विट् अिंडिया-भारत छोड़ो-कहने के बदले अंग्रेजों से कहना होगा, वापस आओ। अंग्रेजी भाषा का अध्ययन जरूरी है, लेकिन सब लड़कों पर अिस भाषा को थोपना चाहोगे, तो अुसका स्टेन्डर्ड गिरेगा ही। मैं चाहता हूं कि हिन्दुस्तान के शिक्षित लोग विदेश की अेक भाषा का ज्ञान जरूर हासिल करें। लेकिन सब अंग्रेजी ही सीखेंगे, तो अुसमें मैं अेक खतरा देखता हूं। यह बात ठीक है के परिस्थिति के कारण अंग्रेजी का स्थान अूंचा रहेगा, फिर भी हम में से कुछ लोगों को जर्मन सीखनी चाहिअे, कुछ को जापानी, चीनी, अरबी, पारसी, फ्रेंच अित्यादि भाषाअें सीखनी होंगी। अिस तरह तरह तरह के ज्ञानी हमारे देश में रहेंगे, तो हमारा ज्ञान सही रास्ते पर रहेगा। नहीं तो अंग्रेजी भाषा के जरिये ही हम ज्ञान हासिल करते रहेंगे तो वह ठीक ज्ञान नहीं होगा। हम जब जेल में थे तब हमारे कुछ साथी अिन्साअिक्लोपीडिया नाम की अेक अंग्रेजी किताब पढ़ा करते थे। वे कहते थे कि अिस किताब में सब ठीक है, लेकिन सिर्फ हिन्दुस्तान के

बारे में गलत लिखा है। मैं अुनसे कहता था कि दूसरों के बारे में गलत लिखा है या सही यह कहने के लिअे कोअी जापानी या चीनी तो यहां नहीं है। आपको समझना चाहिये कि हिन्दुस्तान के बारे में अुसमें गलतफहमी दिखाअी देती है, तो कुल अेशिया के बारे में गलतफहमी होगी। लेकिन हम सिर्फ अपने देश के बारे में जानते हैं, अिसलिअे अैसा कहते हैं। अिस तरह हमें समझना चाहिये कि हम अंग्रेजी के जरिये ही दुनिया का ज्ञान हासिल करेंगे तो हमारा ज्ञान गलत होगा। अिसलिअे हिन्दुस्तान के लोगों को भिन्न-भिन्न भाषाअें सीखनी चाहिये। अुन देशों में जाकर ज्ञान हासिल करना चाहिये। तब हिन्दुस्तान का दिमाग सही रास्ते पर रहेगा, नहीं तो अेकांगी बनेगा।

नअी तालीम का जो सात साल का कोर्स है अुस के बारे में अिस समय सरकार सोचती है कि अुसके दो टुकड़े किये जायं। पहला पांच साल का टुकड़ा पहिले लागू किया जाय और बाद में दूसरा टुकड़ा। जब मैं यह सुनता हूं तो कभी तो मुझे अच्छा भी लगता है कि सरकार अगर आठ साल सीखाने के बजाय पांच साल ही सिखायें, तो अच्छा हो है। सरकार जितनी कम तालीम देगी अुतना अच्छा ही होगा। अुसमें से अितना ही नुकसान होगा कि सरकार का पैसा खर्च होगा। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि नअी तालीम के टुकड़े नहीं हो सकते हैं यह बुनियादी तालीम का बुनियादी विचार है। अेक पूर्ण चित्र का आधा टुकड़ा सामने रखा जाय तो अन्याय होगा। बाप और बच्चा खाने बैठे हों, बच्चे की थाली में आधा लड्डू परोसा और बाप को थाली में पूरा लड्डू परोसा तो बच्चा रोना शुरू कर देता है। मुझ आधा लड्डू कम दिया जा रहा है अिस तरह चिल्लाता है। फिर मां आती है और अुसको शान्त करने के लिअे अुसकी थाली में अेक छोटा सा लेकिन पूरा लड्डू परोसती है तो बच्चा खुश हो जाता है। बच्चा समझ सकता है कि मैं छोटा हूं, अिसलिअे मुझे छोटा लड्डू दिया जा रहा है। और बाप बड़ा है अिसलिअे अुनको बड़ा लड्डू दिया जा रहा है। लेकिन बाप को पूरा लड्डू और मुझे आधा लड्डू क्या दिया जा रहा है, अिस बात का वह समझ नहीं सकता है। क्या आप पूरा आदमी और मैं आधा आदमी हूं ? मैं पूरा हूं, लेकिन छोटा पूरा हूं, बाप बड़ा पूरा है, अिस बात को वह समझ सकता है। नअी तालीम का सात साल का जो कोर्स रखा गया है वह कम-से-कम तालीम की बात है। दूसरे देशों में भी जब कम से-कम तालीम की बात सोची जाती है तो सात आठ साल की ही सोची जाती है। अिसलिअे मैं कहना चाहता हूं कि आपके पास पैसा कम हो तो कम स्कूल खोलिये, लेकिन बच्चों को पूरा लड्डू दीजिये, आधा नहीं! अंग्रेजी में कहावत है'—

Little knowledge is a dangerous thing—स्वल्पविद्या भयंकरी।

अगर टुकड़ा ज्ञान, आधा ज्ञान देकर हम मानेंगे कि हम तालीम दे रहे हैं, तो मैं कहूंगा कि यह व्यर्थ की चीज है, यह जिम्मेवारी आप अुठाअिये। अिन दिनों सिंगल टीचर स्कूल की बात चलती है। याने चार जमातों के लिये अेक ही शिक्षक पढ़ायेगा। जब मैंने यह बात सुनी तब मुझे लगा कि चार मुंहवाले ब्रह्मदेव के जैसा शिक्षक पैदा होना चाहिये। ब्रह्मदेव के बिना सिंगल टीचर स्कूल नहीं चल सकती है। यह तो अेक हास्यास्पद वस्तु हो जाती है। सरकार

चाहे थोडा करे लेकिन ठीक काम करे। और कुल का-कुल काम सरकार को ही क्यो करना चाहिये ? कुछ जनता को भी करने देना चाहिये।

मैंने अपना सुझाव नेताओ के सामने रखा था और अुन्होंने मजूर भी किया था। लेकिन फिर भी नही बना। मैंने कहा था कि सरकार भिन्न भिन्न महकमो की परीक्षा लिया करे और अुस परीक्षा में फी देकर कोअी भी बैठ सकेगा, चाहे स्कूल मे अध्ययन किया हो या घर पर अध्ययन किया हो। अगर वह अुस परीक्षा में पास हो जाता है तो अुसको नौकरी में लिया जाय। आज सरकारी नौकरी के लिअे यूनिवर्सिटी के डिग्री की जरूरत होती है, वह ठीक नही है। अगर सरकार अितना करती है, तो लोग अपने अपन ढग से तालीम देंगे और तालीम में ताजगी रहेगी। आज तो तालीम का अैसा ढाचा बना है कि स्कूल के मकान का भी अेक नक्शा होता है और कही भी जाओ, अुसी पैटर्न की स्कूल दिखाअी देती हैं। बिहार में गरमी के दिनो में ठहरा था जहा मुझ बुखार आया था। स्कूल का जो छत बना हुआ था वह अेस्बस्टास का था। अिसलिअे बहुत गरम होने लगा। जब मैंने वहावालो स पूछा कि स्कूल के मकान के लिअे अैसा छत क्या बनाया गया है तो अुन्होने कहा कि क्यो का सवाल नही, स्कूल के मकान के लिअे यह 'पैटर्न' तय हो चुका है। जब मैंने कहा कि अिससे तो गरमी होगी, तो अुन लोगो ने कहा कि गरमी की कोअी परवाह नही। क्योकि गरमी में छुट्टियाँ होती है। मैंने कहा, कि गरमी की छुट्टी क्या कोअी हिंदुस्तान की चीज है ? कोअी सोचता ही नही है। अग्रज यहां आये, तो वे यहा की गरमी सह नही सके, अिसलिअे अुन्होने गरमी में छुट्टी देना शुरू किया। फिर वे अुन दिनो हवा खाने के लिअे कही जाते थे। लेकिन हमारे लडके हवा खाने के लिअे कहा जायेंगे ? अुनको तो अुसी गाव में रहना है। दरअसल छुट्टी तो अुस समय देनी चाहिअे जब किसान को मदद की जरूरत होती है। बोने के या काटने के समय छुट्टी दी जा सकती है। लेकिन आज अेक ढाचा बन गया। अिस तरह हर चीज का ढाचा बनता है। मै कहना यह चाहता हू कि **नअी तालीम को टुकडे करने की बात ठीक नहीं है। या तो आप को नअी तालीम का सात साल का व्यवस्थित कार्यक्रम बिठाना चाहिअे या समझना चाहिअ कि हम नअी तालीम नहीं दे रहे है,** प्राथमिक शालाअे चला रहे है।

अक दफा आपके जैसे शिक्षको की सभा म भाषण करते हुअ मैंन आरम्भ किया था, "मेरे प्यारे शान्ति सैनिको।" वे सुनते ही रहे कि यह क्या बोल रहा है। मै मानता हू कि अैसा होना चाहिअे कि जितने शिक्षक हैं, वे सब के सब शाति-सैनिक हैं। अगर वे शाति-सैनिक नही है तो शिक्षक नही हैं, यह निश्चित बात है। फिर चाहे वे और कुछ हो न हो। सरकार अिधर तालीम का महकमा चलाती है और पुलीस का, मिलीटरी का महकमा भी चलाती हैं। सरकार तो अेक भेनिटी फेअर है, जिसमे सब प्रकार की चीजें होती है। लोगो का प्रतिबिम्ब सरकार में अुठता है। तो अुसमें कोअी बात नही है। लेकिन समझना चाहिअे कि किसी देश को सेना पर सालाना तीन सौ करोड रुपया खर्च करना पडता हो, तो हमारा तालीम का महकमा बदनाम है। अगर हमारे अुस्ताद ठीक काम कर रहे हैं तो अुसका नतीजा

यही होगा कि देश में निर्भयता और आजादी रहेगी और देश की अन्दरूनी ताकत बनी रहेगी और पुलीस, मिलीटरी आदि पर ज्यादा खर्चा नहीं करना पड़ेगा। अगर अैसा हो, तभी समझना चाहिअे कि तालीम ठीक से चल रही है। अिसलिअे मैं मानता हूं कि आप सब शिक्षक शांति-सैनिक हैं। मैंने तो यह मान लिया है। अिसलिअे आप पर यह कहने की जिम्मेवारी आयी है कि आप शांति-सैनिक नहीं हैं। अगर आप शांति-सैनिक नहीं हैं तो शिक्षक ही नहीं हैं। नअी तालीम के शिक्षक तो हैं ही नहीं।

आज हिन्दुस्तान पर बहुत बड़ी भारी जिम्मेवारी आअी है। कुल दुनिया हिंदुस्तान की तरफ आशा की निगाह से देखती है और समझती है कि अिस देश से दुनिया को कुछ राह मिलेगी। यह हरगिज नहीं हो सकता है कि अपना देश अैसी फौजी ताकत बनायें जो कि अिस ओर अमेरिका की बराबरी कर सके। परमेश्वर की अिस देश पर कृपा है कि यहां वह चीज होनेवाली नहीं है। अिसलिअे हम कोअी ताकत बना सकते हैं तो वह अखलाकी, नैतिक ताकत ही होगी और हम सब का यह फर्ज ही है। अिन दिनों मेरा दिल शांति सेना में लगा हुआ है। अिसलिअे मैं आपके साथ शांति सेना का सम्बन्ध जोड़ रहा हूं. अैसी बात नहीं है। आप शांति-सैनिक नहीं हैं तो क्या है यह जरा बतायें। देश में जितनी अिन्तजाम की ताकत होनी चाहिअे, देश के शिक्षकों को देश को देनी चाहिअे। अुन्होंने देश को अैसी तालीम दी हुअी होनी चाहिअे कि लोग अच्छी चीज को फौरन पकड़ेंगे और बुरी चीज को छोड़ देंगे। लेकिन अभी तक यह साबित नहीं हुआ है कि लोग प्रेम का अिशारा मानने के लिअे राजी हैं। लोग डर से कोअी चीज मानते हैं, यह तो साबित हो चुका है। वहां पाकिस्तान में अयूबखान आता है, तो अुसके डर से कराची का पानी डरने लग जाता है और दूध में नहीं घुसता है। मैंने अखबारों में अेक खबर पढ़ी कि अयूबखान के आने पर वहां दूध की कमी होने लगी, क्योंकि दूध में पानी पड़ना बन्द हुआ। अिस तरह से डर का परिणाम होता है। यह तो लोगों ने देख लिया है। दुनिया को लगता है कि डर से कुछ अच्छे काम हो सकते हैं। लेकिन अिसके आगे हमें अैसी दुनिया बनानी है कि हमें यह साबित करना है कि डर से कोअी अच्छे काम नहीं हो सकते हैं, प्रेम से ही हो सकते हैं। मैं बच्चों से हमेशा कहता हूं कि तालीम देनेवालों में अगर आपको कोअी डरायेगा, धमकायेगा, तो आपको अुसकी बात हरगिज नहीं माननी चाहिअे। आपको यह कहना चाहिअे कि हमें प्रेम से समझाओ तो हम आपकी बात मानेंगे। लेकिन आप हमें डरायेंगे, तो नहीं मानेंगे।

कुछ लोग कहते हैं कि नअी तालीम की आज सख्त जरूरत है, क्योंकि लड़के अुद्दंड बन गये हैं। किसी की बात मानते नहीं। अिसलिअे नअी तालीम चलेगी तो लड़के कुछ मानने लग जायेंगे मैं कहना चाहता हूं कि यह गलत खयाल है। नअी तालीम चलेगी तो लड़के और अुद्दंड बनेंगे। वह अुद्दंडता दूसरे प्रकार की होगी, परन्तु यह होनेवाला है कि पुरानी पीढ़ी की बात लड़के अैसे ही नहीं माननेवाले हैं। "बाबा वाक्य प्रमाणम्"-वाली बात नहीं चलेगी। नअी तालीम का परिणाम यह होगा कि लड़के दबाव से किसी की बात नहीं मानेंगे, समझाने से मानेंगे। नअी तालीम आयेगी, तो यह नहीं हो सकेगा कि आज की पुरानी रचना कायम रखकर जो लोग अिज्जत के काबिल

नही हैं, अुन्हें भी अिज्जत दी जाय। अिज्जत कोअी पैदा करने की चीज नही हैं। जो अिज्जत के काबिल नही हैं अुनको अिज्जत देना असभव होगा क्योंकि मूल्य बदलेंगे। नअी तालीम का लडका पूछ बैठेगा कि प्रधान मत्री से राष्ट्रपति को ज्यादा तनख्वाह क्यो दी जाती है? अगर अुसका जवाब ठीक मिला तो वह कहेगा कि बात ठीक है और नही मिला तो कहेगा कि गलत है। दर्जे के साथ तनख्वाह क्या जुडी हुई होनी चाहिअे? नअी तालीम में छोटे-बडे सब लडके अक साथ काम करेंगे, झाडू लगायगे, भगी काम करेंगे और तालीम पायेंगे। अेक दफा नअी तालीम के लडके आ रहे थे तो किसी ने कहा झाडू की तालीम के लडके आ रहे हैं। मैंने कहा कि आपने बहुत अच्छा शब्द अिस्तेमाल किया। तालीम दो प्रकार की होती है। अेक झाडू तालीम और दूसरी भूरेवाली तालीम जो कचरा करना जानती है जो साफ करना नही जानती। रामकृष्ण परमहस ज्यादा पढे-लिखे नही थे। अेक दफा अुन्हे विद्या की अिच्छा हुअी तो अुन्होने देवी से, जिसकी वे अुपासना करते थे, कहा, मा, मैं मूरख हू, मुझे विद्या चाहिअे। अुस रात देवी ने अुनको सपने में दर्शन दिया और बोली—बेटा, तू विद्या चाहता है तो देख, यह भूरा पडा है, वहा से विद्या ले ले। फिर वे बोले, मुझे अैसी भूरेवाली विद्या नही चाहिये। अिसलिअे मैं कहता हू कि **नअी तालीम झाडू-वाली विद्या है। वह पुराने मूल्यों को झाडू देगी। नअी तालीम अ.न पर पुराने मूल्य नही टिकेंगे।** अिसका मतलब यह नही कि लडके विनयसपन्न नही रहेंगे। अुनमें विनय तो जरूर रहेगा, लेकिन पुराने जर्जर मूल्य नही टिकेंगे। नअी तालीम के लडके बगावत करनेवाले बनेंगे। अगर लडके डरपोक, दबे हुअे बनगे तो कहना पडेगा कि वह नअी तालीम नही है।

पुराने समाज का अेक मूल्य है कि समाज का जितना अिन्तजाम किया जायेगा वह हिंसा से किया जायेगा। फिर चाहे अुसको कानून का रूप दिया जाय, लेकिन आखिरी सेन्क्शन हिंसा होगी। अिन दिनो राजनीति में बहुत चर्चा चलती है। लेकिन मैं कहना चाहता हू कि वेल-फेअर स्टेट, सोशियालिस्ट स्टेट, कम्युनिस्ट स्टेट आदि जो भिन्न भिन्न प्रकार के स्टेट्स होते हैं, वे सब अेक ही रग के हैं। सब का दारोमदार मिलीटरी पर है। चाहे कम्युनिस्ट स्टेट हो चाहे राजा की हुकूमत हो। आप देखते हैं कि देखते देखते डेमाक्रेसी का रूपान्तर डिक्टेटरशिप में हो जाता है। विदेश के हमले से बचाने के लिअे देश में सेना रखी जाती है। लेकिन देश की सेना के हमले से हमें कौन बचायेगा? अिसका कोअी जवाब नही दिया जाता है। यह बात ठीक है कि आज सेना पर कुछ जावता है। लेकिन हम देखते हैं कि फ्रान्स जैसे देश में जिसने दुनिया को बडे-बडे तत्वज्ञान—आजादी का, लोकशाही का तत्वज्ञान दिया। जहां के अुत्तम लेखको ने दुनिया पर असर डाला, अिस तरह जिनका साहित्य अितना अुत्तम है, जिन्होंने क्रान्ति का आरम्भ किया, वही देश आज किस हालत में है? आज वह अेक आदमी के हाथ में है। अिस तरह डेमाक्रेसी का रूपातर होने में देर नही लगती है। क्योंकि आखरी सेन्क्शन हिंसा है। नअी तालीमवालो को यह अुम्मीद रखनी चाहिअे, अुनमें यह हिम्मत होनी चाहिअे कि हम स्टेट को हिंसा के दारोमदार से मुक्त करेंगे।

आप जानते हैं कि मैं कश्मीर जा रहा हूं। अभी बख्शीजी ने दावत दी है और कहा है कि हम वहां की हालत जितनी देखना चाहते हैं, देखें। कश्मीर में अिन दिनों अच्छी हवा के कारण टूरिस्ट जाया करते हैं, लेकिन मैं वहां अेक टूरिस्ट के नाते नहीं जा रहा हूं, मैं अक खिदमतगार के नाते जा रहा हूं। मैं वहां देखना चाहता हूं, सुनना चाहता हूं, मैं सीखना चाहता हूं जिन जिन लोगों से मिल सकता हूं, मिलना चाहता हूं। मुझे अिस काम में आपके आशीर्वाद की जरूरत है। नहीं तो मुझमें अैसा कोअी बल नहीं है कि मैं वहां जाकर कुछ खास काम कर सकूं। मुझे वहां का ज्ञान नहीं है। हिन्दुस्तान में बहुत घूमा हूं, अिसलिअे यहां तो आदी बन गया हूं। लेकिन कश्मीर के देहातों को मैं किस तरह मदद पहुंचा सकूंगा, या नहीं पहुंचा सकूंगा यह मैं नहीं जानता हूं। लेकिन दिल में अेक खयाल है कि कुछ सेवा हो। अिसीलिअे मुझे आप सब से आशीर्वाद की बहुत जरूरत है। कहा जाता है कि कश्मीर अिस दुनिया का बहिश्त, स्वर्ग है। लेकिन स्वर्ग में जो पहुंचा वह वापिस नहीं लौटता और हिंदू धर्मग्रंथों में लिखा है कि स्वर्ग से कोअी वापिस लौटा तो पुण्यक्षय करके लौटता है। मुझे वहां से पुण्यक्षय करके लौटने की अिच्छा नहीं है। मैं तो चाहता हूं कि हिन्दुस्तान का कुछ-न-कुछ पुण्य बढ़े और प्रेम पैदा हो।

हमें समझना चाहिअे कि दुनिया में आज जो छोटे छोटे राष्ट्र बने हैं वे टिकनेवाले नहीं हैं। जैसे-जैसे विज्ञान बढ़ेगा वैसे-वैसे अिधर तो रहेगा ग्राम, जहां मानव-समूह रहेगा और अिधर होगा वन वर्ल्ड, अेक विश्व। दोनों के बीच जो भी चीजें होंगी, वे धीरे धीरे खतम हो जायेंगी। अुसमें बहुत देरी नहीं है क्योंकि विज्ञान जोरों से आगे बढ़ रहा है। अिसलिअे भिन्न भिन्न देशों में प्रेम पैदा होना चाहिअे। मैं चाहता हूं कि अपने देश में अितना प्रेम हो कि यहां के हिन्दू, मुसलमान, सीख और दूसरी जमातवाले मुहब्बत से साथ रहें और जैसा अभी बख्शीजी ने कहा, कि हमारा दिल छोटा न हो बड़ा दिल बने। हम यह न कहें कि हम पंजाबी या बंगाली हैं बल्कि यह कहें कि हम हिंदुस्तानी हैं, यह कम-से-कम चीज है। अुसमें भी अेक खतरा है। अगर हम जय हिंद कहकर रुक जायेंगे, तो खतरा पैदा हो सकता है। अिसलिये हमने नया मंत्र चलाया है, जय-जगत्। दुनिया बहुत वेग से आगे बढ़ रही है। अुधर तो हम शनि मंगल और चंद्र तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं, कुत्ते भी हजारों मील अूपर जा रहे हैं तब हम नीचे रहें, यह कैसे संभव होगा? जिस जमाने के कुत्ते आसमान पर चढ़ रहे हैं अुस जमाने में हमारे दिल छोटे नहीं रहने चाहिये। आज विज्ञान ने मसला पैदा कर लिया है। छोटे दिल और बड़े दिमाग की टक्कर हो रही है। हमारे पूर्वजों का दिल छोटा होता, तो कोई बात नहीं थी। क्योंकि अुस वक्त दिमाग भी छोटा था। अिसलिअे जीवन चलता था। लेकिन आज दिमाग बड़ा बना है। हमारे अखबारों में कुल दुनिया की खबरें आती हैं। अिस हालत में दिल छोटा रहा, तो खतरा है। अिन दिनों छोटे दिल और बड़े दिमाग में जो कशमकश चल रही है वह कब तक जारी रहेगी? जब तक या तो हम दिमाग को छोटा नहीं करेंगे जो करना मुमकिन है नहीं, या दिल को बड़ा नहीं बनायेंगे, जो मुमकिन है। अक्सर हम सर्वोदयवालों से पूछा जाता है कि क्या आप विज्ञान को बढ़ावा देना चाहते हैं? लोग

समझते हैं कि ये सर्वोदयवाले तो चरखा भी चलायेंगे और चरखे से तकली को बेहतर मानेंगे, अुससे लकडी की तकली को बेहतर मानेंगे और कोअी अुगलीयों से कातना शुरू करेंगे तो ये नाचने लग जायेंगे। मैं कहना चाहता हू कि विज्ञान पर अगर किसी का हक है तो सर्वोदय-वालो का है। दूसरे का नही है। जिनका विज्ञान पर हक नही है वे अुसको अपने कब्जे में रखेंगे, तो दुनिया का खात्मा होगा। विज्ञान के बिना सर्वोदय का नही चलेगा और सर्वोदय के बिना विज्ञान का नही चलेगा। अिसलिअे नअी तालीम में विज्ञान की बहुत जरूरत रहेगी। हमें विज्ञान को बढावा देना होगा। अगर विज्ञान के साथ अहिंसा आयगी तो जैसा ओमा मसीह ने कहा था-कि हम अिस पृथ्वी पर स्वर्ग लायें, वह सभव होगा। अगर यह होगा कि विज्ञान अेक बाजू और अहिंसा दूसरी बाजू रहेगी, तो दुनिया की दुर्दशा होगी। अिसलिअे सर्वोदयवालो को पुराने औजारो का अभिमान बिल्कुल नही रखना चाहिअे। नये नये औजार लेने चाहिअे। अिस पर लोग पूछते हैं कि बाबा, आप विज्ञान की बात करते हैं तो फिर पैंदल क्यो घूमते हैं? मैं जवाब देता हू कि बाबा जमीन पर अिसलिअे घूमता है, कि अुसे जमीन मिलती है। अगर वह हवाअी जहाज में घूमेगा, तो अुसे हवा ही मिलेगी। पैंदल यात्रा दकियानुस बात नही है, यह अब साबित हो चुका है जब कि कांग्रेस ने प्रस्ताव किया है कि अुसके सदस्यो को पैंदल यात्रा करनी चाहिअे। आठ साल पहले यह बात नही थी। आप देहात के लोगो के हृदय में प्रवेश करना चाहते हो तो अुनके तरीके से हो सकता है। हमारी पैंदल यात्रा साअिन्स के खिलाफ नही है बल्कि वह बिल्कुल अप टु डेट साअिन्स है। हम कहना चाहते हैं कि जैसे-जैसे विज्ञान बढेगा, मनुष्य-सख्या बढेगी-वैसे वैसे या तो हवाअी जहाज रहेगा या पैंदल यात्रा। बीच की मोटरें आदि नही रहेगी। लोग सोचेंगे कि रास्तो के लिअे जो जमीन रखी जाती है वह व्यर्थ जाती है। अिसलिअे रास्ते खोद कर वहा हल चलाना पडेगा। अुस हालत में बिल्कुल आखिर में टिकनेवाली कोअी चीज है तो पैंदल यात्रा और हवाअी जहाज ही है। मैं कहना यह चाहता हू कि नअी तालीम का विज्ञान के बिना नही चलेगा, अिसलिअे अुसे विज्ञान के साथ जुड जाना लाजिमी है।

नअी तालीम सम्मेलन
राजपुरा, पंजाब
ता २७ ४ १९५९

नअी तालीम का यह दर्शन सकुचित न बने, यह ख्याल रखने की जरूरत है। चाहे हमारा जीवन गांव में बीते, हमें विश्व के नागरिकत्व का अनुभव होना चाहिये। अहिंसा और विज्ञान दोनों के योग से ही यह हो सकता है। नअी तालीम के मानी है, अहिंसा और विज्ञान का योग। अिसी योग से हम अिस दुनिया में स्वर्ग ला सकते हैं।

विनोबा के प्रणाम
आठवां अखिल भारत नअी तालीम सम्मेलन
सेवाग्राम, अक्टूबर, १९५२

सभापति का अभिभाषण

मित्रो और साथियो,

करीब अठारह महीनो के बाद हम फिर से तेरहवें नअी तालीम सम्मेलन के लिअे अेकसाथ मिल रहे हैं। पजाब में अखिल भारत नअी तालीम सम्मेलन का यह पहला ही अधिवेशन है। अिस अधिवेशन के लिअे देशभर के नअी तालीम के कार्यकर्ताओ को पजाब में अेक साथ मिलने का जो सुअवसर मिला अुसके लिअे मैं पजाब सरकार को और पजाब के रचनात्मक कार्यकर्ताओं को हिन्दुस्तानी तालीमी सघ की ओर से हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता हू।

नअी तालीम सम्मेलन के लिअे राजपुरा क्यों चुना गया अुसके बारे में मैं यहा दो शब्द कहना चाहता हूँ। पजाब सरकार ने अपनी राजधानी चडीगढ में नअी तालीम सम्मेलन को निमत्रण दिया था। लेकिन हमने राजपुरा को ही चुना। क्योंकि हम यह मानते हैं कि राजपुरा और फरीदाबाद अिन दोनों स्थानों में जो काम हुआ, नअी तालीम के अितिहास में अुसका अेक विशेष महत्व है। सन् १९४९ में भारत सरकार के निमत्रण से हिन्दुस्तानी तालीमी सघ ने राजपुरा और फरीदाबाद अिन दो शरणार्थी शिविरो में शिक्षा के सगठन की जिम्मेवारी ली। आज आपके सामने यह जो सुयोजित नगरी दीख रही है अुस समय अिसके बदले अेक तबुओं की नगरी थी। हमारे वर्ग वृक्षों की छाया में या तबुओ के नीचे चलते थे। जब आधियां आती थीं या जोरों से वर्षा होती थी, तब हमारा शिक्षा का काम बद रहता था। लेकिन अिस कठिन परिस्थिति में शरणार्थी-शिक्षकों के सहयोग से नअी तालीम के द्वारा अेक अुन्मूलित समाज को जोडने का जो काम अिन दो स्थानों में हुआ अुसका अेक बहुत बडा शैक्षणिक मूल्य है, अैसा हम मानते हैं। अिस अवसर पर मैं राजपुरा और फरीदाबाद को अुन शिक्षक और शिक्षिकाओं को हमारा धन्यवाद प्रकट करना चाहता हूँ, जिन्होंने बहुत धीरज और बहादुरी के साथ अिस काम में हमारी मदद की।

नअी तालीम सम्मेलन के लिअे राजपुरा को चुनने का अेक और कारण यह रहा कि हमारी प्रिय बहन बीबी अमतुलसलाम ने अिसे अपनी सेवा के क्षेत्र के रूप में चुना है। दस साल पहले पूज्य कस्तूरबा गाधी की पुण्यस्मृति में रचनात्मक कार्यक्रम का जो छोटा-सा बीज अुन्होंने बोया था वह आज कस्तूरबा सेवा-मदिर नाम की रचनात्मक काम की अेक बडी सस्था बनी है। राजपुरा में रचनात्मक काम और विशेष रूप से नअी तालीम के काम का जो विकास हुआ है, अुसमें बीबी अमतुलसलाम का बडा हाथ रहा है। अुनकी सेवाओ के लिअे हिन्दुस्तानी तालीमी सघ अिस अवसर पर अुनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता है।

यह नअी तालीम का तेरहवा सम्मेलन है, लेकिन नअी तालीम के काम के अिक्कीस साल पूर्ण होते हैं और बाअीसवें साल का प्रारभ होता है। ठीक अिक्कीस साल पहले अप्रैल १९३८ में वर्धा में स्वय गाधीजी के हाथों से बुनियादी तालीम की पहली सस्था का अुद्घाटन हुआ था। नअी तालीम के प्रथम आचार्य स्वयम विनोबाजी थे। अिसी सस्था में नअी तालीम के सिद्धात और प्रयोग पर अुनके भाषण होते थे और यहा की अभ्यास-शाला में अुन्होंने नअी तालीम पद्धति का पहला पाठ दिया था।

आज फिर से वह समय आया है कि हम पिछले अिक्कीस वर्षों की नअी तालीम के काम का मूल्याकन करे, देश में नअी तालीम की वर्तमान यथार्थ परिस्थिति को समझने का प्रयत्न करे और अिसके आगे के कार्यक्रम के लिअे योजना तैयार करे। अिस सम्मेलन में देशभर की सरकारो और गैर-सरकारी नअी तालीम की सस्थाओ के प्रतिनिधि अेकत्र हुअे हैं। नअी तालीम की प्रगति की समीक्षा के लिअे यह अेक अुपयुक्त अवसर है।

नअी तालीम के काम के लिअे गाधीजी ने हमें दो निर्देश दिये थे। अुन्होने कहा था कि सब से पहिले हमें सेवाग्राम में ही बच्चो की तालीम से लेकर विश्व-विद्यालय के दर्जे तक की अेक सम्पूर्ण राष्ट्रीय शिक्षा का कार्यक्रम तैयार करना है।

दूसरा निर्देश अुन्होने हमें अेक सूत्र के रूप में सन् १९४४ में दिया था। तब हमारे राष्ट्र के सामने सब से बडी समस्या थी अन्न की। अुन्होने कहा था "सच्ची तालीम वह है जो मुल्क की सबसे बडी और मौलिक आवश्यकताओ का जवाब देती है। आज मुल्क भूखा है, आज नअी तालीम का सबसे बडा काम हो जाता है कि वह ज्यादा से-ज्यादा अन्न अुत्पन्न करे।"

अिन दोनो निर्देशो के अनुसार हम नअी तालीम के पिछले अिक्कीस सालो के काम का मूल्याकन करने का प्रयत्न करेंगे।

सबसे पहले हमें देखना है कि सेवाग्राम में कितना काम हुआ है। सेवाग्राम के कार्यकर्त्ताओ के पास धन-बल और लोक-बल दोनो की कमी रही है, लेकिन श्रद्धा को कमी नही रही। जितने साधन और जितनी शक्तिया अुनके पास थी अुन्ही के आधार पर अुन्होने पूर्व-बुनियादी, बुनियादी, अुत्तर बुनियादी और अुत्तम बुनियादी, अिन चार अवस्थाओ में अेक समग्र राष्ट्रीय शिक्षा के कार्यक्रम का विकास करने का यथाशक्ति प्रयत्न किया है। अिसके अलावा विभिन्न राज्य सरकारो के शिक्षा विभागो के लिअे और रचनात्मक कार्यक्रम की सस्थाओ के लिअे करीब १५०० कार्यकर्त्ताओ को नअी तालीम का प्रशिक्षण भी दिया है। पिछले अिक्कीस वर्षों का शिक्षण खर्च का ब्योरा (रुपयो में) अिस प्रकार रहा है —

चालू खर्च	१२,३७,००२
स्थायी खर्च	६,०१३८९,
वेतन	४,९१,३११
अुत्पादन	७,६७,७०४,
स्थावर (सपत्ति)	४,०७,४३७,

सेवाग्राम के कार्यकर्त्ता भली-भाति जानते हैं कि सेवाग्राम के काम में अभी बहुत कमिया हैं। नअी तालीम की पद्धति के बारे में अभी बहुत प्रयोग और अनुसधान करना है, वर्तमान परीक्षा पद्धति के स्थान में अेक वैज्ञानिक जाच की पद्धति का विकास करना है, शिक्षण साहित्य और शैक्षणिक साधनो का निर्माण-कार्य अभी बाकी है। अितना होते हुअे भी सेवाग्राम के कार्यकर्त्ता नम्रतापूर्वक अिस सम्मेलन के सामने कहना चाहते हैं कि सेवाग्राम के शैक्षणिक काम के अनुभव से अुन्हे समग्र नअी तालीम का यानें अेक सम्पूर्ण राष्ट्रीय शिक्षा का जो दर्शन मिला है अुससे अुनका विश्वास दृढ हुआ है कि अिस राष्ट्र के बच्चे और सयानो के सर्वांगीण विकास के लिअे, अेक स्वतन्त्र लोकतन्त्रात्मक राष्ट्र के नागरिक तैयार करने के लिअे, अेक वर्गविहीन सहकारी समाज के निर्माण के लिअे नअी तालीम ही सर्व श्रेष्ठ

साधन है। तालीमी सघ यह भी मानता है कि अगर कार्यकर्ताओ में और शिक्षा विभाग के अधिकारियो में श्रद्धा और लगन हो, जनता से सहयाग प्राप्त हो, तो भारत के गरीब-से-गरीब गाव में भी यह सपूर्ण शिक्षाक्रम अमल में लाया जा सकता है। लेकिन अिसके लिअे सबसे पहली और सबसे बडी आवश्यकता है—नअी तालीम में विश्वास की। हमारे देश में जहा-जहा नअी तालीम के कार्यक्रम में सफलता नही मिली है वहा कार्यकर्त्ताओ में और अधिकारियो में विश्वास का अभाव है अैसा मानना चाहिअे।

अब हमें यह देखना है कि पिछले अिक्कीस वर्षों में नअी तालीम ने राष्ट्र की मौलिक आवश्यकताओ का जवाब देने का कहा तक प्रयत्न किया है।

पिछले अिक्कीस सालो की अवधि हमारे देश के अितिहास का अेक महत्वपूर्ण अध्याय रहा है। अिन वर्षों में दो आजादी की लडाअिया हुअी और अिस अहिंसक सग्राम के अन्त में भारत स्वतन्त्र हुआ। लेकिन आजादी के साथ-साथ देश के दो टुकड हुअे। लाखो भाअी-बहन और बच्चे अुन्मूलित होकर आश्रय के लिअे आये और राष्ट्र के सामने अुनके सस्थापन का विराट और जटिल प्रश्न खडा हुआ।

अिसी अवधि में द्वितीय विश्व-महायुद्ध चला। जापान के हिरोशिमा में पहला अणुबम गिरा और आणविक युग की शुरूआत हुअी। अिसी विश्व युद्ध के जमाने में बगाल में भयकर अकाल पडा, हजारो बच्चे अनाथ हुअे और बरसो तक भारत की जनता के लिअे अन्न-समस्या सबसे बडी समस्या रही और आज भी है।

आजादी के बाद राष्ट्रके विकास के लिअे पहली पचवर्षीय योजना का काम पूरा हुआ। अभी दूसरी योजना के अनुसार कार्य चल रहा है।

अिस बीच में गांधीजी का असमाप्त काम पूरा करने के लिअे विनोबाजी अपनी भूदान पदयात्रा में निकले। आज आठ साल हुअे अुनकी पदयात्रा निरन्तर चल रही है। भूदान का विकास ग्रामदान में हुआ है और ग्रामदान के आधार पर ग्राम स्वराज्य निर्माण का प्रयत्न चल रहा है।

हिन्दुस्तानी तालीमी सघ मानता है कि नअी तालीम के कार्यकर्ताओं ने अपनी शक्ति के अनुसार राष्ट्र के अिन आन्दोलनो में भाग लेने का प्रयत्न किया है। स्वतन्त्रता के आन्दोलन के दिनों में बहुत-सी बुनियादी शालाअें बन्द रही और नअी तालीम के करीब-करीब सभी गैर सरकारी कार्यकर्ता कारावास में रहे। बगाल के अकाल के समय जितने नअी तालीम के कार्यकर्ता बाहर थे, अुन्होने अनाथ बच्चो के लिअे शिशु सदनो का सगठन किया और शिक्षण शिविर चलाकर कार्यकर्ताओ को नअी तालीम की ट्रेनिंग दी।

आजादी के बाद जब राष्ट्र के सामने शरणार्थी भाअी-बहनो के सस्थापन का प्रश्न आया तब हिंदुस्तानी तालीमी सघ ने भी सरकारी काम में सहयोग करने का प्रयत्न किया और अिन शरणार्थी शिविरो में नअी तामली का अेक मूल्यवान् प्रयोग हुआ, अैसा हम मानते हैं।

भूदान-आन्दोलन की शुरूआत से ही नअी तालीम के कार्यकर्त्ताओ ने यह पहिचान लिया कि भूदान, ग्रामदान और नअी तालीम के काम

के ध्येय अेक ही है । अिसलिअे भूदान और ग्रामदान का कार्य बुनियादी शाला, अुत्तर बुनियादी विद्यालय और प्रशिक्षण की संस्थाओं के लिअे शिक्षाक्रम का अेक अंग माना गया ।

नअी तालीम के कार्यकर्ता यह मानते हैं कि जब से ग्रामदान का आरम्भ हुआ है नअी तालीम के अितिहास में अेक नया अध्याय शुरू हुआ । हिन्दुस्तानी तालीमी संघ ने यह नया प्रस्ताव किया है कि "अब संघ का कर्तव्य है कि अिस अहिंसक क्रान्ति में वह श्रद्धा के साथ प्रवेश करे और अुसके साथ पूरा-पूरा सहयोग दे।" नअी तालीम के अिस नवीनतम विकास का नाम रखा गया 'ग्राम-स्वराज्य नअी तालीम'।

हमारा विश्वास है कि जब नअी तालीम अेक अहिंसक सहयोगी समाज के निर्माण का साधन बनेगी तभी अुसका सच्चा स्वरूप प्रकट होगा और अुसकी आन्तरिक सम्भावनाओं का विकास होगा । अिसलिअे नअी तालीम का आगे का काम 'ग्राम-स्वराज्य नअी तालीम' का कार्यक्रम है ।

अिस प्रकार पिछले अिक्कीस वर्षों में राष्ट्र के सामने जब-जब कोअी महान् आह्वान आया है नअी तालीम ने यथाशक्ति अुसका अुत्तर देने का प्रयत्न किया है । अिससे नअी तालीम के काम में नअी शक्ति और नअी प्रेरणा का संचार हुआ है ।

बापूजी का जो निर्देश था कि "सच्ची शिक्षा राष्ट्र की मौलिक आवश्यकता का जवाब देने का प्रयत्न करे"-अिस व्याख्या में जो संकेत है अुसका पालन करने के लिअे सघने प्रयास किया है अैसा हम मानते हैं ।

लेकिन जब हम अिस प्रश्न पर विचार करते हैं कि अिस समय राष्ट्र में बुनियादी तालीम की परिस्थिति क्या है तो हमें मानना पड़ता है कि अिक्कीस साल पहले हमने नअी तालीम के जिस ध्येय को सामने रखकर काम शुरू किया था अुससे हम अभी बहुत दूर हैं । यह बात सच है कि केन्द्रीय और राज्य सरकारों ने यह घोषणा की है कि बुनियादी तालीम ही राष्ट्रीय शिक्षा की प्राथमिक अवस्था का कार्यक्रम रहेगा । लेकिन जिस बुनियादी तालीम को सरकारी शिक्षा-विभागों से मान्यता मिली है और जिसे गान्धीजी ने "बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा" यह नाम दिया था अिन दोनों में बहुत अन्तर है ।

जिस बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा की योजना पहिले-वर्धा-शिक्षा सम्मेलन में १९३७ में बापूजी की अध्यक्षता में सर्व सम्मति से स्वीकृत हुअी थी और अुसके बाद अखिल भारत राष्ट्रीय महासभा के हरिपुरा अधिवेशन में मार्च १९३८ में दुहराअी गयी थी–अुसका पहला बुनियादी सिद्धान्त यह था :

देश की तमाम लड़के-लड़कियों को सात से चौदह साल तक सात साल की मुफ्त और लाजिमी तालीम मिलनी चाहिअे ।

दस साल की आजादी के बाद भी आज हम नअी तालीम के अिस पहले ध्येय से बहुत दूर हैं । भारत के नागरिक की हैसियत से और नअी तालीम के कार्यकर्ता की हैसियत से हमें गंभीरता के साथ अिस प्रश्न का सामना करना चाहिअे और अपने को पूछना चाहिअे कि शिक्षा के अिस प्राथमिक ध्येय की पूर्ति में भी हम आज अितने पीछे क्यों हैं ? आज दुनिया के दूसरे राष्ट्रों में मुफ्त और लाजिमी तालीम की अवधि चौदह साल से आगे बढ़ाअी जा रही है । किसी किसी राष्ट्र में अठारह साल तक मुफ्त और

लाजिमी तालीम का ध्येय सामने रखा गया है। लेकिन असा मालूम होता है कि हमारी राष्ट्रीय शिक्षा के ध्येय में हम पीछे कदम अुठा रहे हैं। प्रश्न यह है कि अगर हमारे बच्चों को-राष्ट्र के भावी नागरिकों को-अितनी "स्वल्प शिक्षा" मिले तो क्या हम आज की दुनिया में अेक लोकतन्त्र के निर्माण की आशा रख सकते हैं।

बुनियादी तालीम का दूसरा बुनियादी ध्येय गान्धीजी के शब्दों में "अेक असे समाज का निर्माण करना है जिसकी नींव अिन्साफ और न्याय पर हो, जिस समाज में अमीर और गरीब का भेदभाव न हो, जहा सबको आजादी का हक हो और सबको अपनी रोजी मिलने का विश्वास हो।"

जब हम अपने को यह पूछते हैं कि पिछले बीस वर्षों में हम अिस 'न्याय पर आधारित समाज' के निर्माण की ओर कहा तक अग्रसर हुअे हैं तो हमें यह मानना होगा कि हम आगे नही बढ रहे हैं अितना ही नही बल्कि असा मालूम हो रहा है कि हम विपरीत दिशा में जा रहे हैं। हमारे देश की शिक्षा-व्यवस्था दिन-प्रतिदिन वर्ग व्यवस्था बन रही है और जनता में और शिक्षा विभागो में यह विश्वास दृढ होता जा रहा है कि बुनियादी तालीम गरीबों की तालीम है। सन् १९५६ में सेवाग्राम में अुत्तर बुनियादी शिक्षा सम्मेलन का अुद्घाटन करते हुअे केंद्रीय सरकार के शिक्षा मंत्री डा० श्रीमालीजी ने बुनियादी तालीम की वर्तमान परिस्थिति का जो स्पष्ट शब्दों में वर्णन किया अुससे अेक अुद्धरण आपके सामने रख रहा हूँ—

"जिस प्रकार भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में बुनियादी शिक्षा को मान्यता देने के बाद दो शिक्षा पद्धतियां साथ-साथ चल रही हैं। जनता के लिअे अेक प्रकार और मध्यम और धनी वर्गों के लिअे दूसरा प्रकार। अिस तरह दो शिक्षा व्यवस्थाअें किसी भी राष्ट्र की शक्ति का निर्माण नही कर सकती हैं।

"बुनियादी शिक्षा का मुख्य अुद्देश्य वर्ग विशेष की शिक्षा तथा जन-साधारण की शिक्षा के भेद को हटाना है, परन्तु अिस परिस्थिति में अुसका विपरीत परिणाम हुआ है। दोनों वर्गों का अन्तर अधिक ही हो गया है। अिस समय हमारे देश में तीन प्रकार की शालाअें हैं। बुनियादी शालाअें, अुच्च माध्यमिक शालाअें या हाअीस्कूल तथा पब्लिक स्कूलस्। ये तीन प्रकार की शालाअें हमारे समाज के तीन मुख्य वर्गों के द्योतक हैं।"

हमारी राष्ट्रीय शिक्षा के क्षेत्र में वर्ग-व्यवस्था का यह अेक स्पष्ट चित्र है। अिसका परिणाम यह हुआ है कि साधारण जनता यह समझती है कि बुनियादी तालीम के द्वारा समाज के अुच्च वर्ग अपना स्थान सुरक्षित रखने का प्रयत्न कर रहे हैं। जब नअी तालीम के आन्दोलन का प्रारम्भ हुआ था तब सच्ची सेवा की भावना से कार्यकर्ताओ ने पिछडे हुअे जिलाकों में, असे गावो में बुनियादी तालीम का काम शुरू किया था जहा अिससे पहले शिक्षा की कोअी व्यवस्था नही थी। लेकिन धीरे-धीरे जैसे-जैसे, बुनियादी शिक्षा को प्रतिष्ठा घटती गयी जनता में भी यह विश्वास बढता गया कि अुनके गांव की बुनियादी शाला अेक निकृष्ट दर्जे की शाला है और जिन ग्रामवासियों की आर्थिक हालत कुछ अच्छी रही वे और बुनियादी शालाओं के शिक्षक भी अपने बच्चो को शहरों में पुरानी तालीम के विद्यालयो में भेजने लगे।

अिसी प्रकार आदिवासियो के बच्चो के लिअे और पहाडी अिलाको में अिस भावना से बुनियादी तालीम का काम शुरू किया गया कि अिन प्रकृति की सन्तानो के अूपर पुरानी शिक्षा पद्धति का बुरा असर न पडे, लेकिन अुनकी तरफ से भी शहरो में प्रचलित पुरानी तालीम की शालाओ के लिअे माग आ रही है। क्योकि वे मानते हैं कि अुन्हें अुनकी वर्तमान परिस्थिति में कायम रखने के लिअे ही बुनियादी तालीम का प्रवर्त्तन किया जा रहा है।

अिस प्रकार वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था में बुनियादी शालाओ का स्थान सब से नीचा है अितना ही नही, दूसरे प्रकार के प्राथमिक और माध्यामिक विद्यालयो को जो सुविधायें मिलती हैं। वे भी बुनियादी शालाओ को अुपलब्ध नही हैं। जो विद्यार्थी बुनियादी या अुत्तर बुनियादी शिक्षा की सस्थाओ से अुत्तीर्ण होकर निकलते हैं अुनके लिअे अुच्च शिक्षा की व्यवसायिक (professional) और औद्योगिक (technical) शिक्षा की सब सस्थाओ के द्वार बन्द हैं। आज कअी वर्षो से माध्यमिक शिक्षा की अेक प्रकार की हैसियत से अुत्तर बुनियादी शिक्षा की मान्यता का प्रश्न हमारे देश की विभिन्न राज्य सरकारो के सामने है। लेकिन बुनियादी तालीम के भावी विकास के लिअे अिस महत्व के प्रश्न पर अब तक कोअी निर्णय नही लिया गया है। अिसलिअ स्वाभाविक ही है कि बुनियादी तालीम पर जनता का विश्वास घटता जा रहा है और पालको के मन मे यह शका बनी रहती है कि वे अगर अपने बच्चो को बुनियादी शालाओ में भेजें तो अुनके लिअे आगे की शिक्षा की सम्भावनायें नष्ट हो जाती हैं।

बुनियादी तालीम के विकास में और अेक रुकावट यह रही कि धीरे-धीरे अुसकी अवधि भी घटाअी जा रही है। अिस राष्ट्रीय शिक्षा की योजना के जन्मदाताने अिसे अेक सात साल के अेक सम्पूर्ण शिक्षाक्रम के रूप में राष्ट्र के सामने रखा था। लेकिन आज बुनियादी तालीम की अवधि मात्र ४ या ५ साल की रह गअी है। अिसका परिणाम यह रहा है कि नअी तालीम का अुद्देश्य सिद्ध नही होता है। सिर्फ राष्ट्र के पैसे, शक्तियो और प्रवृत्तियो का अपव्यय मात्र हो रहा है। द्वितीय पचवर्षीय योजना में भी सिर्फ पाच साल की परिकल्पना रखी गयी है अगर राष्ट्र के नेताओ की यह राय है कि हमारे राष्ट्र के बच्चो के लिअे बरसो तक हम सिर्फ पाच साल की बुनियादी तालीम ही दे सकेंगे तो मैं आग्रहपूर्वक यह निवेदन करना चाहता हू कि यह शिक्षा छ से ग्यारह साल तक की अुम्र के बच्चो के लिये न होकर नौ से चौदह साल तक की अुम्र के बच्चो के लिअे हो, क्योकि अिस अवस्था के किशोर विद्यार्थियो को हम जो शिक्षा देंगे वह स्थायी होगी यह शिक्षाशास्त्रियो का अनुभव है।

यहा मैंने राष्ट्र में नअी तालीम की वर्त्तमान परिस्थिति का वर्णन करने का अेक प्रयास किया है। यह चित्र अुत्साहदायक नही है, पर यथार्थ है अैसा मेरा निवेदन है लेकिन हम यह न भूले कि नअी तालीम के विकास में कुछ अुत्साहजनक पहलू भी हैं। आज हमारे देश के कअी राज्यो में सरकारी और गैर सरकारी दोनो प्रकार के बुनियादी और अुत्तर बुनियादी विद्यालय शिक्षा का अच्छा काम कर रहे हैं और अुन्होने जनता का विश्वास भी प्राप्त किया है। बिहार राज्य सरकार पिछले बीस वर्षों से आठ वर्षों की

बुनियादी शिक्षा और अुत्तर बुनियादी शिक्षा का विकास करने का प्रयत्न कर रही है। मद्रास राज्य में भी सरकारी और गैर-सरकारी नअी तालीम की संस्थाओं में शिक्षा के काम का विकास सन्तोषजनक है। लेकिन अितना होते हुअे भी हमें यह मानना चाहिअे की राष्ट्र में बुनियादी तालीम की जो वर्त्तमान परिस्थिति है अुससे हम नअी तालीम के कार्यकर्त्ता सन्तोष नही मान सकते। लेकिन हमें निराश भी नही होना है। बापूजीने कहा था :—

"सत्याग्रह के अभिधान में नैराश्य यह शब्द नही है। अगर हमें अैसा लगता है कि हमें सफलता नहीं मिल रही है तो हमें अिसका कारण अपने अन्दर ढूढना चाहिअे। कमजोरी और अविश्वास से ही नैराश्य पैदा होता है।"

अिसलिअे नअी तालीम के जिन कार्यकर्ताओ ने अिसे श्रद्धा के साथ अपने जीवन के कार्य के रुप में *अुठा लिया है अुन्हे* अपनी सारी शक्तिया और विचार सहत करके अिस परिस्थिति का कारण ढूढ निकालना है। हमें *समझने का प्रयत्न करना है कि हमारे अदर* कौन-सी कमजोरिया है जिनके परिणाम स्वरुप आज जनता का नअी तालीम के कार्यक्रम में विश्वास नही है। बुनियादी तालीम का काम करते हुअे शिक्षको को, निरीक्षको को और व्यवस्थापको को भिन्न-भिन्न समस्याओ का सामना करना पडता है।

अिस सम्मेलन में देश के हरेक राज्य से नअी तालीम के *कार्यकर्ता*, रचनात्मक कार्यकर्ता *और सरकारी शिक्षा विभागो के अधिकारी* अेकमाथ मिले है। अिस प्रश्न पर विचार *करने के लिअे यह अेक* बहुत अच्छा अवसर है।

मै यह भी आशा करता हू कि कार्यकर्ताओ का यह सम्मेलन अिस प्रश्न पर सिर्फ चर्चा विचारो से ही सतोष नही मानेगा बल्कि नअी *तालीम की वर्तमान परिस्थिति को सुधारने के लिअे अेक प्रत्यक्ष कार्यक्रम की योजना भी तैयार* करेगा। अिस सम्मेलन की अध्ययन मडलियो के विचार के लिअे जो विषय रखे गये है वे अिसी ध्येय को सामने रखकर चुने गये है।

पिछले अिक्कीस वर्षों से मै नअी तालीम का काम कर रहा हू। अिस कार्य की सफलता से जो आनद मिलता है, अिसका भी कुछ अनुभव मिला है। अिस काम में जो कठिनाअियां *आती है अुसका भी अनुभव है।* आज देश भर में नअी तालीम का कार्यक्रम जो निस्तेज और निष्प्राण बन रहा है। मेरी राय में अुसके जो *कारण है, अुन्हे मै आपके सामने रखना चाहता* हू। मेरी राय में अुसका मुख्य कारण यह है कि हमने यह नही पहचाना कि नअी तालीम की *जड में जो जीवन-दर्शन है अुसकी स्वीकृति के* बिना हम नअी तालीम का सच्चा काम नही कर सकते हैं। हम यह भूल जाते है कि नअी *तालीम सिर्फ शिक्षा पद्धति में सुधार की* योजना नही है। लेकिन राष्ट्र निर्माण के अेक समग्र कार्यक्रम का अग है। अिस कार्यक्रम की बुनियाद में जो *सामाजिक, आर्थिक और नैतिक* विचार है अुन्हें बार-बार गाधीजी ने विस्तार के साथ राष्ट्र के सामने रखा है। अुन्हे यहा *दोहराने की आवश्यकता नही है। लेकिन राष्ट्र* निर्माण के अेक बुनियादी अुसूल को मै अवश्य अिस सम्मेलन के सामने रखना चाहूगा। क्योकि राष्ट्र निर्माण को जो योजनायें बन रही हैं अुनमें अिस तत्व की अुपेक्षा की गअी है।

बुनियादी तालीम का पहिला बुनियादी अुसूल यह है कि राष्ट्र के सब बच्चों को शिक्षा

का समान अधिकार है। यह अिस युग का सबसे बडा सदेश है अैसा मै मानता हू। लेकिन आजादी के बाद राष्ट्र निर्माण की जो योजनायें बन रही है अुनमें विभिन्न सामाजिक और आर्थिक स्तर के बच्चो के लिअे शिक्षा की सुविधायें भी भिन्न-भिन्न प्रकार की होगी अैसी मान्यता दीखती है। मुझे डर है कि जब तक हमारे राष्ट्र निर्माण को और राष्ट्रीय शिक्षा की योजनायें अिस आर्थिक और शैक्षणिक विषमता के आधार पर बनेगी तब तक नओी तालीम का काम अपने अुद्देश्य को सिद्ध करने मे असफल होगा यह अनिवार्य है।

मै दृढता के साथ यह कहना चाहता हू कि जो राष्ट्र अपने नागरिको के लिअे सामाजिक और आर्थिक समता के सिद्धात को मान्य नही करेगा और अपने बच्चों के लिअे समान शैक्षणिक सुविधाओ की व्यवस्था नही करेगा वह राष्ट्र कभी नओी तालीम का काम नही कर सकेगा। अिसका अवश्यम्भावी परिणाम वही होगा जो आज हो रहा है। न जनता मे नओी तालीम के प्रति श्रद्धा अुत्पन्न होगी और न शिक्षा विभाग के अधिकारियो में बुनियादी तालीम के काम करने के लिअे अुत्साह होगा। राष्ट्र के पैसे खर्च होगे लेकिन नओी तालीम का काम नही होगा और बुनियादी तालीम के प्रति यह भावना बनी रहेगी कि यह गरीब और देहाती जनता के लिअे निकृष्ट दरजे की अेक प्राथमिक शिक्षा की योजना है।

नओी तालीम का जो दूसरा बुनियादी सिद्धान्त है कि सारी शिक्षा कोओी न कोओी अुत्पादक काम के जरिये दी जाय, अिसका भी सच्चा प्रयोग तब तक नही हो सकेगा जब तक समाज में और राष्ट्र में अुत्पादक काम के प्रति श्रद्धा नही अुत्पन्न होगी, जब तक हमारे राष्ट्रजन और राष्ट्र के नेता अिस बुनियादी अुसूल को स्वीकार नही करेगे कि अुत्पादक काम व्यक्ति और समाज के विकास के लिअे सब से बडा और सब से शक्तिशाली साधन है।

अिसी बुनियादी श्रद्धा के अभाव से आज सब जगह विनोबा जी के शब्दो में "बुनियादी तालीम का वानरीकरण" हो रहा है। बच्चो के हाथ से कते हुअे सूत शालाओं के भण्डारो में बन्द है। अुस पर धूल जम रही है, और बच्चे या तो फटे कपडो में या नगे घूम रहे हैं। गाव-गाव में हमारे बच्चे भूखे है और हम 'अधिक अन्न अुपजाओ' का आन्दोलन चला रहे हैं। आज तक शिक्षा जगत की यह राय बनी है कि अुत्पादक काम के साथ सम्बन्ध जोडने से शिक्षा की प्रतिष्ठा घटती है और वह जातिच्युत होती है। अपने हाथ से अन्न अुत्पन्न करके खाना और हाथ से वस्त्र पैदा करके अुसे पहिनना शिक्षा का काम नही है। शिक्षा का काम है बौद्धिक और सास्कृतिक विकास। बुनियादी शिक्षा से बच्चो का बौद्धिक और सास्कृतिक विकास रुक जायेगा अिसलिअे वह अच्छी शिक्षा नही।

हमारा देश जाति भेद का देश है। शिक्षा जगत में बौद्धिक शिक्षा की जाति अूची और बुनियादी शिक्षा की जाति नीची है। क्योकि यह शिक्षा हाथ के काम के द्वारा दी जाती है। अिसलिअे बच्चो के मा बाप अगर अपने बच्चे को नीच जाति की शालाओ में नही भेजना चाहे तो अुसमें आश्चर्य की कोओी बात नही है।

अिस दुखद विषय पर और अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नही है। अच्छा तो यह

होगा कि हम अिस प्रश्न पर विचार करे कि राष्ट्र में नअी तालीम के सच्चे विकास के लिअे हमारा प्रत्यक्ष कार्यक्रम क्या होना चाहिअे ।

नअी तालीम की सफलता के लिअे सबसे पहला और सबसे आवश्यक कार्यक्रम यह है कि अिस देश की जनता नअी तालीम के अिस पहले बुनियादी सिद्धान्त को पहचाने और स्वीकार करे कि अिस राष्ट्र के सब बच्चो को शिक्षा का समान अधिकार है और मिलना चाहिअे । पिछले आठ वर्षों में नअी तालीम के आचार्य पूज्य विनोबा जी अपनी पदयात्रा के द्वारा भारत के गाव-गाव और नगर-नगर में आर्थिक समता के सन्देश का प्रचार कर रहे हैं। वे बार-बार कहते हैं कि वे नअी तालीम का ही काम कर रहे हैं। वे कह रहे हैं कि अिस भूदान ग्रामदान आन्दोलन का ध्येय है कि भारत के प्रत्येक बच्चे को अन्न मिले और शिक्षा मिले । जब तक नअी तालीम के कार्यकर्ता विनोबा जी के दिखाये हुअे मार्ग का अनुसरण करके अिस देश के प्रत्येक नागरिक के पास अिस सन्देश को नही पहुचायेंगे और नअी तालीम के लिअे आवश्यक राष्ट्रीय भूमिका को तैयार नही करेंगे तब तक नअी तालीम का सच्चा विकास नही हो सकेगा । मुझे यह कहने में बहुत खुशी है कि नअी तालीम के बहुत से कार्यकर्ताओ ने अिस सत्य को पहिचना लिया है और वे भूदान ग्रामदान कार्य में प्रत्यक्ष भाग लेकर अुस नये समाज की रचना के क्रान्तिकारी काम में हाथ बटा रहे हैं जहा नअी तालीम अेक बाहर से लादी हुअी शिक्षा पद्धति नही रहेगी । लेकिन समाज रचना की अेक स्वाभाविक प्रवृत्ति के रूप में विकसित होगी । तब नअी तालीम "जनता के लिअे, जनता के द्वारा और जनता की तालीम" होगी । (Education for the people, of the people and by the people). तब नअी तालीम राष्ट्रीय तालीम बनेगी ।

नअी तालीम के कार्यकर्त्ताओ का दूसरा बुनियादी काम भी जन शिक्षा का ही काम होगा । वह है "हाथ के द्वारा शिक्षा" अिस सिद्धान्त का व्यापक रूप से प्रचार और प्रसार । गाधीजी अपने जीवन-काल में प्रवचनों के द्वारा और प्रत्यक्ष अुदाहरण के द्वारा निरतर यह काम करते रहे और आज विनोबाजी भी कर रहे हैं । फिर भी अिस दिशा में बहुत काम अभी बाकी है। आज भी हमारे समाज में हाथ के काम को और काम करनेवाले को अुचित स्थान नही मिला है। आज भी शिक्षित मनुष्य अपने को हाथ से काम करने वाले मजदूर या कारीगर से बहुत अूचा समझता है । यह मनोवृत्ति समाज के सभी स्तरो में फैली हुअी है और हरेक मजदूर चाहता है कि अुसके लडके को अैसी शिक्षा मिले कि अुसे और हाथ का काम न करना पडे ।

जब हमारे समाज में और राष्ट्रीय जीवन में हाथ के काम को अुचित स्थान मिलेगा, तब नअी तालीम के कार्यकर्त्ता अपने जीवन और कार्य के द्वारा यह सिद्ध कर सकेंगे कि काम शिक्षा का सब से बडा साधन है और देश के जन साधारण में राष्ट्रीय जीवन को काम करने- वालो की अेक सहकारी, सहयोगी श्रम आधारित समाज के रूप से विकसित करने की भावना पैदा होगी तभी समाज में नअी तालीम को अपना अुचित स्थान मिलेगा और वह अपना सच्चा काम कर सकेगी ।

हम नअी तालीम के कार्यकर्त्ताओ को यह भी स्मरण रखना है कि नअी तालीम सिर्फ

अेक जीवन दर्शन नही है, यह अक विज्ञान है और अक कला भी। अिसके दार्शनिक पहलू का पहला स्थान है, लेकिन साथ साथ हमें अिस दर्शन का अक प्रत्यक्ष कार्यक्रम के रूप में विकसित करने के लिअ अिसके विज्ञान और अिसकी कला का भी विकास करना है। अब तक शिक्षण शास्त्र में और शिक्षा मनोविज्ञान में जितने सुपरीक्षित आविष्कार किये गये हैं अुनका भी हम अध्ययन करना है और अुनसे लाभ अुठाना है। नअी तालीम की सस्थाओ में शैक्षणिक अनुसधान के लिअे अक विशाल क्षेत्र पडा है। हमें बडी खुशी है कि केन्द्रीय सरकार ने नअी देहली में बुनियादी तालीम के अेक अनुसधान केन्द्र की स्थापना की है। लेकिन अगर हमें वैज्ञानिक आधार पर नअी तालीम का विकास करना है तो अिस प्रकार के बहुत से अनुसधान केन्द्रो की आवश्यकता होगी जहा नअी तालीम के विभिन्न पहलुओ पर परीक्षण और प्रयोग का काम चलता रहेगा।

अन्त में जब हम अपने को पूछते हैं आज सिर्फ हमारे देश में ही नही बल्कि सारे विश्व में शिक्षा के काम करने वालो के सामने सबसे बडा प्रश्न कौन सा है तो हमें मानना होगा कि यह प्रश्न विश्व शाति का है। विज्ञान की अुत्तरोत्तर प्रगति से मानव के विनाश के अस्त्रो का अिस हद तक विकास हुआ है कि आज विश्व के सामने मानव जाति के सपूर्ण लोप हो जाने की सभावना है। विश्व के शैक्षणिक कार्यकर्ताओ के सामने यह अक बहुत बडी नैतिक चुनौती है। आज परिस्थिति तो यह है कि या तो हम सब अेक साथ मिलकर शाति का काम करे या अेकसाथ मिलकर खतम हो जाय। अिस युग को सबसे बडी आवश्यकता है शाति की। अिसलिअ अिस आवश्यकता का जवाब देना नअी तालीम का कर्त्तव्य हो जाता है।

नअी तालीम का दावा यह है कि सत्य और अहिंसा पर आधारित समाज की रचना अिसका ध्येय है। सन् १९३८ में वर्धा शिक्षा सम्मेलन का अुद्घाटन करते हुअ गाधीजी ने जो कहा था अुसे मैं फिर से यहा दोहराता हू —

"अगर हम कौमी और अन्तर्राष्ट्रीय सघर्ष को बन्द करना चाहते हैं तो हमारे लिअे जरूरी है कि जिस शिक्षा की मैंने यहा हिमायत की है, अपने बालको को शिक्षित करके शुद्ध और सुदृढ आधार पर अुसका आरभ करे। मेरी अिस योजना की तह में अहिंसा भरी हुअी है।

"अगर हिन्दुस्तान ने हिंसा को छोड देने का निश्चय किया तो अुसे जिस अनुशासन में होकर गुजरना पडेगा, शिक्षा का यह तरीका अुसका अेक खास अग होगा।'

अिस सम्मेलन के लिअ विनोबाजी ने जो सन्देश भेजा था, अुसमें भी अुन्होंने कार्यकर्त्ताओ को स्मरण दिलाया था कि समाज का अहिंसक रक्षण भी शिक्षा का ही काम है।

' नअी तालीम के सम्मेलन के लिअ कुछ बात मैं कहू अैसी माग की गयी है। ग्रामदान, अुसके आधार पर ग्राम स्वराज्य, यह हमारा पाठ्यक्रम है। अुसमें शिक्षा और रक्षा अैसे दो बडे अग हमको विकसित करने हैं। रक्षा के लिअ शाति सेना और शिक्षा के लिअ ग्राम जीवन। शिक्षा और रक्षा अैसे चिंतन के ख्याल से दो पहलू हो जाते हैं। अहिंसा में शिक्षा और रक्षा अक ही चीज बन जाती है। जब तक ये दो चीजें अलग-अलग मानी जायेंगी तब

तक अहिंसा अपना पूर्ण रूप नही दिखा सकेगी। नअी तालीम की अेक-अेक नअी कला प्रस्फुटित हो रही है। हमारे शिक्षक-गण अुसके ग्रहण में पीछड न जाय यह देखने की बात है।"

हमारे प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूजी ने भी अपने सन्देश में नअी तालीम के कार्यकर्ताओ के सामने यही अपेक्षा रखी थी —

"भारत शान्ति और अहिंसा का अेक प्रबल समर्थक है, अैसी अुसकी ख्याति है। लेकिन अिस ख्याति के हम पूरे के पूरे योग्य नही हैं। क्योंकि हम शाति और अहिंसा की बाते तो करते हैं, लेकिन अपने घरेलू और राष्ट्रीय जीवन में जिस प्रकार का व्यवहार करत हैं, वह शान्ति और अहिंसा के बिलकुल विपरीत है। हमारा अैसा अन्तर्द्वन्द बहुत ही हानिकारक है अैसा मेरा निश्चित मत है। बुनियादी शिक्षा अिस समस्या के समाधान में कहा तक सहायक होगी यह में नही जानता, किन्तु जहा तक हो सके अुसे पूरी कोशिश करनी चाहिअे।"

यह नअी तालीम के कार्यकर्ताओ के लिअे अेक महान चुनौती है और अिस चुनौती को हमें नम्रतापूर्वक स्वीकार करना है। अिसकाम के लिअे अेकाग्र निष्ठा और कठिन परिश्रम और त्यागवृत्ति की आवश्यक्ता होगी। लेकिन अिस ससार में निष्ठा और त्याग के बिना कोअी महान् कार्य सम्पन्न नही होता है। हमारे राष्ट्र के बच्चो को नअी तालीम के द्वारा विश्वकल्याण और विश्व-शान्ति के लिअे तैयार करना अिससे महान् कार्य कोअी हो सकता है? मेरा पूर्ण विश्वास है कि अिस महान् कार्य के लिअे अेकनिष्ठ श्रद्धावान कार्यकर्ताओ की कमी नही होगी।

नअी तालीम की साधना के मार्ग पर चलने के लिअे अीश्वर हमें शक्ति दे यही हमारी प्रार्थना है।

जहां बच्चों को अिस बात का बढावा दिया जायगा कि वे बातें और खेती के काम मे अपने मां-बाप की मदद करें, वहां अुन्हे यह महसूस करने का मौका भी दिया जायगा कि अुनका सम्बन्ध सिर्फ अुनके मां-
बाप से ही नहीं, बल्कि अपने गांव और देश से भी है, और अुन्हें अिसकी भी कुछ सेवा करनी है। अिसलिये मेरे ख्याल मे तो तालीम का यही अेक तरीका आता है। मत्रियों से मं यह कहूंगा कि खैराती तालीम देकर वे मुल्क के बच्चो को असहाय या अपाहिज ही बनायेंगे, जब कि अुनको शिक्षा के लिये अुनसे खुद मेहनत कराकर वे अुन्हे बहादुर और आत्मविश्वासी बना सकेंगे।

—गांधीजी

२२ अक्तूबर १९३७।

तेरहवें अखिल भारत नअी तालीम सम्मेलन के निर्णय ।

ता. २७ अप्रैल १९५९

राष्ट्रीय शिक्षा :

१. राष्ट्रीय शिक्षा का यह बुनियादी ध्येय रहा है कि राष्ट्र के सभी बच्चो को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा की समान सुविधायें मिले । यह सम्मेलन अिस बुनियादी ध्येय को फिर से दुहराता है और अपना निश्चित मत प्रकट करता है कि यह सिद्धान्त हमारी योजना का आधार बने । शिक्षा की जो भी सुविधायें हम दें राष्ट्र के सभी बच्चो को समान रूप से प्राप्त हों ।

आठ साल की समग्र योजना –

२ विनोबाजी ने अिस सम्मेलन के सामने यह विचार रखा है कि राष्ट्रीय बुनियादी शिक्षा का आठ साल का शिक्षाक्रम अेक समग्र प्रक्रिया है । अिस प्रक्रिया को पाच साल के बाद खण्डित न किया जाय क्योंकि यह बच्चो के सर्वांगीण विकास के लिये हानिकर है ही और राष्ट्र के साधनो का पूर्ण अपव्यय भी है ।

यह सम्मेलन विनोबाजी के अिस विचार की ताअीद करता है और निश्चित मत प्रकट करता है कि आठ साल का समग्र कार्यक्रम ही बुनियादी शिक्षा का आधार रहे ।

नअी तालीम में विज्ञान और अहिंसा का योग–

३ अिस सम्मेलन की राय में आज शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण और शीघ्र-से-शीघ्र व्यवहार में लाअी जानेवाली आवश्यकताओं में अेक यह है कि वैज्ञानिक प्रवृत्ति तथा दृष्टिकोण का अहिंसा के नैतिक मूल्यों के साथ गठबन्धन किया जाय। निर्भयता और सत्य के प्रति निष्ठा से किसी भी सच्चे वैज्ञानिक की पहचान होनी चाहिअे । यही गुण समान रूप से अुन लोगो में अवश्य ही पायें जायेंगे जिनमें अहिंसा का विकास हुआ है । सम्मेलन की अैसी आशा है कि विश्वविद्यालयो और विद्यालयो के कार्यकर्त्ता अिस सिद्धान्त को कार्य में परिणत करने में आगे बढ़ेंगे और मार्गदर्शन देंगे ।

४ विनोबाजी ने प्रत्येक शिक्षक को अैसी चुनौती दी है कि वह अपने को शान्ति सैनिक माने और शिक्षण कार्य को आगे की पीढ़ी के मनसों में शान्ति की नीवों को सुदृढ़ करने का अेक अपूर्व अवसर समझें । यह सम्मेलन अिस चुनौती का स्वागत करता है और शिक्षको को आह्वान करता है कि वे अिस काम के अपने अुत्तर दायित्व समझें और सेवा, आत्म संयम और स्वाध्याय के द्वारा अिस कार्य के लिअे अपने को तैयार करे ।

५ यह सम्मेलन "नअी तालीम में व्यवस्था" पर अध्ययन मण्डली की सिफारिशों का समर्थन करता है और अनुरोध करता है कि राज्यसरकारें और नअी तालीम का काम करनेवाली सभी संस्थायें अिन सिफारिशो का अमल में लाने का प्रयत्न करें ।

नअी तालीम में शिक्षक-प्रशिक्षण

६ यह सम्मेलन शिक्षक प्रशिक्षण अध्ययन गोष्ठी की सिफारिश का समर्थन करता है और अनुरोध करता है कि राज्य सरकारे और नअी तालीम का काम करनेवाली सभी संस्थायें अिन सिफारिशो को अमल में लाने का प्रयत्न करें ।

पूर्व बुनियादी शिक्षा

७ पूर्व-बुनियादी शिक्षा की योजना बालक और पालक दोनोंको ध्यान में रखकर बनाअी जाय और अैसा समन्वित कार्यक्रम बने जो घर में तथा शाला में दोनो जगह चले । यह सम्मेलन अिस राय से पूर्णतया सहमत है । अैसा नहीं होने से बच्चों और बडो के हितों में फर्क रहेगा जो बच्चो के विकास में बाधक होगा

८ नअी तालीम में अनुसधान अध्ययन मण्डली की यह सिफारिश है कि बुनियादी शिक्षा की प्रणाली व्यवस्था और सगठन पर निरन्तर शोध कार्य करने की आवश्यकता है और जनसहयोग कैसे प्राप्त हो यह भी शोध का विषय बने । यह सम्मेलन अिस सिफारिश का समर्थन करता है और यह अनुरोध करता है

कि राज्य सरकारें और बुनियादी शिक्षा में लगी हुओ सब संस्थाओं और कार्यकर्ता अिस कार्य को अपने हाथ में लें।

नओी तालीम का साहित्य

९ शिक्षण-साहित्य की परम आवश्यकता की ओर यह सम्मेलन राष्ट्र के सब शैक्षणिक कार्यकर्ता और साहित्यिकों का ध्यान खींचता है और अुनसे निवेदन करता है कि वे अिसे राष्ट्र-सेवा के आवश्यक कार्यक्रम के तौर पर अपने हाथों में ले। नओी तालीम साहित्य अध्ययन गोष्ठी की सिफारिशों को यह सम्मेलन समर्थन करता है और यह अनुरोध करता है कि राज्य सरकार और बुनियादी शिक्षा में लगी हुओ सब संस्थाओं और कार्यकर्ता अिस कार्य को अपने हाथ में ले।

नओी तालीम की व्यवस्था अध्ययन गोष्ठी का प्रतिवेदन

(संयोजक – श्री रामशरण अुपाध्याय)

अिस टोली की दो बैठकें हुओी—अेक २६ ४ ५९ के अपराह्न में ढाई बजे से साढ़े चार बजे तक और दूसरी २७ ४ ५९ के पूर्वाह्न में साढ़े आठ बजे से १० बजे तक। लगभग ३० व्यक्तियोंने चर्चाओं में भाग लिया।

१ टोलीने अभी जो बुनियादी शिक्षा का संगठन राज्यों में सरकारों द्वारा हो रहा है अुनके संबंध में प्रथम विचार किया। भूदान ग्रामदान के प्रयत्नों के फलस्वरूप जो ग्राम स्वराज्य और ग्राम-संकल्प के द्वारा ग्रामनिर्माण की संभावनाओं और समस्याओं अुपस्थित हुओ हैं, अुनकी पृष्ठभूमि में, जन-आधारित ग्राम आयोजन के द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा के संगठन के पहलुओं पर भी विचार किया।

२ आज से दो वर्ष पहले केन्द्रीय शिक्षा मंत्रणालय से नियुक्त श्री रामचन्द्रन बुनियादी शिक्षा मूल्यांकन समिति ने तब तक की बुनियादी शिक्षा में जो प्रगति हुओ थी या नहीं हुओ थी अुस पर रिपोर्ट दी थी। अुसकी सिफारिशों को अमल में लाने के लिअे अलग-अलग राज्यों में जो कदम अुठाये गये हैं, अुनकी रिपोर्ट अुन राज्यों के प्रतिनिधियों ने दी।

३. भारतीय संविधान के अनुसार चौदह वर्ष की अुम्र तक की शिक्षा की व्यवस्था सारे राष्ट्र के लिअे शीघ्र से-शीघ्र होनी चाहिये। अब प्रयोग के काल समाप्त हो चुके हैं और नओी तालीम के ढांचे पर प्रारंभिक शिक्षा का संगठन केन्द्र और राज्य शासनों ने स्वीकृत कर लिया है। अब समस्या मुख्यतः यह है कि प्रत्येक राज्य में हजारों पुराने ढांचे से चलते हुओ प्राइमरी और मिडल स्कूलों को बुनियादी शिक्षा के ढांचे के स्कूलों में जल्द-से जल्द परिवर्तन करना। राज्य के शिक्षा विभागों के प्रशासन अिस काम को नियत समय के भीतर और पूरी अच्छाओी के साथ सम्पन्न कर, अिसके लिअे अध्ययन टोली नीचे लिखे सुझाव देती है –

(क) वर्तमान विद्यालयों को बुनियादी ढांचे के विद्यालयों में बदलने का काम अितना व्यापक है कि अिस टोली की दृष्टि में, अैसा परम आवश्यक दीखता है कि जिस किसी राज्य में भी डाअिरेक्टर महोदय के अतिरिक्त बुनियादी शिक्षा का जानकार अेक विशेष अधिकारी डाअिरेक्टर के दर्जे का ही संपूर्ण व्यवस्था का डाअिरेक्टर के साथ और अुसके प्रति आभारी नहीं रख लिया गया हो वहां यह शीघ्र रखा जाय। प्रत्येक राज्य अपनी परिस्थितियों की दृष्टि से अपने शिक्षा निर्देशालय का अिस प्रकार का पुनः संगठन शीघ्र करे, अिसकी अपेक्षा है।

(ख) बुनियादी संस्थाओं का व्यवस्थापन और निरीक्षण अैसे ही अधिकारियों के द्वारा होना चाहिये जिन्हें बुनियादी शिक्षा में प्रशिक्षण मिला हो और अिसका अनुभव हो। जहां कहीं भी और जब कभी भी कोओी अप्रशिक्षित अधिकारी अिस काम के अूपर नियुक्त किये जाय, अुनके प्रशिक्षण और पुनरनुस्थापन की व्यवस्था यथासंभव शीघ्र होनी चाहिये।

(ग) अुत्पादक काम बुनियादी शिक्षा के अभिन्न अंग हैं। अुनके लिअे कच्चे माल और अुचित ढंग के यन्त्र अित्यादि की यथासम्भव प्राप्ति, अुनके अुचित संग्रह और तैयार माल के विनियोग की भी व्यवस्था ठीक समय पर होनी चाहिअे। अिसमें खादी तथा ग्रामोद्योग कमीशन, सर्व सेवा संघ और अुनकी शाखाओं का सहयोग राज्य शासनों और बुनियादी

संस्थाओं को प्राप्त करना चाहिअे। अुत्पादित वस्तुओं के विनियोग के लिअे टोली की सिफारिश है कि अिस सबध मे राज्य शासन की स्पष्ट नीति निश्चित होनी चाहिये। केन्द्र शिक्षा मत्रणालय की बुनियादी शिक्षा समिति ने जो सुझाव अिस सबध में दिये हैं, राज्य शासनों द्वारा अुसकी स्वीकृति की सिफारिश वह टोली करती है। अिसके अनुसार अुत्पादित वस्तुओं का अुपयोग अुचित हिसाब से देते हुअे छात्रो के विद्यालय भोजन तथा वस्त्र में हो अेव विद्यार्थियो के सामुदायिक जीवन के विकास में होना चाहिअे। अुसे सरकारी नही मानना चाहिये और खजाने में जमा नही होना चाहिअे।

(घ) अिस टोली की राय मे यह बहुत ही आवश्यक है कि बुनियादी शिक्षण सस्थाओ के मूल्याकन पुरानी ढग की परीक्षाओ से न होकर शिक्षण सस्थाओं मे सतत चलने वाले स्वय छात्रों और शिक्षको के अपने मूल्याकन के द्वारा होने चाहिअे। वर्तमान परिस्थितियो को ध्यान म रखते हुअे टोली की अभी की सिफारिश यह है कि शिक्षा सम्पूर्ण करने के प्रमाण पत्र देने में ५० प्रतिशत अक भीतरी मूल्याकन के आधार पर दिये जाय और ५० प्रतिशत अक बाहरी किसी केन्द्रीय सरक्षण द्वारा चुने गये प्रश्न पत्रो के अुत्तरो के आधार पर।

(ङ) प्रशिक्षण महाविद्यालयो म विस्तार सेवा का काम (Extension Service Work) हाओ स्कूलों के लिअे चल रहा है। टोली की राय है कि प्रारभिक विद्यालयो के लिअे भी अैसे विस्तार सेवा-काम वाछनीय माना जाय। विभिन्न अवस्था-स्तरो की दृष्टि से विस्तार सेवा काम की विभिन्न शाखायें सीनियर तथा जूनियर रह सकती है।

(च) अभी राज्य सरकारे ६ से ११ वर्ष तक की अुम्र क लिअे प्राथमिक शिक्षण की योजना चला रही हैं और चलाने वाली हैं। सविधान के अनुसार १४ वर्ष तक की शिक्षा की व्यवस्था अुनके लिअे लाजिमी है। टोली सिफारिश करती है कि अपने-अपने राज्यो की परिस्थितियो को ध्यान म रखते हुअे प्रत्येक राज्य प्रशासन अपना अेक लक्ष्य निर्धारित करे कि वह किस निश्चित अवधि के भीतर मे १२ से १४ वर्ष तक की शिक्षा सबो क लिअे अुपलब्ध करायेगा।

(छ) अिस अध्ययन टोली की यह राय है कि न केवल ६ से १४ वर्षों तक की अुम्र का सार्वजनिक बुनियादी शिक्षण, बल्कि सारी जनता की समग्र जीवन व्यापी शिक्षा की गति तीव्रतर और गतिशील होगी यदि ग्राम दान ग्राम-स्वराज्य, ग्राम सकल्प अित्यादि से जो वातावरण सारे देश में अुत्पन्न हो रहा है अुस से पूरा लाभ अुठाया जाय।

ग्रामदानी गाव म तो ग्राम निर्माण के कार्यक्रम में गाव की शिक्षा का भार ग्राम लेगा ही। किन्तु जहा अभी ग्रामदान नही भी हुआ हो या ग्राम स्वराज्य की योजना पूरी कार्यान्वित नही भी हो रही हो, वहा रचनात्मक प्रवृत्ति के बनिया के द्वारा प्रेरणा दी जा सकती है कि गाव अपने निजी सकल्प से तथा गाव की निधि अेव जनशक्ति के अुपयोग से ग्राम शिक्षा का भार अपने कधो पर अुठाय। अैसा करने से ही राष्ट्रीय शिक्षा केवल शासकीय अधिकारियों पर निर्भर नहीं रहेगी बल्कि वास्तविक स्वावलबन के आधार पर खडी हो सकेगी। राज्य शासनों के द्वारा जो भी काम अिस दिशा म हो रहे होंगे, अुनकी पूर्ति शीघ्र ग्राम सकल्पो और ग्राम प्रयत्नो के द्वारा होने की सभावना है।

साहित्य निर्माण समिति की रिपोर्ट

(सयोजक- श्री जुगतराम दवे।)

समिति सदस्य सख्या १६

समिति ने नअी तालीम साहित्य निर्माण कार्य के लिअे जो आवश्यक साहित्य की जरूरत है अुस पर विचार किया। क्योंकि नअी तालीम जगत म राष्ट्र में पूर्व बुनियादी और बुनियादी शिक्षा का अधिक और व्यापक प्रचार हुआ है अिसलिअे अुक्त दो प्रकार की शिक्षा का साहित्य निर्माण होना ज्यादा आवश्यक है।

साहित्य मे तीन प्रकार की श्रेणियां रखी जाती हैं।

१ बालकोपयोगी, २ शिक्षकोपयोगी, ३ सामान्योपयोगी।

अुपरोक्त साहित्य श्रेणियों के अन्तर्गत कौन कौन से साहित्य निर्माण करना चाहिअे जिसका समिति ने विचार किया और प्रथम पूर्व बुनियादी विभाग के लिअे निम्न विभाग रखे गये।

१. बालकोपयोगी

अ. बच्चों के काम और खेल के विषय मे।

आ कहानिया नाटक गीतिकायें

अि दैनिक जीवन की सामान्य चर्चाअें

२. शिक्षकोपयोगी

अ. बालकों की शिक्षण और विकास की अलग-अलग पद्धतिया हैं। अुनका परिशीलन करके शिक्षको के लिअे पूर्व बुनियादी शिक्षण और कार्य के सबध में पुस्तकें लिखनी होगी।

आ पूर्व बुनियादी शिक्षा के साधन हो वैसे वैशिष्ट्यपूर्ण हों और अुनका अुपयोग कैसा किया जाय अिसके बारे में पुस्तकें निर्माण की जावे।

३ लोकोपयोगी–साहित्य निर्माण के लिअे साधारण कार्य का विवरण और चित्रण बिना शास्त्रीय शब्दो के लोक भाग्य भाषा में होना चाहिअे।

पूर्व बुनियादी साहित्य के निर्माता कौन हो?

१. बालवाडी के शिक्षक।

२ बालवाडी के प्रशिक्षण विद्यालयों के अध्यापक और प्रशिक्षार्थी।

३ बालवाङ्मय में रस लेनेवाले सिद्ध हस्त साहित्यकार।

बुनियादी तालीम

१ बालकोपयोगी–

अ. बालकोपयोगी साहित्य निर्माण हेतु भिन्न-भिन्न कक्षाओ के लिअे अेव अुनके अनुरूप भिन्न विषयों का समावेश होना चाहिये। जैसे–

(१) सफाअी, (२) आहार, (३) आरोग्य, (४) प्रकृति निरीक्षण,

आ. बुनियादी साहित्य में लोककहानियां लोक नाट्य, गीत, आदि का सग्रह–जो स्वय बच्चो ने निर्माण किये हो।

अि. बुनियादी साहित्य निर्माण मे बालक जो पत्रिकाअें चलाते है या निकालते हैं अुनका भी विशेष स्थान है। अुसमें से भी चुनी हुअी सुन्दर कृतियो का समावेश साहित्य में होना चाहिअे।

अी घरेलू वैज्ञानिक जानकारी का जीवन की वस्तुओं द्वारा और बाहर जो विज्ञान पग पग पर अुपस्थित है, अुसका सूक्ष्म अवलोकन कर अेव अुसकी गहराअियो को खोजबीन कर सरल वर्णन का साहित्य निर्माण होना चाहिअे।

अु दैनिक, सामाजिक प्रश्न और अुनसे सबध रखनेवाली अन्य विभिन्न शैक्षाणिक पारिभाषिक ज्ञान का सकलन और अुनका विषय के अनुसार साहित्य निर्माण करना।

अुक्त साहित्य निर्माण करने के लिअे यह ध्यान रखना आवश्यक होगा कि वे बालको के स्वय प्रेरणा देनेवाला हो और बालक स्वय चाव से अुन्हे पढे।

अिस प्रकार की अुपलब्ध पुस्तको को विभिन्न विषयोवार सग्रहित किया जावे और अुनका पुस्तकालय बनाया जावे ताकि बालक समय-समय पर स्वय ज्ञान प्राप्त कर सकें।

२ शिक्षकोपयोगी–

अिस श्रेणी मे तीन प्रकार के साहित्य की आवश्यकता है।

अ. प्रवृत्तियो के विषय मे-जैसे-खेती, वस्त्र विद्या अुद्योग

१. सामाजिक जीवन, सेवा आदि।

२ आरोग्य सफाअी।

३. सास्कृतिक कार्य–अित्यादि।

आ शिक्षकों के द्वारा तैयार की हुअी-समवाय पाठ तथा नोट्स और रोजनिशियो पर आधारित सब विषयो पर

१ भाषा, साहित्य।

२ गणित।

३ विज्ञान।

४. समाज-शास्त्र।

५ कला।

६ सगीत आदि।

३ शालाओ के सचालन सबधी विषयो का विवरण जैसे,

१ वार्षिक, मासिक, साप्ताहिक योजनायें।

२ काम और अुसके समवाय पाठ की योजना।

३ शाला की जाच का विवरण।

४ बच्चो के परीक्षण का विवरण।

५ चित्र, चार्ट्स द्वारा और साधनो द्वारा कैसा शिक्षण देवे।

६ प्रवास और शैक्षणिक यात्रा सयोजन कैसा हो।

७ शाला प्रदर्शिनी।

८ शाला पुस्तकालय।

९ दोपहर का नाश्ता और सामूहिक रसोअी।

अु नअी तालीम के दृष्टिकोण से मनोवैज्ञानिक साहित्य निर्माण।

अू बुनियादी शाला क लिअ साहित्य कैसा निर्माण करना जिसक बारे में शिक्षको क लिअ मार्गदर्शक पुस्तिका।

अे अक त्रैमासिक या मासिक का सगठन जिसमें प्रत्यक्ष जो काम होता है अुसका पूण विवरण प्रकाशित किया जाय।

लोकोपयोगी साहित्य

अुत्तर बुनियादी शिक्षा के लिअ सचित्र और सुदर ढग से युक्त अव शास्त्रीय परिभाषाओ से रहित अव सुपाठ्य साहित्य निर्माण होना आवश्यक है। साहित्य निर्माण कौन कर सकता है?

१ बालक-बालको के भिन्न विषयो पर समय-समय-पर लिखे हुअे लेखो का सग्रह कर सचित्र किताबें बनाना ताकि वे अन्य बालको के लिअे अपलब्ध रहें। अिनमें से चुनी हुअी पुस्तको का प्रूफ प्रस बडा टाअीप और लीनो ब्लाक का अुपयोग करके १००-२०० पुस्तके निकाल कर क्षेत्रीय साहित्य बन सकता है।

२ बुनियादी शाला के शिक्षक

३ प्रशिक्षण विद्यालय के प्रशिक्षणार्थी और अध्यापक,

४ सिद्धहस्त साहित्यकार जो बुनियादी शिक्षा म रुचि रखते हैं।

'सुझाव'

साहित्य निर्माण के बारे म समिति ने सोचा कि

१ प्रत्येक राज्य म अेक समिति हो जो अिस कार्य का सगठन करे और अुसका परीक्षण करके प्रकाशित करे।

२ विभिन्न राज्यो म जो साहित्य प्रकाशित किया जाता है अुसका परिचय हिन्दुस्तानी तालीमी सघ की नअी तालीम पत्रिका म होना चाहिये ताकि सब अुसका लाभ ले सकें। प्रकाशित साहित्य सघ को भेजना आवश्यक है।

३ लेखको द्वारा लिखी गयी पुस्तको के प्रकाशन में अगर अुन्हें कठिनाअियां हो तो नैशनल अिंस्टीट्यूट आफ बेसिक अज्युकशन या हिन्दुस्तानी तालीमी सघ जैसी सस्थाओ की सहायता ली जाय।

४ बुनियादी शिक्षा के विभिन्न स्थान से प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाओ की सूची बनवाकर नअी तालीम में प्रकाशित की जाय।

५ नेशनल अिन्स्टीट्यूट आफ बेसिक-ने जो पुस्तक सूची बनायी है अुसका वितरण ठीक से हो।

अगले अधिवेशन से विभिन्न राज्यो और सस्थाओ द्वारा प्रकाशित नअी तालीम की और नअी तालीम के अुपयोगी विभिन्न भाषाओ की पुस्तको की प्रदर्शनी लगाओ जावे।

पारिवारिक समाचार।

पण्डितजी का शुभागमन

गत १८ अप्रैल भारत के प्रधान मंत्री प० जवाहरलालजी सेवाग्राम पधारे। पहले वे बापू कुटी गये। घूमकर आश्रम देखा और आश्रमवासियों से बातचीत की। अिसके बाद वे महादेव भाअी भवन के हाल में पहुचे जहां सेवाग्राम के आसपास की २० गांव शालाओं के शिक्षक, बच्चे व गामवासियों के प्रतिनिधि और हिन्दुस्तानी तालीम संघ के कार्यकर्ता गण और विद्यार्थी अुन्हें स्वागत करने के अिकट्ठे हुअे थे। भजन और स्वागत भाषण के बाद बच्चों को अुद्देश करके अुन्होंने दो शब्द कहे। जाते समय अपने हाथों से बच्चों को फूल बाटे। बच्चो ने "चाचा नेहरू की जय, प्यारे राघव की जय" संगीत के साथ अुन्हें विदाअी दी।

राजपुरा नअी तालीम सम्मेलन

तारीख २३ से २७ अप्रैल तक राजपुरा (पजाब) में १३ वें अखिल भारत नअी तालीम का अधिवेशन रहा। पहले दो दिन शिक्षक सम्मेलन रहा। अिस सम्मेलन के चार अधिवेशन हुअे। अिस सम्मेलन की अेक विशेषता यह रही कि पजाब की प्राथमिक और बुनियादी शालाओं के शिक्षक ही अिन चारों अधिवेशनो के अध्यक्ष रहे। शिक्षक सम्मेलन में चर्चा के लिअे नीचे लिखे चार विषय चुने गये थे।

१. नअी तालीम का स्वरूप और ध्येय।

२. नअी तालीम की पद्धति।

३. नअी तालीम में व्यवस्था या सगठन

४. बुनियादी शालाओं के शिक्षकों की समस्याअें और कठिनाअियां।

ता० २३-४-५९ शाम को पजाब के मुख्य मत्री श्री प्रतापसिंह कैरों ने नअी तालीम प्रदर्शनी का अुद्घाटन किया। ता० २५, २६, २७ अप्रैल सम्मेलन का खुला अधिवेशन रहा। सम्मेलन के आखिरी दिन पूज्य विनोबा अपनी पदयात्रा में राजपुरा पहुंचे। सुबह तथा तीसरे प्रहर दो प्रवचन, सभापति का भाषण और सम्मेलन के निर्णय अिस अक में प्रकाशित किये गये हैं। सम्मेलन का पूर्ण विवरण आगामी अक में प्रकाशित किया जायगा।

शुभ विवाह प्रसंग

मअी माह में सेवाग्राम में तालीमी सघ का बहुत छोटा परिवार है। लेकिन अिस छोटे से परिवार में तीन बहुत आनन्द के प्रसग हुअे। ता० ९-५-५९ को तालीमी सघ प्राक्तन छात्रा कु० सुलोचना का मैसूर के श्री भादयम के साथ शुभ विवाह हुआ।

११-५-५९ को तालीमी संघ ग्राम आरोग्य विभाग के कार्यकर्ता श्री मेघनाथ भट्टाचार्य अुर्फ नाना भाअी के साथ जापान की कु० फिलिस ओमतो का शुभ विवाह हुआ। अिस दम्पति ने अपने सम्मिलित जीवन से भारत में ग्राम आरोग्य का काम करने का व्रत लिया है।

ता० १३ को तालीमी सघ के कार्यकर्ता श्री नारायण म्हस्कर के साथ अल्लीपुर गाव की कु० वत्सला वाघमारे का शुभ विवाह हुआ। श्री नारायण भाअी अभी सेवाग्राम सघन क्षेत्र में ग्राम शिक्षक का काम कर रहे हैं।

"नओी तालीम" जून १९५९ : अनुक्रमणिका

विशेष सूचना

जैसे कि "नओी तालीम" के पिछले दो अंकों में सूचित किया गया है, माह जुलाओी १९५९ से नओी तालीम का सालाना चंदा चार रुपये होगा। कागज की महंगाओी से और छपाओी खर्च के बढ़ने से चन्दे में यह वृद्धि करना लाजिमी हो गया है। माह जुलाओी से जो "नओी तालीम" के ग्राहक बनना चाहें अुनसे अनुरोध है कि वे सालाना चंदा चार रुपये भेजने की कृपा करें।

नई तालीम

(हिन्दुस्तानी तालीमी सघ की मासिक पत्रिका)

वर्ष ७] जून १९५९ [अंक १२

ब्रह्मचर्य की शिक्षा

अिस ससार में अुसी को धर्म कहा जा सकता है जो सब विपमताओ के बीच में अेकता स्थापन करता है, सघर्पों के बीच में शान्ति लाता है और सब विच्छेदो में मिलन का सेतु बनता है। धर्म के अन्दर समग्र मनुष्यत्व का समावेश होता है। मनुष्य में छोटा बडा अन्दर बाहर सब कुछ जब समतोल होता है तभी धर्म का पालन होता है। अिससे जब मनुष्य विच्छिन्न होता है तो सत्य से स्खलित होता है। सौन्दर्य से भ्रष्ट होता है। भारत के धर्म का यही सनातन आदर्श है। ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ आदि सब आश्रम धर्म को जीवन में ससार में सर्व प्रकार से सार्थक करने के लिअे सोपान हैं। धर्म ससार के कोअी आशिक प्रयोजन की सिद्धि के लिअे नही है, बल्कि सारा ससार ही कर्म साधना के लिअे है। अिस प्रकार धर्म प्राचीन भारत में गृहस्थजीवन में, गृह धर्म के रूप से, राज्य चालना में राजधर्म के रूप से, भारत के समग्र समाज को अक सार्थकता प्रदान करता था।

अिसीलिअे प्राचीन भारत न शिक्षा की अवधि का नाम ब्रह्मचय रखा था। अुस समय भारत जानता था कि ब्रह्म प्राप्ति के द्वारा मनुष्यत्व प्राप्ति ही शिक्षा है। अिस शिक्षा के बिना न कोअी गृहस्थ बन सकता है और न राज्य चालन कर सकता है। क्योकि भारत का लक्ष्य था ब्रह्म को पाना। राज्य के सब कर्मों के द्वारा, सब आश्रमो के द्वारा ब्रह्म की प्राप्ति हो। अिसलिअ अेक ब्रह्मचर्य के सिवा दूसरी कोअी शिक्षा भारत की साधना के लिअे अनुकूल ही नही थी।

शिक्षा के लिअे आज भी हमें वन की आवश्यकता है और गुरु गृह की भी। वन हमारा सजीव निवास स्थान है, और गुरु है हृदयवान शिक्षक। आज भी बालकबालिकाओ को अिसी प्रकार वन में और गुरु गृह में ब्रह्मचर्य पालन के द्वारा शिक्षा ग्रहण करना होगा। समय के परिवर्तन से हमारी परिस्थितियो में कितन ही क्यो न

परिवर्तन हो लेकिन शिक्षा के अिस चिरतन नियम की अुपयोगिता में कोओी परिवर्तन नही हो सकता है, क्योंकि यह नियम मनुष्य चरित्र के नित्य सत्य के अूपर प्रतिष्ठित है ।

अिसलिओ अगर आदर्श विद्यालय की स्थापना करनी है तो घनी वस्ती से दूर खुले आकाश के नीचे विस्तृत मैदान में और पेडो के बीच में अिसकी व्यवस्था होनी चाहिओ । वहा अध्यापक गण ओकान्त में शान्त वातावरण में अध्ययन और अध्यापन करते रहगे । ज्ञान साधना की अुस यज्ञ भूमि में विद्यार्थी बढेंगे और अनजाने ही ज्ञान प्राप्ति करते रहेगे ।

अगर सम्भव हो तो अिस विद्यालय के साथ खेती के लायक कुछ जमीन रहना भी आवश्यक है । अिसी जमीन से विद्यालय का आवश्यक भोजन अुत्पन्न होगा और विद्यार्थी अिस खती काम में सहायता करेगे । साथ ही ओक गोशाला भी रहेगी विद्यार्थिया के सहयोग से गोपालन का काम चलेगा । अिस प्रकार विद्यार्थियो के साथ प्रकृति का सबध सिर्फ भावना के आधार पर नही कर्म के आधार पर विकसित होता रहेगा ।

अनुकूल ऋतु में वड वडे वृक्षो की छाया में विद्यार्थियो के वर्ग चलेगे । अिन वृक्षो की छाया में शिक्षको के साथ चलते हुओ विद्यार्थी अपनी शिक्षा का ओक अश पूरा करेगे । सध्या के अवकाश के समय विद्यार्थी शिक्षका के साथ ग्रह नक्षत्रो का परिचय प्राप्त करेगे, सगीत का अभ्यास करेग पुराने अितिहास की कहानिया सुनेग ।

बालका की शिक्षा का स्थान ओैसा होना चाहिओ जहा प्रकृति के नियमो के अनुसार विश्व प्रकृति के साथ निकट सवध रखते हुओ ब्रह्मचय का पालन करते हुओ गुरु के सहवास से वे सहज ही ज्ञान लाभ कर सके । मनुष्य वनन की यही स्वाभाविक प्रक्रिया है । बहुत से विषयो को पढान से शिक्षा नही होती है मनुष्य बनने की प्रक्रिया दूसरी है । जहा ओकान्त में तपश्चर्या चलती है, वही हम सीखते है । जहा लोकचक्षु के अतराल में गोपन में त्याग होता है, जहा शिक्षक गण स्वय ज्ञान की चर्चा में प्रवृत्त है वही छात्रो को विद्या का प्रत्यक्ष दर्शन होता है । जहा बाहर विश्व प्रकृति का आविभाव बाधा मुक्त है वही मन भी बाधामुक्त होकर विकसित होता है । जहा ब्रह्मचर्य की साधना, चारित्र्य, स्वस्थ और आत्मवश रहता है, धम की शिक्षा भी वही सरल और स्वाभाविक होती है ।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

आत्मिक शिक्षा

मैंने हृदय की शिक्षा को अर्थात् चरित्र के विकास को सदा प्रथम स्थान दिया है और अुसका परिचय चाहे जिस अुम्र में और जितने प्रचार के वातावरणो में पले हुअे लडके और लडकियो को अल्पाधिक परिमाण में कराया जा सकता है। यह सोच कर मैं लडको और लडकियो के साथ रात-दिन पिता रूप से रहता था। चरित्र को मैंने अुनकी शिक्षा का आधार रूप माना था। बुनियाद मजबूत हो तो और बाते लडके अवकाश मिलने पर दूसरो की सहायता लेकर या अपने आप सीख ले सकते हैं।

विद्यालयो के शरीर और मन के शिक्षण की अपेक्षा अुनकी आत्मा को शिक्षित करने में मुझे बहुत अधिक श्रम पडा। आत्मा का विकास कराने में मैंने धर्म की पोथियो का सहारा कम लिया था। मैं मानता था कि विद्यार्थियो को अपने-अपने धर्म के मूल तत्व जानने चाहिअे और अपनी धर्म पुस्तको का साधारण ज्ञान अुन्हें होना चाहिअे। अुन्हे यह ज्ञान मिल जाय अिसके लिअे मैंने यथा शक्ति सुभीता कर दिया था। पर मैं अुसे बुद्धि के विकास का अग मानता हू। आत्म शिक्षण शिक्षा का अेक स्वतत्र विषय है, यह बात मैंने टालस्टाय आश्रम के बालको की शिक्षा प्रारभ करने के पहले ही समझ ली थी। आत्मा का विकास करने का अर्थ है चरित्र का गठन, अीश्वर का ज्ञान प्राप्त करना, आत्मज्ञान प्राप्त करना, यह ज्ञान प्राप्त करने में बालको को बडी मदद की जरूरत है। और मैं यह मानता था कि अुनके बिना दूसरा ज्ञान व्यर्थ है, और हानिकारक भी हो सकता है।

आत्मिक शिक्षा कैसे दी जाय? बालको से भजन गवाता था, नीति की पुस्तके पढकर सुनाता था। पर अुससे सन्तोष न होता था। ज्यो-ज्यो अुन से सपर्क बढता गया त्यो-त्यो मैंने देखा कि यह ज्ञान पोथियो द्वारा तो नही दिया जा सकता। शरीर की शिक्षा शरीर की कसरत से दी जा सकती है, दी जानी चाहिअे। बुद्धि की बुद्धि की कसरत से। वैसे आत्मा की आत्मा की कसरत से। आत्मा की कसरत शिक्षक के आचरण से ही मिल सकती है। अतः युवको की अुपस्थिति हो या न हो, शिक्षक को सावधान रहना ही चाहिअे। लका में बैठा हुआ शिक्षक अपने आचरण से अपने शिष्यो की आत्मा को हिला सकता है। मैं झूठ बोलता रहूँ और अपने शिष्यो को सच्चा बनाने की कोशिश करूँ तो वह बेकार जायगी। डरपोक शिक्षक शिष्यो को सयम कैसे सिखा सकता है? मैंने देखा कि मुझे अपने साथ रहनेवाले लडके और लडकियो के सामने पदार्थ पाठ रूप होकर रहना चाहिअे। अिससे मेरे शिष्य मेरे शिक्षक बन गये। अपने लिअे नही तो अुनके लिअे मुझे भला होकर रहना चाहिअे, यह मैंने समझा और कहना चाहिअे कि टालस्टाय आश्रम का मेरा अधिकतर सयम अिन युवको और युवतियो का अेहसानमद है।

—गांधीजी

अध्ययन गोष्ठियों के प्रतिवेदन

शिक्षक प्रशिक्षण गोष्ठी का प्रतिवेदन।
(संयोजकः–बबुओ अगम प्रसाद सिन्हा)

शिक्षक–प्रशिक्षण गोष्ठी की दो बैठकें २६-४-५९ के अपराह्न अेवं २७-४-५९ के पूर्वाह्न में हुअीं। दोनो बैठकों में सम्मेलन के प्रतिनिधि तथा स्थानीय शिक्षकों ने काफी सख्या मे भाग लिया। सर्व प्रथम विभिन्न राज्यो से आये हुअे प्रतिनिधियो ने अपनी-अपनी समस्याओं को व्यक्त किया, जिन पर गोष्ठी मे विचार-विमर्श हुआ। गोष्ठी के निष्कर्ष निम्नलिखित प्रकार रहे:–

१. विभिन्न राज्यो में शिक्षक प्रशिक्षण की अनेक सस्थाअें हैं, जिनके स्वरूप तथा शिक्षाक्रम में अेकरूपता नहीं है। विभिन्न राज्यों की अपनी विशेष समस्याअें हैं, फिर भी कोशिश यह होनी चाहिअे कि सभी प्रशिक्षण सस्थाओ में प्रशिक्षण के मूलभूत सिद्धान्तो, और कार्यक्रमो मे अेकरूपता अवश्य आ जाय। अिस सुझाव पर हिन्दुस्तानी तालीमी सघ विचार करे और प्रशिक्षण विद्यालयो के शिक्षाक्रमो मे अेकरूपता लाने के लिअे कदम अुठावे।

२. भारत जैसे कृषि-प्रधान देश के लिअे बच्चो की प्रारंभिक शिक्षा मे कृषि का स्थान प्रमुख है। अिसलिअे शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों मे भी कृषि अुद्योग का प्रधान स्थान रहना चाहिअे। प्रत्येक प्रशिक्षण विद्यालय मे कृषि अुद्योग के अभ्यास के लिअे चालीस छात्र शिक्षकों पर कम-से-कम पाच अेकड भूमि समुचित सिंचाअी की व्यवस्था के साथ रहना आवश्यक है। कृषि के अतिरिक्त अन्य सहायक अुद्योग का भी अुचित स्थान रखना चाहिअे।

३. शिक्षक-प्रशिक्षण विद्यालयो का आवासीय (रेसिडेंसल) होना आवश्यक है। शिक्षक और प्रशिक्षार्थी यदि साथ रहें, तो पाठ्यक्रम का अभ्यास तथा सामुदायिक जीवन के लिअे पर्याप्त समय मिलेगा।

४. सामुदायिक जीवन केवल विद्यालय तक सीमित न हो, बल्कि स्थानीय गांवों को भी अपने समुदाय के भीतर माना जाय। अपेक्षा की जाती है कि दो वर्षों के अिस प्रशिक्षण के बाद शिक्षक प्रारंभिक आठ वर्गों तक के छात्रों को समुचित शिक्षा देने के योग्य हो सकते हैं।

५. प्रशिक्षण महाविद्यालयो में अुद्योगों की शिक्षा समुचित रूप से नही दी जा रही है। अुद्योग में अपेक्षित कुशलता लाने के लिअे प्रतिदिन लगभग ढाअी घटे अभ्यास होना आवश्यक है। यह तभी सभव होगा जब सैद्धान्तिक विषयों में मनोविज्ञान, शिक्षण विधि, शिक्षा-सिद्धान्त अेवं शालीय व्यवस्था ही आवश्यक रखे जायें।

प्रशिक्षण विद्यालयों मे अभ्यासशाला (प्रैक्टिसिंग स्कूल) का रहना अत्यन्त आवश्यक है।

६ निम्न प्रशिक्षण विद्यालयो (ज्यूनियर ट्रैनिंग स्कूलों) में प्रशिक्षार्थियों की भर्ती के प्रश्न पर विचार किया गया। यह निश्चय हुआ कि मैट्रिक स्टैण्डर्ड के या अुसके समकक्ष विद्यार्थी ही भरती किये जाय। यदि पोस्ट बेसिक अुत्तीर्ण छात्र भरती होना चाहे तो अुन्हें प्राथमिकता दी जाये। जिन विशेष स्थानो या परिस्थितियों में अितनी योग्यता के भी शिक्षक न मिल सकें, वहा आठवें ग्रेड अुत्तीर्ण छात्र लिये जा सकते हैं। यहां भी सीनियर बेसिक स्कूल के सफल छात्रों को भर्ती में प्राथमिकता दी जाय। प्रशिक्षण महाविद्यालयों में केवल स्नातक ही भर्ती किये जायें।

७. प्रशिक्षण विद्यालयो में अैसे ही शिक्षक बहाल किये जाये जिन्हें कम-से-कम तीन वर्षों के शिक्षण का अनुभव प्राप्त हो और जिन्हे अुद्योग की भी आवश्यक योग्यता प्राप्त हो।

८. प्रशिक्षण विद्यालयों में समीक्षा (अेसेसमेंट) और मूल्यांकन (अिवाल्युअेशन) के प्रश्न पर विचार किया गया। गोष्ठी का विचार है कि समीक्षा और

मूल्यांकन को शिक्षक-प्रशिक्षण विद्यालयों में अनिवार्य रूप से रखा जाय। यह निर्णय हुआ कि समीक्षा और परीक्षा की मान्यता प्रशिक्षण विद्यालयों में अभी पचास-पचास प्रतिशत रहे। जिसका स्थान प्रशिक्षण विद्यालय के सभी क्रियाकलापों में रहे जैसे कि सभी पाठ्य-विषय, अुद्योग, सामुदायिक जीवन तथा व्यावहारिक शिक्षण। समुचित ढंग से मूल्यांकन होने के लिये स्थानीय तथा विभागीय आवश्यकताओं का ध्यान में रखते हुअे प्रत्येक विद्यालय के लिये जांच समिति की नियुक्ति आवश्यक है।

९. विभिन्न राज्यों में प्रशिक्षण महाविद्यालय चलाये जा रहे हैं। जिनमें कुछ अैसे महाविद्यालय हैं जिन्हें विश्वविद्यालयों से अभी तक मान्यता नहीं मिली है। शिक्षा विभाग अैसी कोशिश करे जिससे अिन महाविद्यालयों को विश्वविद्यालयों की स्वीकृति शीघ्र प्राप्त हो जाय।

१०. कुछ राज्यों में हाअीस्कूलों के साथ प्रशिक्षण वर्ग जुटे रहते हैं। विशेषतः अैसी बात महिला विद्यालयों में देखी जाती है। प्रशिक्षण विद्यालयों की अपनी विशेष आवश्यकताअें हैं। अिनका वातावरण भी भिन्न होना चाहिअे। यथासम्भव हाअीस्कूलों के साथ प्रशिक्षण विद्यालय न रखे जायें।

बुनियादी शिक्षा में शोध–कार्य
(संयोजक–श्री प्रभातचन्द्र शर्मा)

सुझाव

१–मण्डली द्वारा विचार विमर्श के पश्चात् बुनियादी शिक्षा में अनुसंधान के निम्न अुद्देश्य निर्धारित किये गये :–

(क) जनता के मन में बुनियादी शिक्षा संबंधी सिद्धान्त तथा अभ्यास के प्रति भ्रम निवारण करना,

(ख) बुनियादी शिक्षा को कार्यान्वित करने में व्यावहारिक कठिनाअियों का समाधान करना

(ग) बुनियादी शिक्षण-पद्धति तथा शिक्षण विधियों में सुधार करना,

२–बुनियादि शिक्षा में अनुसंधान का कार्य अिस समय बुनियादी शिक्षा के राष्ट्रीय संस्थान (भारत सरकार नयी दिल्ली, नेशनल अिन्स्टीट्यूट ऑफ बेसिक अेजूकेशन), कुछ विश्वविद्यालयों, स्नातकोत्तर बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय तथा अन्य सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं में अनुसंधान का कार्य करने के लिअे अुपस्थित साधन पर्याप्त नहीं हैं। अतः अिस मण्डली का यह सुझाव है कि प्रत्येक राज्य सरकार कम से कम अपने अेक स्नातकोत्तर बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय को अेक अुत्तम अनुसंधान संस्थान बनायें। मण्डली का मत है बहुत से प्रशिक्षण विद्यालयों में अब तक भी अभ्यास शालाओं की सुविधा प्रप्राप्त नहीं है। यदि व्यावहारिक समस्याओं के संबंध में अनुसंधान करना हो तो अिस कमी को तुरन्त दूर करना चाहिअे।

३–मण्डली का यह मत है कि बुनियादी प्रशिक्षण आचार्यों की अेक सलाहकार समिति बनायी जाये। यह समिति राज्य के अनुसंधान संस्थान के साथ कार्यक्रम में सलाह देगी तथा भिन्न भिन्न अनुसंधानों की प्राथमिकता को निश्चित करेगी।

४– बुनियादी शिक्षा सम्बन्धी शोध की समस्याओं पर विस्तार पूर्वक विचार विनिमय के पश्चात् मण्डली का यह मत है कि आरम्भ में शोध कार्य का व्यावहारिक समस्याओं तक सीमित रखना चाहिअे।

(१) बुनियादी शिक्षा की प्रगति में बाधक समस्यायें,

(२) पाठ्यक्रम के निर्माण संबन्धी समस्याअें,

(३) बुनियादी शिक्षाविधियों में सुधार,

(४) अध्यापकों का चुनाव तथा अध्यापक प्रशिक्षण में सुधार,

(५) बुनियादी शालाओं पर प्राकृतिक तथा सामाजिक वातावरण का प्रभाव,

(६) बुनियादी शिक्षा का स्थानीय समाज पर प्रभाव,

(७) बुनियादी शिक्षा में अुद्योग के अुत्पादक तथा शैक्षणिक पक्ष,

(८) बुनियादी शिक्षण की समीक्षा तथा मूल्यांकन

पूर्व-बुनियादी शिक्षा
(संयोजिका-श्रीमती शांता नारूलकर)

चूकि नओ तालीम पूर्व-बुनियादी से प्रौढ शिक्षा तक की सतत प्रक्रिया है, अिसलिअे पूर्व-बुनियादी शिक्षा की ओर अुतना ही ध्यान दिया जाना चाहिअे जितना कि किसी बुनियादी या अुत्तर बुनियादी शिक्षा क्रम को दिया जाता है।

जिस प्रकार पूर्व-बुनियादी शिक्षा और किण्डरगार्टन, मोण्टीसोरी चालू पूर्व-प्राथमिक शिक्षा विधियों के साधन मे फर्क है अुसी प्रकार अुनके मूल अुद्देश्य मे भी भेद है। अिन बातो को दृष्टि में रखते हुअे यह मण्डली निम्न सुझाव पेश करती है।

[१] पूर्व बुनियादी शिक्षा के महत्व को ध्यान म रखते हुअे अधिक से अधिक प्रशिक्षण केन्द्र शुरू किये जाने चाहिअे।

[२] पूर्व-बुनियादी प्रशिक्षण की अवधि अुन लोगों के लिअे जो चालू नर्सरी की विधियों में ट्रैण्ड हैं, कम से कम ६ मास की होनी चाहिअे।

[३] जहा पर पूर्व बुनियादी प्रशिक्षण का काम चल रहा है वहा पर प्रशिक्षण की अवधि २ वर्षों की हो। लेकिन नओ आरम्भ होने वाली सस्थाओ म यह अवधि अेक वर्ष की हो सकती है। किन्तु अुसके बाद गाव के पूर्व बुनियादी स्कूल मे अेक वर्ष का प्रत्यक्ष कार्य का अनुभव आवश्यक है।

[४] जहा तक सभव हो पूर्व-बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र गाव मे ही स्थित हो।

[५] पूर्व-बुनियादी प्रशिक्षण मे चुनाव और प्रवेश मे महिला अध्यापिकाओ को प्राथमिकता दी जावे।

[६] चुनाव की न्यूनतम योग्यता अुत्तर बुनियादी अथवा हाओ स्कूल हो। अगर अिस योग्यता के व्यक्ति मिलने मे कठिनाओ हो तो-सीनियर बेसिक परीक्षा मे अुत्तीर्ण व्यक्तियों को लिया जावे।

[७] पूर्व-बुनियादी के शिक्षा के साधनों का चुनाव करते समय स्थानीय आवश्यकताओ और परिस्थितियो को ध्यान मे रखा जावे।

[८] मुफ्त दूध अेव दोपहर का भोजन बच्चो को दिया जाना पूर्व-बुनियादी पाठ्यक्रम का आवश्यक अग हो।

[९] प्रत्येक राज्य सरकार कम से कम पूर्व-बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र अनिवार्य रूप से चलावे। यह केन्द्र अलग से चलाये जायें अथवा किसी चालू प्रशिक्षण सस्थाओ के साथ जहा तक सभव हो महिला सस्थाओ के साथ।

[१०] सरकार अुन सार्वजनिक सस्थाओ को जो पूर्व बुनियादी शिक्षा का काम कर रही है अनुदान दे कर प्रोत्साहन करे। यह चर्चा मण्डली जनता से भी अनुरोध करती है कि वह भी अिस काम मे रुचि ले तथा अिन सस्थाओ के साथ पूर्ण सहयोग करे।

[११] पूर्व बुनियादी शिक्षा के सबध म शोध की बडी आवश्यकता है। अिसलिअे भारत सरकार अिस काम को भी अपने हाथ मे ले।

(अध्ययन मंडली में "शिक्षा तथा शांति" पर हुओ चर्चा का प्रतिवेदन अगले अंक मे प्रस्तुत किया जायगा।)

आंध्र प्रदेश में बुनियादी शिक्षा की प्रगति
(१९५८–५९)

सामान्य परिचय

अिस अेक साल की अवधि में आध्र देश में बुनियादी शिक्षा के सभी पहलुओ में काफी प्रगति हुअी। साल के प्रारभ में बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय, बुनियादी विद्यालय तथा पूर्व बुनियादी विद्यालयो की सख्या क्रमश ३४, १८६९ और ५ थी। साल के अत में अुनकी सख्या क्रमश ४५, २३२१ और ९ हुअी। अिस साल में तेलगाना के सभी प्राथमिक स्कूलो में बुनियादी शिक्षा का ढाचा शुरू करने का आदेश सरकार ने दिया। बुनियादी शिक्षा पर सलाह देने के लिअे अेक सलाहकार मडल का भी निर्माण हुआ।

पूर्व बुनियादी शिक्षा

पूर्व बुनियादी शाला के शिक्षको को प्रशिक्षण देने के लिअे पेंटपाडु में अेक प्रशिक्षण विद्यालय चलाया जा रहा है। अिस के प्रशिक्षण सत्र का प्राठ्यक्रम भी पूरे तौर से तैयार किया गया है। अिस साल में चार नये पूर्व-बुनियादी विद्यालय खोले गये हैं।

जूनियर और सीनियर बुनियादी शालाअें

अिस साल नये ८४ बुनियादी विद्यालय खोले गये और ३६२ प्राथमिक विद्यालयों को बुनियादी विद्यालयो के रूप में बदल दिया गया।

प्रशिक्षण विद्यालय

तेलगाना प्रदेश में पाँच नये बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय खोले गये। पाच शासकीय प्रशिक्षण विद्यालयो को बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालयो में रूपान्तरित किया गया। महिला शिक्षा योजना के अन्तर्गत तीन नये बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय खोले गये जिनमें गरीब औरतो को प्रवेश देकर शिक्षक प्रशिक्षण और सामान्य शिक्षण की शिक्षा दी गयी। आर्थिक सहायता पानेवाले अेक और प्रशिक्षण विद्यालय का भी प्रारभ हुआ। आंध्र प्रदेश में प्रशिक्षण की अवधि दो साल रखी गयी है। प्रशिक्षित शिक्षको की कमी के कारण तेलगाना प्रदेश में प्रशिक्षण की अवधि अेक साल ही रखी है। भविष्य में वहाँ भी वह अवधि दो साल की रहेगी।

स्नातकोत्तर बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय

पेंटपाडु में अेक स्नातकोत्तर बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय है। प्रशिक्षित स्नातक शिक्षको की दो टोलियो को अिसमें पुन प्रशिक्षण दिया जाता है। अिसकी अवधि तीन माह की है। अलावा अिसके यह विद्यालय आध्र और वेकटेश्वर विश्वविद्यालयों के नियत्रण में चलने वाले शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयो के बी औडि विद्यार्थियो को अेक माह का सामुदायिक प्रशिक्षण भी देता है।

प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का पुनर्प्रशिक्षण

आध्र प्रदेश के प्राथमिक स्कूलो में काम करने वाले मौजूदा अध्यापको को पुन प्रशिक्षण देने की पूरी सुविधा है। तीन या अुससे अधिक विभागवाले हर किसी प्रशिक्षण विद्यालय का अेक विभाग पुन प्रशिक्षण के लिअे ही निर्धारित है। टोली के बाद टोली अिस विभाग में पुन प्रशिक्षण पाती है।

(शेषाश पृष्ठ ३५५ पर)

आसाम राज्य में बुनियादी शिक्षा

सक्षिप्त विवरण

सभी प्राथमिक शालाओ को बुनियादी शालाओ में परिवर्तित करने की नीति सरकार ने अपनायी है। सभी शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय बुनियादी प्रशिक्षण सस्थाओ में रूपातरित किये गये हैं। राज्य में कुल २१ प्रशिक्षण विद्यालय हैं जिनमें अेक स्नातकोत्तर प्रशिक्षणार्थियो के लिअे है। अुपर्युक्त २१ प्रशिक्षण विद्यालयो में १२ विद्यालय आसाम राज्य बुनियादी शिक्षा मडल के अतर्गत है और शेष विद्यालयो का सचालन राज्य सरकार करती है। नौ शासकीय प्रशिक्षण विद्यालयो में तीन पहाडी जिलाको में हैं जिनमें दो केवल विद्यार्थिनियो के लिअे हैं। अिस साल अक और प्रशिक्षण विद्यालय खोला जा रहा है। काम प्रगति के पथ पर है।

२१ प्रशिक्षण विद्यालयो में कुल १४०० शिक्षको को प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षित शिक्षको की माग की पूर्ति के लिअे आज के मौजूदा सुभीते अपर्याप्त हैं। राज्य भर म कुल शिक्षक २२८३३ हैं। अुनम से सिर्फ ७९९२ प्रशिक्षित शिक्षक हैं। शिक्षको की अेक बडी सख्या की कनिष्ठतम योग्यता माध्यमिक अुत्तीर्णता ही है अतअेव बुनियादी शिक्षा के सभी पहलुओ की जानकारी देने के लिअे अेक साल का प्रशिक्षण अुन्हे काफी नहीं होगा। सभी प्रशिक्षण विद्यालय सामाजिक जीवन पर आधारित तथा आवासिक हैं।

बुनाओी तथा बागवानी अिन प्रशिक्षण विद्यालयो के मुख्य अुद्योग हैं। बेंत और बास के काम, रेशम के अुद्योग, मधुमक्खी पालन, गत्ते का काम आदि पूरक अुद्योगो के रूप में शामिल किये गये हैं।

अिन प्रशिक्षण विद्यालयो के अलावा बुनियादी शिक्षा योजना के अतर्गत अेक जनता कालेज, पाच सामुदायिक केन्द्र तथा अेक वडा पुस्तकालय भी चलाये जा रहे हैं।

राज्य सरकार ने तय किया है कि राज्य की सभी प्राथमिक शालाओ को क्रमश बुनियादी शालाओ में बदल दिया जाय। अिसके लिअे सन् १ ५४ में राज्य की विधान सभा ने प्राअिमरी शिक्षा कानून (१९४७) को हटाकर अेक बुनियादी शिक्षा कानून पास किया है।

राज्य में सघन क्षेत्रो के आधार पर बुनियादी शिक्षा का प्रारभ हुआ है। लेकिन बुनियादी शिक्षा कानून के प्रारभ से प्रशिक्षित शिक्षको की प्राप्ति के अनुसार राज्यस्तर में स्कूलो का रूपातर बुनियादी शिक्षा के ढाचे में हो रहा है। चूकि प्रशिक्षण विद्यालयो से प्रशिक्षित होकर निकलनेवाले शिक्षको की सख्या अधिक नही है रूपातर की क्रिया धीमी है।

गत साल केन्द्र सरकार की महिला शिक्षा योजना तथा सुशिक्षितो की बेकारी के निवारण की योजना का राज्य में अमल में लाया गया है। पहली योजना के अतर्गत आवासिक मकानो के सहित २०० शालायें तथा दूसरी योजना के अतर्गत शाला रहित गावो में २६२ शालायें स्थापित की गयी हैं। आचार्य तथा शिक्षको की अध्ययन गोष्ठी का आयोजन हुआ है।

सम्प्रत राज्य की १४,१८६ प्राथमिक स्कूलो में १६०० शालाये बुनियादी हैं। फिलहाल प्राप्य सुविधाओ के अनुसार अन्य शालाओ को बुनियादी शालाओ में बदलना अेक वडा

भारी काम है। ६ से ११ साल की अुम्र के लडको में ६० प्रतिशत लडके स्कूलो में आते है। शेष लडको को भी शिक्षण की सुविधा देनी हो तो ३००० नये स्कूल खोलने पडेंगे, और १७ हजार शिक्षको की जरूरत पडेगी।

बुनियादी शिक्षा का प्रचार करनेवाली अशासकीय सस्थाओ को सरकार के द्वारा अुदार आर्थिक सहायता मिली है।

स्वावलबन के सबध में भी दो शब्द। यद्यपि शालाओ में मूल अुद्योगो का प्रवेश हुआ है। फिर भी चूंकि अुत्पादन की तादाद बहुत ही कम है स्वावलबन के प्रतिशत की गणना नही की जा सकती। अिन परिवर्तित अधिक सख्यक स्कूलो में जमीन के टुकडे मात्र ही अुपलब्ध है। अतअेव अुनमें छोटे बच्चो को अपने हाथो के अुपयोग की शिक्षा मात्र दी जा सकती है, गणना की मात्रा में अुत्पादन की गुजाअिश कम है। सचमुच बुनियादी शिक्षाक्रम ने शालाओ की स्थिति सुधारी है और विद्यार्थियो का गुण-विकास किया है।

(पृष्ठ ३५३ का शेषाश)

प्राथमिक स्कूलों को बुनियादी शिक्षा के ढाचे में बदलना।

१९५५ में आध्र सरकार ने अेक निर्णय लिया कि चूकि सभी प्राथमिक स्कूलो को बुनियादी स्कूलो के रूप में बदलने में काफी समय लगेगा अिसलिअे बुनियादो शिक्षा के खास पहलुओ को प्राथमिक स्कूलों में प्रारभ किया जाय। जून १९५८ में अेक अुपनिर्देशक तथा पाच जिला विद्याधिकारी गाधी ग्राम की अध्ययन-गोष्ठी में भेजे गये। आवश्यक पहलू व प्रवृत्तियों को प्रारभ करने के द्वारा बुनियादी ढाचे में परिवर्तित होने का आदेश सरकार ने *तेलगाना क्षेत्र के सभी प्राथमिक शालाओ* को दिया। अिस अुद्देश्य की सिद्धि के लिअे दो *अध्ययन गोष्ठियो का आयोजन हुआ पहला* हैदराबाद में और दूसरा काकीनाडा में। *अिनका आयोजन जिला विद्याधिकारियो के* प्रयोजनार्थ हुआ जिन्होंने अिससे लाभ अुठाकर *बारी बारी से विभिन्न जिलो के अुप शाला* निरोक्षक तथा प्राथमिक शाला शिक्षको के *लाभार्थ अध्ययन गोष्ठियो का आयोजन किया।*

अुत्तर बुनियादी शिक्षा

राज्य में राज्य सरकार के नियत्रण में पेंटपाडु में अकमात्र अुत्तर बुनियादी विद्यालय है।

उडीसा राज्य में बुनियादी शिक्षा

(१९५७-५९)

अुपक्रम

पिछले बारह सालो से अुडीसा राज्य में बुनियादी शिक्षा योजना का कार्यान्वियन हो रहा है। अुनतीस सदस्यो को लेकर शिक्षामंत्री के सभापतित्व में बुनियादी-शिक्षा मडल का पुनर्संगठन हुआ है। अिस मडल के ध्येय है –

१. बुनियादी शिक्षा के सबंध में सरकार को सलाह देना।

२. सभी प्राथमिक विद्यालयो को बुनियादी शालाओ में रूपातरित करने के लिअे बुनियादी रीति से प्राथमिक शालाओ का सगठन करना।

३. शिक्षाक्रम तय करने में माध्यमिक शिक्षा मडल की मदद करना और छठे और सातवे दर्जे का पाठ्यक्रम निर्धारित करना।

४. मडल के आर्थिक कामो के लिअे बजट (अदाज-पत्रक) तैयार कर सरकार के सामन पेश करना।

शिक्षा नीति

राज्य ने प्राथमिक स्तर में बुनियादी शिक्षा को पूरा पूरा मान लिया है। रामचन्द्रन कमिटी के नीचे लिखे मुद्दो पर विचार करने के लिअे शिक्षा विभाग के निर्देशक के सभापतित्व में बुनियादी शिक्षा मडल के द्वारा अेक कमिटी का निर्माण हुआ और अुसकी बैठक ९ जून १९५९ को बुलायी गयी।

(क) सभी प्राथमिक शालाओ को बुनियादी विद्यालयो में रूपातरित करना।

(ख) पशिक्षित प्राथमिक शिक्षको को दुबारा प्रशिक्षण देना।

(ग) सचालको और निरीक्षको को प्रशिक्षण देना।

(घ) प्रचलित प्रशिक्षण विद्यालयो को बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालयो में परिवर्तित करना।

(च) नये बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय खोलना।

अुपरोक्त कमिटी ने रामचन्द्रन कमिटी के जिन जिन प्रस्तावो की सिफारिश की है, अुन सबसे शिक्षा मडल सहमत है।

१ धन तथा बुनियादी शिक्षको की कमी के कारण राज्य के सभी प्राथमिक विद्यालयो को बुनियादी विद्यालयो में रूपातरित करके हिंदुस्तानी तालीमी सघ का पाठ्यक्रम चलाना सभव नहीं है।

२ राज्य में रहनेवाले नौ हजार प्रशिक्षित शिक्षको को पुनः प्रशिक्षण देने के बजाय राज्य के मौजदा १६ हजार अप्रशिक्षित शिक्षको को प्रशिक्षण देना ही वाजिब है।

३. चूंकि वही अुद्देश्य सामने रखकर हमारे प्राथमिक विद्यालयो में बुनियादी नीतियो का प्रचलन हुआ है अतअेव यह जरूरी नहीं है कि हिन्दुस्तानी तालीमी सघ का पाठ्यक्रम प्रवेश करके अुनका बुनियादी शालाओ में रूपातरित किया जाय। यह देखा गया है कि राज्य के प्रशिक्षण विद्यालयों में सफाअी, प्रार्थना, सामाजिक जीवन आदि सामान्य बातो में प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है बल्कि आवश्यकता अिस बात की है कि छात्राध्यापको को सामान्य यत्रादि की मरम्मत, लोहारी का

काम आदि वास्तविक धधो की जानकारी दी जाय।

बुनियादी शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा के साथ सयोग करने से अुच्च बुनियादी विद्यालयो के छात्रो के हाओीस्कूल में और माध्यमिक शाला के छात्रो के अुच्च बुनियादी विद्यालयों में दाखिल होने में कोओ दिक्कत नही थी। अुत्तर बुनियादी विद्यालयो की गिनती बहु अुद्देशीय माध्यमिक शालाओ के रूप में हुओ है और अुडीसा माध्यमिक शिक्षा-मडल अुत्तर बुनियादी विद्यालयो के लिअे अेक पाठ्यक्रम तैयार कर रही है। सरकार ने बुनियादी शिक्षा मडल के निम्न लिखित प्रस्तावो का समर्थन किया है–

१ अप्रैल १९५९ से सभी निम्न बुनियादी विद्यालयो में प्राथमिक शालाओ के सशोधित पाठ्यक्रम का प्रयोग बुनियादी नीतियो के साथ करने के विषय पर विचार हुआ। यह निर्णय किया गया कि प्रचलित तथा सशोधित प्राथमिक पाठ्यक्रम के साथ बुनियादी नीतियो का समावेश होकर अुसका नाम सशोधित पाठयक्रम रहेगा और यह १ अप्रैल १९५९ से सभी प्राथमिक और बुनियादी विद्यालयो में अमल में लाया जायगा। अिसके बाद बबअी राज्य की बुनियादी शालाओं की तरह अुद्योग तथा सामाजिक जीवन पर भी जोर दिया जायगा।

२ सभी प्राथमिक विद्यालयो का नाम बुनियादी विद्यालयों में बदलने का सवाल अुठा था। यह निश्चय किया गया कि सभी प्राथमिक विद्यालयो का नाम बुनियादी विद्यालयो में परिवर्तित करने का अनुरोध सरकार से किया जाय तथा अुडीसा शिक्षा मडल के विधि-विधानो में तदनुसार परिवर्तन भी किये जायँ।

सरकार ने यह भी निर्णय किया था कि प्रचलित बुनियादी विद्यालयो का पूर्व-बुनियादी विभाग १ अप्रैल १९५९ से हटा दिया जायगा।

बुनियादी शिक्षा मडल ने निम्न लिखित प्रस्ताव मजूर किये जो कि सरकार की स्वीकृति मिलने पर कार्यान्वित किये जायगे।

१ यह निर्णय किया गया कि बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय के छात्राध्यापको को अग्रेजी की अध्यापन प्रणालियाँ सिखायी जायँ ताकि वे छठी और सातवी श्रेणी में अग्रेजी पढाने के समर्थ हो।

२ प्रचलित होनेवाले अुच्च प्राथमिक विद्यालयो को निम्न पूर्ण बुनियादी शाला का नाम देकर अुनमें बुनियादी प्रशिक्षण प्राप्त मेट्रिक शिक्षको को प्रधानाध्यापक नियुक्त करने के विषय पर भी चर्चा हुओ।

३. अुच्च बुनियादी विद्यालय और बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्रो में साअिकल, स्टोव, पेट्रोमाक्स, लाअिट आदि की मरम्मत के काम अुद्योग के रूप में ग्रहण करने के सबध में भी विचार किया गया। खयाल किया गया कि माध्यमिक अिगलिश विद्यालयो में प्रचलित ये अुद्योग अुच्च बुनियादी विद्यालयो में भी कारगर हो सकेंगे। यह निर्णय किया गया कि बुनियादी शिक्षा सस्थाओ में हारमोनियम मरम्मत, किताब बधाओ, सिलाओ, बिजली तार का काम आदि पर प्रयोग किया जायगा।

४ माध्यमिक अिंग्लिश विद्यालय में आठवे दर्जे को सम्मिलित करने तथा अुच्च बुनियादी

विद्यालयो तथा माध्यमिक अिंग्लिश विद्यालयो में अेक सामान्य शिक्षाक्रम को चलाने की बात पर चर्चा विचार हुआ था। मंडल ने निश्चय किया कि आठवें दर्जे को माध्यमिक अिंग्लिश विद्यालयो में सम्मिलित किया जाय और अेक सामान्य पाठ्यक्रम भी तैयार किया जाय।

प्रशिक्षण संस्थाअें

आंगुल का स्नातकोत्तर बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय जो सन् १९५५ में खोला गया था—अुत्कल विश्वविद्यालय से सबद्ध है। अुस विद्यालय का काम भी सन्तोष जनक है। अिसमें हर साल ४८ शिक्षकों को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है और अुनमें से आठ स्त्रिया होती हैं। अिस विद्यालय में अेक प्रयोग शाला, बुनाअी विभाग, सरजाम, कृषिक्षेत्र तथा पुस्तकालय है। प्रशिक्षण की अवधि पूरे अेक साल की है। मअी और जून माह में प्रशिक्षार्थी गावों के सर्वे तथा ग्राम निर्माण का काम ही करते हैं।

राज्य के छ जिलो में सरकार द्वारा सचालित सर्वांग पूर्ण छ बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र हैं। अुनका शिक्षाकाल दो वर्ष का है। अुसमें मैट्रिक्युलेट, अडरग्रेज्युवेट तथा अुसके समकक्ष योग्यता के शिक्षका को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है।

बुनियादी शालायें

नीचे लिखे तीन विभागों से राज्य में बुनियादी विद्यालय खोले गये हैं।

१ अुडीसा बुनियादी शिक्षा मडल।

२ गैर सरकारी शिक्षा सस्थायें।

३ सामुदायिक योजना व्यवस्था।

राज्य में दो अुत्तर बुनियादी विद्यालय हैं। अुनमें से अेक सरकार से सहायता प्राप्त विद्यालय है और दूसरा खानगी सस्था से सचालित है। आशा की जाती है कि वे ग्राम-विश्व विद्यालय तक कदम बढा सकेंगे। राज्य में कुल २३ अुच्च बुनियादी विद्यालय हैं। अुनमें से तीन गैर सरकारी सस्थाओं से सचालित हैं। अुनमें दो को सरकार की आर्थिक मदद मिलती है।

राज्यभर में कुल ३६० निम्न बुनियादी शालायें हैं। अुनमें दो आदर्श बुनियादी विद्यालय कटक और बरहामपुर शहर के अचल में खोले गये हैं जिनका सचालन अुन शहरो की नगर सभायें करती हैं।

३१ मार्च १९५९ में विभिन्न बुनियादी विद्यालयें में पढनेवाले विद्यार्थियो की सख्या नीचे लिखे अनुसार रही।

	लडके	लडकियाँ	कुल
अ २ अुत्तर बु० विद्यालय	८८	३	९१
आ २३ अुच्च ,, ,,	२९३०	६८५	३६१५
अि ३६० निम्न ,, ,,	१७५१८	६१४९	२३६६७

पाठ्यक्रम

बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्रो में शिक्षको के प्रशिक्षण के लिअे हिन्दुस्तानी तालीमी सघ द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम सामान्य परिवर्तनो के साथ अुपयोग किया जा रहा है। हिन्दुस्तानी तालीमी सघ द्वारा निर्धारित आठ सालो का सपूर्ण पाठ्यक्रम ही सभी बुनियादी शालाओ में अिस्तेमाल किया जा रहा है। प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रमो में समानता लाने के वास्ते अगले साल से प्राथमिक विद्यालयो में सरकार द्वारा स्वीकृत मौलिक नितियो के साथ परिवर्तित पाठ्यक्रम ही अमल में लाया जायगा। आगामी सालो में बबअी राज्य के बुनियादी

स्कूलों की तरह अिस राज्य के बुनियादी स्कूलों में भी अुद्योग तथा सामाजिक जीवन पर अधिक जोर दिया जायगा।

समीक्षा

पांचवे तथा आठवे दर्जे के आखिर में बुनियादी शिक्षा के ध्येय और कार्य को दृष्टि में रखकर-विद्यार्थियों का सैद्धांतिक ज्ञान तथा व्यावहारिक औद्योगिक योग्यता जानने के हेतु अुनकी समीक्षा की जाती है। अिस पद्धति ने लोगों के मन में बुनियादी शिक्षा के प्रति अच्छा खासा विश्वास पैदा कर दिया है। वह पद्धति शिक्षा के बाद विद्यार्थियों को सामाजिक योग्यता प्रदान करती है और अच्छे नागरिक बनाती है। साथ ही शिक्षा समाप्त करने के बाद जीवन के अच्छे आधार का निर्माण विद्यार्थियों में करती है। बुनियादी विद्यालय से अुत्तीर्ण होकर निकले छात्रों को अुसी स्तर के दूसरे माध्यमिक तथा प्राथमिक विद्यालयों से निकले छात्रों के समकक्ष जाहिर किया गया है।

पुनर्संगठन तथा विकास-योजना

पुनर्संगठन तथा बुनियादी और सामान्य शिक्षा के सचालन में समता लाने की सरकार से मान्य योजना को बुनियादी तथा सामान्य शिक्षा के लिअे तीन अुपनिर्देशकों की नियुक्ति के द्वारा कार्यान्वित किया गया है। मौजूदा धारा निरीक्षकों को बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय तथा बुनियादी विद्यालयों का निरीक्षण करने का अधिकार दिया गया है। राज्य के बुनियादी शिक्षा सगठक अिन सस्थाओं के अधिकारी होंगे और वे अुनके मत्री का हैसियत से कार्यभार वहन करेंगे।

गत साल नवबर दिसबर में बुनियादी तथा प्राथमिक शिक्षा के अुपनिर्देशक बुनियादी शिक्षा की व्यवस्था के सबध में अल्पकालीन प्रशिक्षण लेने के लिअे राष्ट्रीय बुनियादी शिक्षा सस्था (National Institute of Basic Education) द्वारा दिल्ली में आयोजित अेक प्रशिक्षण सत्र में राज्य द्वारा भेजे गये थे।

बुनियादी विद्यालयों की अुत्पादित आयों से विद्यार्थियों को दुपहर का भोजन दिया जाता है। साथ साथ दूध भी बांटा जाता है।

प्राथमिक विद्यालयों को बुनियादी शिक्षा के ढांचे में बदलना

अुडीसा शिक्षा विभाग के निर्देशक के सचालन में जून १९५९ में आसाम, बिहार, अुडीसा, प बगाल मणिपुर, और त्रिपुरा प्रांतों के प्रतिनिधियों की अुपस्थिति में पूर्व प्रादेशिक अध्ययन गोष्ठी का आयोजन हुआ। अुसके निर्णय प्रयोजनकारी तथा महत्वपूर्ण हैं। अिस गोष्ठी की सिफारिशों को अगले दो वर्षों में कार्यान्वित करने का प्रस्ताव रखा गया है और अुससे सबधित अेक योजना भी, आवश्यक निधि की पूर्ति के लिअे केन्द्रीय सरकार के सामने पेश किया गया है।

दूसरे विभागों के साथ सबध

बुनियादी शिक्षा विभाग ने सामुदायिक विकास योजना, खादी तथा ग्रामोद्योग मडल और कृषि विभाग के साथ निकट का सपर्क रखा है। अुन विभागों ने भी राज्य में बुनियादी तालीम की तरक्की के लिअे भरसक मदद दी है।

अुपसहार

बुनियादी शिक्षा ने राज्य में जनप्रियता प्राप्त की है। नये बुनियादी स्कूलों को खोलने तथा

(शेषांश पृष्ठ ३६० पर)

उत्तर प्रदेश में बुनियादी शिक्षा की प्रगति

बुनियादी शिक्षा की अुपयुक्तता, अुपयोगिता और अुसके आधारभूत सिद्धान्तों की मनोवैज्ञानिकता को देखते हुअे, अुत्तर प्रदेश क शासन ने जब सन् १९३८ में बेसिक शिक्षा-पद्धति को प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा के लिअे स्वीकार किया, तो यह भी निश्चय किया गया कि कुछ सघन क्षेत्रो में प्रगाढ प्रयोग करने की अपेक्षा असे प्रारम्भिक शिक्षा के समस्त क्षेत्र में लागू किया जाय और प्रदेश क सभी प्रारम्भिक विद्यालयो को, क्रमश परन्तु यथा-सम्भव शीघ्र ही, बुनियादी विद्यालयो में परिवर्तित कर दिया जाय। बुनियादी तालीम के क्षेत्र में, भारत वर्ष के किसी भी दूसरे प्रदेश द्वारा अुठाये गये कदमो में, सम्भवत यह सबसे साहसपूर्ण कदम था और अिस नीति ने हम अेक साथ ही दो समानान्तर शिक्षण विधियो के चलने की अुलझन से बचा लिया था।

जूनियर बसिक स्कूल

योजना को कार्यरूप में परिणत करन के लिअ यह आवश्यक था कि वर्तमान प्रारम्भिक विद्यालयो को बुनियादी स्कूलो में बदलन के लिअे अुपयुक्त शिक्षको का प्रबन्ध किया जाय और दीक्षित निरीक्षको का अेक अैसा समूह तैयार किया जाय जिनसे बुनियादी विद्यालयो के अध्यापक पथ-प्रदर्शन पा सकें।

अत शासन ने १९३८ ई० में, अिलाहाबाद में स्नातको के लिअे अेक पोस्ट-ग्रेजुअेट ट्रेनिंग कालेज खोला। बुनियादी शिक्षा के दर्शन और पद्धति म ट्रेनिंग देने के बाद ये स्नातक, १९३९ ई० में, प्रदेश में नव स्थापित सात बेसिक रेफ्रेशर कोर्स केन्द्रो के सचालन के लिअे भेज दिये गये। अिन केन्द्रो में प्रति वर्ष, तीन-तीन महीने के लिअे, गैर बुनियादी प्रारम्भिक स्कूलो के लगभग ७००० प्रशिक्षित अध्यापक, रेफ्रेशर कोर्स के लिअे आते थे। सन् १९४६ ई० तक अिन केन्द्रो पर लगभग ३५००० शिक्षको ने बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्त और प्रयोग में ट्रेनिंग पायी। अिनकी सहायता से १९४५-४६ तक प्रदेश के १९,०१७ प्रारम्भिक (कक्षा १ से ५ तक के) स्कूलो को बेसिक स्कूलो में परिवर्तित कर दिया गया। अिन स्कूलो को अुद्योग और कला की सामग्री खरीदने के लिअे ३३ रु प्रति वर्ष प्रासगिक अनुदान दिया जाता था, अर्थात् प्रति वर्ष अिस कार्य क लिअे १,६४,८०२ रु० दिये जाते थे। सन १९४६-४७ में प्रदेश के ये सातो रेफ्रेशर कोर्स केन्द्र और समस्त

(पृष्ठ ३५९ का शेषांश)

मौजूदा बुनियादी स्कूलो को अुच्च बुनियादी विद्यालयो में परिवर्तन करने के लिअे राज्य के विभिन्न भागो से आवेदन पत्र आते रहते हैं। हमारी प्रार्थना के अुत्तर में विद्यालयो की प्रबंध समितियो द्वारा भूदान, विद्यालय तथा कार्यकर्ता निवास निर्माण करने की आर्थिक मदद देने की स्वीकृति अति अुत्साहदायक है। कृषि विभाग, सहकारी विभाग, आदिम जाति और ग्राम सुधार विभागो के लिअे हमारे शिक्षको की बढती हुई माग से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हमारे शिक्षक अुन विभागो के लिअे बिलकुल ही योग्य हैं।

नार्मल स्कूल बेसिक नार्मल स्कूलों में परिवर्तित कर दिये और जिनमें समान रूप से शिल्प-केन्द्रित पाठ्यक्रम चलने लगा। क्रमशः प्रदेश के प्रत्येक जिले में अेक-अेक बेसिक नार्मल स्कूल और सचल शिक्षा दल खोल दिये गये जिससे प्राथमिक शिक्षा की सार्वजनिक माँग की पूर्ति हो सके। सन् १९५७-५८ के आँकडो के अनुसार जिस समय प्रदेश में ३५,०४७ जूनियर बेसिक स्कूल है और अिनमें ७७,३२५ अध्यापक तथा ८०२८ अध्यापिकाअें कार्य कर रही हैं। ये स्कूल कक्षा १ से ५ तक है और अिन्हें जूनियर बेसिक स्कूल कहा जाता है।

सीनियर बेसिक स्कूल

अर्थाभाव के कारण १९५४ के पूर्व सीनियर बेसिक-स्तर (कक्षा ६, ७ और ८) पर बेसिक शिक्षा को आरम्भ नही किया जा सका। अिस वर्ष (१९५३-५४ में) केन्द्रीय सरकार ने शिक्षितों की बेरोजगारी को दूर करने लिअे जो अनुदान दिया, अुत्तर प्रदेश ने अुसका प्रयोग सीनियर बेसिक स्तर पर बुनियादी शिक्षा के प्रसार में किया। चूकि अुत्तर प्रदेश का मुख्य धंदा कृषि है और यहाँ की ८०% जनता अिमी धंधे में लगी रहती है, अत यह निश्चित किया गया कि सीनियर स्तर के बुनियादी विद्यालयों में खेती और बागवानी को मुख्य बुनियादी अुद्योग रखा जाय और प्रदेश के प्रत्येक जूनियर हाअीस्कूल (सीनियर बेसिक स्कूल) के लिअे कम से कम खेती योग्य १० अेकड भूमि प्राप्त की जाय। यह भी निश्चय किया गया कि सामुदायिक तथा प्रसार कार्य (Community and Extension Work) को अिन स्कूलों के शिक्षण में प्रमुख स्थान देकर अिन्हें सामुदायिक विकास-केन्द्रों का रूप दिया जाय, जिससे ये स्कूल बेसिक शिक्षा की सकल्पना की कसौटी पर खरे अुतर सके। अब अिन सीनियर बेसिक स्कूलो के पाठ्यक्रम में सामान्य शिक्षण और कृषि कार्य के अतिरिक्त कृषि-प्रसार, सामाजिक तथा सास्कृतिक शिक्षण, सामुदायिक स्वास्थ्य और सफाअी, सामुदायिक निर्माण-कार्य और स्थानीय अुद्योगो के विकास को सम्मिलित कर लिया गया है। अतः ये स्कूल वास्तव में सस्थागत ही न रहकर समाजगत भी हो गये है और समाज से अुनका घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया है। १९५७-५८ के आँकडो के अनुसार प्रदेश के ३९८१ जूनियर हाअिस्कूलो में से २२१० कृषि-साधन सम्पन्न-सीनियर बेसिक स्कूल है जिनके पास कृषि कार्य के लिअे लगभग २२,००० अेकड भूमि है। अिनके अतिरिक्त ४२८ अैसे सीनियर बेसिक स्कूल है, जिनमें मुख्य अुद्योग कृषि नही है और जिनमें कताअी बुनाअी, धातुकला, काष्ठकला आदि दूसरे शिल्प मुख्य अुद्योग के रूप में चलते है। कृषि-केन्द्रित स्कूलों में १८२४ अन्डर ग्रेजुअेट और ६०३ कृषि ग्रेजुअेट और शिल्प-केन्द्रित स्कूलो में १४९ अन्डर ग्रेजुअेट और ४४ ग्रेजुअेट शिल्प-अध्यापक का कार्य कर रहे है। अिस सख्या में २१६ प्रसार निर्देशका की सख्या सम्मिलित है। अिन सीनियर बेसिक विद्यालयो में से ६०० स्कूलो में पौधघर और कृषि सग्रालय और ५०० स्कूलों में सामुदायिक केन्द्र हैं। अिस प्रकार अिस समय तक प्रदेश में (३६८१–२६३८) १३४३ स्कूल अैसे है जिनमें कृषि-अथवा शिल्प की पर्याप्त व्यवस्था नही है। सीनियर बेसिक स्कूलो के पास जो भूमि है, अिसमें से ३८ प्रतिशत कृषि-योग्य भूमि सिंचाअी के अन्तर्गत लायी जा सकी है और शेष के लिअे प्राकृतिक

वर्षा पर आश्रित रहना पडता है। १९५७ ५८ तक अिन सीनिअर बेसिक स्कूलो पर कुल रु० ११,६२०,५८३० (मुख्य मंत्री शिक्षा-कोष से १०,२७,६६८ ५७ + राजकीय अनुदान से १३४, ३८९ ७३) व्यय हुअे है और रबी और खरीफ दोना फसलो की अपज निम्नतम रुपया में लगभग ८,८३, ०६ रु० ८२ न पै है। स्वावलंबन की दृष्टि से भी यह सख्या पर्याप्त आशाप्रद है।

बुनियादी प्रशिक्षण सस्थाअें

बेसिक नार्मल स्कूल

जूनियर बेसिक स्कूलो के शिक्षका की दीक्षा के लिअे प्रदेश में ७२ बेसिक नार्मल स्कूल है, जिनमें ५५ पुरुषो क और १७ महिलाओ के है और जो प्रति वर्ष ३००० पुरुष तथा ८०० महिला प्रशिक्षार्थी दीक्षित करते है। अिन विद्यालयो म परम्परागत विषयो के अतिरिक्त विभिन्न अनुबन्धित शिक्षण तथा प्रसार-कार्य का विशेष रूप से शिक्षण होता है। अिनमें सीनियर बेसिक परीक्षोत्तिर्ण विद्यार्थी प्रवेश पाते है।

जूनियर ट्रेनिंग कालेज

सीनियर बेसिक स्कूलो के अध्यापको की दीक्षा के लिअे ३४ पुरुषो तथा ३ महिलाओ के दीक्षा विद्यालय है, जो प्रतिवर्ष १७०० पुरुष तथा १५० महिला अध्यापको के प्रशिक्षण का प्रबन्ध करते हैं। अिनमें हाअिस्कूल अुत्तीर्ण विद्यार्थी लिये जाते हैं।

जूनियर बेसिक ट्रेनिंग कालेज

नार्मल स्कूलो तथा माडल स्कूलो के लिअे शिक्षक तैयार करने के लिअे प्रदेश में ३ जूनियर बेसिक ट्रेनिंग कालेज है। ये अिन्टरमीडिअेट पास छात्रों को दो साल की ट्रेनिंग देने के अुपरान्त सी० टी० (बेसिक) का प्रमाण पत्र देते है। अभी तक अिनमें ६०० से अधिक अध्यापक दीक्षित हुये है।

पोस्ट ग्रेजुअेट बेसिक ट्रेनिंग कालेज, लखनअू

बेसिक नार्मल स्कूलो, जूनियर ट्रेनिंग कालेजो तथा निरीक्षको को दीक्षित करने के लिअे प्रदेश में अेक स्नातकोत्तर ट्रेनिंग कालेज है। अभी तक यहाँ से लगभग ६०० से अधिक पुरुषो तथा १५० महिलाओ का प्रशिक्षण हो चुका है।

प्रशिक्षण के अतिरिक्त यह ट्रेनिंग कालेज, बेसिक शिक्षा-प्रणाली में सुधार के लिअे नअे नअे प्रयोग करता है और बुनियादी सस्थाओ के लिअे समीचीन नयी सामग्री तैयार करता है। वह अध्यापको के पथ-प्रदर्शन के लिअे साहित्य भी प्रकाशित करता है और बेसिक शिक्षा की अन्य समस्याओ को भी सुलझाता है।

अिस ट्रेनिंग कालेज का प्रशिक्षणकाल अेक वर्ष का है। शेष सभी ट्रेनिंग सस्थाओ का प्रशिक्षणकाल दो वर्ष है।

द्वितीय योजना में बुनियादी शिक्षण

शिशु सस्थाअें

योजनावधि में महिलाओ के राजकीय नार्मल स्कूलो से सलग्न ११ आदर्श विद्यालयो में पूर्व बुनियादी शालाअें (शिशु-शालाअें) खोली गयी है।

नये जूनियर बेसिक स्कूल

५००० जूनियर बेसिक स्कूलो में से सन् १९५८ तक ३७५० विद्यालय खोले जा चुके है

तथा उनके लिये अध्यापक और आवश्यक उपकरण दिये गये हैं।

पुराने जूनियर बेसिक विद्यालयों के सुधार के हेतु उनको उद्योग-सामग्री देने के लिये १०० रु० प्रति वर्ष अनुदान दिया जाता है। योजनावधि में कुल खर्च ३४,६२,००० रु० होगा। स्थानीय निकायों को स्कूलों की इमारतों के सुधार के लिये १००० रु० प्रति विद्यालय अनावर्तक अनुदान दिया जाता है।

नि:शुल्क शिक्षा

इस दिशा में पहला कदम १९५६-५७ में उठाया गया जबकि कक्षा १ से ३ तक बेसिक शिक्षा नि:शुल्क कर दी गयी। जुलाई १९५७ से कक्षा ४ और ५ में भी शिक्षा नि:शुल्क कर दी गयी है। अब प्रदेश के जूनियर बेसिक स्तर तक की शिक्षा नि:शुल्क है।

अनिवार्य शिक्षा

इस समय तक १५ नगर पालिकाओं में लड़कों के लिये शिक्षा अनिवार्य है। योजनावधि के अन्त तक १०८ नगर पालिकाओं के पूर्ण और ३३ नगर पालिकाओं के आंशिक क्षेत्रों में अनिवार्य शिक्षा आ जायगी।

सीनियर बेसिक स्कूल

योजनावधि में ५०० सीनियर बेसिक स्कूल खुलेंगे। १९५७-५८ तक २० राजकीय तथा ७० सहायता प्राप्त स्कूल खोले जा चुके हैं। १९५८-५९ तक ४०० स्कूलों को शिल्प-केन्द्रित करने का प्रबन्ध कर दिया गया है। योजनावधि में २०० अतिरिक्त विद्यालयों में कृषि-कार्य शुरू किया जायगा, जिनमें १९५६-५७ तक ४० स्कूलों में इसका प्रारम्भ हो गया है। इन विद्यालयों में से २२५ स्कूलों में सामान्य विज्ञान तथा ८ बालिका विद्यालयों में संगीत-शिक्षण का भी प्रबन्ध हो गया है। योजनावधि में ५००) प्रति विद्यालय अनुदान देकर १७०० सीनियर बेसिक विद्यालयों में पुस्तकालय खोले जायेंगे। १९५७-५८ तक ६८० विद्यालयों को यह सुविधा दी जा चुकी है।

प्रशिक्षण

योजनाकाल में ५ जूनियर ट्रेनिंग कालेज तथा १२ बेसिक नार्मल स्कूल खोलने का निश्चय किया गया है, जिनमें १९५८-५९ में ११ नार्मल स्कूल तथा ३ जूनियर ट्रेनिंग कालेज खुल गये हैं। प्राइवेट ट्रेनिंग कालेजों को अब तक २०,०००) का अनुदान दिया गया है।

निरीक्षण

विद्यालयों की संख्या में वृद्धि होने के कारण द्वितीय योजना में सहायक उप विद्यालय-निरीक्षकों की संख्या में १६० की वृद्धि निर्धारित है। १९५८ तक ११० नये स्थान स्वीकृत हो चुके हैं।

सेवारत प्रशिक्षण

सेवारत प्रशिक्षण की योजना द्वितीय पंचवर्षीय योजना में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रदेश के नार्मल स्कूलों के आचार्यों का सेवारत प्रशिक्षण, स्नातकोत्तर दीक्षा विद्यालय लखनऊ तथा नार्मल स्कूल के अध्यापकों और निरीक्षक वर्ग की सेवारत दीक्षा जूनियर बेसिक ट्रेनिंग कालेजों में होती है। यह कार्य नियम से हो रहा है। निरीक्षक वर्ग तथा सहायक अध्यापकों का प्रशिक्षणकाल ३ माह का है।

साहित्य

बुनियादी स्कूलो के अध्यापको तथा निरीक्षकों के पथ-प्रदर्शन के लिये बेसिक ट्रेनिंग कालेजो के अध्यापको द्वारा अनुबन्धित शिक्षण सम्बन्धी अेक सदर्शिका तैयार की गयी है। शिक्षा-विभाग बेसिक शिक्षा के अध्यापको के लिये सहायक पुस्तके (Hand Books of Suggestions for Teachers) भी तैयार कर रहा है। अिस योजना में बुनियादी स्कूलो के सभी विषयो और क्रियाओं के सम्बन्ध में पथ प्रदर्शन किया जा रहा है।

गत वर्ष के विशेष कार्य

गत वर्ष पोस्ट ग्रेजुअेट बेसिक ट्रेनिंग कालेज, लखनअू में सामाजिक विषय के समवाय पर शोध-कार्य हुआ है। बुनियादी स्कूलो के पाठ्यक्रम में सामाजिक विषय अेक अैसा विषय है जिसका अनुबन्धित शिक्षण भलीभाति नही हो पाता। अत समवाय की दृष्टि से अिस विषय के पाठ्यक्रम को दोहराया गया है और सामाजिक विषय का अेक अैसा अनुबन्धित पाठ्यक्रम तैयार किया गया है जिसे बालक के प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण से अनुबन्धित कर भलीभाति पढाया जा सकता है। यह पाठ्यक्रम बालक के घर, स्कूल और परिसर को केन्द्र मान कर तैयार किया गया है। अब अिस अनुबधित पाठ्यक्रम का ट्रेनिंग कालेज से सलग्न 'प्रदर्शन विद्यालय' में परीक्षण किया जा रहा है और यदि यह पाठ्यक्रम सतोषजनक सिद्ध हुआ तो अिसे प्रदेश के सभी विद्यालयो में लागू किया जायगा।

अिसी सस्था में अेक ही अध्यापक द्वारा अेक से अधिक कक्षाओं को पढाना (Multiple Class Teaching) के लिये अेक टाअिम-टेबुल तैयार किया गया है। अुसे प्रदेश के सभी बुनियादी स्कूलो में वितरित किया जा रहा है।

बेसिक ट्रेनिंग कालेज, लखनअू में ही अिस वर्ष अेक और प्रोजेक्ट सचालित किया जा रहा है, जिसमें हम विभिन्न शिल्पो के लिये कक्षा ५ और ६ के बच्चो की रुचि थकान और अुत्पादन-क्षमता की दृष्टि से समय-विभाजन के निर्धारण की समस्या का निराकरण निकाल रहे हैं। अिस प्रोजेक्ट के सचालन में भारत सरकार के शिक्षा मत्रालय द्वारा दो वर्ष के लिये अनुदान प्राप्त हुआ है।

बेसिक स्कूलो के लिये रुचिकर पाठन-सामग्री तैयार करने की योजना में अेक अमेरिकन अध्यापिका श्रीमती काफी के अनुभव तथा प्रयोग विशेष रूप से लाभप्रद सिद्ध हुये हैं।

पाठ्य पुस्तक

प्रदेश में बुनियादी स्तर की पाठ्य पुस्तको का प्रणयन तथा प्रकाशन शासन द्वारा अथवा अुसके निरीक्षण म ही होता है। अिस कार्य के अन्तर्गत अभी तक भाषा, गणित, सामान्य विज्ञान और सामाजिक शास्त्र की पुस्तके प्रकाशित तथा प्रसारित की गयी हैं। अिस वर्ष कक्षा १ और २ की भाषा और गणित की पाठ्य पुस्तका का सशोधन किया गया है।

परिगोष्ठियाँ

गत वर्ष सेवान्तरीय शिक्षा के अन्तर्गत बेसिक ट्रेनिंग कालेज, लखनअू में चार-चार हफ्ते की पाँच वर्कशाप चलायी गयी जिनमें राजकीय बेसिक नार्मल स्कूलो के प्रधानो और अुप-विद्यालय निरीक्षको के पथ-प्रदर्शन का कार्यक्रम सचालित किया गया।

(शेषाश पृष्ठ १९५ पर)

पंजाब में बुनियादी शिक्षा

सन् १९४९ में जब जरगाव में शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिअे पहला बुनियादी विद्यालय खोला गया तब पजाब राज्य में बुनियादी शिक्षा का प्रारभ हुआ। तब से अिस दिशा में सतत प्रगति हो रही है। सामान्य प्राथमिक तथा माध्यमिक शालाओ को बुनियादी शिक्षा पद्धति के ढाचे पर रूपातरित करने के लिअे आवश्यक परिस्थिति निर्माण करने की दृष्टि से विद्यालयो में प्रचलित पाठ्यक्रमो का सशोधन करने के लिअे अेक विशेष समिति नियुक्त हुअी। अिस पाठ्यक्रम को सन् १९५१ में प्रारभ किया गया और अिस पाठ्यक्रम के अतर्गत विषय वही थे जो निम्न बुनियादी तथा प्राथमिक श्रेणी के पाठ्यक्रम में हैं। प्राथमिक स्कूलो के पाठ्यक्रम से फरक अितना ही था कि अिसमें मूल अुद्योगो की जगह पर प्रत्यक्ष प्रवृत्तियाँ थी। अुच्च बुनियादी स्तर में भी पाठ्यक्रम अिस तरह तैयार किया गया कि स्कूलो का रूपातर बुनियादी शिक्षा पद्धति में करना आसान हो सके।

बुनियादी शिक्षा की योजना में तीव्रता लाने की दृष्टि से प्रथम पचवर्षीय योजना के काल में कअी निम्न बुनियादी स्कूलो को खोला गया। सन् १९५४ में चढीगढ में प्रथम बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय खोला गया। सन् १९५५ से निम्न स्तर का शिक्षक प्रशिक्षण बुनियादी पद्धति में बदल दिया गया है। अब राज्य में कुल आठ स्नातकोत्तर प्रशिक्षण महाविद्यालय है। अुनमें तीन सरकारी हैं और पाच गैर सरकारी हैं। बी. अीड बुनियादी तथा निम्न बुनियादी प्रशिक्षण वर्गों के पाठ्यक्रम में बुनियादी शिक्षा के सिद्धात व विधियो के प्रशिक्षण के साथ साथ अुद्योग, सामाजिक जीवन, तथा समाज सेवा आदि का प्रशिक्षण भी शामिल है। प्रशिक्षणार्थियो को हिन्दी और पजाबी की प्रवीणता-जाच परीक्षा में भी अुत्तीर्ण होना पडता है।

निम्न स्तर के प्रशिक्षण को बुनियादी ढाचे में परिवर्तित करने से निम्न बुनियादी प्रशिक्षित

(पृष्ठ ३६४ का शेषाश)

प्रदेश में बुनियादी शिक्षण सम्बन्धी विचारो के आदान-प्रदान के लिअे ट्रेनिंग कालेजो तथा नार्मल स्कूलो में अध्यापको और छात्राध्यापको की परिगोष्ठियाँ होती हैं। प्रसार अध्यापको तथा सब डिप्टी अिन्सपेक्टरो के विचार-विमर्श के लिअे प्रत्येक जिले तथा मण्डल (Region) में भी अिसी सम्बन्ध में गोष्ठियाँ हुअी हैं। कुछ परिगोष्ठियो के विषय निम्नाकित हैं :-

१–बुनियादी शिक्षा और सर्वोदय।

२–बुनियादी शिक्षा और शिक्षा सम्बन्धी विभिन्न दार्शनिक विचार धाराअें।

३–बुनियादी शिक्षा तथा अुसके लक्ष्य।

४–वर्तमान बुनियादी विद्यालयो की सुधार-योजना।

५–शिल्प शिक्षण की प्रभावपूर्ण विधियाँ।

६–विद्यालय में पठन-सामग्री को सुलभ बनाना।

७–पूर्व बुनियादी शिक्षा का महत्त्व।

८–युवक दलो का सगठन।

शिक्षको को प्राथमिक स्कूलो में नियुक्त करना सभव हुआ। प्राथमिक स्तर के शिक्षको की कुल सख्या में सम्प्रत अैसे निम्न बुनियादी प्रशिक्षित शिक्षका की सख्या करीब ४० प्रतिशत है। बुनियादी ढाचे में परिवतन की दिशा में यह अेक सफल प्रयास है।

प्रथम तथा द्वितीय पचवर्षीय योजना की अवधि में राज्य में नये वुनियादी दिद्यालय खोले गये तथा पुराने ढग क विद्यालय वुनियादी ढाचे में बदल दिये गये। अुन विभिन्न प्रकार के विद्यालयो को सख्या अिस प्रकार है।

निम्न बुनियादी विद्यालय	६७८
अुच्च बुनियादी विद्यालय	४६
अुत्तर बुनियादी विद्यालय	४

चालू साल में १०० प्राथमिक स्कूलो को बुनियादी स्कूलो में रूपातरित करने की स्वीकृति सरकारने दी है।

अक्तूबर १९५७ से राज्य सरकार न राजपुरा तथा फरीदाबाद के नओ तालीम केन्द्रो का सचालन हिन्दुस्तानी तालीमी सघ से अपने हाथ में ले लिया है। अुन केन्द्रो में अुत्तर वुनियादी स्तर तक बुनियादी शिक्षा का प्रयोग हुआ है।

परपरागत पद्धति में प्रशिक्षित निरीक्षक तथा शिक्षको को बुनियादी शिक्षा से परिचित कराने के लिअे सन् १९५० से विभिन्न प्रशिक्षण केन्द्रो में नये प्रशिक्षण सत्र चलाये जा रहे हैं। प्रचलित शिक्षा पद्धति को बुनियादी पद्धति की दिशा मे परिवर्तित करने के लिअे केन्द्र सरकार द्वारा जून १९५८ में अेक अुत्तर प्रादेशीय अध्ययन-गोष्ठी का आयोजन चढीगढ में हुआ था। अिसमें पजाब अुत्तर प्रदेश हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और जम्मू काश्मीर के ३४ प्रतिनिधि तथा पर्यवेक्षको ने भाग लिया था जिनमें बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालयो के आचार्य, जिला शाला निरीक्षक-निरीक्षिकायें भी शामिल थे। अिसके साथ राज्य के सहायक शाला निरीक्षक तथा निरीक्षिकाओ के अुपयोगार्थ भी अुसी तरह के अक सत्र का आयोजन हुआ था ताकि पद्धति परिवर्तन के अिस कार्य को मदद मिल सके।

राज्य तथा जिला स्तर में केवल बुनियादी शिक्षा के लिअे अधिकारियो की नियुक्ति की योजना फिलहाल राज्य में नही है। निर्देशक के स्तर के कामो का निरीक्षण अुपनिर्देशक द्वारा होता है जो प्रशिक्षण सस्थाओ का निरीक्षण किया करते हैं जिनमें निम्न स्तर की वुनियादी प्रशिक्षण सस्थायें भी शामिल हैं। अधिकारियो से ही आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त कर सकने से बुनियादी सस्थाओ का काम सुगम हो गया है। जिला के स्तर में बुनियादी शिक्षा के कामो का निरीक्षण जिला शाला निरीक्षक, निरीक्षिकायें या अुनके सहायक करते हैं। चूकि अुनमें से अधिकाश को बुनियादी शिक्षा का परिचय ज्ञान दिया गया है अभी कोओी खास कठिनाओ अिस दिशा मे नही है। बुनियादी शिक्षा के काम का निरीक्षण गहराओ से करके अुसकी प्रगति के लिअे आवश्यक मार्गदर्शन करने के लिअे अेक राज्य स्तरीय मडल की स्थापना के लिअे प्रयत्न जारी है।

बंबअी राज्य में बुनियादी शिक्षा की प्रगति

वर्तमान परिस्थिति

सन् १९५६ में राज्यो की पुनर्रचना होने से बबअी राज्य में कअी नये क्षेत्र मिल गये जिससे अुन क्षेत्रो में स्थित बुनियादी शालाअें भी बबअी राज्य में मिल गयी और बृहत् बबअी राज्य की बुनियादी शालाओ की तादाद शीघ्रता से बढी। सन् १९५८ के अत में राज्य की बुनियादी शालाओ की सख्या ७४७० रही जब कि प्राथमिक स्कूलो की कुल सख्या ४६९६० रही। यान बुनियादी स्कूल का प्रतिशत १५ ९ रहा। बुनियादी स्कूलो में कुल १५४१७४५ विद्यार्थी दर्ज हुअे जबकि प्राथमिक स्कूलो म भर्ती होनवाले विद्यार्थियो की सख्या ५३६२६६६ रही। बुनियादी विद्यालय में पढनवाले विद्यार्थी २८ ७५ प्रतिशत रहे। प्रदशवार विद्यालयो की सख्या अिस प्रकार है। पुराना बबअी क्षेत्र ४४७३, सौराष्ट्र २३५२ कच्छ ४२ विदभ ४०६, मराठवाडा १९७।

शिक्षको का प्रशिक्षण

बुनियादी शिक्षा के प्रसार म शिक्षक प्रशिक्षण का अेक प्रमुख स्थान है। सन् १९४८ में सरकार ने हरअेक प्रदेश में अक-कुल तीन स्नातकोत्तर प्रशिक्षण विद्यालयो की स्थापना की। सन् १९४९ में सभी प्राथमिक प्रशिक्षण विद्यालयो को बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालयो में बदल दिया गया। और मूल अुद्योग, सामाजिक जीवन, समवाय पद्धति से पढाना आदि विषयो का सपूर्ण प्रवेश अुन विद्यालयो के पाठयक्रम म हुआ। शिक्षक प्रशिक्षण के कार्य को गति देन के ख्याल से आर्थिक सहायता देकर खानगी सस्थाओ का प्रोत्साहित किया गया ताकि वे बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय खोलकर अिस काम को आगे बढायें। सन् १९५५ में खानगी प्रशिक्षण महाविद्यालयो के प्रशिक्षण कार्य के तरीके तथा ध्येयो की तरक्की के सबध में जरूरी सलाह देने के लिअे सरकार ने अेक समिति नियुक्त की। अिस समिति की सिफारिश के अनुसार सरकार ने माध्यमिक तथा प्राथमिक शाला में अुत्तीर्ण शिक्षको के लिअे दो साल का शिक्षक प्रशिक्षण सत्र प्रारभ किया।

अिन दो सालो के प्रशिक्षण सत्र में माध्यमिक शाला का प्रमाण पत्र प्राप्तकर्ता शिक्षको को अुच्च बु० विद्यालयो के लिअे तैयार किया जाता है जब कि प्राथमिक शाला परीक्षा अुत्तीर्ण प्रशिक्षार्थी निम्न बुनियादी शाला के शिक्षक बनन के लिअ तैयार किय जाते है। खानगी बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालयो को दी जानेवाली आर्थिक सहायता ६०%से ६६ $\frac{2}{3}$%तक बढायी गयी है। सप्रत राज्य में १२६ बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय है जिनमें ५१ सरकारी ह और ७५ गैर सरकारी है। अिनमें साधारण तौर पर हर साल २००० शिक्षको को प्रशिक्षित किया जाता है।

राज्य म ५ स्नातकोत्तर बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय भी है जिनमें ३ मराठी क्षेत्र में है और दो गुजराती क्षत्र में। वे अमरावती, धुलिया, गार्गोटी, राजपीपला और पोरबदर में है। वे हर साल १७५ स्नातको को प्रशिक्षित करते है।

शिक्षको के लिअे अल्पकालीन प्रशिक्षण सत्र

अुपर्युक्त दीर्घ कालीन प्रशिक्षण सुविधाओ के अलावा बुनियादी विद्यालयो के शिक्षको के

लिओे अल्पकालीन प्रशिक्षण सत्र तथा अध्ययन गोष्ठियो का आयोजन शिक्षा विभाग करता है। अल्पकालीन सत्र गर्मी की छुट्टियो में आयोजित होते है और अध्ययन-गोष्ठिया ग्रीष्म कालीन छुट्टियो में आयाजित होती है। निरीक्षण अधिकारी तथा स्नातक शिक्षको के अुपयोगार्थ–जिनका प्रशिक्षण पुराने ढग से हुआ है–लोनी के बुनियादी शिक्षण केन्द्र मे हर साल चार सप्ताहो का अल्पकालीन प्रशिक्षण सत्र चलाया जाता है। अलावा अिसके बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय के अुद्योग-शिक्षको के लिओे अखिल भारत खादी कमीशन महाविद्यालय, त्र्यबक रोड नासिक में अेक अल्पकालीन प्रशिक्षण सत्र कताओी व बुनाओी का प्रशिक्षण देने के लिओे चलाता है। ४०-५० शिक्षक हर साल यह प्रशिक्षण पाते है। सभी प्रशिक्षण महाविद्यालयो में प्राथमिक शाला के शिक्षको के लिओे हर साल गर्मी की छुट्टियो में दो सप्ताह का अल्पकालीन प्रशिक्षण सत्र चलाया जाता है। अिन सत्रो में बुनियादी तथा सामाजिक शिक्षा का स्कूलो के कार्यक्रम में अनुस्थापन के सबध में भी जानकारी दी जाती है। अिनके अलावा छ सप्ताहो के शिबिर तथा अध्ययन गोष्ठिया का आयोजन भी हर साल ग्रीष्म की छुट्टियो में हर जिले में होता है। ये शिबिर गैर बुनियादी स्कूला में बुनियादी शिक्षा प्रारभ करने से होनेवाली समस्याओ से सबधित प्रश्नो पर चर्चा करते है। बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालयो ने भी अपने पडौसी शालाओ के लिओे विस्तार सेवा योजना को अपनाया है। यह योजना राज्य के १२ बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालयो में कार्यान्वित हो रही है। अिन बु० प्र० महाविद्यालयो के आसपास में रहनेवाले करीब २५ विद्यालयो को अिस विस्तार सेवा योजना से लाभ पहुँचा है। अगली गर्मी की छुट्टियो में हर जिले के बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालयो में सौराष्ट्र क्षेत्र के विद्यालयो के प्रधानाध्यापको के लिओे पाच सप्ताहो का प्रशिक्षण सत्र चलाने का विचार है।

बुनियादी विद्यालयो के लिओे साहित्य-निर्माण

बुनियादी विद्यालयो में काम करनेवाले शिक्षको के मार्गदर्शन के लिओे बुनियादी शिक्षा पर राज्य ने साहित्य निर्माण किया है। अब तक तीन किताबें प्रकाशित की गयी है। अिनके अलावा, 'जीवन शिक्षण' नाम से मराठी तथा गुजराती में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओ को–जो बुनियादी विद्यालयो के शिक्षको के अुपयोगार्थ ही प्रकाशित होती है–शिक्षा विभाग प्रोत्साहन देता है। शिक्षको के लिओे साहित्य प्रादेशिक भाषा मराठी तथा गुजराती में प्रकाशित किये जाते है। जनवरी १९५८ तथा १९५९ में बुनियादी शिक्षा सप्ताह में अुपर्युक्त पत्रिकाओं ने बुनियादी शिक्षा के विभिन्न पहलुओ से सबधित लेखो का विशेषाक अपने पाठको के सामने प्रस्तुत किया। शिक्षा विभाग ने बुनियादी शिक्षा पर पाच बडे विज्ञापन पत्र प्रकाशित किये जिन मे तीन जनवरी १९५८ के बुनियादी शिक्षा सप्ताह में तथा दो जनवरी १९५९ के बुनियादी शिक्षा सप्ताह में प्रकाशित किये गये।

पाठ्यक्रम

सन् १९५५ तक शिक्षा विभाग ने बुनियादी तथा गैर-बुनियादी विद्यालय के लिओे अलग-अलग पाठ्यक्रम रखे थे बुनियादी तथा गैर बुनियादी स्कूला में सातवे दर्जे के अत में अलग-

अलग परीक्षाअें भी चलती थी लेकिन सन् १९-५५ में प्राथमिक तथा बुनियादी शिक्षा मडलो की सयुक्त कमिटी से शिक्षा विभाग ने पाठ्य-क्रम को सशोधित करा लिया और प्राथमिक स्तर के सभी विद्यालयो में चाहे बुनियादी या चाहे गैर-बुनियादी हो, यह सामान्य पाठ्यक्रम लागू किया। अिस साधारणीकरण से दोनो की परीक्षा सामान्य हो गयी। गैर-बुनियादी विद्यालयो का बुनियादी शिक्षा के ढाचे में बदलने की दृष्टि से अुपर्युक्त पाठ्यक्रम को फिर से सशोधित किया गया और आरोग्य शिक्षा तथा सामाजिक जीवन को अुस पाठ्य-क्रम का अभिन्न अंग मानकर अुसमें शामिल किया गया। सप्रत सभी स्कूलो में सामाजिक या सामुदायिक जीवन अनिवार्य विषय बन गया है। आज विद्यालय का पहला घटा सफाअी, प्रार्थना-आदि में ही लगाया जाता है। विभिन्न विषयो के लिअे स्कूलो में मत्रियो का चुनाव होता है और सारे स्कूल के लिअे मत्रियो की अेक परिषद् है। सास्कृतिक कार्यक्रम, समारोह, सहल तथा हस्तलिखित पत्रिका चलाना आदि कार्य बुनियादी तथा गैर-बुनियादी स्कूलो का शिक्षा के अभिन्न अग बने हुअे हैं।

अुद्योग शिक्षण

बुनियादी विद्यालयो में अुद्योग शिक्षण की दिशा में कअी प्रकार से तरक्की की गयी है। अिस विषय में प्रमुख कदम यह लिया गया कि कताअी तथा बुनाअी काम के लिअे बुनियादी विद्यालयो में अुपयुक्त होनेवाले साधनो में अेक दर्जा (Standard) निश्चित किया गया। शिक्षक तथा सचालको को अिस विषय में मार्गदर्शन करने के लिअे अेक पुस्तक प्रकाशित की गयी है जिसमें बुनियादी स्कूलो के अुपयोगी साधनो के विस्तृत विवरण—जैसे लकडी का प्रकार लबाअी, चौडाअी, मुटाअी, आकार तथा निश्चित दाम आदि दिये गये हैं। बुनियादी स्कूलो के लिअे आवश्यक चीजें बबअी राज्य का ग्राम अुद्योग मडल तैयार कर विद्यालयो की मागो की पूर्ति करता है। अिससे बुनियादी विद्यालयो को अच्छे प्रकार के मजबूत साधन सुगमता से मिल पाते हैं। अुद्योगभवनो के निर्माण के द्वारा अिस दिशा में अेक और महत्वपूर्ण कदम अुठाया गया है। विज्ञान की शालाओ को जिस तरह प्रयोग शालाओ की बडी आवश्यकता है अुसी तरह बुनियादी विद्यालयो के लिअे अुद्योग भवनो की नितात आवश्यकता है। अैसे अुद्योग भवन के लिअे सरकार ने योजना बनायी है। अुनका सारा खर्च सरकार अुठाती है। अेक अुद्योग भवन का खर्चा रु ४४०० तक होता है। कुल ३०० अुद्योग-भवनो के लिअे सरकार ने अब तक स्वीकृति दी है।

अुत्तर बुनियादी विद्यालय

अुत्तर बुनियादी विद्यालयो को खोलने के लिअे सरकार ने काफी प्रोत्साहन दिया है। फिलहाल बबअी राज्य में कुल आठ अुत्तर बुनियादी विद्यालय हैं जिनमें से छ का सचालन खानगी सस्थायें करती हैं और दो सरकार से चलाये जाते हैं। सौराष्ट्र के क्षेत्र में अुत्तर बुनियादी विद्यालय लोकशाला कहे जाते हैं और वे अपनी ही परीक्षाओ के लिअे विद्यार्थियो को तैयार करते हैं। बबअी राज्य में अुत्तर बुनियादी विद्यालयो को माध्यमिक विद्यालयो के समकक्ष ही माना गया है और माध्यमिक विद्यालयो के विद्यार्थियो की तरह अुत्तर बुनियादी विद्यालयो के विद्यार्थी भी माध्यमिक शाला प्रमाण पत्र (S S C.) परीक्षा में शामिल हो सकते हैं। अुसमें अुत्तीर्ण होने पर अुनको विश्वविद्यालयों में भी प्रवेश मिल जाता है।

' निहार में बुनियादी शिक्षा
(१९५८–५९)

प्रथम अवस्था –अैतिहासिक पृष्ठ भूमि

नयी तालीम के क्षेत्र में विहार राज्य को अेक विशेष स्थान प्राप्त है। अिस राज्य मे बुनियादी तालीम प्रारभ से लेकर आज तक विघ्न-बाधाओ और रुकावटो को पार करते हुअे निविघ्न प्रगति के पथ पर अग्रसर है। सर्व प्रथम १९३८ में प्रथम बेसिक ट्रेनिंग स्कूल की स्थापना हुअी। १९३९ में अुत्तर विहार के चम्पारण जिले में १०० मील के सघन क्षेत्र में कुछ बुनियादी विद्यालयो की स्थापना हुअी। यह क्षेत्र अिसके पहले भारत में पूज्य महात्मा गाधी के राजनैतिक कार्यकलापो के केन्द्र के रूप में विख्यात हो चुका था। बुनियादी शिक्षा के पूर्ण आठ वर्गो की शिक्षा की व्यवस्था का यह प्रथम प्रयास था जो अैसे पिछडे अिलाके म की गयी जहा पहले से अिने गिने प्रारम्भिक स्कूल ही मौजूद थे। राज्य सरकार द्वारा नियुक्त निरीक्षको की अेक समिति अिसकी प्रगति की जाच बडी तत्परता से करती रही और प्रत्येक साल अिसका निरीक्षण और परीक्षण होता चलता था। नयी सस्थाओ के सचालन के लिअे भाग्यवश नये शिक्षक सफलता पूर्वक प्रशिक्षित यही किये गये।

द्वितीय प्रयोगावस्था–

सघनक्षेत्र मे दस वर्षो के सफल प्रयोग के बाद राज्य के भिन्न-भिन्न क्षेत्रो मे बुनियादी शिक्षा के सफल प्रसार की आशा बधी। १९४८ में शिक्षको के प्रशिक्षण के लिअे कुछ और बेसिक ट्रेनिंग स्कूल खोले गये। सघन क्षेत्र के केन्द्रीय स्थान में अेक राजकीय अुत्तर बुनियादी विद्यालय की स्थापना हुअी। विहार की बुनियादी शिक्षा के अितिहास में १९५० का साल अेक अैतिहासिक महत्व रखता है जब राज्य के प्रत्येक जिले में अेक-अेक बेसिक ट्रेनिंग स्कूल की स्थापना हुअी। विकास योजनाओ के फलस्वरूप ५८० बुनियादी विद्यालय और १३ अुत्तर बुनियादी विद्यालयो की स्थापना हुअी। अिस अवसर पर बुनियादी विद्यालयो के निर्माण और प्रसार में जनता का भी काफी सहयोग हुआ। जिसके प्रमाणस्वरुप लागो ने ३०० अेकड जमीन का दान दिया। १९५१ का वर्ष भी कम महत्वपूर्ण नही है जब अुत्तर बिहार के तुरकी नामक स्थान में अेक टीचर्स ट्रेनिंग कालेज खोला गया। अिस समय तक राज्य का शिक्षा विभाग अिस शिक्षा की परिणपूर्णता और विशेषताओ से परिचित हो चुका था।

वर्तमान अवस्था –

अभी विहार राज्य मे पूर्ण विकसित राजकिय बुनियादी विद्यालयो की सख्या और अवस्था निम्न लिखित है।

सस्था का नाम	१९५२-५९ प्रवेशार्थी	कुल खर्च	प्रतिछात्र खर्च	शिक्षको की सख्या
५१९ सीनियर बेसिक स्कूल	९१,४९६	४०,००,०००	४३)	३४७९
१४ पोस्ट बेसिक स्कूल	२,२१९	४,००,०००	१७५)	१५७
२० सीनियर ट्रेनिंग स्कूल	३१४२	११ ००,०००	३४०)	१५८

जिसमें ११४२ संक्षिप्त प्रशिक्षण मे–

प्रत्येक गुरु छात्र २०) प्रति माह की छात्रवृत्ति पाते हैं।

अूपर की सख्याओ से पता चलता है कि राज्य की बुनियादी सस्थाओं में लगभग अेक लाख छात्र पढते हैं। १९५१-५२ में बुनियादी विद्यालयो में लगभग ६६००० विद्यार्थिया का प्रवेश हुआ। अभी प्रवेशार्थियो की सख्या ९१००० है। अिसका अर्थ यह हुआ कि विद्यार्थियो की भर्ती में ५० प्रतिशत की वृद्धि हुअी है। अिसी तरह १९५१-५२ में सर्वोदय हाअी-स्कूलो में छात्रो की सख्या ११८४ थी। यह अब बढकर २२७९ हो गयी है। छात्रो की सख्या में प्रति साल वृद्धि होने से यह स्पष्ट होता है कि अिसकी अुपयोगिता का असर और प्रभाव लोगा पर पडता ही जा रहा है। अिनके अतिरिक्त जनता द्वारा सचालित अैसे २०० गैर सरकारी बुनियादी विद्यालय हैं जिन्हे राज्य सरकार से सहायता के रूप में कुछ रकम मिल्ती है। प्रतिवर्ष अिन विद्यालयो को सहायता के रूप में २००,००० रुपये राज्य सरकार देती है। छोटी से छोटी अेव बडी से बडी ये सारी सस्थायें सर्वांगपूर्ण बुनियादी सस्थाय हैं। अब राज्य सरकार के लिअे यह सभव नही हो सकेगा कि प्रवेशार्थियो की सख्या के लिअे अेक अलग प्रतिवेदन साल्-ब-साल अिस रूपमें प्रस्तुत कर सकेगी, क्योकि राज्य के सारे प्राथमिक विद्याल्य बुनियादी विद्यालया में परिवर्तित हो रहे है। अुपर्युक्त सख्याओ में प्रारभिक विद्याल्यो में प्रवेश पानेवाले छात्रो की सख्या नही है। ये धीरे धीरे बुनियादी विद्याल्यो में परिवर्तित हो रहे हैं। जनवरी १९५९ से ३०,००० प्रारभिक विद्यालयो के प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ग बुनियादी विद्यालयो में परिवर्तित हो चुके हैं।

तृतीय अवस्था राज्य भर में प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप बुनियादी शिक्षा –

बिहार में बुनियादी शिक्षा की तीसरी दशा की अर्थात् १९५८-५९ की अवधि शिक्षा के विकास में अेक अैतिहासिक महत्व रखती है। १९३८ से ही बुनियादी शिक्षा सबधी प्राप्त अनुभवो के आधार पर अिसके प्रचार अेव प्रसार तथा राज्य के सारे प्रारभिक विद्यालयो में परिवर्तन का क्रम विधिवत् और व्यावहारिक रूप में अपनाया गया है। अिस तरह प्रत्येक साल अेक अेक वर्ग परिवर्तित होता चलेगा। पुराने शिक्षाक्रम के स्थान पर अेक नया अनुकलित शिक्षाक्रम लागू किया गया है। यह कदम काफी सोच समझकर सही दिशा में अुठाया गया, क्योकि प्रारभिक विद्यालयो के अधिकाधिक शिक्षक बेसिक ट्रेड नही थे। तीस हजार प्रारभिक विद्यालयो के सत्तर हजार शिक्षको में सिर्फ छ हजार शिक्षक बेसिक ट्रेंड थे। पूरे बेसिक ट्रेंड शिक्षको से ही अनुस्थापन का कार्य प्रारभ किया जाय अिसके लिअे ठहरने के वास्ते जनता तैयार न थी। जनता अपने बच्चो के लिअे समन्वित और व्यवस्थित सुदर शिक्षा चाहती थी। अुन्होने अपनी आवाज विधान सभा और प्रेस के द्वारा बुलन्द की कि यदि बुनियादी शिक्षा अच्छी शिक्षा है तो परम्परागत विद्यालयो और बुनियादी विद्यालयो के बीच का भेद मिटा दिया जाय। बुनियादी शिक्षा की प्रगति और जनता की प्रवल अिच्छा के फलस्वरूप राज्य सरकार ने बेसिक अेजुकेशन बोर्ड की देखरेख में सम्पा-

दित अनुकलित शिक्षाक्रम को जनवरी १९५९ से प्रथम द्वितीय और तृतीय वर्गों में लागू किया है। बाद में प्रत्येक वर्ष अेक अूपर के अे वर्ग में क्रमश यह शिक्षाक्रम लागू होता चलेगा और यह आशा की जाती है कि १९६४ तक राज्य की सारी प्रारम्भिक शिक्षा वुनियादी शिक्षा के ढाचे में परिवर्तित हो जायगी। १०-३० से ४ तक कुछ विद्यालयो के कार्यक्रम और पूर्वाह्न और अपराह्न दो शिफ्टो की समय-सारिणी में सोच समझ कर सुधार किया है। स्वावलम्बन, सामुदाअिक जीवन और समवायी शिक्षा वुनियादी शिक्षा का मेरुदड है और य सारी चीजे नये अनुकलित शिक्षाक्रम म समावेशित की गयी हैं।

४–विशेष शिक्षको की तैयारी

राज्य के सारे ट्रेनिग स्कूल अब बेसिक ट्रनिग स्कूल है। अभी सीनियर बेसिक ट्रेनिग स्कूल२० हैं। अिन प्रशिक्षण केन्द्रो से १००० प्रशिक्षित शिक्षक प्रतिवष निकलते है। अिन स्कूलो में भी छात्रो की सख्या बढायी गयी है जिससे द्वितीय पचवर्षीय योजना की समाप्ति तक अिससे दुन शिक्षक अिन केन्द्रो से प्रतिवर्ष प्रशिक्षित होते चले। मैट्रिकुलेशन या अिन्टरमीडियट क बाद दो वर्षों का सर्टिफिकेट कोर्स अिन प्रशिक्षण कन्द्रो में चालू है।

अिन सीनियर ट्रनिग स्कूलो के अतिरक्त ४२ जूनियर ट्रेनिग स्कूल हैं। पहले मेट्रिक से कम योग्यता वाले छात्र भी अिन विद्यालयो में प्रवेश पा जाते थे। लेकिन अब अिनमें काफी सुधार करक बुनियादी प्रशिक्षण कन्द्र के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। निम्नवर्गीय अेव महिला छात्रो को छोडकर अब अिनमें भी सिफ मैट्रिक प्रवेशार्थी ही लिय जाते हैं। अिस साल से जूनियर बेसिक ट्रेनिग स्कूल भी सीनियर बेसिक ट्रेनिग स्कूल के शिक्षाक्रम को अपना चुके हैं। अिन प्रशिक्षण केन्द्रो से ४००० शिक्षक प्रतिवर्ष प्रशिक्षित होते चलेगे। अत दो वर्षो के भीतर विहार के बेसिक ट्रेनिग स्कूल प्रतिवर्ष ६००० बेसिक ट्रेंड शिक्षक प्रशिक्षित करते चलेग।

पुराने स्टाफ के पुन प्रशिक्षण की भी व्यवस्था अिन ट्रेनिग स्कूलो में की गयी है। ६ महिने से लकर १ वर्ष का विशिष्ट कोर्स चालू किया गया है। अिस तरह प्रतिवर्ष २,००० शिक्षको को वुनियादी तालीम का प्रशिक्षण मिलता है।

५–टीचर्स ट्रनिग कालेजो का भी पुन सगठन हुआ है। अिन ट्रनिग कालेजो में अक वर्ष का स्नातकोत्तर प्रशिक्षण होता है जिसमें सामुदायिक जीवन औद्योगिक प्रशिक्षण और और समवायी शिक्षा का अभ्यास आवश्यक है। राजकीय ट्रनिग कालेजो के अतिरिक्त पटना विश्वविद्यालय म और भी ट्रेनिग कालेज है। अिन दोनो तरह के ट्रनिग कालेजो के शिक्षाक्रम म सुधार कर दिया गया है जिससे वुनियादी शिक्षा के आधार पर सगठित माध्यमिक शिक्षा की आवश्यकताओ की पूर्ति हो सके।

६–अुद्योग विशेषज्ञो का प्रशिक्षण

ये ट्रनिग स्कूल और ट्रेनिग कालेज प्रत्येक छात्र को अुनके द्वारा चुन गये अेक मुख्य अुद्योग और अक सहायक अुद्योग में भी प्रशिक्षण देते हैं। फिर भी वह गुरु छात्र यदि बेसिक या पोस्ट बसिक स्कूल से अुत्तीर्ण छात्र नही है तो ट्रनिग सस्थाओ में प्राप्त औद्योगिक प्रशिक्षण के द्वारा अुसे अुद्योग का प्रारभिक ज्ञान ही प्राप्त हो सकेगा। अिसलिअे विशिष्ट

औद्योगिक प्रशिक्षण के लिअे अेक विशिष्ट कोर्स की व्यवस्था की गयी है। अिसमे अैसे ही शिक्षको को प्रशिक्षित किया जाता है जो टीचर्स ट्रेनिंग सस्थाओ से प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर चुके हो। बुनाअी और काष्ठकला के अिस विशिष्ट प्रशिक्षण में अेक वर्ष का गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण केन्द्रो के प्रशिक्षक अिस प्रशिक्षण के लिअे प्रतिनियोजित किये जाते है। बुनियादी विद्यालयो के शिक्षको के लिअे राज्य के अेक सीनियर ट्रेनिंग स्कूल में कृषि के विशिष्ट प्रशिक्षण के वास्ते प्रबंध कर दिया गया है जहा ६० अेकड जमीन का अेक बहुत बडा फार्म है।

७–पर्यवेक्षी कर्मचारियो का प्रशिक्षण

प्रारम्भिक विद्यालयो के पर्यवेक्षको के अतिरिक्त शायद बिहार ही अैसे कुछ राज्यो मे से अेक है जहा पर्यवेक्षी कर्मचारियो का प्रबध किया गया है और राष्ट्रीय प्रसार सेवा क्षेत्रो की सख्या के आधार पर अुनकी बहाली हुअी है। ६३५ अवर शिक्षा निरीक्षको का पद तो स्वीकृत हो चुका है। प्रारम्भिक विद्यालयो की देखरेख की पूरी जवाबदेही अधिकारियो को दे दी गयी है। बुनियादी शिक्षा में अिनके भी प्रशिक्षण की आवश्यकता बहुत पहले समझी गयी। अिसलिअे प्रतिवर्ष १०० अधिकारियो को ५०-५० की दो टोलियो में ६-६ महीने के प्रशिक्षण की व्यवस्था अेक सीनियर ट्रेनिंग स्कूल में कर दी गयी है। यह १९५६ में शुरू हुआ। प्रशिक्षण की अवधि मे अिन अधिकारियो से मूल अुद्योग में गहन अभ्यास, दो अन्य अुद्योगो का काम चलाअू ज्ञान अभ्यास पाठ और बुनियादी विद्यालयो के निरीक्षण का व्यावहारिक अभ्यास कराया जाता है। ये सामुदायक जीवन का भी व्यावहारिक अभ्यास करते है जो अिनकी प्रगति विषयक जाचका अेक अग है। यह विशिष्ट प्रशिक्षण बिहार के अेक प्रमुख प्रशिक्षण केन्द्र विक्रम में सगठित किया गया है जिसका बिहार के प्रशिक्षण केन्द्रो में अेक विशिष्ट स्थान है।

शिक्षा विभाग के अुच्चस्तरीय अधिकारियो के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की गयी है। यह १५ दिनो का "नअी तालीम" प्रशिक्षणक्रम सेवाग्राम, वर्धा में भी चलता है।

अिन सारी बातो से यह पता चलता है कि बिहार राज्य ने बुनियादी शिक्षा के प्रत्येक अग को सुदृढ करने के लिअे ठोस कदम अुठाया है।

८–बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्तो का अन्य सस्थाओ में प्रवेश

१४ अुत्तर बुनियादी विद्यालयो की स्थापना बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्तो का माध्यमिक विद्यालयो में प्रवेश कराने के लिअे हुअी थी। ये अुत्तर बुनियादी विद्यालय १९४८ में ही बहूद्देशीय माध्यमिक विद्यालयो के रूप में शुरू किये गये थे। कला, विज्ञान और अुद्योग के अध्ययन की व्यवस्था की गयी थी। ये अुद्योग प्रत्येक अुत्तर बुनियादी विद्यालय में अपनाये गये थे। माध्यमिक शिक्षा के अनुस्थापन के फलस्वरूप ये अुत्तर बुनियादी विद्यालय हायर सेकेन्डरी में बदल दिये गये और अिनका विकास अब बहूद्देशीय माध्यमिक विद्यालयो के रूप में हो रहा है। अिन अुत्तर बुनियादी विद्यालयो में कला, अुद्योग और कृषि मुख्य विषय है। अैसा कदम भी आगे अुठाया जा रहा रहा है कि सामुदायिक जीवन और अुद्योग का स्तर अिन अुत्तर बुनियादी विद्या-

लयो का अितना अूचा हो कि अन्य परम्परागत माध्यमिक विद्यालय अिनका अनुसरण करे ।

९–बिहार की संस्थाओ में जांच और परीक्षण का स्थान

बिहार की बुनियादी सस्थाओ में बाह्य परीक्षा का स्थान नही था । अुनके कार्य और रेकार्ड की जाच ही अुनकी परीक्षा का रूप था। अिस तरह की जाच (असेससेंट) के लिअे अत्यन्त योग्य स्टाफ चाहिये और सफलता के अनेक कारण हैं । लेकिन अब जब कि प्रारम्भिक विद्यालयो का अनुस्थापन बुनियादी विद्यालयो में हो रहा है, यह निश्चय हुआ है कि ५० प्रतिशत बाहचपरीक्षा और ५० प्रतीशत जाच (असेसमेंट) प्रत्येक स्तर के अधिकारी द्वारा हो । माध्यमिक विद्यालय परीक्षा में भी माध्यमिक परीक्षा समिति में जाच (असेसमेंट) के लिअे २० प्रतिशत नम्बर प्रत्येक पत्र में १९५२ से ही चालू कर दिया है। बुनियादी शिक्षा के क्षेत्र मे २० वर्षो के अनुभव के आधार पर ही परम्परागत विद्यालयो में अितना सुधार हो सका है ।

१०–बुनियादी संस्थाओ में अुत्पादन

बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्त के अनुसार बुनियादी विद्यालयो में अुत्पादन का अेक महत्वपूर्ण स्थान है । बिहार की सारी बुनियादी सस्थाये अुत्पादक सस्थायें हैं । १९५८-५९ में अुत्पादन का स्पष्टीकरण निम्नलिखित सख्याओ द्वारा होगा ।

कच्चा माल और अत्पादन ।

सस्था का नाम	कच्चामाल	अुत्पादित वस्तुओ की कीमत	खजाने में जमा की गयी रकम
५७९ बुनियादी विद्यालय	१,१६,३९२	२,२५,९४१	१,७०,४९४
१४ अुत्तर बुनियादी विद्यालय	२०,१९१	५८,८०२	४७,१८७
२० सीनियर ट्रेनिंग स्कूल	३९,३३१	७९,३५३	४०,६९४
	१,७५,९१४	३,६४,०९६	२,५८,३७५

कच्चे माल पर प्रतिशत अुत्पादन ।		
	वेसिक स्कूल	२१३ प्रतिशत ।
	पोस्ट वेसिक स्कूल	२७९ ,,
	सीनियर ट्रेनिंग स्कूल	१८१ ,,

अूपर की सख्याओ से बुनियादी शिक्षा के अुत्पादन अग पर प्रकाश पडता है । अुत्पादक कार्यक्रम में नियम की कठोरता नही है । अुद्योग व्यवस्थित ढग से सगठित हैं और यह बिहार में बुनियादी शिक्षा का मुख्य अग है । अुत्पादित वस्तुओ की बिक्री की व्यवस्था में कोअी कठिनाअी नही होती क्योकि ये विद्यालय में ही खप जाती है ।

अुपसंहार – बिहार राज्य में बुनियादी शिक्षा का कार्य दो दशाब्दियो से भी अधिक समय से चल रहा है । अपने पथ पर बढने के लिअे अिसे अनेक कठिनाअियो का भी

(शेषाश पृष्ठ ३७५ पर)

नअी तालीम की दिशा में बिहार में गैर-सरकारी प्रयत्न

संयोजक, बिहार सर्वोदय मंडल

१९४६ के पहले गैर-सरकारी आधार पर नअी तालीम का काम व्यवस्थित रूप में बिहार में चल रहा था। अुसके बाद की बदली हुअी परिस्थिति में प्राय सभी क्षेत्रों में गैर-सरकारी आधार पर काम करने की प्रवृत्ति कुछ ढीली पड गयी। वही हाल बिहार में नअी तालीम के काम का भी हुआ। विनोबाजी के भूदान आन्दोलन के बाद से फिर गैर-सरकारी आधार पर पुरुषार्थ करने की प्रवृत्ति जागी किन्तु बहुत दिनों तक भूदान ग्रामदान आदि कार्यों की ओर ही कार्यकर्ताओं का ध्यान विशेष रूप से रहा। ग्राम स्वराज्य के विचार को अमली रूप देने के बारे में जब सोचा जाने लगा तो प्रगट हुआ कि ग्राम स्वराज्य का ग्रामदान के विचार के साथ जैसे अभिन्न संबंध है वैसे ही नअी तालीम के साथ भी है। नअी तालीम के बिना ग्राम-स्वराज्य संभव नहीं। अिसी बीच विनोबाजी अेक घंटे की पाठशाला और अेक घंटे के महा-विद्यालय का विचार भी दे चुके थे। कार्य-कर्त्ताओं ने अब यह महसूस किया कि नअी तालीम की दिशा में भी अपनी शक्ति भर प्रयत्न करना अुनका कर्तव्य है।

विनोबाजी जब बिहार में यात्रा कर रहे थे तो अुन्होंने १९५४ के अन्त में बिहार सर्वोदय मंडल नाम की अेक संस्था बनायी थी। खादी ग्रामोद्योग, हरिजन सेवा, आदिवासी सेवा, महिला अुत्थान आदि कार्य करनेवाली विभिन्न संस्थायें अब तक अलग-अलग काम करती थीं। अेक दूसरे के साथ संपर्क नहीं था। अिन विभिन्न संस्थाओं के बीच संपर्क स्थापित करना अेक दूसरे की मदद करे, अिसकी कोशिश करना तथा भूदान ग्रामदान के काम में सब संस्थायें भाग ले अैसी स्थिति अुत्पन्न करना सर्वोदय मंडल का काम रहा। अिसके अलावा सर्वोदय आन्दोलन में लगे कार्यकर्त्ताओं का मार्गदर्शन करना तो अिसका काम था ही। सर्वोदय मंडल ने नअी तालीम की दिशा में भी कुछ करने का निर्णय किया। अिसके लिअे अुसने १९५७ में अेक नअी तालीम समिति बनायी। अिस समिति में आचार्य बद्रीनाथ वर्माजी और श्री रामशरण अुपाध्यायजी भी सदस्य रहे। श्री अुपाध्यायजी से अिस समिति के संयोजक बनने का भी अनुरोध किया गया और अुन्होंने कृपापूर्वक यह अुत्तरदायित्व स्वीकार किया। जाहिर है कि ये दोनों व्यक्ति नअी तालीम के क्षेत्र में बिहार में शुरू से ही मार्गदर्शक रहे हैं। सर्वोदय मंडल ने भी अिनके मार्गदर्शन में नअी तालीम का कार्य-क्रम चलाने का निश्चय किया।

मंडल ने यह अनुभव किया कि नअी तालीम के प्रति जनता में जो अुदासीनता है अुसको दूर

(पृष्ठ ३७४ का शेषांश)

सामना करना पड़ा। बिहार के लिअे यह अब विचार विमर्श का विषय नहीं रह गया है। अब राज्य सरकार ने अपनी नीति निश्चित कर ली है कि प्रारम्भिक विद्यालयों को बुनियादी विद्यालयों में परिवर्तित कर ही लिया जाय। अिसकी प्रयोगावस्था कब की समाप्त हो गयी। अब तो सारे विद्यालयों के लिअे अिसे अपनाने का मसला सामने है।

करना सब से जरूरी काम है, दूसरा काम अेक घटे की पाठशाला और अेक घटे का महाविद्यालय चलाना है। तीसरा काम कोअी अैसा विद्यालय चलाना है जिसमें नअी तालीम का आदर्श-रूप अुपस्थित हो सके। मडल ने यह कोशिश की कि रचनात्मक कार्य में लगे सभी कार्यकर्त्ता नअी तालीम के प्रति जनता में अभिरुचि अुत्पन्न करे। पूसा में हुअे द्वितीय प्रादेशिक सर्वोदय सम्मेलन में अिस आशय के अेक प्रस्ताव के द्वारा सभी रचनात्मक कार्यकर्ताओ से अिसके लिअे निवेदन किया गया। बाद में अेक नअी तालीम विचार गोष्ठी का आयोजन श्री जयप्रकाश नारायणजी की अध्यक्षता में खादीग्राम में किया गया। अिस गोष्ठी में विस्तारपूर्वक अिस विषय में चर्चायें हुअी। अन्य बातो के अलावा यह तय हुआ कि रचनात्मक कार्यकर्त्ताओ के तीन तीन दिन के शिबिर किये जायें। अिन शिविरो में नअी तालीम का विचार कार्यकर्त्ताओ को अिस प्रकार से समझाया जाय कि वे जनता में नअी तालीम के अनुकूल हवा तैयार करने के लिअे प्रचार कर सके और अैसे कार्यकर्त्ताओ का चुनाव किया जाय जो अेक घटे की पाठशाला और अेक घटे का महाविद्यालय का काम करे। अिस निर्णय के अनुसार छ शिविर किये गये जिनमें लगभग अेक हजार कार्यकर्त्ताओ ने भाग लिया। अिनमें से करीब २०० व्यक्ति अेक घटे की पाठशाला और अेक घटे का महाविद्यालय का काम चलाने को चुने गये। अब ५०-५० के जत्थे में २०० भाअी बहनो को प्रशिक्षण देकर अिस काम में लगाना है। अनिवार्य कारणो से प्रशिक्षण का काम अभी शुरू नही हो सका है। अब शुरू करने की कोशिश हो रही है। आशा है यह काम तुरत ही शुरू हो जायेगा।

जहा तक नअी तालीम का विद्यालय चलाने का प्रश्न है अेक विद्यालय सर्वोदय ग्राम, मुजफ्फरपुर बिहार खादी ग्रामोद्योग सघ के अभिक्रम से चल रहा है। अिसको अधिक समुन्नत बनाने का प्रयास हो रहा है। मडल चाहता है कि यह विद्यालय नअी तालीम का अेक आदर्श विद्यालय बन जाय। अेक दूसरा प्रयत्न श्री धीरेन्द्र मजूमदारजी के मार्गदर्शन में गाव का ही विद्यालय मानकर नअी तालीम के प्रयोग करने का है। अिसके लिअे गाँव का चुनाव किया जा रहा है और आशा है अिस आधार पर शीघ्र ही नमूने का काम अुपस्थित किया जा सकेगा।

गैर सरकारी आधार पर बिहार में जो थोडा बहुत काम नअी तालीम की दिशा में हम लोग कर सके है और करना चाहते हैं अुसका यह अेक सक्षिप्त परिचय है।

अखिल भारत नअी तालीम सम्मेलन, राजपुरा

सम्मेलन समाप्त हुआ है :

कार्यारंभ होता है ।

पंजाब सरकार का निमंत्रण स्वीकार कर तालीमी संघ ने अखिल भारत नअी तालीम सम्मेलन का तेरहवां अधिवेशन राजपुरा में अप्रैल २५,२६, और २७ को बुलाया । पंजाब में पहली बार यह सम्मेलन संपन्न हुआ । अिसलिअे अुम्मीद है कि सूबे में नअी तालीम के प्रति अभिरुचि बढाने में यह सम्मेलन मददगार हुआ होगा । अप्रैल के ये तीन दिन भी खास कारण से मुकर्रर किये गये । पूज्य विनोबाजी अपनी पदयात्रा में २५ और २६ अप्रैल को राजपुरा में मुकाम करनेवाले थे । जिससे सम्मेलन को अुनकी अुपस्थिति का लाभ भी मिल सका । लेकिन साल के ये आखिरी दिन अपनी संस्थाओं से निकलकर बाहर बहुत दूर जाने के लिअे प्रतिकूल थे । अिन कारणों से दूसरे प्रान्तों से कार्यकर्त्तागण बडी तादाद में हाजिर नहीं हो सके । फिर भी जो थोडे लोग आये खास अुद्देश्य से आये और अध्ययन मंडलियों तथा चर्चाओं में दिलचस्पी के साथ भाग लिया ।

पिछले सालों से चलती आयी परंपरा के अनुसार अिस साल भी अप्रैल २३ और २४ दो दिन नअी तालीम के शिक्षकों तथा कार्यकर्त्ताओं का अेक खास सम्मेलन भी संपन्न हुआ । नअी तालीम प्रदर्शिनी का अुद्‌घाटन २३ अप्रैल के दिन हुआ । सम्मेलन की अवधि में प्रतिनिधिगण तथा जनता अिस प्रदर्शिनी का लाभ अुठा सके ।

नअी तालीम के अिस अंक में सम्मेलन की चर्चाअें और निष्कर्ष आदि का अुल्लेख अलग दिया है । अिसलिअे अुनको यहां दुहरान की आवश्यकता नहीं है । केवल अुन नयी बातों और नये पहलुओं का जिक्र करना तथा अुनका महत्व समझाना पर्याप्त है जो राजपुरा में पेश आये ।

शिक्षक सम्मेलन का अुद्देश्य यह रहा कि स्कूलों और प्रशिक्षण केन्द्रों के रोजमर्रे के कार्य में लगे कार्यकर्त्ताओं को नअी तालीम के सिद्धांतों व कार्य प्रणाली का साफ चित्र देना । अिस सम्मेलन की चार बैठकें हुअीं । तीन में नीचे लिखी बातों पर चर्चा हुअी ।

१ नअी तालीम का स्वरूप क्या है ?

२ पढाने की प्रणाली क्या है ?

३ नअी तालीम स्कूलों की व्यवस्था ।

चौथी बैठक में अुपस्थित शिक्षकों को अपनी कठिनाअियां सब के सामने पेश करने का अवसर दिया गया । फिर अुन समस्याओं का हल अेक महारथीदल *"Brain Trust"* द्वारा विषयानुसार सुझाया गया । हर अेक बैठक का अध्यक्षपद पंजाब के अेक-अेक अनुभवी शाला शिक्षकों ने शोभित किया । यह अेक नयी और निराली प्रथा थी । हर अेक अध्यक्ष ने अपना काम सफलतापूर्वक पूरा किया । अिस नअी प्रणाली से जितने लाभ की संभावना थी अुतना नहीं हो सका । कारण अुपस्थित लोगों में शिक्षकों की बनिस्बत प्रशिक्षणार्थी ज्यादा थे । प्रत्यक्ष अनुभव की कमी के कारण प्रशिक्षार्थी लोग बैठक में पेश हुअे प्रश्नों का पूरा महत्व नहीं

समझ सके। अपने अपने क्षेत्रो में छोटी-छोटी मंडलियो में अिस कार्य की और चर्चा करे तो विशेष लाभ हो सकेगा। शिक्षक सम्मेलन के चर्चा के विषयो को मूर्त रूप में अुपस्थित करने, में प्रदर्शिनी अुपयोगी सिद्ध हो सकी। अिस वर्ष की प्रदर्शिनी में अुद्योग व ज्ञान के समवाय के अच्छे-अच्छे नमूने रखे थे। बालको के व्यक्तित्व के विकास को भी बतानेवाले असरदार नमूने भी थे। कअी बार अैसा भी हुआ कि किये गये प्रश्नो के जवाब में अितना ही कहना पर्याप्त रहा कि प्रदर्शिनी में फलाना नमना देखें, अुसमे आपको जवाब मिलेगा।

बिहार राज्य में नअी तालीम का कार्य कअी सालो से लगातार सफलापूर्वक चलता आ रहा है। अिस कारण से वहां से आये नमूने काफी असरदार व शिक्षाप्रद थे। अन्यान्य नये स्कूलो से जो नमूने आये थे वे नअी तालीम के अुपयुक्त नही कहे जा सकते। मामूली स्कूलो के नमूनो के समान ही थे। अैसा प्रतीत हुआ कि नअी तालीम प्रदर्शिनी के मूलभूत अुसूलो को ठीक ठीक ख्याल में नहीं रखा गया था, यद्यपि स्वागत समिति ने अेक छोटी पर अच्छी मार्गदर्शिका तैयार करके भेजी थी जिसमें नअी तालीम प्रदर्शिनी के बारे में समझाया गया था। अिस स्थिति को सुधारने का क्या तरीका हो अिसपर विचार करना है। अपने आसपास के स्कूलो के अध्यापको के साथ विचार विनिमय करके हर प्रशिक्षण विद्यालय अेक प्रदर्शिनी का आयोजन करे। अुसके पश्चात हर अेक शिक्षक अपने अपने दैनिक कार्य के आधार पर आलेख (Chart) तैयार करे। अिस तरीके से प्रशिक्षण केन्द्र समवाय-पद्धति का विकास कर सकेगा।

नअी तालीम को अच्छी तरह समझाने के लिअे और अेक साधन है प्रत्यक्ष समवाय पाठ। राजपुरा के सम्मेलन के अवसर पर अैसे पाठो का आयोजन हो सका। राज्य के शिक्षा मत्री श्री विद्यालंकार अिसमें दिलचस्पी रखते थे और राजपुरा में तालीमी सघ के मार्गदर्शन में कअी सालो से नअी तालीम के स्कूल चलते थे। अिस साल के सम्मेलन की अेक बिलकुल नयी चीज यह थी कि राजपुरा के नअी तालीम शालाओ में से पाच वर्ग चुने गये। हर अेक वर्ग के लिअे प्रदर्शिनी का अेक अेक कमरा दिया गया। अिस तरह हर कमरे में अेक वर्ग के पाच दिन का काम चलता रहा। हर अेक वर्ग ने अलग-अलग अुद्योग के आधार पर अपनी योजना बनायी।

१ पूर्व-बुनियादी —	शैक्षणिक	खेल-साधन
२ बुनियादी वर्ग दूसरा		कताअी
३ ,, ,, तीसरा		कागज काम, कापिया बनाना
४ ,, ,, सातवा		बागबानी
५ अुत्तर बुनियादी वर्ग दसवा		बढअीगिरी

किसी खास शिक्षक को बुलाने का प्रयत्न नही किया गया। मामूली शालाओ में से बाहर की कोअी खास परिस्थिति तैयार करने का प्रयत्न भी नही हुआ। मतलब यह है कि साधारण स्कूल के रोजमर्रे के काम को ही चलाकर दिखाया गया जहाँ शिक्षक अुद्योग व ज्ञान के समवाय का अपना तरीका लोगो के सामने रखते थे। पूर्व बुनियादी विभाग में अेक अपवाद रहा। वहां Holland की श्रीमती क्रिस्तीना सेगबोअर (Christina Segboer) ने वर्ग शिक्षक के साथ यह प्रदर्शित किया कि स्थानिक साधनों को लेकर सस्ते पर कारगर खेल साधन किस तरह बनाये जा सकते हैं।

सम्मेलन के प्रतिनिधियो ने अिस योजना की खूब सराहना की। सबने अुन बालकों और शिक्षकों को तहेदिल से धन्यवाद दिया।

सम्मेलन की अध्ययन मंडलियो में कोअी खास चीज नही रही। केवल "शिक्षा और शान्ति" और "शोध-कार्य" अैसे दो विषय जोडे गये।

अध्ययन के लिअे जो समय दिया गया—अेक दोपहर और दूसरे दिन सवेरे—और जो निष्कर्ष निकले दोनों सन्तोषजनक माने गये। अुम्मीद है कि अिन निष्कर्षों के आधार पर नअी तालीम के भिन्न-भिन्न पहलुओ पर सविस्तार अध्ययन कार्य चलेगा। प्रतिनिधिगण अपने-अपने स्थान में जाकर अिस अध्ययन को जारी रखेंगे अैसी अुम्मीद है। अन्यथा जो अुत्साह राजपुरा में शुरू हुआ वह ठंढा पड जायगा।

सम्मेलन के कार्य पर विचार करते समय यही अेक बात महत्वपूर्ण प्रतीत होती है। सम्मेलन कोअी सिद्धि नही है। सम्मेलन का लाभ अिसमें है कि वह नये अध्ययन, नये कार्य और नये प्रयत्न का अुत्साह पैदा करे। जमाने की क्या माग है? अितना ही नही कि आजकल के बुनियादी व गैर बुनियादी के द्वैत को समाप्त करके अुनके बदले में सबके लिअे और समान अेक राष्ट्रीय शिक्षा योजना बनावे, बल्कि समय की पुकार यह है कि शिक्षण विचार पर अेक राष्ट्रीय आन्दोलन हो, ताकि राष्ट्रमानस शिक्षा की सामान्य नीति और व्यवहार के महत्वपूर्ण पहलुओ पर गभीर चिंतन शुरू करे। सवाल क्या है? यह तो पूज्य विनोबाजी और देशमान्य नेताओ ने अपने भाषणो में साफ-साफ व्यक्त किया ही है।

१ राष्ट्रीय शिक्षा तथा राष्ट्रीय सरकार दोनो के बीच का सही सबध क्या हो?

२ सच्ची शिक्षा का सर्वस्व स्वतत्रता है। अुस आजादी को कायम रखते हुअे सरकार अपना फर्ज कैसे अदा कर सकती है?

३ कम से कम चौदह साल की अुमर तक राष्ट्र के सब बालको को शिक्षा की व्यवस्था कैसे की जाय?

४ शाला के अभ्यासक्रम में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओ का स्थान क्या हो? खासकर अग्रेजी का।

अिन सवालो का जवाब केवल तर्क से या नारो से नही दिया जा सकता। जरूरत है गभीर चिंतन व अध्ययन की।

सम्मेलन ने ये सवाल अुठाये है। प्रतिनिधियो का यह कर्तव्य है कि जबतक समूचे राष्ट्र का ध्यान अिस ओर आकर्षित न हो जाय तबतक आराम न ले। "राम काज किये बिन मोहिं कहाँ विश्राम" यही अगला कदम है।

—मार्जरी साअिक्स

समझ सके। अपने अपने क्षेत्रों में छोटी-छोटी मंडलियो मे अिस कार्य की और चर्चा करे तो विशेष लाभ हो सकेगा। शिक्षक सम्मेलन के चर्चा के विषयो को मूर्त रूप में अुपस्थित करने, में प्रदर्शिनी अुपयोगी सिद्ध हो सकी। अिस वर्ष की प्रदर्शिनी में अुद्योग व ज्ञान के समवाय के अच्छे-अच्छे नमूने रखे थे। बालको के व्यक्तित्व के विकास को भी बतानेवाले असरदार नमूने भी थे। कअी बार अैसा भी हुआ कि किये गये प्रश्नो के जवाब में अितना ही कहना पर्याप्त रहा कि प्रदर्शिनी में फलाना नमना देखें; अुसमें आपको जवाब मिलेगा।

बिहार राज्य में नअी तालीम का कार्य कअी सालो से लगातार सफलापूर्वक चलता आ रहा है। अिस कारण से वहां से आये नमूने काफी असरदार व शिक्षाप्रद थे। अन्यान्य नये स्कूलो से जो नमूने आये थे वे नअी तालीम के अुपयुक्त नही कहे जा सकते। मामूली स्कूलो के नमूनो के समान ही थे। अैसा प्रतीत हुआ कि नअी तालीम प्रदर्शिनी के मूलभूत अुसूलो को ठीक ठीक ख्याल में नहीं रखा गया था, यद्यपि स्वागत समिति ने अेक छोटी पर अच्छी मार्गदर्शिका तैयार करके भेजी थी जिसमें नअी तालीम प्रदर्शिनी के बारे में समझाया गया था। अिस स्थिति को सुधारने का क्या तरीका हो अिसपर विचार करना है। अपने आसपास के स्कूलों के अध्यापको के साथ विचार विनिमय करके हर प्रशिक्षण विद्यालय अेक प्रदर्शिनी का आयोजन करे। अुसके पश्चात हर अेक शिक्षक अपने अपने दैनिक कार्य के आधार पर आलेख (Chart) तैयार करे। अिस तरीके से प्रशिक्षण केन्द्र समवाय-पद्धति का विकास कर सकेगा।

नअी तालीम को अच्छी तरह समझाने के लिअे और अेक साधन है प्रत्यक्ष समवाय पाठ। राजपुरा के सम्मेलन के अवसर पर अैसे पाठों का आयोजन हो सका। राज्य के शिक्षा मंत्री श्री विद्यालंकार अिसमे दिलचस्पी रखते थे और राजपुरा में तालीमी संघ के मार्गदर्शन में कअी सालो से नअी तालीम के स्कूल चलते थे। अिस साल के सम्मेलन की अेक बिलकुल नयी चीज यह थी कि राजपुरा के नअी तालीम शालाओ में से पाच वर्ग चुने गये। हर अेक वर्ग के लिअे प्रदर्शिनी का अेक अेक कमरा दिया गया। अिस तरह हर कमरे में अेक वर्ग के पांच दिन का काम चलता रहा। हर अेक वर्ग ने अलग-अलग अुद्योग के आधार पर अपनी योजना बनायी।

१ पूर्व-बुनियादी —	शैक्षणिक	खेल-साधन
२. बुनियादी वर्ग दूसरा		कताअी
३. ,, ,, तीसरा		कागज काम, कापियां बनाना
४ ,, ,, सातवा		बागवानी
५ अुत्तर बुनियादी वर्ग दसवा		बढअीगिरी

किसी खास शिक्षक को बुलाने का प्रयत्न नहीं किया गया। मामूली शालाओ में से बाहर की कोअी खास परिस्थिति तैयार करने का प्रयत्न भी नही हुआ। मतलब यह है कि साधारण स्कूल के रोजमर्रे के काम को ही चलाकर दिखाया गया जहाँ शिक्षक अुद्योग व ज्ञान के समवाय का अपना तरीका लोगो के सामने रखते थे। पूर्व बुनियादी विभाग में अेक अपवाद रहा। वहाँ Holland की श्रीमती क्रिस्तीना सेगबोअर (Christina Segboer) ने वर्ग शिक्षक के साथ यह प्रदर्शित किया कि स्थानिक साधनो को लेकर सस्ते पर कारगर खेल साधन किस तरह बनाये जा सकते हैं।

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम

हिन्दी पुस्तकें

	मूल्य रु न पै.
शिक्षा पर गान्धीजी के लेख व विचार	
१. शिक्षा में अहिंसक क्रान्ति	१–००
बुनियादी शिक्षा सम्मेलनो की रिपोर्ट	
२ बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा (डॉ जाकिर हुसेन समिति की रिपोर्ट)	१–५०
३ समग्र नअी तालीम	२–७५
४. आठवा न ता सम्मेलन विवरण	१–२५
५ नवा " " "	०–६३
६. दसवा " " "	०–७५
७ ग्यारहवा " " "	१–००
८. बारहवा " " "	१–५०
बुनियादी शिक्षा के आम सिद्धांत	
९ प्रौढ शिक्षा का अुद्देश्य (शाता नारुलकर और मार्जरी साअिक्स)	०–७५
१०. जीवन शिक्षा का प्रारम्भ (पूर्व-बुनियादी तालीम की योजना और प्रत्यक्ष काम) (शाता नारुलकर)	१–२५
अलग-अलग विषयो पर पुस्तकें	
११. मूल अुद्योग . कातना (विनोबा)	०–७५
१२. खेती शिक्षा (भिसे और पटेल)	१–००
पाठ्यक्रम की पुस्तकें	
१३. आठ सालो का सम्पूर्ण शिक्षाक्रम	१–५०
१४ अुत्तर-बुनियादी शिक्षाक्रम (सक्षिप्त)	०–२५
१५ पूर्व-बुनियादी शिक्षको की ट्रैनिंग का पाठ्यक्रम	०–६३
अन्य पुस्तके	
१६ भारत की कथा (अभिनय तथा सगीत)	०–५०
१७ नअी तालीम का आयोजन	०–०६
१८ सेवाग्राम—गाधीलोक	०–३१
१९ सेवाग्राम के काम पर कुछ विचार (प्रो राअीस)	०–०६
नये प्रकाशन	
२०. शाति-सेना	०–१२
२१. शिक्षको से (विनोबा)	०–२५
२२ शाति-सेना का विकास	०–३१
२३. विद्यार्थियों से (विनोबा)	०–२५
२४ ग्राम स्वराज्य नअी तालीम	१-००

नोट–१. पुस्तक की कीमत पर प्रत्येक ५० नये पैसे पर प्राय ६ नये पैसे के हिसाब से डाक खर्च लगेगा। अिसके अलावा वी. पी या रजिस्ट्री से मगाने पर ६३ नये पैसे अधिक लगेंगे।

नोट–२. प्रत्येक ऑर्डर के साथ अेक चौथाओ रकम पेशगी रूप में आनी चाहिये।

प्रकाशक – श्री राधाकृष्ण, मन्त्री, हिन्दुस्तानी तालीमी सघ, सेवाग्राम।
मुद्रक – श्री द्वारका प्रसाद परसाअी, नअी तालीम मुद्रणालय, सेवाग्राम।